मेक मनी विथ

प्राइस एक्शन ट्रेडिंग

टेक्निकल एनालिसिस सिम्पलीफाईड!

(Hindi Edition)

Mission Trader

सुनिल गुर्जर

अनुक्रमणिका

१. **प्राइस एक्शन ट्रेडिंग का परिचय**

प्राइस एक्शन ट्रेडिंग	१
प्राइस एक्शन ट्रेडिंग के मूल सिद्धांत	५
प्राइस एक्शन ट्रेडिंग के फायदें	५

२. **सपोर्ट और रेजिस्टन्स**

सपोर्ट और रेजिस्टन्स	८
सपोर्ट और रेजिस्टन्स रिवर्सल	१९
राइजिंग और फॉलिंग सपोर्ट रेजिस्टन्स	२२
डायनामिक सपोर्ट और रेजिस्टन्स	२४

३. **मार्केट सायकल**

एक्युम्युलेशन फेज	२७
एडवान्सिंग फेज	२९
डिस्ट्रिब्युशन फेज	३१
डिक्लाइनिंग फेज	३२

४. **ट्रेन्डिंग और रेन्जिंग मार्केट**

ट्रेन्डिंग मार्केट	३६
रेन्जिंग मार्केट	४१

५. **कैन्डलस्टिक पैटर्न्स**

बेसिक कैन्डल फॉर्मेशन	४६
कैन्डलस्टिक पैटर्न के प्रकार	४८
लोकप्रिय सिंगल कैन्डलस्टिक पैटर्न्स	
- बुलिश मारूबोजू	४९
- बेअरीश मारूबोजू	५०
- हैमर	५१
- हैंगिंग मैन	५२

- इन्वर्टेड हैमर
- शूटिंग स्टार ५३
- डॉजी ५४

लोकप्रिय टु कैन्डलस्टिक पैटर्न्स ५६
- बुलिश एन्गल्फिंग पैटर्न
- बेअरीश एन्गल्फिंग पैटर्न ५९
- बुलिश हरामी ६०
- बेअरीश हरामी ६१
- पीयर्सिंग पैटर्न ६३
- डार्क क्लाऊड कवर ६४

लोकप्रिय थ्री कैन्डलस्टिक पैटर्न्स ६५
- मॉर्निंग स्टार पैटर्न ६७
- ईवनिंग स्टार पैटर्न ६८
- थ्री व्हाईट सोल्जर्स ७०
- थ्री ब्लॅक क्रोज़ ७१

६. कैन्डलस्टिक पैटर्न का एडवान्स एनालिसिस

कैन्डलस्टिक पैटर्न का एडवान्स एनालिसिस
- कैन्डलस्टिक बॉडी की साइज ७५
- शैडो की लंबाई ७७
- बॉडी टू शैडो रेशिओ ७८
- कैन्डलस्टिक बॉडी की पोजिशन ७८

७. चार्ट पैटर्न्स

महत्वपूर्ण रिवर्सल चार्ट पैटर्न्स
- हेड एन्ड शोल्डर ८२
- इन्वर्टेड हेड एन्ड शोल्डर ८३
- डबल टॉप ८५
- डबल बॉटम ८६
- राऊन्डिंग बॉटम ८७
- राऊन्डिंग टॉप ८९

महत्वपूर्ण कन्टिन्यूएशन चार्ट पैटर्न्स
- असेन्डिंग ट्राइऐंगल ९१
- डिसेन्डिंग ट्राइऐंगल ९३
- बुलिश रेक्टेंगल पैटर्न ९४
- बेअरीश रेक्टेंगल पैटर्न ९५
- कप एन्ड हैन्डल पैटर्न ९७
- इन्वर्टेड कप एन्ड हैन्डल ९८
महत्वपूर्ण न्यूट्रल चार्ट पैटर्न
- राइजिंग चैनेल १००
- फॉलिंग चैनेल १०२
- राइजिंग वेज १०४
- फॉलिंग वेज १०६
- सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल १०८

८. वॉल्यूम एनालिसिस
वॉल्यूम एनालिसिस ११२

९. मूव्हिंग अॅव्हरेजचा उपयोग
मूविंग एवरेज के प्रकार १२६
मूविंग एवरेज का उपयोग १२७

१०. प्राइस रिजेक्शन और प्राइस एक्सेप्टन्स
प्राइस रिजेक्शन १३४
प्राइस एक्सेप्टन्स १३५

११. रिस्क मैनेजमेन्ट
रिस्क मैनेजमेन्ट स्ट्रैटजीज़ १४१

१२. पोजिशन साईजिंग
पोजिशन साइज की गणना १४६

१३. इनिशियल स्टॉप लॉस

इनिशियल स्टॉप लॉस १४९

इनिशियल स्टॉप लॉस स्ट्रैटजी के प्रकार १५२

१४. ट्रेलिंग स्टॉप लॉस

ट्रेलिंग स्टॉप लॉस १५७

१५. ट्रेडिंग जर्नल

ट्रेडिंग जर्नल में नोट करने लायक प्रमुख बातें १६२

१६. केस स्टडीज़

ट्रेन्डिंग और रेन्जिंग मार्केट की केस स्टडीज़ (१ - ७) १६५

चार्ट पैटर्न्स की केस स्टडीज़ (८ - ३१) १७७

कैन्डलस्टिक पैटर्न्स की केस स्टडीज़ (३२ - ४९) २१५

प्राइस एक्शन ट्रेडिंग का परिचय

प्राइस एक्शन :

सरल भाषा में बताना हो तो, 'प्राइस एक्शन' किसी भी सिक्योरिटी के भाव में निश्चित अवधि में होने वाला उतार-चढ़ाव होता है।

''जेसी लिवरमोर'' प्राइस एक्शन एनालिसिस के व्यापक प्रयोग कर्ताओं में से एक थे। उन्होंने २०वीं शताब्दी में प्राइस एक्शन ट्रेडिंग का आविष्कार किया।

प्राइस एक्शन का मूल आधार यह है कि भाव कभी झूट साबित नहीं हो सकता। इसलिए प्राइस एक्शन मेथोडोलॉजी सभी टेक्निकल इन्डिकेटर्स को हटा देता है और सिर्फ प्राइस मूवमेन्ट के डेटा को ही महत्व देता है और उसके आधार से ही एन्ट्री और एक्झिट का संकेत दिया जाता है।

प्राइस एक्शन, टेक्निकल एनालिसिस की एक शाखा है या फिर उसका एक हिस्सा है जिसमें किसी भी सिक्योरिटी के वर्तमान और भूतकाल के भाव का उपयोग करके भविष्य के प्राइस मूवमेन्ट का अंदाजा निकाला जाता है।

प्राइस एक्शन ट्रेडिंग :

प्राइस एक्शन ट्रेडिंग 'क्लीन चार्ट ट्रेडिंग' के नाम से भी जाना जाता है। प्राइस एक्शन ट्रेडिंग में किसी भी सिक्योरिटी के भाव में होने वाले उतार-चढ़ाव के आधार पर उसमें खरीदी या बिक्री का निर्णय लिया जाता है।

गुजराती में स्टॉक मार्केट के बारे में एक प्रसिद्ध कहावत है जिसमें प्राइस एक्शन ट्रेडिंग का सार है –

''भाव भगवान छे''

प्राइस एक्शन ट्रेडर मार्केट में **'क्या हुआ है'** और **'क्या हो रहा है'** इस पर ध्यान केंद्रित करता है। **'क्यों हुआ'** इसके झमेले में नहीं पड़ता।

जैसा कि पहले बताया है, प्राइस एक्शन ट्रेडिंग आम तौर पर प्राइस चार्ट पर आधारित होता है जिसमें अन्य किसी भी इन्डिकेटर्स जैसे कि ओसिलेटर, पिवोट पॉइन्ट, मूविंग एवरेज, आदि का उपयोग नहीं होता।

प्राइस एक्शन ट्रेडर टेक्निकल इन्डिकेटर्स जैसे कि एमएसीडी, आरएसआई, एडीएक्स, आदि को खास वेटेज नहीं देता।

प्राइस एक्शन ट्रेडर सिर्फ और सिर्फ भूतकाल और वर्तमान भाव से संबंधित डेटा पॉइन्ट्स को ही ध्यान में लेता है जिसमें ओपन, हाई, लो, क्लोज प्राइस का समावेश होता है। इसलिए प्राइस एक्शन ट्रेडर प्रमुखता से कैन्डलस्टिक चार्ट या बार चार्ट का उपयोग करता है।

प्राइस एक्शन ट्रेडिंग पूरीतरह से माँग और आपूर्ति (डिमान्ड और सप्लाय) के कन्सेप्ट पर आधारित है।

किसी भी सिक्योरिटी का भाव बढ़ता है इसका सरल अर्थ यह होता है कि उसमें विक्रेताओं की तुलना में खरीदार अधिक है, जिससे भाव बढ़ता है। दुसरे शब्दों में, उसमें सप्लाय की तुलना में डिमान्ड अधिक है। इसी प्रकार, यदि किसी सिक्योरिटी के भाव में गिरावट होती है तो इसका सीधा सा मतलब है कि खरीदारों की तुलना में विक्रेता अधिक है, इसलिए भाव घट रहा है। दूसरे शब्दों में, उसमें डिमान्ड की तुलना में सप्लाय अधिक है।

अगले पन्नें पर मैंने दो चार्ट दिखाए है, जिनमें से एक चार्ट में सिर्फ प्राइस एक्शन दिखाया है और दूसरे चार्ट में भाव के साथ विभिन्न इन्डिकेटर्स दिखाए है।

नीचे दिया गया चार्ट निफ्टी ५० का दैनिक प्राइस एक्शन चार्ट है, जो एक सरल तरीके से इन्डेक्स के प्राइस मूवमेंट की स्पष्ट तस्वीर दिखाता है।

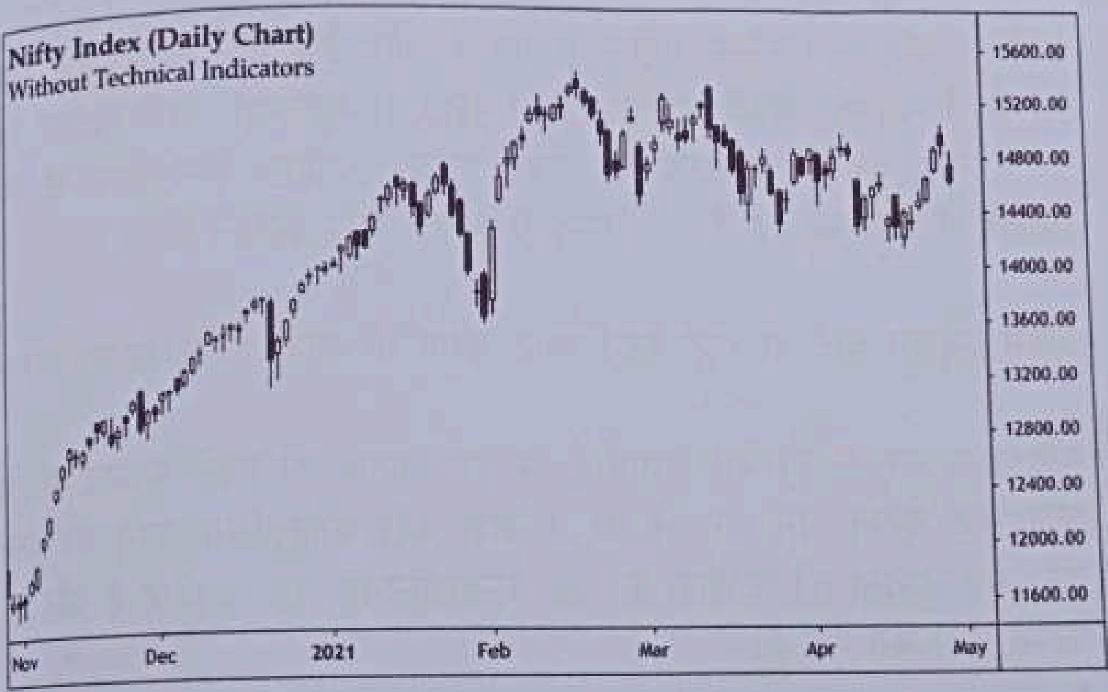

नीचे दिया गया चार्ट निफ्टी ५० का दैनिक चार्ट है, जिसमें प्रसिद्ध टेक्निकल इन्डिकेटर्स जैसे कि बोलिंगर बॅन्ड, एडीएक्स, आरएसआई, आदि दिखाए है।

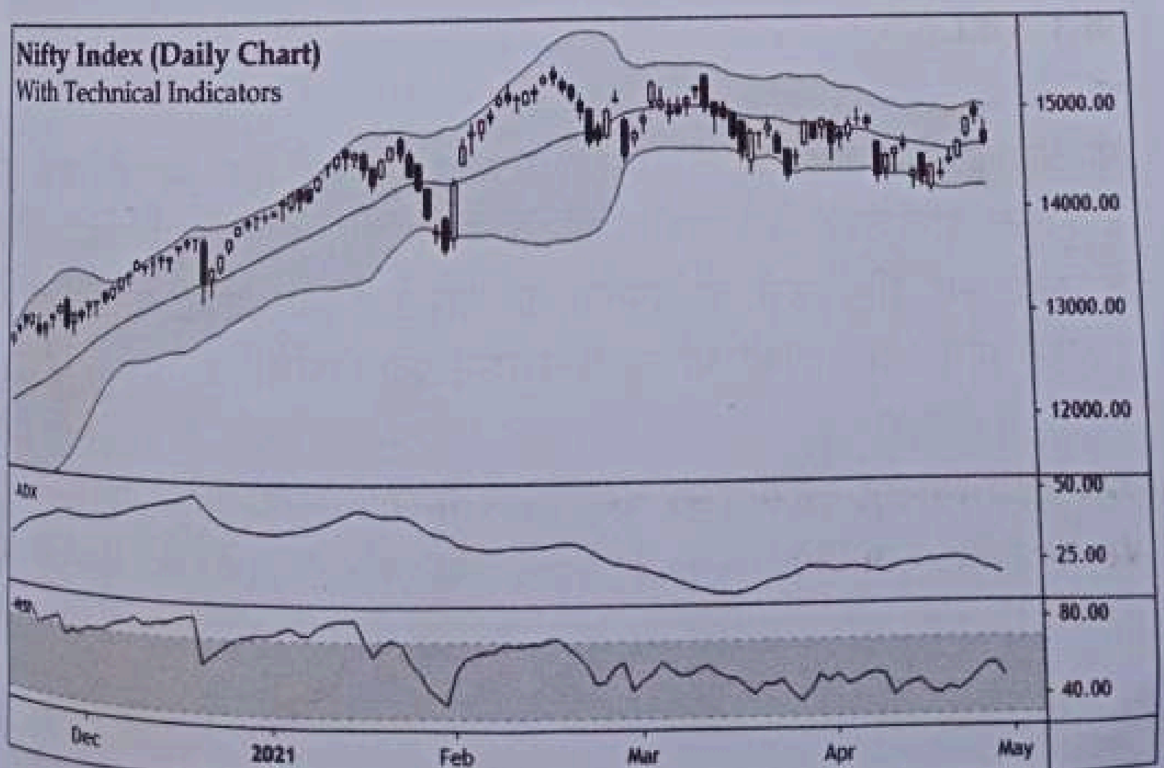

अब इन दोनों चार्ट को देखने के बाद मुझे यकिन है कि आप कहेंगे कि पहले चार्ट को पढ़ना और समझना आसान है, तो दूसरे चार्ट में दिखाए गए इन्डिकेटर्स जटिल और भ्रमित करने वाले है।

इसलिए यदि आप स्टॉक मार्केट में नए है और टेक्निकल एनालिसिस सिख रहे है तो आपको सबसे पहले प्राइस एक्शन से शुरूआत करनी चाहिए और उसके बाद दूसरे इन्डिकेटर्स पर नज़र डालनी चाहिए। ऐसा करने से चार्ट वास्तव में क्या कह रहे है, वह समझना आपके लिए आसान होगा।

प्राइस एक्शन चार्ट पर चार्ट पैटर्न स्पॉट करना भी आपके लिए आसान होगा।

यदि आप नए है, तो मेरा सुझाव है कि इस किताब को पढ़ने के बाद प्रतिदिन कुछ चार्ट देखने और समझने की कोशिश करें, एनालिसिस करने का प्रयास करें, यह समझने की कोशिश करें कि कैन्डलस्टिक्स क्या कह रहे है और चार्ट पैटर्न्स क्या कह रहा है।

धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से यह अभ्यास आपके आत्मविश्वास को बढ़ाएगा और आपको ट्रेडिंग में बहुत लाभ होगा।

जरा रूको !

मैं आपको ऐसा कह रहा हूँ, इसका मतलब यह नहीं कि आपको कभी भी टेक्निकल इन्डिकेटर्स का उपयोग नहीं करना चाहिए। आप प्राइस एक्शन डेटा के साथ कुछ इन्डिकेटर्स का उपयोग कर सकते है जो आपके एनालिसिस में उपयोगी होंगे और आपको अधिक कन्फर्मेशन प्रदान करेंगे।

कई प्राइस एक्शन ट्रेडर्स ट्रेन्ड को फिल्टर करने के लिए प्राइस एक्शन डेटा के साथ वॉल्यूम और ५० दिनों के या २०० दिनों के सिम्पल या एक्सपोनेन्शियल मूविंग एवरेज का उपयोग करते है।

प्राइस एक्शन ट्रेडिंग के मूल सिद्धांत :

आगे बढ़ने से पहले, आइए उन बुनियादी सिद्धांतों को देखें जिन पर प्राइस एक्शन ट्रेडिंग आकार लेता है।

१. सपोर्ट और रेजिस्टन्स।
२. कैन्डलस्टिक्स और चार्ट पैटर्न।
३. ट्रेन्ड।
४. मार्केट रिएक्शन (प्राइस रिएक्शन, प्राइस एक्सेप्टन्स)।
५. मार्केट का स्ट्रक्चर।

इन सभी कन्सेप्ट्स के बारे में इस किताब के अगले चैप्टर में हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

अब हम प्राइस एक्शन ट्रेडिंग के कुछ फायदें और नुकसान देखते है।

प्राइस एक्शन ट्रेडिंग के फायदें :

१. **रियल टाईम ट्रेडिंग में उपयोगी** - प्राइस एक्शन रियल टाईम मूवमेन्ट को दर्शाता है क्योंकि उसमें टेक्निकल इन्डिकेटर्स का समावेश नहीं होता।

२. **समझने में आसान** - जैसे कि पहले बताया है, प्राइस एक्शन समझना आसन है क्योंकि उसमें सिर्फ प्राइस डेटा पॉइन्ट्स को ही ध्यान में लिया जाता है, जिससे ट्रेन्ड को समझना आसान होता है।

३. **ट्रेड करना बहुत ही आसान है** - यदि आप केवल सपोर्ट और रेजिस्टन्स कहाँ है यह जान लें, तो प्राइस एक्शन ट्रेडिंग बहुत ही आसान है। मैंने बहुत से ऐसे लोगों को देखा है जो बहुत सारे इन्डिकेटर्स का उपयोग करते है और फिर भ्रमित हो जाते है कि कौन से भाव पर खरीदना है और कौन से भाव पर बेचना है। यह खासकर नए ट्रेडर्स में अधिक नज़र आता है

क्योंकि उन्होंने अपने ट्रेडिंग सेटअप को भ्रमित करने वाला बनाया होता है। इसलिए मैं हमेशा ट्रेडिंग सेटअप को हो सकें उतना आसान बनाने पर जोर देता हूँ। मैं समझता हूँ की ट्रेडिंग में सबसे महत्वपूर्ण बात यही है।

४. **बैक टेस्टेड और टाईम टेस्टेड स्ट्रैटजी -** प्राइस एक्शन ट्रेडिंग का मूल सिद्धांत जैसे कि ट्रेन्ड, सपोर्ट और रेजिस्टन्स यह कई सालों से इस्तेमाल में है और मैं खुद पिछले कुछ सालों से इस सरल सेटअप का इस्तेमाल कर रहा हूँ। मेरी समझ से यह बहुत उपयोगी और फायदेमंद है।

५. **स्पष्ट एन्ट्री और एक्झिट लेवल -** प्राइस एक्शन ट्रेडिंग का मुख्य आधार सपोर्ट और रेजिस्टन्स है। इस कन्सेप्ट का उपयोग करके आप सही डिमान्ड - सप्लाय झोन निर्धारित कर सकते है और उसके आधार पर आप ट्रेड के लिए एन्ट्री और एक्झिट लेवल भी निर्धारित कर सकते है।

प्राइस एक्शन ट्रेडिंग के नुकसान (घाटे) :

१. **आम धारणाओं के विपरीत -** प्राइस एक्शन ट्रेडिंग अक्सर अलग - अलग टाइम फ्रेम में अलग - अलग संकेत देता है, जिससे नए ट्रेडर्स के लिए वह भ्रम पैदा करता है। उदाहरण के तौर पर, किसी विशेष स्टॉक के मामले में, यदि विभिन्न टाइम फ्रेम के लिए एनालिसिस किया जाता है तो ऐसा हो सकता है कि मुझे बुलिश मारूबोजू दिखता है और आपको बुलिश एन्गाल्फिंग दिखे, अथवा आपको ट्रेन्डलाइन सपोर्ट नज़र आता है तो मुझे हॉरिझोन्टल सपोर्ट नज़र आए। इसलिए इस मामले में बहुत ही सावधानी बरतना जरूरी होता है।

२. **झूठे संकेत प्राप्त होते है -** प्राइस एक्शन से हमेशा सही संकेत मिले यह जरूरी नहीं (वास्तव में, ऐसी कोई स्ट्रैटजी नहीं है जो आपको १०० प्रतिशत सही संकेत दे सकें)। आपको प्रत्येक ट्रेड में कमाई हो यह संभव नहीं है। इसमें झूठे सिग्नल्स भी हो सकते है और आपको उनके लिए तैयार रहना चाहिए।

३. **बहुत कम ट्रेडिंग के अवसर** - आपको अन्य इन्डिकेटर्स की तुलना में प्राइस एक्शन ट्रेडिंग के आधार पर बहुत कम ट्रेडिंग के अवसर मिलते है। इसलिए आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आप ट्रेडिंग का सही अवसर मिलने तक राह देखेंगे और फिर उस पर अमल करेंगे। इसलिए अक्सर यह कहा जाता है कि प्राइस एक्शन एक 'वेटिंग गेम' है जिसमें बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है।

४. **सिग्नल प्राप्त करना मुश्किल होता है** - ट्रेडिंग या टेक्निकल एनालिसिस में नए आए ट्रेडर्स के लिए प्राइस एक्शन ट्रेडिंग के आधार पर बुलिश या बेअरीश कैन्डल की रचना को या चार्ट पैटर्न को निर्धारित करना बहुत मुश्किल होता है।

जब स्टॉक मार्केट में या किसी भी अन्य फाइनान्शियल मार्केट में ट्रेडिंग की बात आती है, तब प्रसिद्ध अमेरिकी निवेशक और लेखक हावर्ड मार्क्स का यह सूत्र ध्यान में रखना चाहिए –

''टॉप पर रहने के लिए कोई जादू का फार्मूला नहीं है।''

अंत में, यह आपको तय करना है कि कौनसा सिस्टम आपके लिए सबसे श्रेष्ठ है और उसके आधार पर आपके लिए कौनसी ट्रेडिंग स्टाईल (प्राइस एक्शन ट्रेडिंग या इन्डिकेटर बेस्ड ट्रेडिंग) अनुकूल है।

नए ट्रेडर्स के लिए एक महत्वपूर्ण सलाह देकर मैं इस परिचयात्मक चैप्टर को समाप्त करता हूँ –

'कभी भी बहुत सारा पैसा कमाने या रातोंरात अरबपति बनने के बारे में न सोचें क्योंकि ऐसा कभी नहीं होता।'

सपोर्ट और रेजिस्टन्स

टेक्निकल एनालिसिस के सभी पहलुओं में शायद सबसे महत्वपूर्ण कन्सेप्ट सपोर्ट और रेजिस्टन्स है। टेक्निकल एनालिसिस के अन्य कई पहलू इस कन्सेप्ट पर आधारित है। इसलिए आगे बढ़ने से पहले, हमें पहले इस कन्सेप्ट को अच्छी तरह से समझने की जरूरत है।

सपोर्ट और **रेजिस्टन्स** किसी भी सिक्योरिटी के चार्ट पर महत्वपूर्ण प्राइस पॉइन्ट्स होते है, जिन पर उस सिक्योरिटी में महत्तम खरीदी और बिक्री की उम्मीद की जाती है।

इस पॉइन्ट पर भाव में बदलाव या रिवर्सल कि सबसे अधिक संभावना होती है अर्थात भाव बढ़ रहा हों तो वह घटने की और घट रहा हों तो बढ़ने की संभावना अधिक होती है। इसके पीछे का कारण डिमान्ड और सप्लाय है।

किसी भी फाइनान्शियल असेट या सिक्योरिटी का भाव डिमान्ड और सप्लाय के नियमों पर आधारित होता है। डिमान्ड (खरीदार) सप्लाय (विक्रेता) से अधिक हो तो सिक्योरिटी का भाव बढ़ता है और सप्लाय (विक्रेता) डिमान्ड (खरीदार) से अधिक हो तो सिक्योरिटी का भाव घटता है।

'बाय लो एन्ड सेल हाई' अर्थात निचले भाव से खरीदें और ऊपरी भाव से बिक्री करों यह पुरानी कहावत किसी भी फाइनान्शियल मार्केट (स्टॉक, कमोडिटी, करन्सी, क्रिप्टोकरन्सी आदि) में कमाई की एक अनिवार्य शर्त है। यहीं पर सपोर्ट और रेजिस्टन्स उपयोग में आते है। इसके लिए व्यक्ति को सपोर्ट लेवल पर खरीदना चाहिए और फिर रेजिस्टन्स लेवल पर बेचना चाहिए अथवा रेजिस्टन्स लेवल पर पहले बेचना चाहिए और फिर सपोर्ट लेवल पर वापस खरीदना चाहिए।

ज्यादातर ट्रेडर्स ट्रेडिंग के दरम्यान सपोर्ट और रेजिस्टन्स के कन्सेप्ट को महत्वपूर्ण परिबल के जैसे उपयोग में लाते है, चाहे वह स्कॅल्पिंग हो, डे ट्रेडिंग हो, स्विंग ट्रेडिंग हो या पोजिशनल ट्रेडिंग हो।

सपोर्ट क्या है?

सपोर्ट एक ऐसा लेवल है जहाँ से किसी भी सिक्योरिटी का भाव नीचे नहीं जाता क्योंकि उस स्तर पर डिमान्ड अधिक होती है जो भाव को अधिक नीचे जाने से रोकती है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, सप्लाय जब डिमान्ड से अधिक होती है तब सिक्योरिटी का भाव घटता है। भाव जब सपोर्ट लेवल के करीब आता है तब ज्यादा से ज्यादा खरीदार (बायर्स) उस सिक्योरिटी को खरीदने के लिए तैयार होते है, जिससे सप्लाय की तुलना में डिमान्ड बढ़ती है और परिणामस्वरूप भाव अधिक नीचे जाने से अटकता है और वहाँ से भाव बढ़ने लगता है।

सपोर्ट हमेशा किसी भी सिक्योरिटी के वर्तमान बाज़ार भाव से नीचे नज़र आता है।

सपोर्ट लेवल सिंगल प्राइस लेवल के रूप में या झोन के रूप में नज़र आता है। आप इस चैप्टर में आगे दिए उदाहरणों को देखोगे तब आपको यह बात अधिक स्पष्ट होगी।

सपोर्ट लेवल या झोन आपको एक रेफरन्स पॉइन्ट देता है जहाँ पर भूतकाल में सबसे अधिक खरीदी (डिमान्ड) दिखाई देती है और भविष्य में भी ऐसा होने की संभावना दर्शाता है। यह महत्वपूर्ण टेक्निकल लेवल होता है।

सपोर्ट लेवल या झोन को कैसे निर्धारित करें?

सपोर्ट लेवल या झोन निर्धारित करने के लिए निम्नलिखित चरणों का उपयोग किया जाना चाहिए।

१. भूतकाल के भाव के डेटा की जाँच करें।
२. सबसे नीचले लेवल्स को निर्धारित करें।
३. सभी नीचले लेवल्स को अंकित करें।
४. सभी टच पॉइन्ट्स को जोड़े।

१. **भूतकाल के भाव के डेटा की जाँच करें** - आपको जिस सिक्योरिटी के सपोर्ट लेवल को निर्धारित करना है उसके भूतकाल के भाव के डेटा को सबसे पहले प्राप्त करना जरूरी है।

इस प्रक्रिया के लिए आप कैन्डलस्टिक चार्ट या ओएचएलसी (OHLC) बार चार्ट का उपयोग कर सकते है। लाइन चार्ट का कभी भी उपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि वह ट्रेडिंग के दिन के ओपन, हाई, लो प्राइस को ध्यान में नहीं लेता।

मैं हमेशा कैन्डलस्टिक चार्ट का उपयोग करना पसंद करता हूँ, क्योंकि वह सभी प्रकार के चार्ट में सबसे सरल है और सभी जरूरी जानकारी उनसे मिलती है।

२. **सबसे नीचले लेवल्स को निर्धारित करें** - सबसे नीचले लेवल्स को निर्धारित करें अर्थात ऐसे प्राइस पॉइन्ट्स या झोन्स जहाँ से सिक्योरिटी का भाव बढ़ने लगता है।

यहाँ पर प्राइस पॉइन्ट्स ऐसे विशेष पॉइन्ट्स होते है जहाँ से भाव में शार्प रिवर्सल नज़र आता है और प्राइस झोन्स ऐसे विशेष झोन्स होते है जिनमें भाव घटने के बाद अटक जाता है।

३. **सभी नीचले लेवल्स को अंकित करें** - सपोर्ट लेवल के लिए आपको सभी नीचले लेवल्स को निर्धारित करना होगा या सभी लेवल्स को अंकित करना होगा या सर्कल करना होगा जिससे वह अधिक स्पष्टरूप से नज़र में आ सकते है और अच्छी तरह से समझ आते है। कम से कम ऐसे तीन या उससे अधिक पॉइन्ट्स को निर्धारित करें।

४. **सभी टच पॉइन्ट्स को जोड़े** - सभी टच पॉइन्ट्स को अंकित करने के बाद उन सभी टच पॉइन्ट्स को जोड़े।

अब प्राइस एक्शन और कालावधी से संबंधित डेटा के आधार पर यह टच पॉइन्ट्स एक या उससे अधिक होरिझोन्टल लाइन द्वारा या एक या उससे अधिक रेक्टेंग्युलर झोन द्वारा इस प्रकार से जोड़े जाते है जिससे आपको चार्ट पर सिंगल सपोर्ट लेवल, मल्टिपल सपोर्ट लेवल्स या सिंगल सपोर्ट झोन या मल्टिपल सपोर्ट झोन्स मिलते है जैसा कि नीचे दिए गए उदाहरणों में दिखाया गया है।

उदाहरण १ : सिंगल सपोर्ट लेवल।

नीचे आयनॉक्स लीझर के शेअर्स का २०१३ से २०२१ के डेटा का उपयोग करके मासिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें रू.१८४ के भाव पर सिंगल सपोर्ट लेवल नज़र आता है।

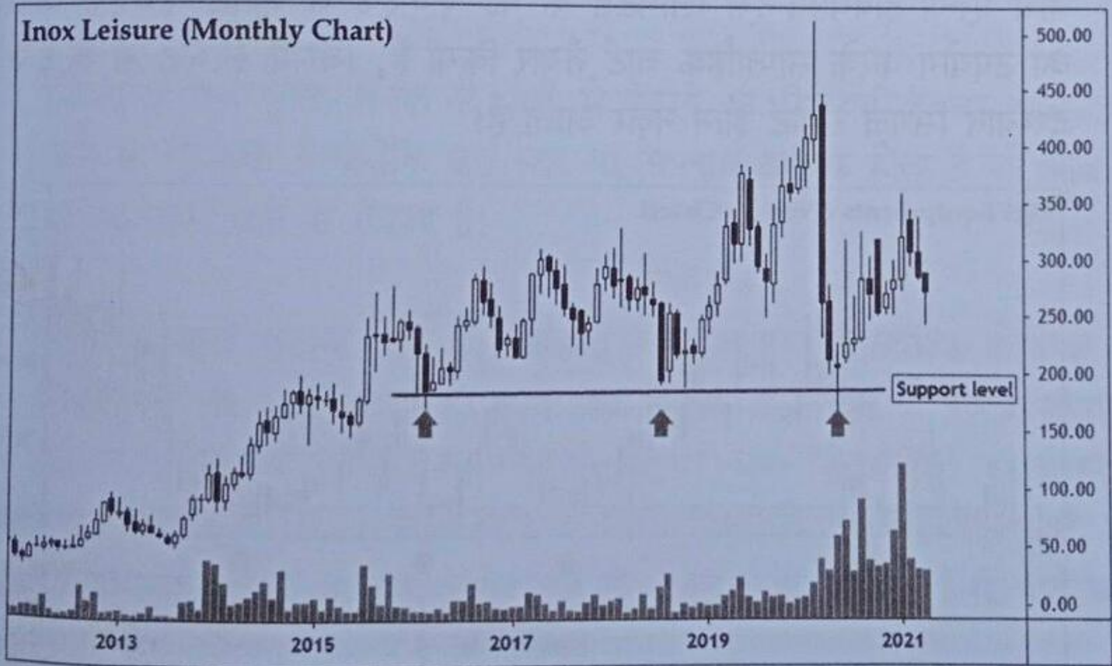

उदाहरण २ : मल्टिपल सपोर्ट लेवल्स।

अगले पन्ने पर डॉ. लालपैथ लैब्स लिमिटेड के अप्रैल २०२० से जनवरी २०२१ के डेटा का उपयोग करके दैनिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें मल्टिपल सपोर्ट लेवल्स नज़र आते है।

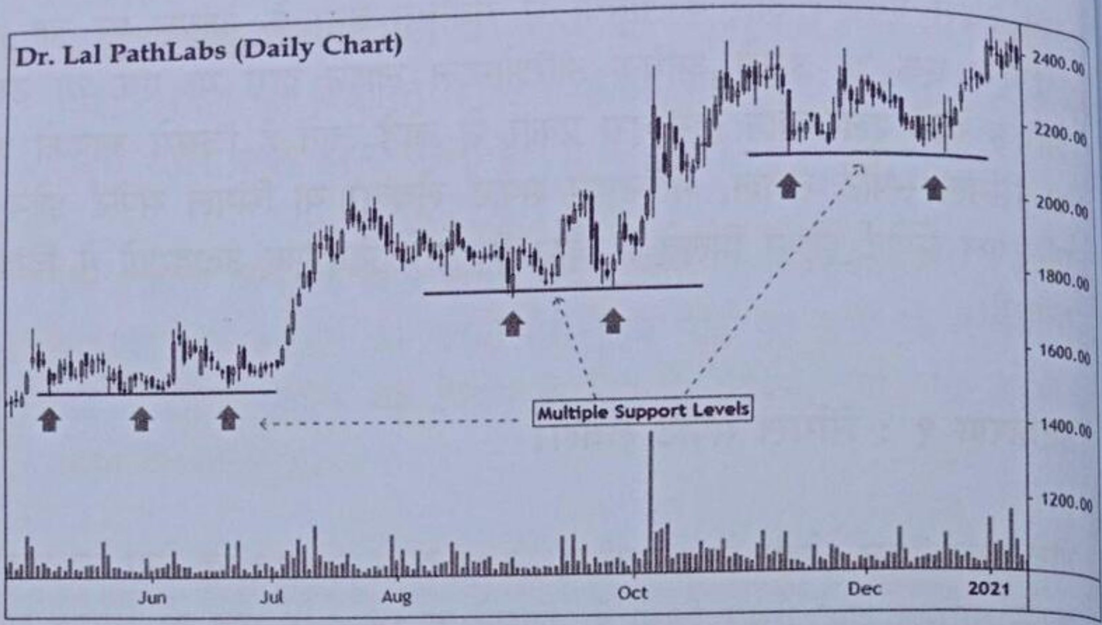

उदाहरण ३ : सिंगल सपोर्ट झोन।

नीचे एल्गी इक्विपमेन्ट्स लिमिटेड के मई २०१४ से जुलाई २०१७ के डेटा का उपयोग करके साप्ताहिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें रू.५८ से रू.६२ के दरम्यान सिंगल सपोर्ट झोन नज़र आता है।

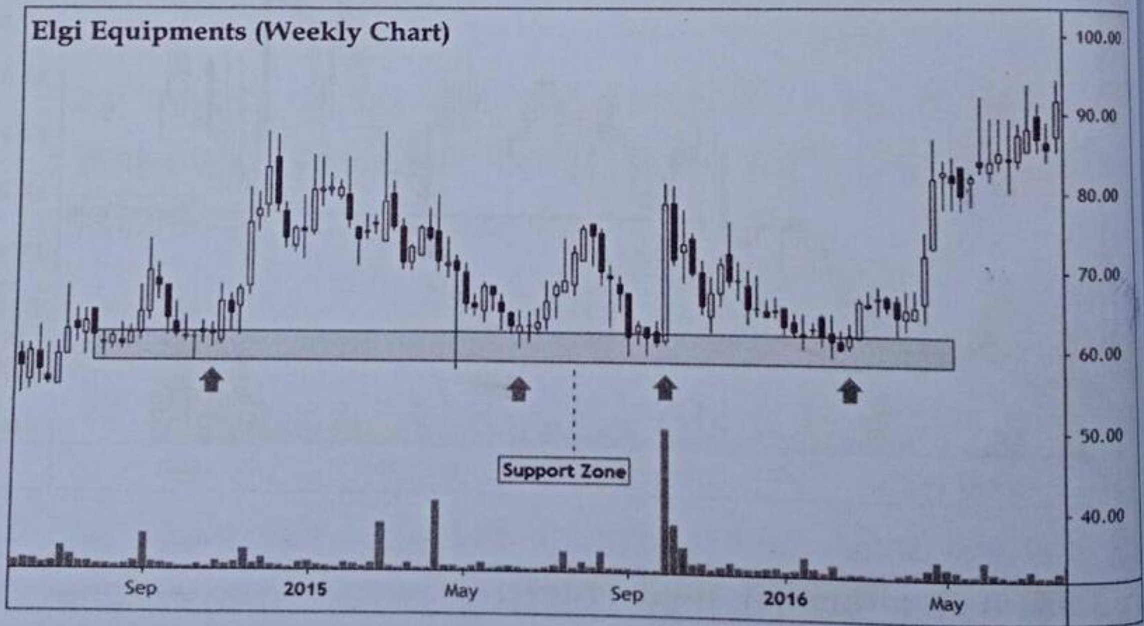

उदाहरण ४ : मल्टिपल सपोर्ट झोन्स।

नीचे टाईटन कंपनी के जून २०१० से मार्च २०१७ के डेटा का उपयोग करके साप्ताहिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें मल्टिपल सपोर्ट झोन्स नज़र आते है।

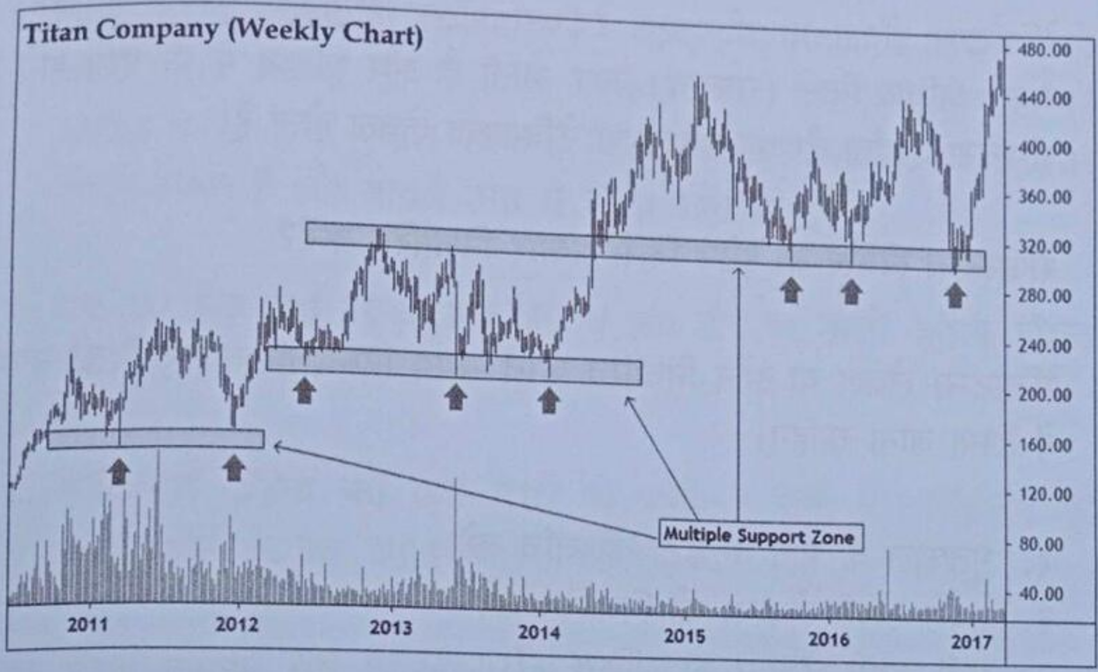

रेजिस्टन्स क्या है?

रेजिस्टन्स एक ऐसा लेवल है जहाँ से किसी भी सिक्योरिटी का भाव ऊपर जाने से अटकता है क्योंकि उस स्तर पर सप्लाय अधिक होता है जो भाव को अधिक ऊपर जाने से रोकता है।

जैसे कि पहले बताया गया है, डिमान्ड जब सप्लाय से अधिक होती है तब सिक्योरिटी का भाव बढ़ता है। भाव जब रेजिस्टन्स लेवल के करीब आता है तब ज्यादा से ज्यादा बिक्री करने वाले (सेलर्स) उस सिक्योरिटी को बेचने के लिए तैयार होते है, जिससे डिमान्ड की तुलना में सप्लाय बढ़ता है और परिणामस्वरूप भाव अधिक ऊपर जाने से अटकता है और वहाँ से भाव घटने लगता है।

रेजिस्टन्स हमेशा किसी भी सिक्योरिटी के वर्तमान बाज़ार भाव से ऊपर नज़र आता है।

रेजिस्टन्स लेवल सिंगल प्राइस लेवल के रूप में या झोन के रूप में नज़र आता है। आप इस चैप्टर में आगे दिए उदाहरणों को देखोंगे तब आपको यह बात अधिक स्पष्ट होगी।

रेजिस्टन्स लेवल या झोन एक रेफरन्स पॉइन्ट होता है जहाँ पर भूतकाल में सबसे अधिक बिक्री (सप्लाय) नज़र आती है और भविष्य में भी ऐसा होने कि संभावना दर्शाता है। यह महत्वपूर्ण टेक्निकल लेवल होता है।

रेजिस्टन्स लेवल या झोन किस प्रकार निर्धारित करें?

रेजिस्टन्स लेवल या झोन निर्धारित करते समय निम्नलिखित चरणों को उपयोग में लिया जाना चाहिए।

१. भूतकाल के भाव के डेटा की जाँच करें।
२. सबसे ऊपरी लेवल्स को निर्धारित करें।
३. सभी ऊपरी लेवल्स को अंकित करें।
४. सभी टच पॉइन्ट्स को जोड़े।

जिस प्रकार से सपोर्ट लेवल या सपोर्ट झोन को निर्धारित करने की प्रक्रिया है, वैसी ही प्रक्रिया रेजिस्टन्स लेवल या रेजिस्टन्स झोन को निर्धारित करने के लिए है। फर्क सिर्फ इतना है कि सपोर्ट लेवल या झोन में सभी नीचले लेवल को जोड़ा जाता है, तो रेजिस्टन्स लेवल या झोन में सभी ऊपरी लेवल्स को जोड़ा जाता है। फिर भी मैंने यहाँ फिर से इस प्रक्रिया को समझाया है।

१. **भूतकाल के भाव के डेटा की जाँच करें** - आपको जिस सिक्योरिटी का रेजिस्टन्स लेवल निर्धारित करना है उसके भूतकाल के भाव के डेटा को सबसे पहले प्राप्त करना जरूरी है।

२. **सबसे ऊपरी लेवल को निर्धारित करें** - सबसे ऊपरी लेवल्स को निर्धारित करें अर्थात ऐसे प्राइस पॉइन्ट्स या लेवल्स जहाँ से सिक्योरिटी का भाव घटने लगता है।

यहाँ पर प्राइस पॉइन्ट्स ऐसे विशेष पॉइन्ट्स होते है जहाँ से भाव में शार्प रिवर्सल नज़र आता है और प्राइस झोन्स ऐसे विशेष झोन्स होते है जिनमें भाव बढ़ने के बाद अटक जाता है।

३. **सभी ऊपरी लेवल को अंकित करें** - रेजिस्टन्स लेवल के लिए आपको सभी ऊपरी लेवल्स को निर्धारित करने के बाद उन सभी लेवल्स को अंकित करना है या सर्कल करना है जिससे वह अधिक स्पष्टरूप से नज़र में आ सकते है और अच्छी तरह से समझ आते है।

एक बार फिर यहाँ पर आपको कम से कम तीन या उससे अधिक पॉइन्ट को निर्धारित करना है।

४. **सभी टच पॉइन्ट को एक दुसरे से जोड़े** - सभी टच पॉइन्ट्स को अंकित करने के बाद उन सभी टच पॉइन्ट्स को जोड़े।

अब प्राइस एक्शन और कालावधी से संबंधित डेटा के आधार पर यह टच पॉइन्ट्स एक या उससे अधिक होरिझोन्टल लाइन द्वारा या एक या उससे अधिक रेक्टेंग्युलर झोन द्वारा इस प्रकार से जोड़े जाते है जिससे आपको चार्ट पर सिंगल रेजिस्टन्स लेवल, मल्टिपल रेजिस्टन्स लेवल्स या सिंगल रेजिस्टन्स झोन या मल्टिपल रेजिस्टन्स झोन्स मिलते है जैसा कि नीचे दिए गए उदाहरणों में दिखाया गया है।

उदाहरण १ : सिंगल रेजिस्टन्स लेवल।

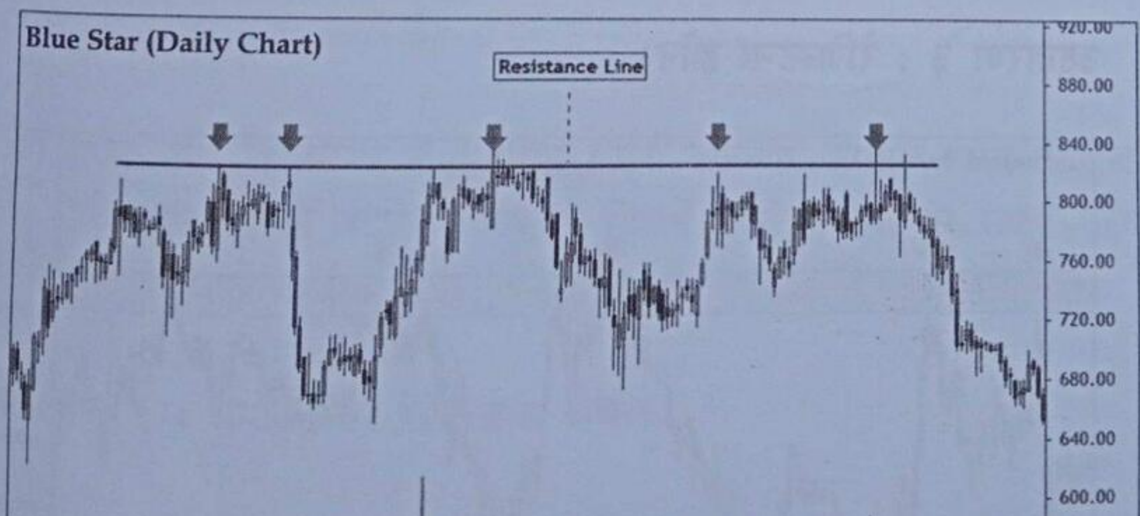

पिछले पन्ने पर ब्लु स्टार के सितंबर २०१७ से जून २०१८ के डेटा का उपयोग करके दैनिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें रू.८३० के भाव पर सिंगल रेजिस्टन्स लेवल नज़र आता है।

उदाहरण २ : मल्टिपल रेजिस्टन्स लेवल्स।

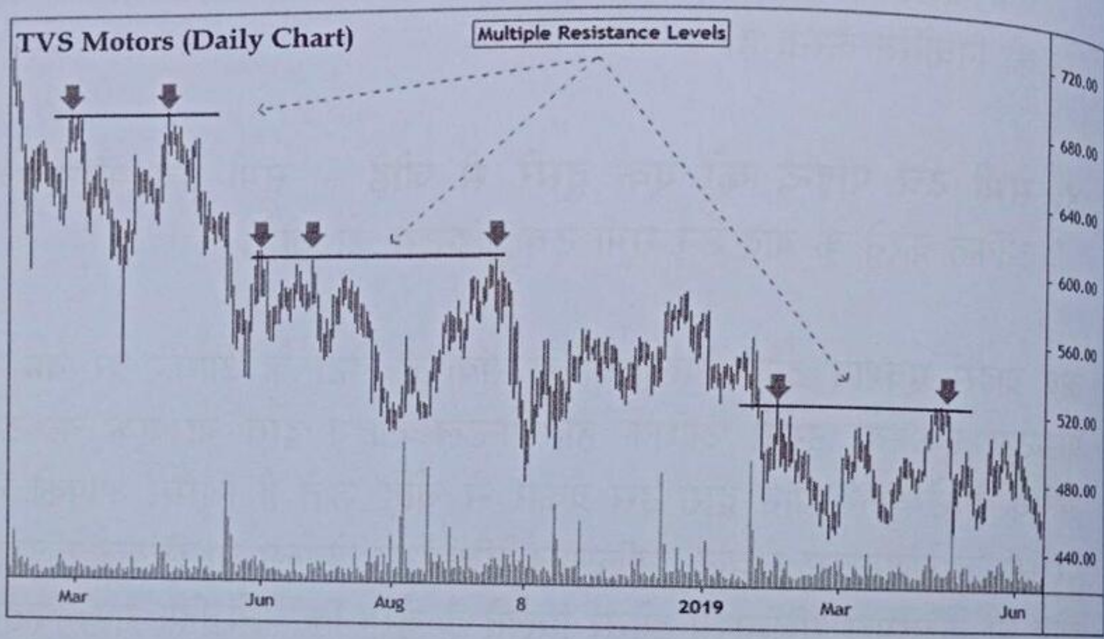

ऊपर टीवीएस मोटर के जनवरी २०१८ से जून २०१९ के डेटा का उपयोग करके दैनिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें मल्टिपल रेजिस्टन्स लेवल्स दर्शाए गए है।

उदाहरण ३ : रेजिस्टन्स झोन।

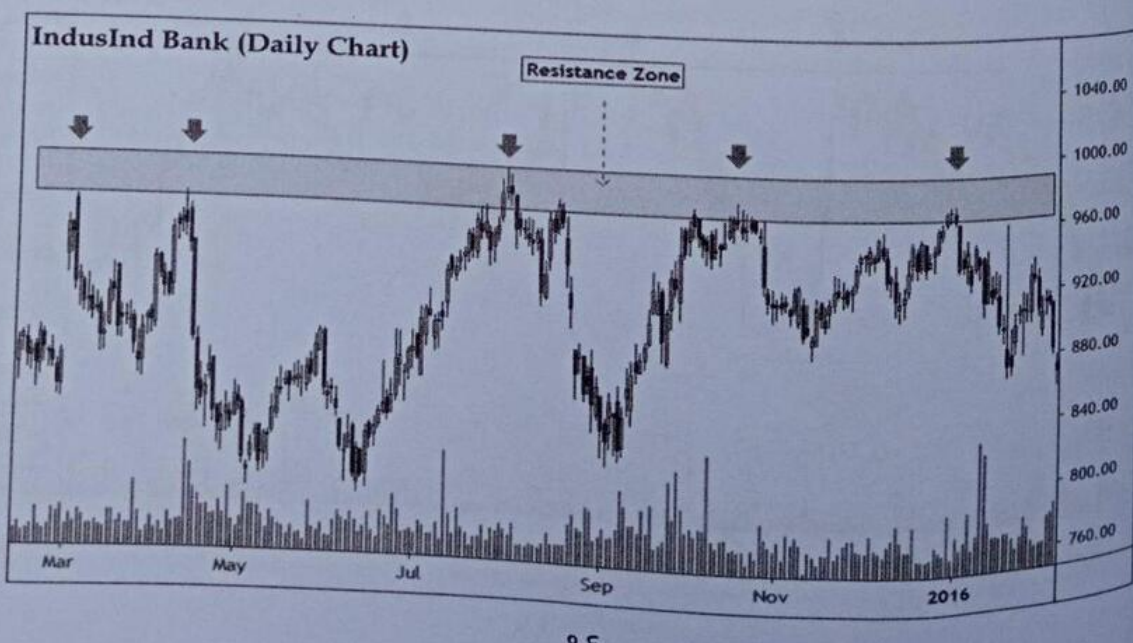

पिछले पन्ने पर इन्डसइन्ड बैंक लिमिटेड के फरवरी २०१५ से फरवरी २०१६ के डेटा का उपयोग करके दैनिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें रू.९६५ से रू.९९० के दरम्यान सिंगल रेजिस्टन्स झोन नज़र आता है।

उदाहरण ४ : मल्टिपल रेजिस्टन्स झोन्स।

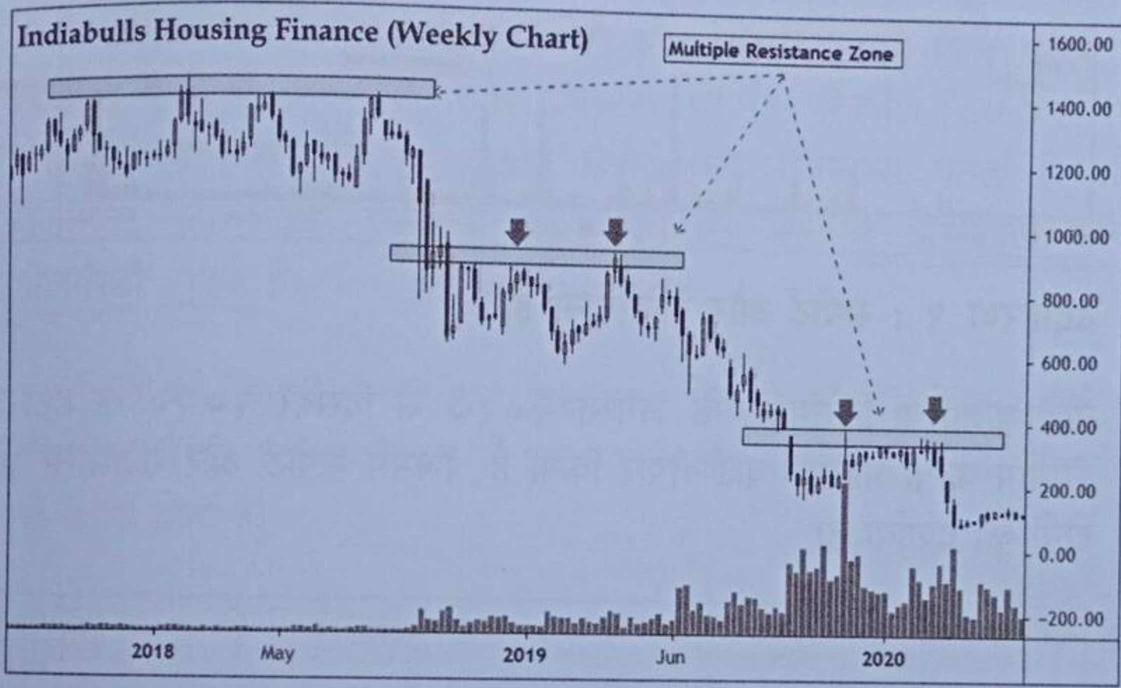

ऊपर इंडियाबुल्स हाऊसिंग फाइनान्स के जुलाई २०१७ से मई २०२० के डेटा का उपयोग करके साप्ताहिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें मल्टिपल रेजिस्टन्स झोन्स नज़र आते है।

अब सपोर्ट और रेजिस्टन्स से संबंधित संपूर्ण जानकारी हासिल करने के बाद मैंने नीचे कुछ अधिक उदाहरण दिए है जिसमें एक ही चार्ट पर सपोर्ट और रेजिस्टन्स दोनों को दर्शाया है।

उदाहरण १ : सपोर्ट और रेजिस्टन्स लेवल।

अगले पन्ने पर कार्बोरून्डुम युनिवर्सल लिमिटेड के मई २०२० से अक्टूबर २०२० के डेटा का उपयोग करके दैनिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें सपोर्ट और रेजिस्टन्स लेवल दोनों को दर्शाया गया है।

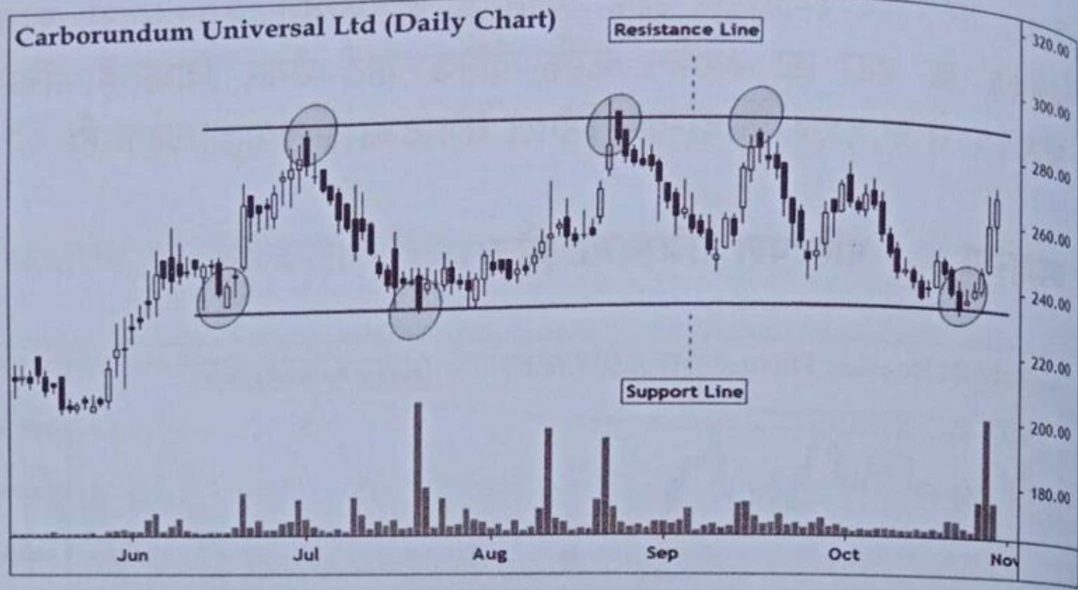

उदाहरण २ : सपोर्ट और रेजिस्टन्स झोन।

नीचे कजारिया सिरेमिक्स के अगस्त २०१३ से दिसंबर २०२० के डेटा का उपयोग करके मासिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें सपोर्ट और रेजिस्टन्स झोन दोनों को दर्शाया है।

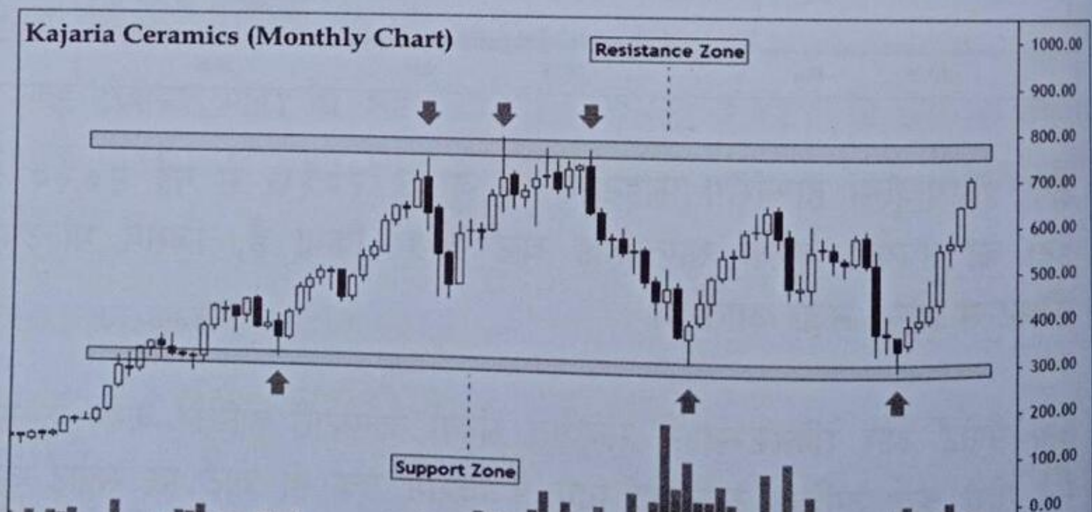

महत्वपूर्ण पॉइन्ट को ध्यान में रखें :

सपोर्ट और रेजिस्टन्स सिर्फ रेफरन्स पॉइन्ट है जिनका उपयोग शेअर्स या सिक्योरिटीज़ को खरीदने या बेचने के लिए किया जाता है। लेकिन ट्रेडिंग में उनका उपयोग कैन्डलस्टिक पैटर्न, चार्ट पैटर्न, आदि के साथ करना चाहिए जिससे अधिक कन्फर्मेशन मिलता है।

अब हम सपोर्ट और रेजिस्टन्स से संबंधित एक महत्वपूर्ण कन्सेप्ट को समझने की कोशिश करते है अर्थात वह अपनी भूमिकाओं को किस प्रकार से रिवर्स करते है।

सपोर्ट और रेजिस्टन्स रिवर्सल :

पहले हमने देखा है कि सिम्पल सपोर्ट और रेजिस्टन्स को किस प्रकार से निर्धारित करते है। अब सपोर्ट और रेजिस्टन्स का रोल रिवर्सल किस प्रकार से होता है वह जान लेते है, अर्थात सपोर्ट कब रेजिस्टन्स बनता है और रेजिस्टन्स कब सपोर्ट बनता है वह देखतें है। उसे **'द प्रिन्सिपल ऑफ पोलारिटी'** कहते है।

जब किसी भी सिक्योरिटी का भाव ब्रेकआऊट देता है और निर्धारित सपोर्ट या रेजिस्टन्स लेवल को पार करता है तब सपोर्ट और रेजिस्टन्स के रोल रिवर्सल की घटना होती है।

आसान भाषा में कहो तो, ***यदि सपोर्ट लेवल टूटा तो भविष्य में वह रेजिस्टन्स लेवल बनता है*** और वैसे ही ***यदि रेजिस्टन्स लेवल टूटा तो भविष्य में वह सपोर्ट लेवल बनता है।***

मान लीजिए कि कोई सिक्योरिटी का भाव किसी निर्धारित लेवल पर एक से अधिक समय सपोर्ट लेता है (पॉइन्ट १ और २) और बाद में उस सपोर्ट लेवल को तोड़कर उससे अधिक निचे जाता है (पॉइन्ट ३)। ऐसे मामलें में भविष्य में भाव जब बढ़ता है और फिर से पहले वाले सपोर्ट लेवल पर आता है तब वही लेवल रेजिस्टन्स की तरह कार्य करता है (पॉइन्ट ४ और ५)।

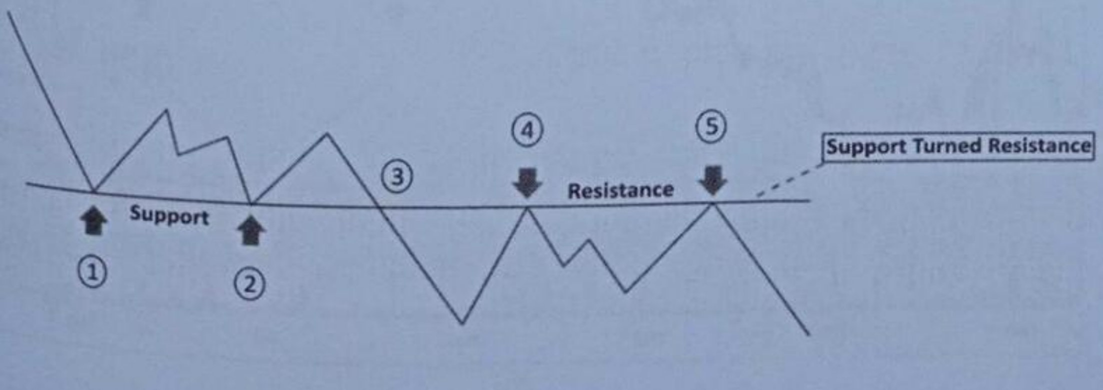

मान लीजिए कि कोई सिक्योरिटी का भाव किसी निर्धारित लेवल पर एक से अधिक समय रेजिस्टन्स का सामना करता है (पॉइन्ट १ और २) और बाद में उस लेवल को तोड़कर उससे अधिक ऊपर जाता है (पॉइन्ट ३)। ऐसे मामलें में भविष्य में भाव जब घटता है और फिर से पहले वाले रेजिस्टन्स लेवल पर आता है तब वही लेवल सपोर्ट की तरह कार्य करता है (पॉइन्ट ४ और ५)।

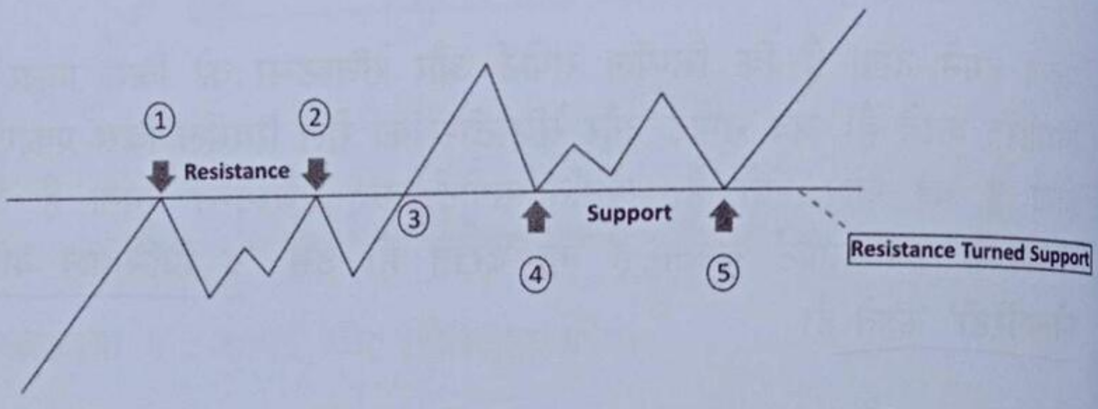

निचे मैंने कुछ उदाहरण दिए है जो आपको इस कन्सेप्ट को अधिक अच्छी तरह से समझने में मददगार साबित होंगे।

उदाहरण १ : रेजिस्टन्स बना सपोर्ट।

नीचे सुंदरम फास्टनर्स के अक्टूबर २०१६ से सितंबर २०१७ के डेटा का उपयोग करके दैनिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें रेजिस्टन्स को सपोर्ट बनते हुए दर्शाया गया है।

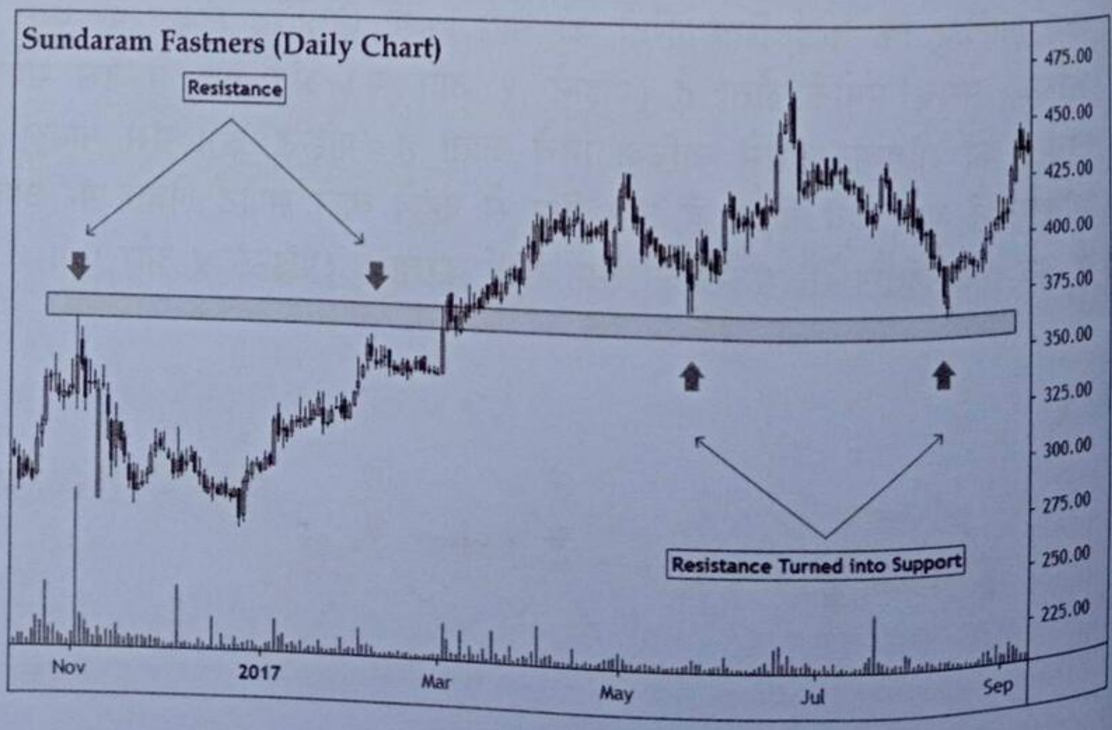

३५५ और ३६५ के बीच का रेजिस्टन्स झोन मार्च २०१७ में टूटा और उसके बाद वह क्रमशः मई २०१७ और अगस्त २०१७ में महत्वपूर्ण सपोर्ट लेवल बना।

उदाहरण २ : सपोर्ट बना रेजिस्टन्स।

नीचे सन टीवी नेटवर्क के जनवरी २०१९ और मार्च २०२० के डेटा का उपयोग करके दैनिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें सपोर्ट को रेजिस्टन्स बनते हुए दर्शाया गया है।

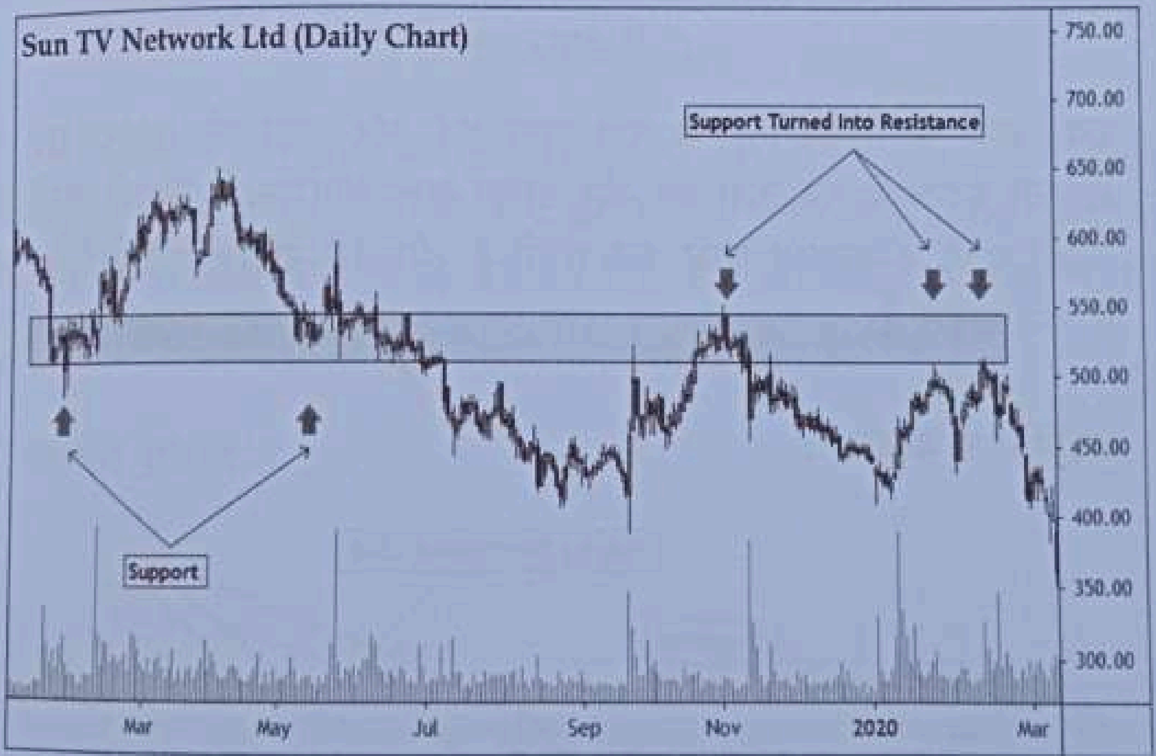

आप देख सकतें है कि ५१० और ५४५ के बीच सपोर्ट झोन तैयार हुआ था जो जून २०१९ में टूटा और उसके बाद नवंबर २०१९, जनवरी २०२० और फरवरी २०२० में तीन बार यहीं लेवल महत्वपूर्ण सपोर्ट लेवल बना।

महत्वपूर्ण मुद्दा :

अब तक मैंने होरिझोन्टल सपोर्ट और रेजिस्टन्स दर्शाए है। सपोर्ट और रेजिस्टन्स बढ़ते या घटते ट्रेन्डलाइन के स्वरूप में भी हो सकते है, जो मैं अब दर्शाने वाला हूँ।

राइजिंग सपोर्ट :

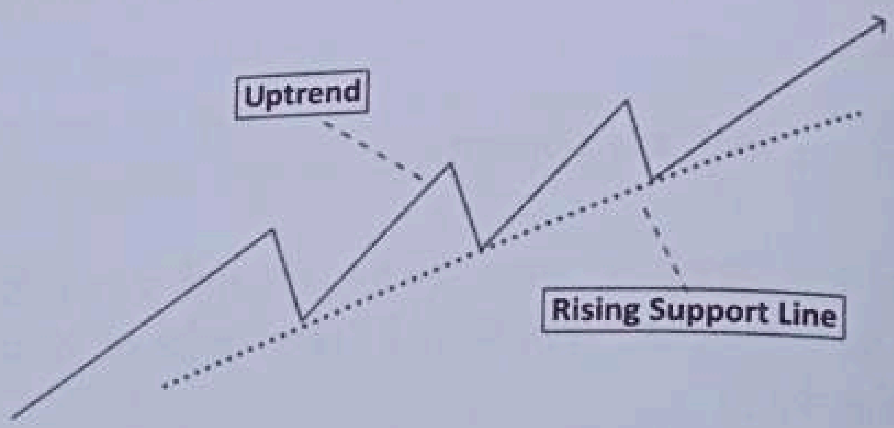

Rising Support

जब किसी भी सिक्योरिटी का भाव हायर हाई और हायर लो (HH-HL) के अनुसार बढ़ता है तब ऊपर की ओर ढलान वाले फॉर्मेशन के निचले स्तरों को जोड़ने वाली ट्रेन्डलाइन प्लॉट कर सकते है और उसे **राइजिंग सपोर्ट** के रूप में मान सकते है।

राइजिंग रेजिस्टन्स :

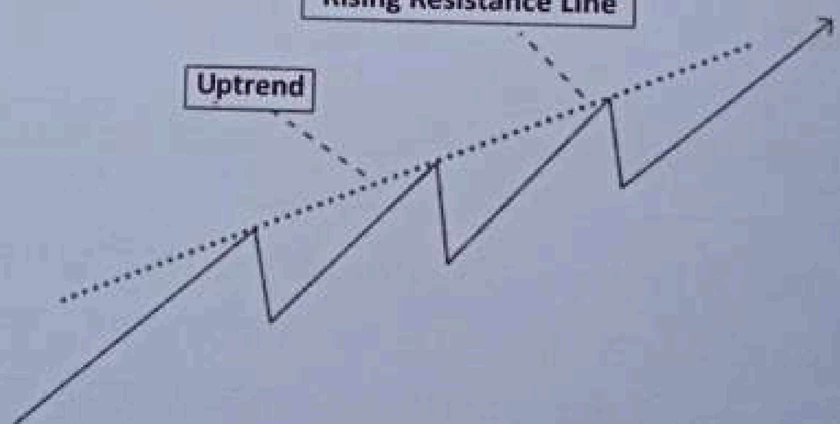

Rising Resistance

जब किसी भी सिक्योरिटी का भाव हायर हाई और हायर लो (HH-HL) के अनुसार बढ़ता है तब ऊपर की ओर ढलान वाले फॉर्मेशन के ऊपरी स्तरों को जोड़ने वाली ट्रेन्डलाइन प्लॉट कर सकते है और उसे **राइजिंग रेजिस्टन्स** के रूप में मान सकते है।

फॉलिंग सपोर्ट :

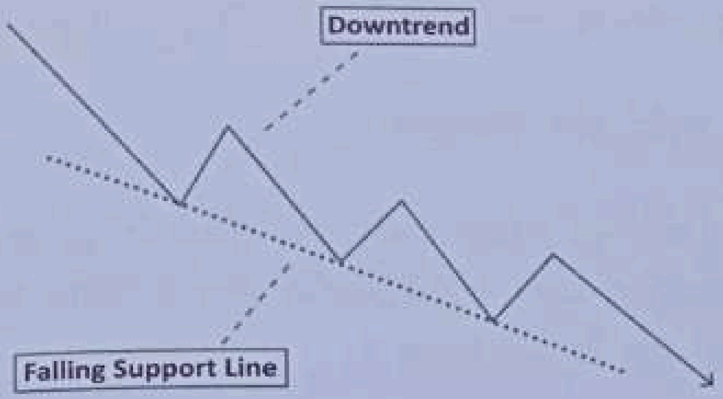

Falling Support

जब किसी भी सिक्योरिटी का भाव लोअर लो और लोअर हाय (LL-LH) के अनुसार घटता है तब नीचे की ओर ढलान वाले फॉर्मेशन के नीचले स्तरों को जोड़ने वाली ट्रेन्डलाइन प्लॉट कर सकते है और उसे **फॉलिंग सपोर्ट** के रूप में मान सकते है।

फॉलिंग रेजिस्टन्स :

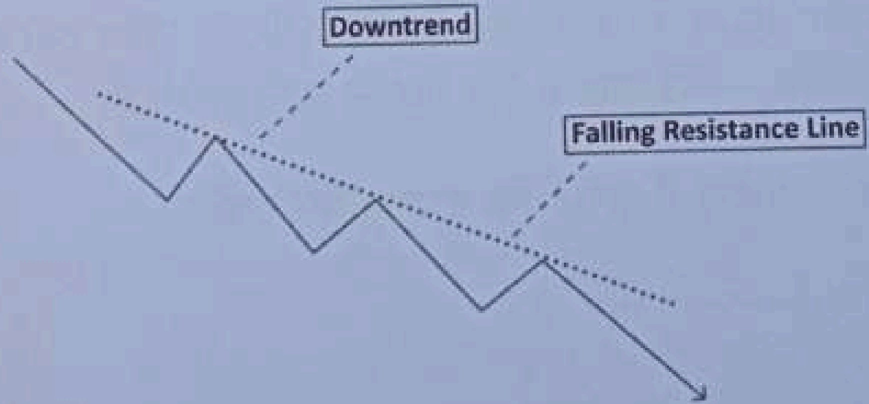

Falling Resistance

जब किसी भी सिक्योरिटी का भाव लोअर लो और लोअर हाय (LL-LH) के अनुसार घटता है तब नीचे की ओर ढलान वाले फॉर्मेशन के ऊपरी स्तरों को जोड़ने वाली ट्रेन्डलाइन प्लॉट कर सकते है और उसे **फॉलिंग रेजिस्टन्स** के रूप में मान सकते है।

अब तक मैंने ऐसे सपोर्ट और रेजिस्टन्स दर्शाए है, जो स्टॅटिक अर्थात स्थिर है। अब हम डायनामिक सपोर्ट और रेजिस्टन्स लेवल के बारे में जान लेते है जिन्हें मुविंग एवरेज का उपयोग करके प्लॉट किया जा सकता है।

डायनामिक सपोर्ट और रेजिस्टन्स :

जब मुविंग एवरेज का उपयोग सपोर्ट और रेजिस्टन्स की तरह किया जाता है तब वह डायानामिक सपोर्ट और रेजिस्टन्स बनते है क्योंकि मुविंग एवरेज नाम के अनुसार ही भाव के साथ चलता है।

डायनामिक सपोर्ट जब भाव बढ़ता है तब तैयार होता है तो डायनामिक रेजिस्टन्स भाव घटता है तब तैयार होता है।

कम कालावधी के लिए सामान्यत: २० दिनों के मुविंग एवरेज और ५० दिनों के मुविंग एवरेज का उपयोग होता है, तो मध्यम कालावधी के लिए १०० दिनों के मुविंग एवरेज का उपयोग होता है और दिर्घ कालावधी के लिए २०० दिनों के मुविंग एवरेज का उपयोग होता है।

जब किसी सिक्योरिटी का भाव बढ़ता है तब आपको नज़र आएगा कि भाव हमेशा मुविंग एवरेज से ऊपर होता है। वह कभी भी मुविंग एवरेज लाइन के नीचे नहीं जाता, सपोर्ट लेता है और फिर से बढ़ने लगता है।

उदाहरण : अपट्रेन्ड में सपोर्ट कि तरह मुविंग एवरेज।

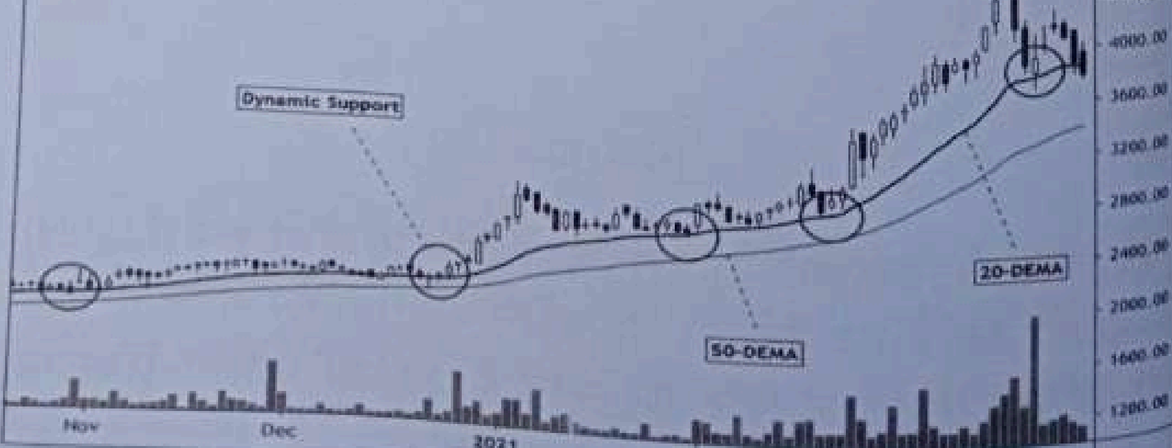

पिछले पन्ने पर वैभव ग्लोबल के अक्टूबर २०२० से मार्च २०२१ के डेटा का उपयोग करके दैनिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें भाव २० दिनों के मुविंग एवरेज (EMA) पर कईबार सपोर्ट लेता है।

किसी भी सिक्योरिटी का भाव घटता है तब आप देख सकते है कि भाव हमेशा मुविंग एवरेज के नीचे होता है। वह कभी भी मुविंग एवरेज लाइन के ऊपर नहीं जाता, रेजिस्टन्स का सामना करता है और फिर से घटने लगता है।

उदाहरण : डाउनट्रेन्ड में रेजिस्टन्स की तरह मुविंग एवरेज।

नीचे यस बैंक के मार्च २०१९ से नवंबर २०१९ के डेटा का उपयोग करके दैनिक चार्ट तैयार किया है, जिसमें भाव २० दिनों का मुविंग एवरेज (EMA) पर कईबार रेजिस्टन्स का सामना करता हुआ दिखाई दे रहा है।

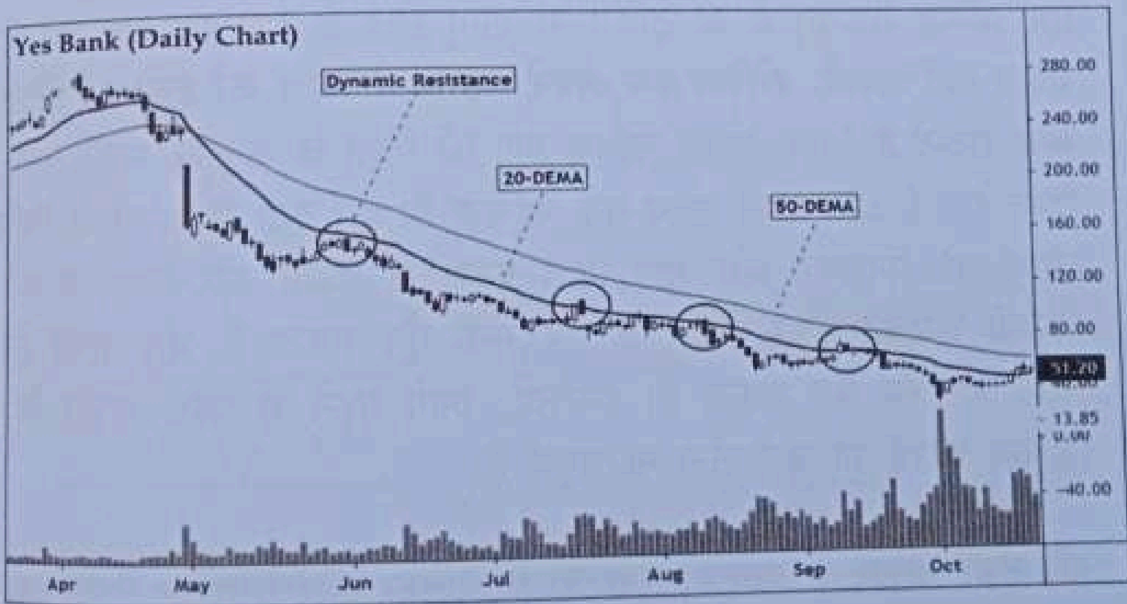

कई लोग सोच रहे होंगे कि मैंने चार्ट पर दो अलग-अलग मुविंग एवरेज का उपयोग क्यों किया है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि २० EMA आपको मोमेन्टम दर्शाता है और ५० EMA आपको दर्शाता है कि ट्रेन्ड कितना मजबूत है।

यहाँ मैंने आपको मुविंग एवरेज का कन्सेप्ट समझाने का प्रयास किया है। उसका ट्रेडिंग के लिए किस प्रकार से उपयोग करना चाहिए इसकी अधिक विस्तार से चर्चा हम इस किताब में आगे करने वाले है।

मार्केट सायकल

मार्केट सायकल यानी किसी भी सिक्योरिटी (स्टॉक, बॉन्ड, कमोडिटी, करन्सी आदि) के मामले में दो नवनीतम ऊपरी अथवा नीचले स्तर के बीच की कालावधी को दर्शाता है। सरल शब्दों में कहें तो वह किसी भी सिक्योरिटी के उतार-चढ़ाव के चरण को दर्शाता है।

शेअर्स हो या कोई सिक्योरिटी, उनके भाव में अक्सर उतार-चढ़ाव होता है। इसलिए उनमें ट्रेडिंग करने वाले ट्रेडर्स इस उतार-चढ़ाव के पैटर्न को जानने में रूचि रखते है। जिसके आधार पर यह अनुमान लगाना संभव है कि निकट भविष्य में भाव बढ़ेगा या घटेगा। इस प्राइस पैटर्न को मार्केट के चरण अर्थात **स्टेजेस ऑफ मार्केट** के नाम से भी जाना जाता है।

एक प्रसिद्ध कहावत है जो ट्रेडिंग पर लागू होती है - ***''हम हवा की दिशा बदल नहीं सकते, लेकिन हम अपने जहाज के पाल को हवा की दिशा में मोड़ सकते है''*** एक अच्छा नाविक हवा की दिशा के अनुसार अपनी नाव को दिशा देता है और अपने लक्ष्य तक पहुँचता है। इस तरह से बाज़ार के विभिन्न चरणों को समझकर और भाव किस प्रकार से बढ़ता और घटता है उसका अंदाजा लगाकर ट्रेडर ट्रेडिंग के नए मौके ढूँढ सकता है और अपने ट्रेडिंग रिस्क को कम कर सकता है। इसलिए, आगे बढ़ने से पहले बाज़ार के इन विभिन्न चरणों को जान लेना महत्वपूर्ण है।

यदि ट्रेडर बाज़ार के प्रत्येक चरण को पहचानकर और समझकर उसके अनुसार अपने ट्रेडिंग स्टाईल में बदलाव करता है तो वह निश्चित रूप से ट्रेडिंग में अच्छी कमाई कर सकता है।

मार्केट में ऐसा नज़र आता है कि ट्रेडर्स एक निश्चित अवधि में एक निश्चित तरह का बर्ताव करते है और उसके अनुसार ही वह ट्रेडिंग करते है। बाज़ार के महत्वपूर्ण चरणों के आधार पर यह व्यवहार पता चलता है। इसलिए, मार्केट के स्ट्रक्चर का अध्ययन कर, ज्यादातर लोग किस तरह से सिक्योरिटीज़ में ट्रेडिंग कर रहे है वह पता चलता है।

मार्केट सायकल के प्रमुख चरण :

मार्केट सायकल मुख्य रूप से चार चरणों से गुजरता है, वह इस प्रकार है :

- एक्युम्युलेशन फेज
- एडवान्सिंग फेज
- डिस्ट्रिब्युशन फेज
- डिक्लाइनिंग फेज

मार्केट के इन चारों चरणों को नीचे की आकृति में दर्शाया गया है, जिससे उन्हें बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। यह चरण संपूर्ण मार्केट, इन्डेक्स या किसी भी सिक्योरिटी को लागू होते है।

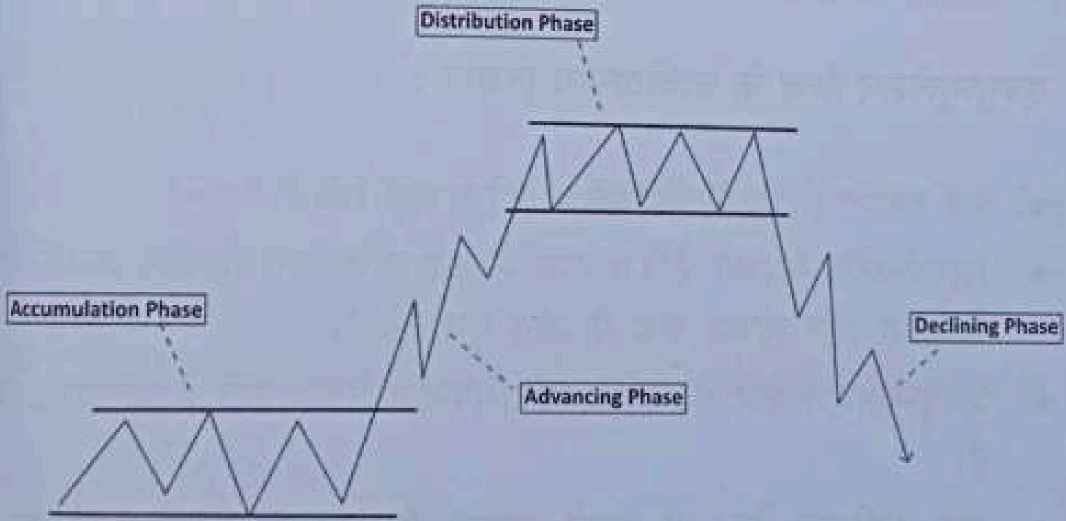

अब हम इन सभी चरणों को विस्तार से समझते है।

एक्युम्युलेशन फेज –

एक्युम्युलेशन फेज या स्टेज किसी भी मार्केट सायकल का सबसे पहला चरण होता है। यह चरण तब आता है जब सिक्योरिटी अपने पिछले डिक्लाइनिंग चरण को पूरा करने के बाद कन्सॉलिडेशन फेज से गुजरती है। इस चरण के दरम्यान लोग उन शेअर्स को तब एक्युम्युलेट करते जाते है जब वह एक निश्चित रेन्ज में ट्रेड करते है।

इस चरण को 'बेझिंग पीरियड' के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि वह डाउनट्रेन्ड के बाद और अपट्रेन्ड से पहले नज़र आता है।

इस चरण की महत्वपूर्ण बात यह है कि उसमें ट्रेडिंग का वॉल्यूम अधिक होता है, लेकिन भाव बढ़ता नहीं।

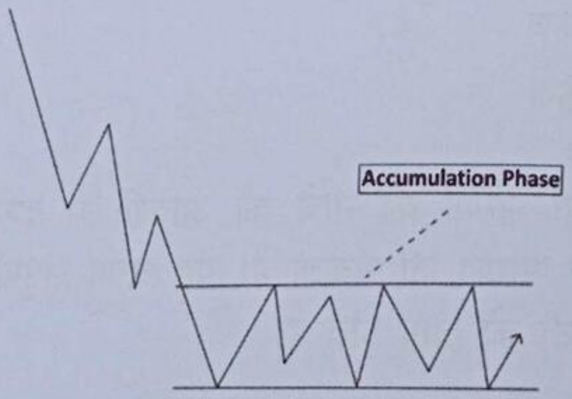

एक्युम्युलेशन फेज के उल्लेखनीय लक्षण :

- वह दर्शाता है कि सिक्योरिटी में स्ट्रेन्थ बढ़ रही है।
- सिक्योरिटी निश्चित ट्रेडिंग रेन्ज में ट्रेड होने लगी है और कन्सॉलिडेशन के अपर और लोअर बॅन्ड के बीच घूम रही है।
- एक्युम्युलेशन फेज में मार्केट पार्टिसिपेन्ट्स सिक्योरिटी में बुलिश होने लगे है।
- भाव निश्चित रेन्ज में घूमने लगता है और संकेत देता है कि अब सिक्योरिटी में बॉटम का निर्माण होने लगा है।
- यह चरण संकेत देता है कि खरीदार और विक्रेताओं में जोरदार लड़ाई चल रही है और अंत में खरीदारों की संख्या विक्रेताओं कि तुलना में अधिक हो जाती है।

उदाहरण : एक्युम्युलेशन फेज

अगले पन्ने पर मार्च २००९ से सितंबर २०११ के बीच डॉलर के मुकाबले रूपए का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया गया है, जिसमें एक्युम्युलेशन फेज का उदाहरण नज़र आता है।

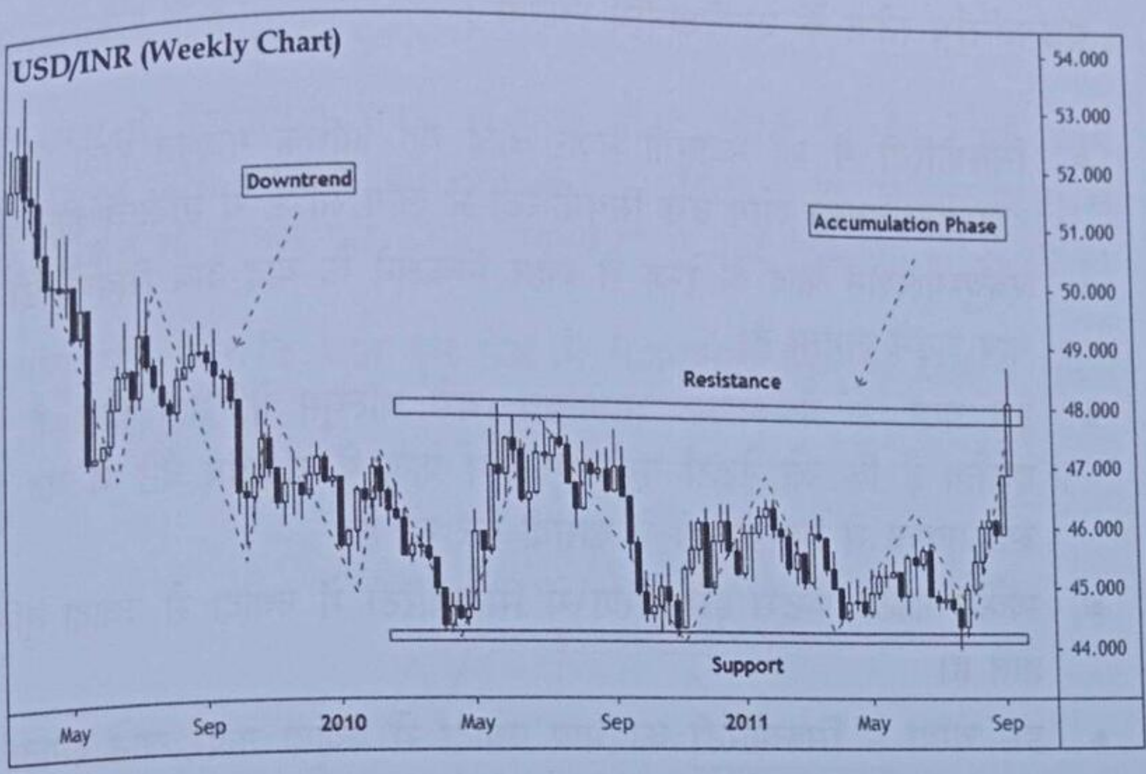

एडवान्सिंग फेज :

सिक्योरिटी एक्युम्युलेशन फेज से बाहर आने के बाद एडवान्सिंग फेज में प्रवेश करती है, जो तेजी का ट्रेन्ड अधिक मजबूत होने का संकेत देता है।

यह चरण दर्शाता है कि अब ज्यादातर लोग इस सिक्योरिटी में बुलीश है।

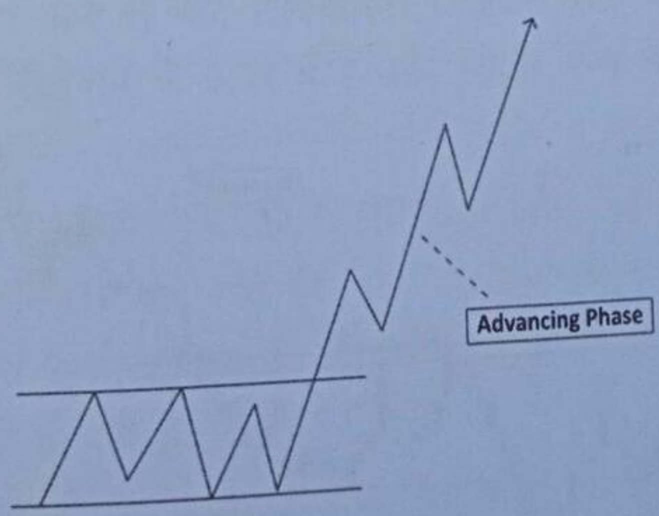

एडवान्सिंग स्टेज के उल्लेखनीय लक्षण :

- सिक्योरिटी में जो मजबूती नज़र आई वह अधिक मजबूत होती है और ज्यादा से ज्यादा लोग उस सिक्योरिटी में लाँग साइड में एक्टिव होते है।
- एक्युम्युलेशन फेज के रेन्ज से बाहर निकलने के बाद अब सिक्योरिटी का भाव बढ़ने लगता है।
- इस तरह का ब्रेकआऊट सामान्यतः बड़े वॉल्यूम के साथ होता है, जो दर्शाता है कि जो ट्रेडर्स एक्युम्युलेशन फेज में चूपचाप बैठे थे वह अब आक्रमकता से सिक्योरिटी में खरीदी कर रहें है।
- मार्केट पार्टिसिपेन्ट्स इस चरण में सिक्योरिटी में ज्यादा से ज्यादा बुलिश होते है।
- इस चरण में सिक्योरिटी का भाव ज्यादा से ज्यादा ऊपर जाने लगता है। जिससे हायर हाई और हायर लो पैटर्न तैयार होता है।

उदाहरण : एडवान्सिंग फेज

नीचे अप्रैल २००२ से फरवरी २००४ के बीच नास्दाक कम्पोजिट इन्डेक्स का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया गया है, जिसमें एडवान्सिंग फेज का उदाहरण नज़र आता है।

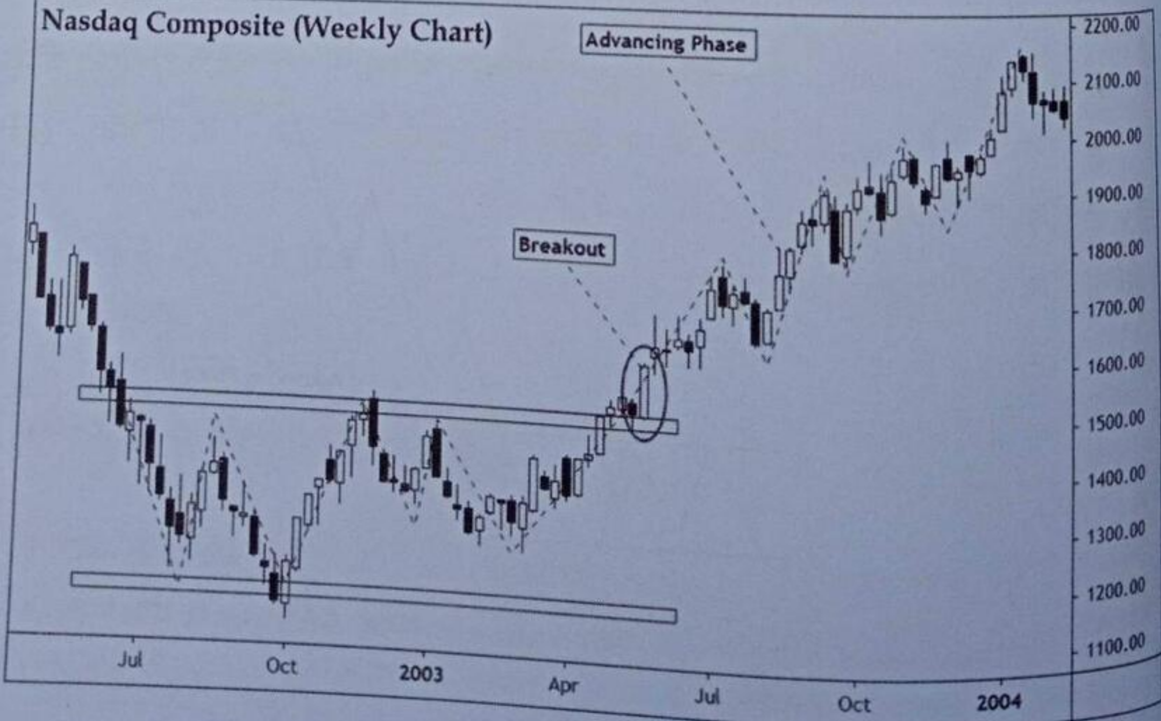

डिस्ट्रिब्युशन फेज –

इस चरण में सिक्योरिटी अपना मोमेन्टम गँवाने लगती है और ट्रेडर्स उसमें प्रॉफिट बुक करने लगते है और अंत में यह दर्शाता है कि खरीदार उसमें से बाहर निकल रहे है और कई ट्रेडर्स सिक्योरिटी में शॉर्ट पोजिशन भी ले रहे है।

एक्युम्युलेशन फेज कि तरह इस फेज में सिक्योरिटी निश्चित रेन्ज में घुमती हुई नज़र आती है।

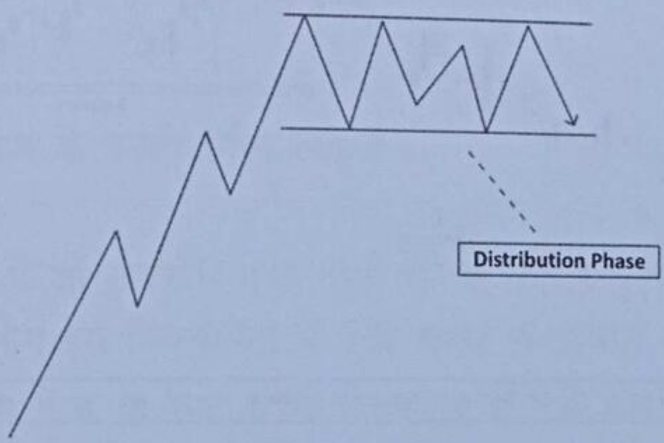

डिस्ट्रिब्युशन फेज के उल्लेखनीय लक्षण :

- पहले सिक्योरिटी में जो ताकत नज़र आ रही थी वह अब कमजोर पड़ने लगी है और लोग उसमें सतर्क होने लगे है।
- एडवान्सिंग स्टेज पूरा होने के बाद सिक्योरिटी निश्चित रेन्ज में ट्रेड होने लगती है और कन्सॉलिडेशन के अपर बॅन्ड और लोअर बॅन्ड के बीच घूम रही है।
- मार्केट पार्टिसिपेन्ट्स मुनाफा बुक करने लगते है और कई ट्रेडर्स उस सिक्योरिटी में शॉर्ट पोजिशन भी लेते है।
- भाव निश्चित रेन्ज में घूमने लगता है और संकेत देता है कि अब उसमें टॉप बनाने की तैयारी हो रही है।
- यह चरण संकेत देता है कि खरीदार और विक्रेताओं में जोरदार लड़ाई चल रही है और अंत में विक्रेताओं की संख्या खरीदारों से अधिक होती है।

उदाहरण : डिस्ट्रिब्युशन फेज

नीचे दिसंबर २०१६ से अक्टूबर २०१८ के बीच निफ्टी नेक्स्ट ५० इन्डेक्स का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें डिस्ट्रिब्युशन फेज का उदाहरण नज़र आता है।

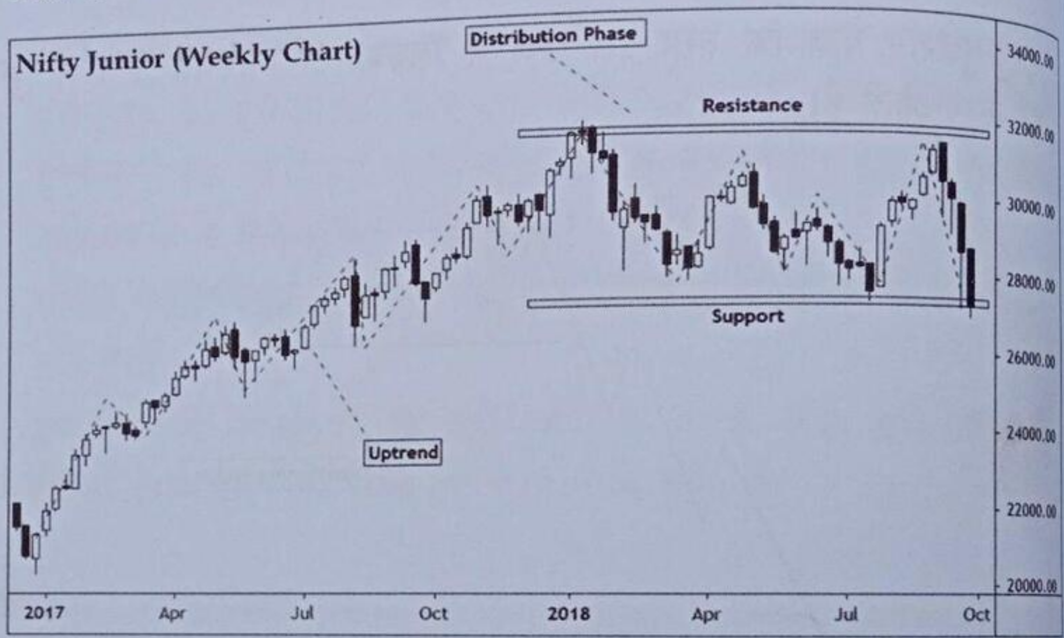

डिक्लाइनिंग फेज –

सिक्योरिटी डिस्ट्रिब्युशन फेज से बाहर निकलने के बाद डिक्लाइनिंग फेज में प्रवेश करती है, जो मंदी का ट्रेन्ड अधिक मजबूत होने का संकेत देता है। यह चरण दर्शाता है कि अब ज्यादा से ज्यादा लोग उस सिक्योरिटी के बारे में बेअरीश है।

मार्केट सायकल का यह अंतिम चरण है और ज्यादातर निवेशकों के लिए वह अनुकूल नहीं होता।

यह चरण रिवर्सल फेज के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इस चरण के दरम्यान जिन ट्रेडर्स ने पहले एक्युम्युलेशन फेज में खरीदी की अर्थात एन्ट्री ली थी वह इस चरण में एक्झिट लेने लगते है।

इस चरण की महत्वपूर्ण बात यह है कि भाव में गिरावट के साथ ट्रेडिंग वॉल्यूम में बढ़ोतरी नज़र आती है।

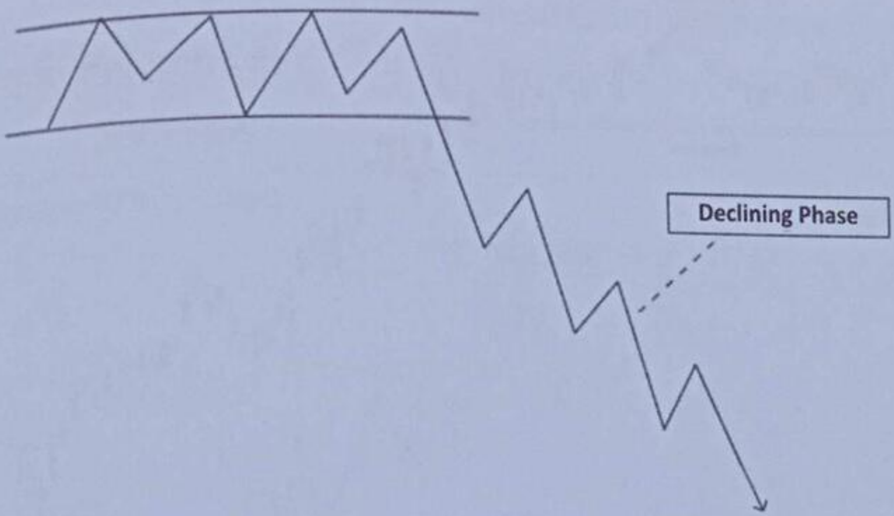

डिक्लाइनिंग फेज के उल्लेखनीय लक्षण :

- सिक्योरिटी में जो कमजोरी नज़र आई थी वह अधिक बढ़ती है और ज्यादा से ज्यादा लोग इस सिक्योरिटी में शॉर्ट साइड में एक्टिव होते है।
- डिस्ट्रिब्युशन फेज के रेन्ज में से ब्रेकडाउन होने के बाद अब सिक्योरिटी का भाव गिरने लगता है।
- सामान्यत: इस तरह का ब्रेकडाउन बड़े वॉल्यूम के साथ होता है, जो संकेत देता है कि जो ट्रेडर्स डिस्ट्रिब्युशन फेज के दरम्यान चुपचाप बैठे थे वह अब आक्रमक होकर बिक्री कर रहे है।
- इस चरण में मार्केट पार्टिसिपेन्ट्स सिक्योरिटी में ज्यादा से ज्यादा बेअरीश होते है।
- इस चरण में सिक्योरिटी का भाव लोअर लो और लोअर हाई बनाने लगता है।

उदाहरण : डिक्लाइनिंग फेज

नीचे सितंबर २०१८ से जनवरी २०१९ के बीच एप्पल इन्क. का दैनिक चार्ट दर्शाया गया है, जिसमें डिक्लाइनिंग फेज का उदाहरण नज़र आता है।

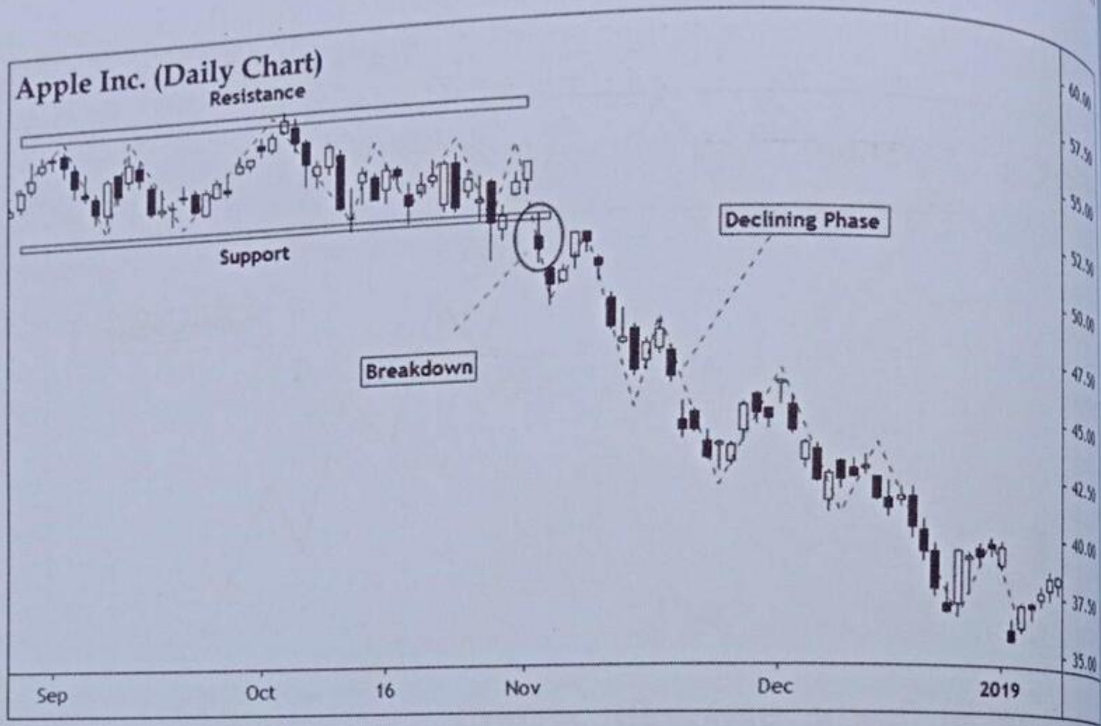

अब आप मार्केट सायकल के सभी चरणों को अच्छी तरह से समझ गए होंगे, इसलिए अब आपको चार्ट पर मार्केट सायकल के इन सभी चरणों को देखने का प्रयास करना चाहिए।

नीचे जे.के.लक्ष्मी सिमेन्ट का अप्रैल २०१६ से दिसंबर २०१६ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया गया है। इस कालावधी के दरम्यान आप मार्केट सायकल के चारों चरण - एक्युम्युलेशन, एडवान्सिंग, डिस्ट्रिब्युशन और डिक्लाइनिंग फेज को स्पष्ट रूप से देख सकते है।

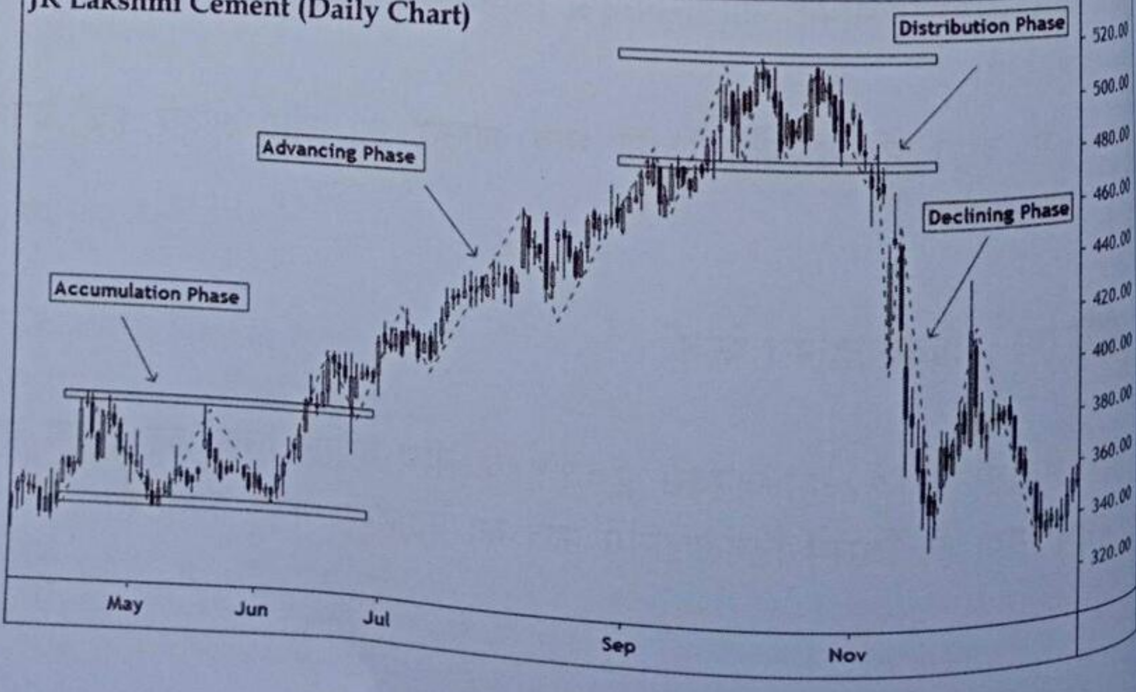

नीचे रामको सिस्टम का अक्टूबर २०११ से दिसंबर २०१३ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया गया है। आप उसमें भी मार्केट सायकल के चारों चरण को स्पष्ट रूप से देख सकते है।

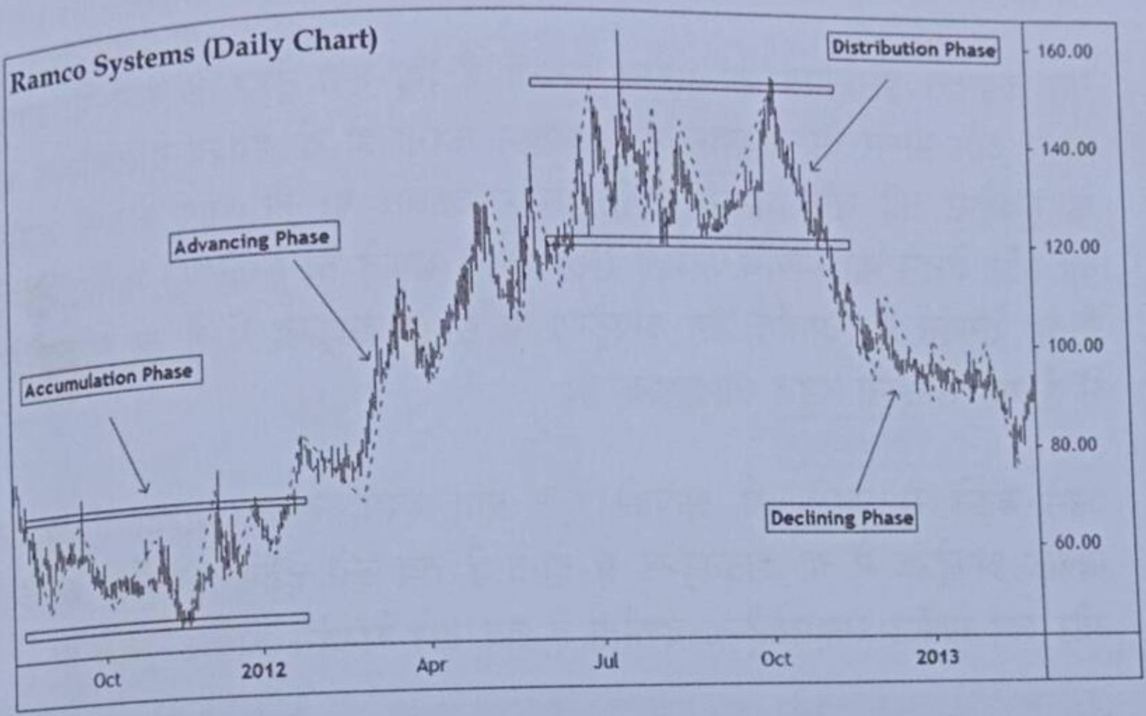

ट्रेन्डिंग और रेन्जिंग मार्केट

हम जब ट्रेन्डिंग के बारे में बात करते है, तो एक प्रसिद्ध कहावत हमारे ध्यान में आती है, **"ट्रेन्ड इज योर फ्रेन्ड"** अर्थात ट्रेन्ड आपका मित्र है।

यह कहावत इस बात का महत्व बताती है कि एक ट्रेडर के रूप में आपको बायर और सेलर के व्यवहार का अध्ययन करना हो तो हमेशा ऐतिहासिक भाव के मूवमेन्ट की जाँच करनी होगी। उसके आधार पर ही आप शेअर्स खरीदने का और बेचने का निर्णय अच्छी तरह से ले सकते है। इसलिए, मार्केट ट्रेन्डिंग है या रेन्जिंग है, अर्थात वह अपट्रेन्ड में है, डाउनट्रेन्ड में है या साइडवेट्रेन्ड में है यह समझना बहुत आवश्यक है।

आगे बढ़ने से पहले, मैं आपको एक बात स्पष्ट करना चाहता हूँ कि जब मार्केट अपट्रेन्ड में या डाउनट्रेन्ड में होता है तब उसे **ट्रेन्डिंग मार्केट** कहते है, और जब मार्केट साइडवेट्रेन्ड दर्शाता है तब उसे **रेन्जिंग मार्केट** कहते है।

ट्रेन्डिंग मार्केट का क्या मतलब है?

आमतौर पर जब भाव एक ही दिशा में जाता है (बढ़ता है या घटता है) तब मार्केट ट्रेन्डिंग है ऐसा कहा जाता है।

ट्रेन्डिंग मार्केट में साधारण करेक्शन या पुलबैक (रिट्रेसमेन्ट) नज़र आ सकता है लेकिन जब दीर्घ अवधि के एक व्यापक चित्र को देखते है तो नज़र आता है कि बाज़ार एक निश्चित दिशा में ही आगे बढ़ रहा है।

ट्रेन्डिंग मार्केट की पहचान करने के लिए कोई विशिष्ट समय सीमा नहीं होती। आप अपने ट्रेडिंग स्टाइल (यानी स्कैल्पिंग, इन्ट्राडे, स्विंग ट्रेन्डिंग, पोजिशनल ट्रेडिंग, शॉर्ट टर्म ट्रेडिंग, लाँग टर्म इन्वेस्टिंग, आदि) के अनुसार दैनिक (डेली), साप्ताहिक (वीकली), मासिक (मंथली) ऐसे किसी भी टाइम फ्रेम का उपयोग कर सकते है। हालाँकि, एक बात का हमेशा ध्यान रखें, ***आप जितनी अधिक कालावधी का चुनाव करोंगे, ट्रेन्ड भी उतने अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देगा।***

ट्रेन्डिंग मार्केट को स्पॉट करना आसान होता है।

जब किसी सिक्योरिटी का भाव लगातार हायर हाई और हायर लो बनाता है (HH-HL Structure) तब मार्केट का ट्रेन्ड तेजी की दिशा (अपट्रेन्ड) में है ऐसा कहा जाता है।

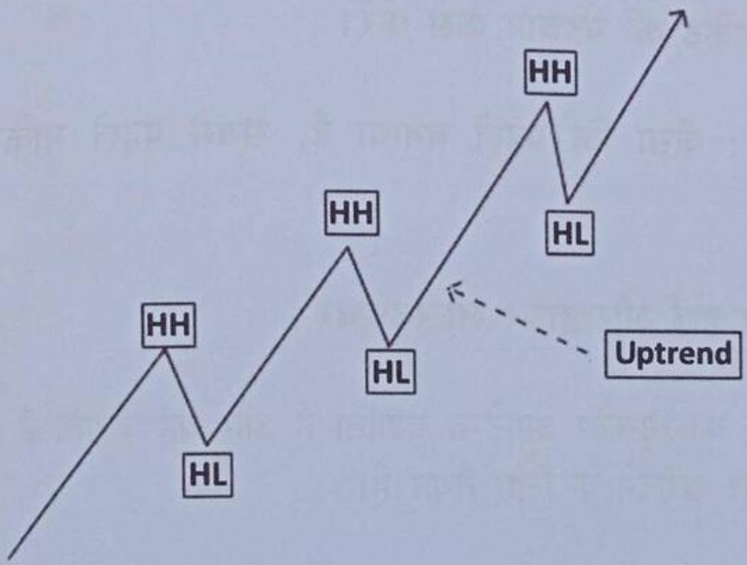

वैसे ही किसी सिक्योरिटी का भाव लगातार लोअर लो और लोअर हाई बनाता है (LL&LH Structure) तब मार्केट का ट्रेन्ड मंदी की दिशा (डाउनट्रेन्ड) में है ऐसा कहा जाता है।

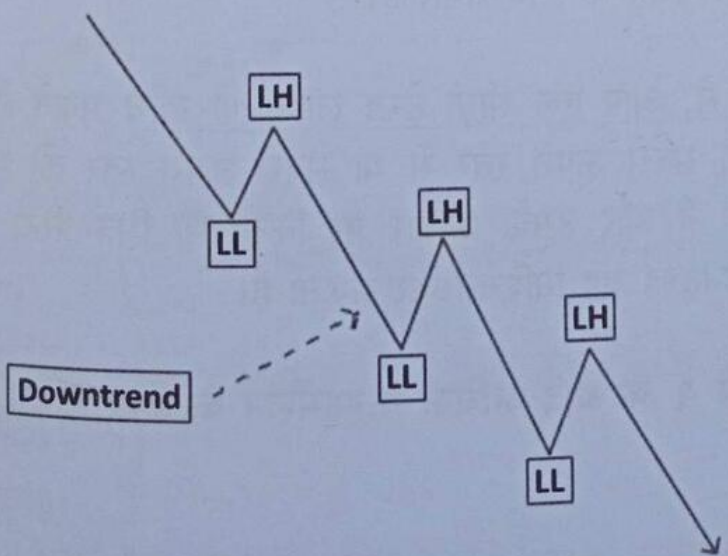

ट्रेन्डिंग मार्केट सामान्यत: यह दर्शाता है कि मार्केट पार्टिसिपेन्ट्स बुलीश (अपट्रेन्डिंग) या बेअरीश (डाउनट्रेन्डिंग) बने है, जो ऊपरवाले दोनों चार्ट से स्पष्ट होता है।

एक बात को हमेशा ध्यान में रखें कि मार्केट ३० प्रतिशत समय के लिए स्पष्ट ट्रेन्ड में होता है और ७० प्रतिशत समय के लिए रेन्ज बाऊन्ड होता है इसलिए हमारे लिए यह जानना बहुत जरुरी है कि मार्केट कब ट्रेन्डिंग और कब रेन्जिंग है।

ट्रेन्डिंग मार्केट की पहचान कैसे करें।

स्टेप १ : जैसा कि पहले बताया है, सबसे पहले मार्केट का स्ट्रक्चर देखें।

- **हायर हाई और हायर लो स्ट्रक्चर -**

इस प्रकार का स्ट्रक्चर अपट्रेन्ड दर्शाता है और वह बताता है कि लोग प्रत्येक गिरावट पर खरीदने के लिए तैयार है।

- **लोअर लो और लोअर हाई स्ट्रक्चर –**

इस प्रकार का स्ट्रक्चर डाउनट्रेन्ड दर्शाता है और वह बताता है कि लोग प्रत्येक बढ़त पर बेचने के लिए तैयार है।

वैकल्पिक रूप से, आप एक सीधी ट्रेन्ड लाइन भी खींच सकते है, जो सबसे नीचले स्तर को सबसे ऊपरी स्तर से या सबसे ऊपरी स्तर को सबसे नीचले स्तर से जोड़ती है और उसके आधार पर किसी भी सिक्योरिटी में अपट्रेन्ड शुरू है या डाउनट्रेन्ड यह निश्चित कर सकता है।

स्टेप २ : स्टेप १ के बाद अधिक कन्फर्मेशन के लिए मूविंग एवरेज को देखें।

- **२०० दिनों का मूविंग एवरेज (डीएमए) –**

मार्केट स्ट्रक्चर को देखने के बाद की स्टेप है २०० दिनों के मूविंग एवरेज (डीएमए) को देखना।

यदि सिक्योरिटी २०० दिनों के मूविंग एवरेज के ऊपर ट्रेड कर रही हो तो उसे बुलीश कहा जाता है, अर्थात वह अपट्रेन्ड में है ऐसा कहा जाता है। वैसे ही, यदि सिक्योरिटी २०० दिनों के मूविंग एवरेज के नीचे ट्रेड कर रही हो तो उसे बेअरीश कहा जाता है, अर्थात वह डाउनट्रेन्ड में है ऐसा कहा जाता है।

उदाहरण : २०० डीएमए के ऊपर ट्रेड करने वाली सिक्योरिटी (बुलीश)।

नीचे एफल इंडिया का जुलाई २०२० से अप्रैल २०२१ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है। यह स्टॉक २०० डीएमए के ऊपर ट्रेड कर रहा है, जो संकेत देता है कि उसका दिर्घावधी का ट्रेन्ड बुलीश है अर्थात वह अपट्रेन्ड में है।

उदाहरण : २०० डीएमए के नीचे ट्रेड करने वाली सिक्योरिटी (बेअरीश)।

अगले पन्ने पर आयटीसी का अगस्त २०१९ से अक्टूबर २०२० के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया गया है। यह स्टॉक २०० डीएमए के नीचे ट्रेड कर रहा है, जो संकेत देता है कि उसका दिर्घावधी का ट्रेन्ड बेअरीश है अर्थात वह डाउनट्रेन्ड में है।

हमेशा याद रखें कि हम २०० डीएमए का उपयोग सिर्फ दिर्घावधी के ट्रेन्ड को निश्चित करने के एक मापदंड के रूप में उपयोग कर रहे है।

ट्रेन्डिंग मार्केट में ट्रेड कैसे करें –

ट्रेन्डिंग मार्केट अपट्रेन्ड में हो तो सपोर्ट लेवल पर खरीदें और रेजिस्टन्स लेवल पर बेचें।

ट्रेन्डिंग मार्केट डाउनट्रेन्ड में हो तो रेजिस्टन्स लेवल पर बेचें और सपोर्ट लेवल पर वापस खरीदें।

ट्रेन्डिंग मार्केट में हमेशा ट्रेन्ड के साथ बनें रहने की सलाह दी जाती है। इसलिए ट्रेन्ड के खिलाफ जाकर कभी भी ट्रेड न करें। खासकर जब आप बाज़ार में नए हो तब ट्रेन्ड के खिलाफ जाने के बारे में सोचें भी नहीं।

इसलिए, ऐसा कभी भी न करें –

ट्रेन्डिंग मार्केट अपट्रेन्ड में हो अर्थात बाज़ार बढ़ रहा हो तो उस समय रेजिस्टन्स पर बेचने और सपोर्ट लेवल पर वापस खरीदने की गलती कभी भी न करें।

ट्रेन्डिंग मार्केट डाउनट्रेन्ड में हो अर्थात बाज़ार गिर रहा हो तो उस समय सपोर्ट लेवल पर खरीदने और बाद में रेजिस्टन्स लेवल पर बेचने की गलती न करें।

रेन्जिंग मार्केट क्या है?

रेन्जिंग मार्केट एक ऐसी स्थिति है जिसमें भाव निश्चित रेन्ज में कन्सॉलिडेट होता है। इस प्रकार की मार्केट स्थिति में भाव कोई एक निश्चित सपोर्ट लेवल और एक निश्चित रेजिस्टन्स लेवल के बीच घूमते हुए नज़र आता है। उसे कन्सॉलिडेशन, कन्झेशन फेज, रेन्ज बाऊन्ड, चोपी, साइडवेज या फ्लैट मार्केट इन जैसे शब्दों से भी जाना जाता है।

रेजिस्टन्स लेवल भाव को ज्यादा बढ़ने से रोकता है और सपोर्ट लेवल भाव को ज्यादा नीचे जाने से रोकता है। इससे शेअर्स या सिक्योरिटी का भाव एक सीमित रेन्ज में अटकता है।

रेन्जिंग मार्केट का महत्व यह है कि खरीदार और विक्रेता संतुलित प्रमाण में होते है। रेन्जिंग मार्केट ट्रेन्डिंग मार्केट के बिल्कुल विपरीत है।

रेन्जिंग मार्केट की पहचान कैसे करें?

स्टेप १ : जैसा की पहले बताया है, सबसे पहले मार्केट का स्ट्रक्चर देखें।

भाव के मूवमेन्ट के आधार पर कौन से लेवल से भाव घट रहा है और कौन से लेवल से भाव फिर से बढ़ रहा है यह देखकर चार्ट पर सपोर्ट और रेजिस्टन्स लाइन या झोन को निश्चित करें।

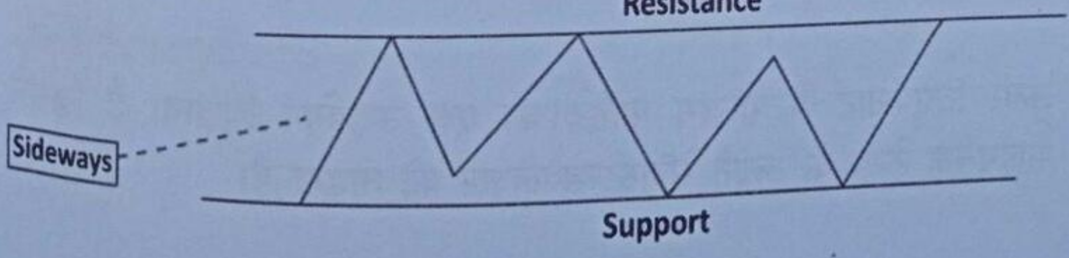

स्टेप २ : स्टेप १ के बाद अधिक कन्फर्मेशन के लिए वॉल्यूम को देखीए।

मार्केट स्ट्रक्चर को देखने के बाद का स्टेप है वॉल्यूम पर ध्यान देना। अपट्रेन्ड या डाउनट्रेन्ड के दौरान वॉल्यूम बढ़ा हुआ होता है लेकिन कन्सॉलिडेशन फेज में किसी भी सिक्योरिटी में वॉल्यूम घटते हुए नज़र आता है।

रेन्जिंग मार्केट में भाव जब सपोर्ट लेवल को तोड़ता है तब गिरावट आगे बढ़ती है और रेजिस्टन्स लेवल को तोड़ता है तब भाव बढ़ने लगता है।

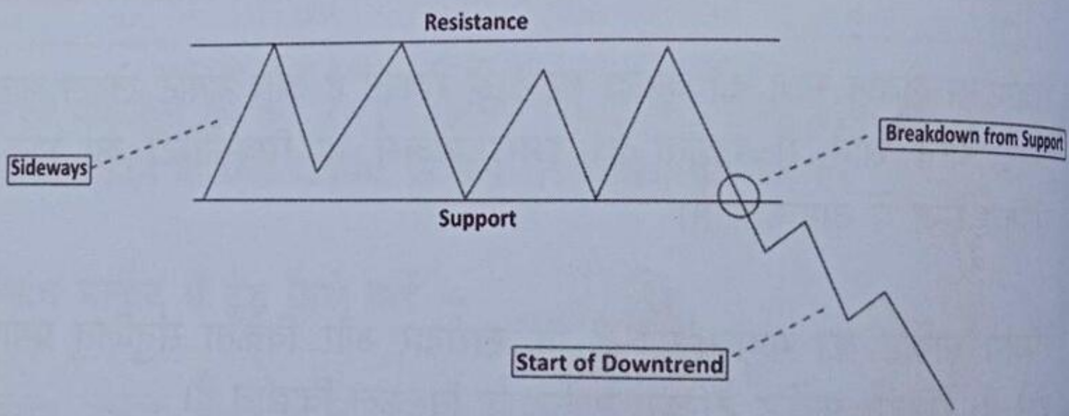

ऊपर दिए चार्ट में रेन्जिंग मार्केट का एक उदाहरण दिखाया है जिसमें भाव साइडवेज ट्रेन्ड के नीचले सपोर्ट लेवल को तोड़ता है।

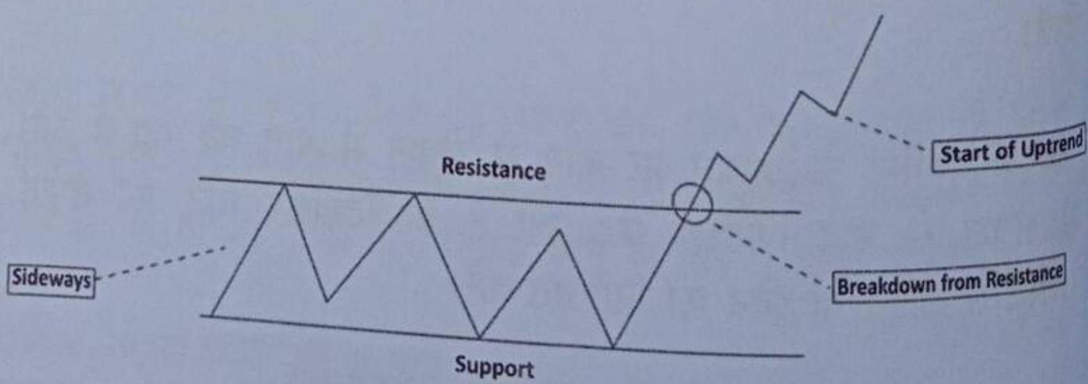

ऊपर दिए चार्ट में रेन्जिंग मार्केट का एक उदाहरण दिखाया है जिसमें भाव साइडवेज ट्रेन्ड के ऊपरी रेजिस्टन्स लेवल को तोड़ता है।

७० प्रतिशत समय के लिए मार्केट रेन्जिंग होता है। क्योंकि मार्केट लंबी अवधि के अपट्रेन्ड या लंबी अवधि के डाउनट्रेन्ड के दरम्यान रेन्ज में नज़र आता है अथवा जब ट्रेन्ड रिवर्सल होता है, उससे पहले रेन्ज में नज़र आता है।

मैंने इस बात को समझाने के लिए यहाँ पर कुछ उदाहरण दिए है।

उदाहरण १ : अपट्रेन्ड के दरम्यान रेन्जिंग मार्केट

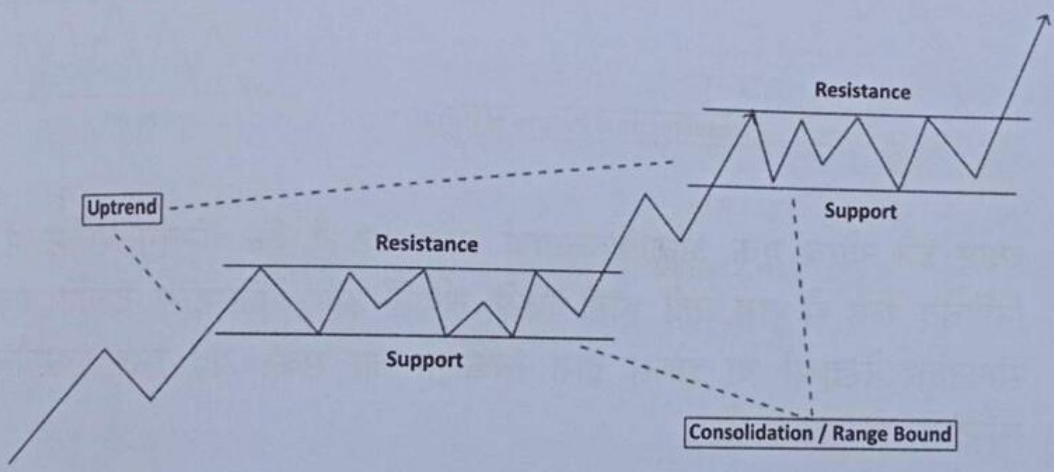

उदाहरण २ : डाउनट्रेन्ड के दरम्यान रेन्जिंग मार्केट।

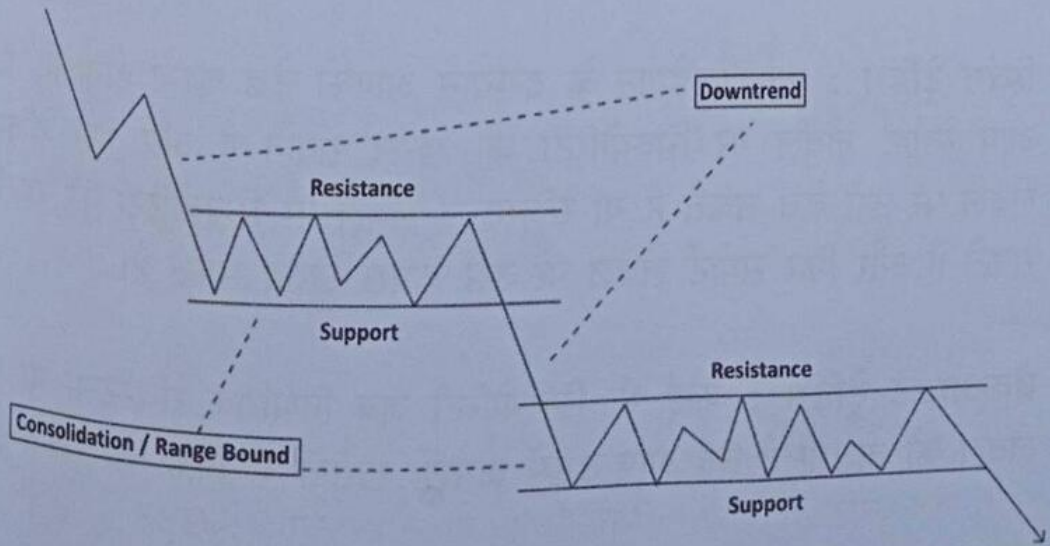

उदाहरण ३ : अपट्रेन्ड के टॉप और डाउनट्रेन्ड के बॉटम के बीच में।

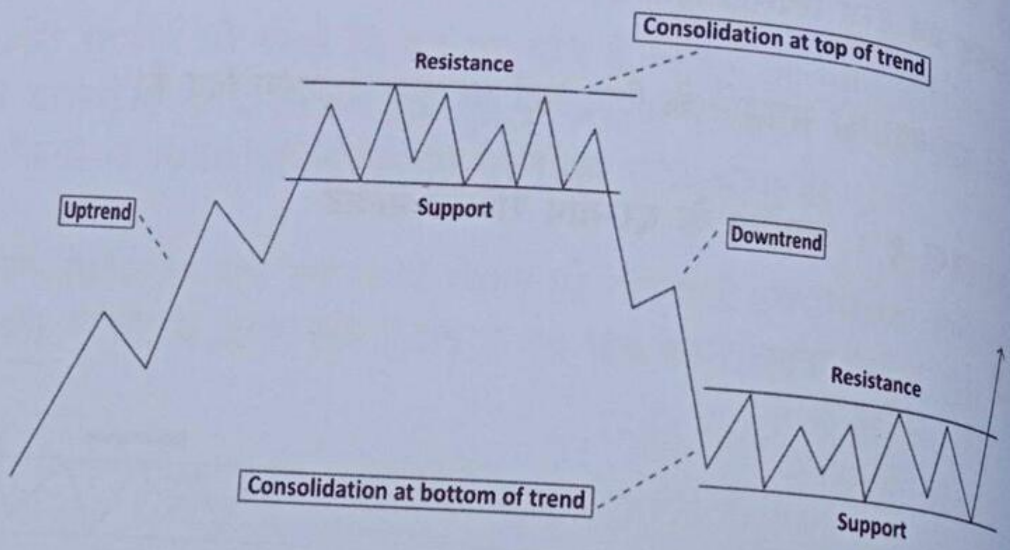

ध्यान देने योग्य एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि रेन्जिंग मार्केट में रेन्ज निश्चित रूप से तय नहीं होती जिसे सपोर्ट और रेजिस्टन्स दर्शाने वाली दो समानांतर रेखाओं या झोन्स द्वारा निकाला जा सके। यह रेन्ज एक्सपैन्ड या कॉन्ट्रॅक्ट हो सकती है।

रेन्जिंग मार्केट में ट्रेड कैसे करें -

रेन्जिंग मार्केट में ट्रेडिंग के लिए दो संभावनाएँ होती है –

स्विंग ट्रेडिंग : कन्सॉलिडेशन के दरम्यान आपको ट्रेड करना होता है, जिसमें आप सपोर्ट लेवल पर सिक्योरिटी को खरीद सकते है और फिर रेजिस्टन्स लेवल पर उसे बेच सकते है या रेजिस्टन्स लेवल पर सिक्योरिटी को पहले बेच सकते है और फिर सपोर्ट लेवल पर उसे वापस खरीद सकते है।

ब्रेकआऊट ट्रेडिंग : कोई भी सिक्योरिटी जब निर्णायक रेजिस्टन्स या सपोर्ट लेवल को तोड़ती है तब आप उसमें क्रमशः खरीदी या बिक्री कर सकते है।

कैन्डलस्टिक पैटर्न्स

कैन्डलस्टिक चार्ट का उपयोग १७ वीं शताब्दी में चावल के व्यापारीयों द्वारा जापान में किया जाता था। आज दुनिया भर के ट्रेडर्स और इन्वेस्टर्स सिक्योरिटीज़ में ट्रेडिंग के लिए इन पैटर्न्स का उपयोग करते है।

यदि आपने हाल ही में ट्रेडिंग शुरू की है तो सबसे पहले कैन्डलस्टिक चार्ट का किस प्रकार से उपयोग होता है, यह सीखना जरूरी है।

कैन्डलस्टिक, टेक्निकल एनालिसिस में प्राइस चार्ट का एक प्रकार है, जो किसी भी सिक्योरिटी के निश्चित कालावधी के दरम्यान खुला भाव, सबसे ऊपरी भाव, सबसे निचला भाव और बंद भाव को दर्शाता है। वह मार्केट पार्टिसिपेन्ट्स के वर्तमान और भूतकाल के व्यवहार का संकेत देता है। इसलिए दुनिया भर के अधिकांश ट्रेडर्स उसका उपयोग करते है।

नीचे कैन्डलस्टिक चार्ट दर्शाया गया है, जिसमें श्रेणीबद्ध कैन्डल्स है। यह प्रत्येक कैन्डल, प्रत्येक ट्रेडिंग कालावधी के ट्रेडिंग पैटर्न को दर्शाती है, जो एक दिन, एक सप्ताह या एक महिने की कालावधी हो सकती है।

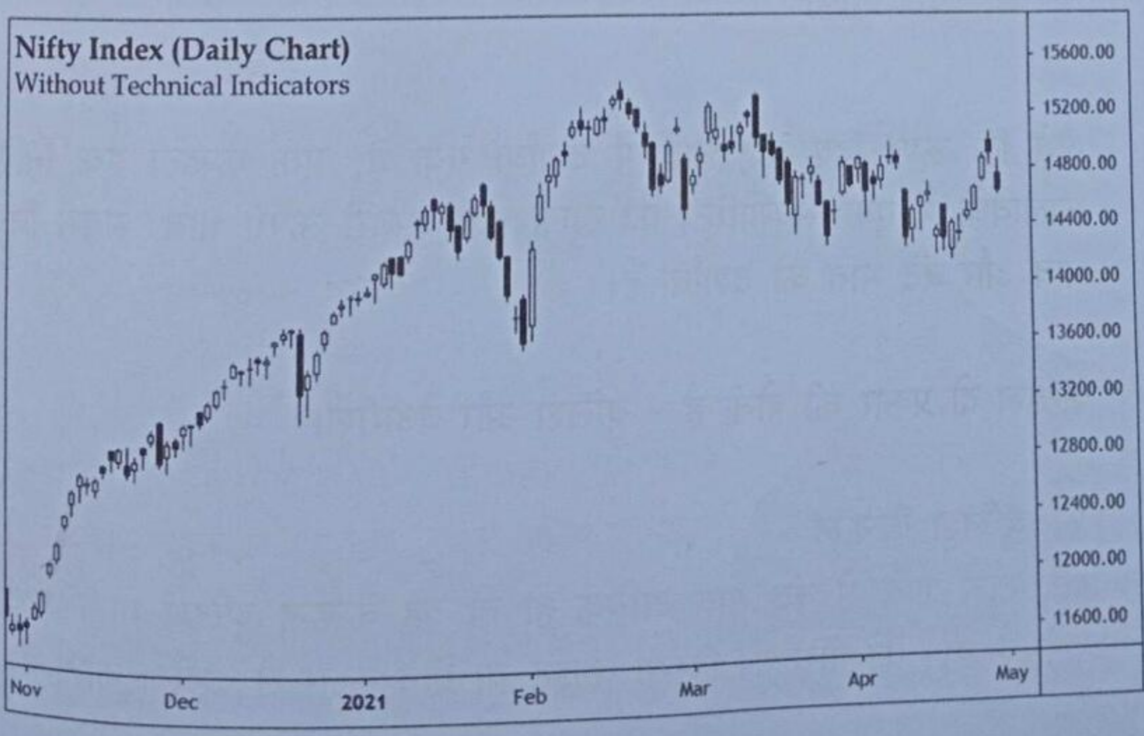

सिंगल कैन्डल से तैयार हुए पैटर्न या निश्चित सिक्वन्स में दो या उससे अधिक कैन्डल्स के ग्रुप से तैयार हुए पैटर्न को कैन्डलस्टिक पैटर्न कहते है। यह पैटर्न ट्रेडर को सिक्योरिटी के वर्तमान और भूतकाल के प्राइस मूवमेन्ट का अभ्यास करने में मदद करते है। उनके द्वारा ट्रेन्ड रिवर्सल या ट्रेन्ड कन्टिन्युएशन का अंदाजा मिलता है। इसलिए ट्रेडर्स ट्रेडिंग के अवसर प्राप्त करने के लिए इन कैन्डलस्टिक पैटर्न का व्यापक रूप से उपयोग करते है।

कैन्डलस्टिक पैटर्न से पता चलता है कि बायर और सेलर क्या कर रहे है और इसलिए उनका अभ्यास करना जरूरी है।

हम आगे बढ़ने से पहले, बेसीक कैन्डल फॉर्मेशन को जान लेते है :

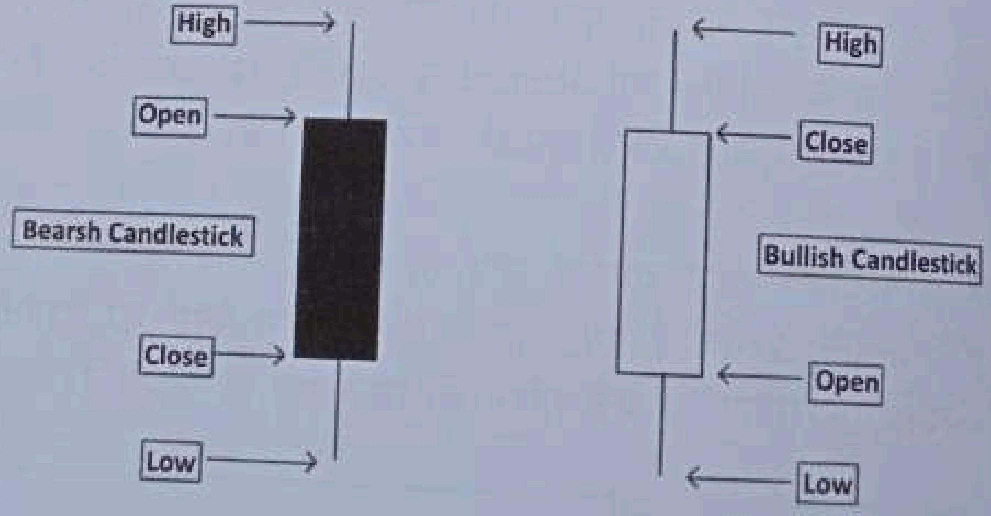

जैसे कि ऊपर दिए गए चार्ट में दर्शाया गया है, एक कैन्डल एक निश्चित कालावधी में एक सिक्योरिटी का खुला भाव, सबसे ऊपरी भाव, सबसे निचला भाव और बंद भाव को दर्शाता है।

कैन्डल दो प्रकार की होती है - बुलिश और बेअरीश।

१. बुलिश कैन्डल -

यदि खुले भाव से बंद भाव अधिक हो तो वह कैन्डल बुलिश मानी जाती है। ऐसी कैन्डल का बीच का हिस्सा व्हाईट या ग्रीन कलर से दर्शाया जाता है।

यह कैन्डल पॉझिटिव सेन्टिमेन्ट को दर्शाती है और संकेत देती है कि निकट भविष्य में सिक्योरिटी के भाव में अधिक बढ़त होने की संभावना है।

२. बेअरीश कैन्डल -

यदि खुले भाव से बंद भाव कम हो तो वह कैन्डल बेअरीश मानी जाती है। ऐसी कैन्डल का बीच का हिस्सा ब्लॅक या रेड कलर से दर्शाया जाता है।

यह कैन्डल नेगेटिव सेन्टिमेन्ट को दर्शाती है और संकेत देती है कि निकट भविष्य में सिक्योरिटी के भाव में अधिक घट होने की संभावना है।

जैसे कि नीचे दिए चार्ट में दिखाया गया है, प्रत्येक कैन्डल के तीन भाग है - अपर शैडो, रियल बॉडी और लोअर शैडो।

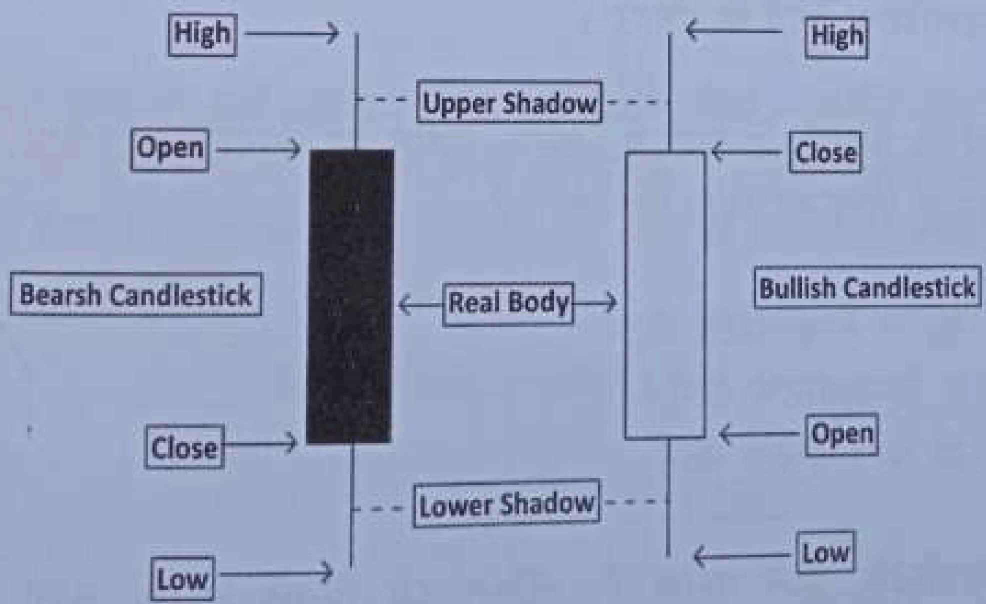

- **अपर शैडो –**

अपर शैडो यह दिन का सबसे ऊपरी भाव और बंद भाव (बुलिश कैन्डल के लिए) अथवा सबसे ऊपरी भाव और खुले भाव (बेअरीश कैन्डल के लिए) के बीच की वर्टिकल लाइन है।

- **बॉडी -**

यह कैन्डल का व्यापक हिस्सा होता है, जो खुले और बंद भाव के बीच का फर्क दर्शाता है। यदि खुला भाव बंद भाव के नीचे हो तो वह बुलिश कैन्डल होती है, जिसकी रियल बॉडी व्हाईट या ग्रीन कलर से भरी होती है। यदि बंद भाव खुले भाव से नीचे हो तो वह बेअरीश कैन्डल होती है, जिसकी रियल बॉडी ब्लॅक या रेड कलर से भरी होती है।

- **लोअर शैडो –**

लोअर शैडो यह दिन का सबसे निचला भाव और खुले भाव (बुलिश कैन्डल के लिए) अथवा सबसे निचला भाव और बंद भाव (बेअरीश कैन्डल के लिए) के बीच की वर्टिकल लाइन है।

कैन्डलस्टिक पैटर्न के प्रकार :

पैटर्न में कितनी कैन्डल्स है, उसके आधार पर कैन्डलस्टिक पैटर्न को तीन प्रकार में विभाजित किया जा सकता है –

१. सिंगल कैन्डलस्टिक पैटर्न
२. टु कैन्डलस्टिक पैटर्न
३. थ्री कैन्डलस्टिक पैटर्न

कैन्डलस्टिक पैटर्न अनेक है, लेकिन इस किताब में, मैं सबसे लोकप्रिय कैन्डलस्टिक पैटर्न के बारे में बताने वाला हूँ जो ज्यादा निश्चित परिणाम देते है और चार्ट पर अक्सर दिखाई देते है।

सिंगल कैन्डलस्टिक पैटर्न्स -

जैसे कि नाम से पता चलता है, ऐसे पैटर्न्स एक कैन्डल द्वारा तैयार होते है।

लोकप्रिय सिंगल कैन्डलस्टिक पैटर्न्स -

- बुलिश मारूबोजू
- बेअरीश मारूबोजू
- हैमर
- हैंगिंग मैन
- इन्वर्टेड हैमर
- शूटिंग स्टार
- डॉजी

बुलिश मारूबोजू –

बुलिश मारूबोजू यह सिंगल कैन्डलस्टिक पैटर्न है जिसका टेक्निकल एनालिसिस में बुलिशनेस अर्थात तेजी का अनुमान लगाने के लिए उपयोग होता है।

मारूबोजू शब्द का अर्थ जापनीज भाषा में 'गंजापन' होता है अर्थात बाल रहित। बुलिश मारूबोजू मूल रूप से एक लंबी व्हाईट या ग्रीन बुलिश कैन्डल होती है जिसके ऊपर या नीचे की दिशा में शैडो नहीं होती या फिर न के बराबर होती है।

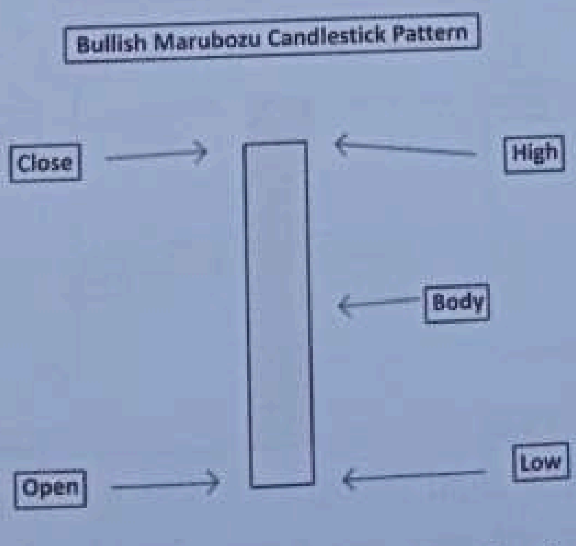

जब निचला भाव लगभग खुले भाव जितना होता है और ऊपरी भाव लगभग बंद भाव जितना होता है तब यह कैन्डल तैयार होती है।

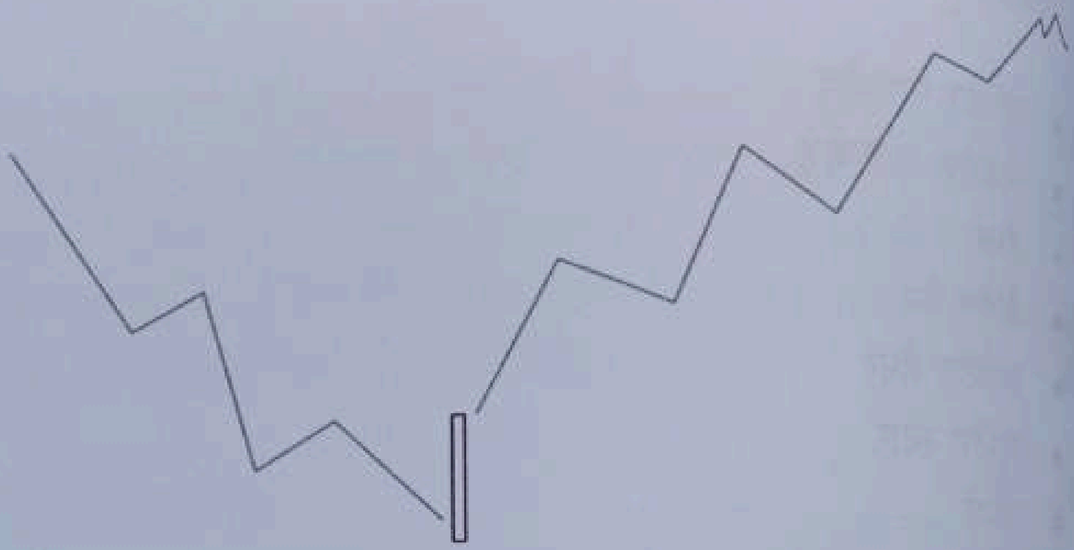

बेअरीश मारूबोजू पैटर्न -

बेअरीश मारूबोजू यह सिंगल कैन्डलस्टिक पैटर्न है जिसका टेक्निकल एनालिसिस में बेअरीशनेस अर्थात मंदी का अनुमान लगाने के लिए उपयोग होता है।

बेअरीश मारूबोजू मूल रूप से एक लंबी ब्लॅक या रेड कलर की बेअरीश कैन्डल होती है जिसके नीचे या ऊपर की दिशा में शैडो नहीं होती या फिर न के बराबर होती है।

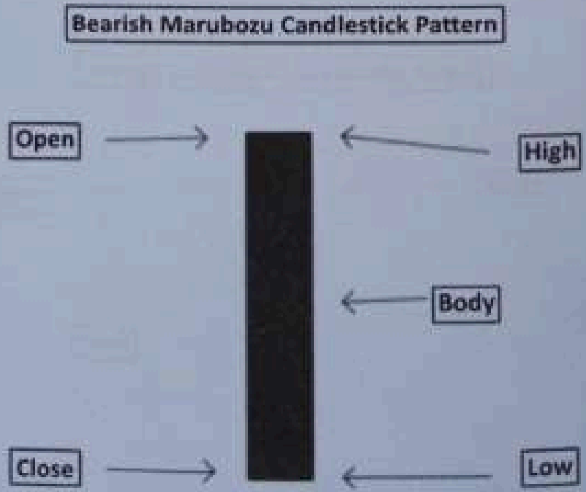

जब ऊपरी भाव लगभग खुले भाव जितना होता है और निचला भाव लगभग बंद भाव जितना होता है तब यह कैन्डल तैयार होती है। इस कैन्डल को मंदी का मजबूत संकेत माना जाता है।

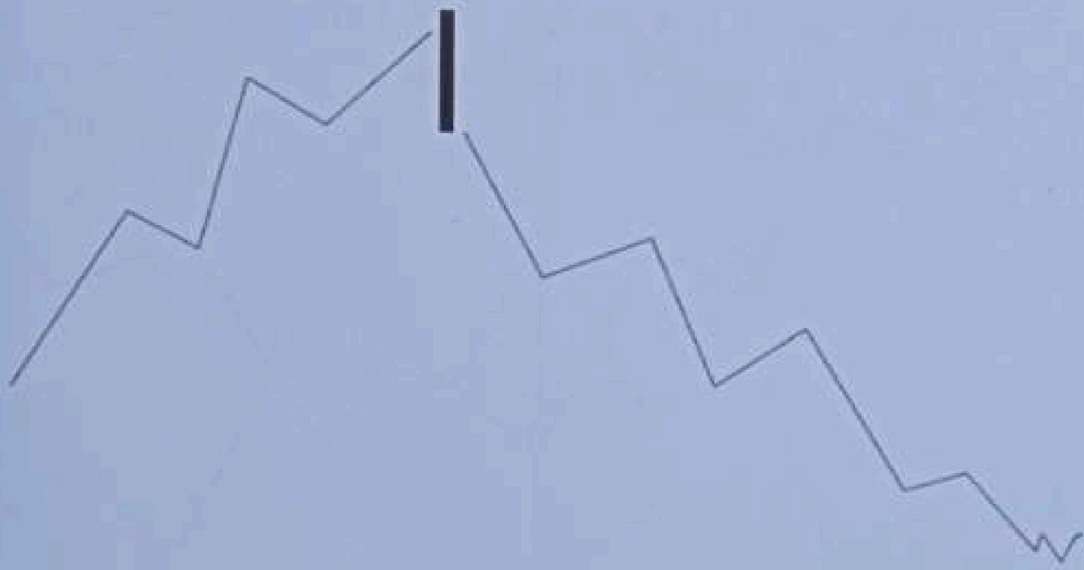

हैमर पैटर्न -

इस कैन्डलस्टिक पैटर्न में ऐसी कैन्डल तैयार होती है जिसकी स्मॉल बॉडी होती है और ऊपर की दिशा में छोटी शैडो होती है या शैडो नहीं होती और नीचे की दिशा में लंबी शैडो होती है। यह कैन्डल डाउनट्रेन्ड पूर्ण हो रहा होता है तब तैयार होती है। यह एक बुलिश रिवर्सल कैन्डलस्टिक पैटर्न है।

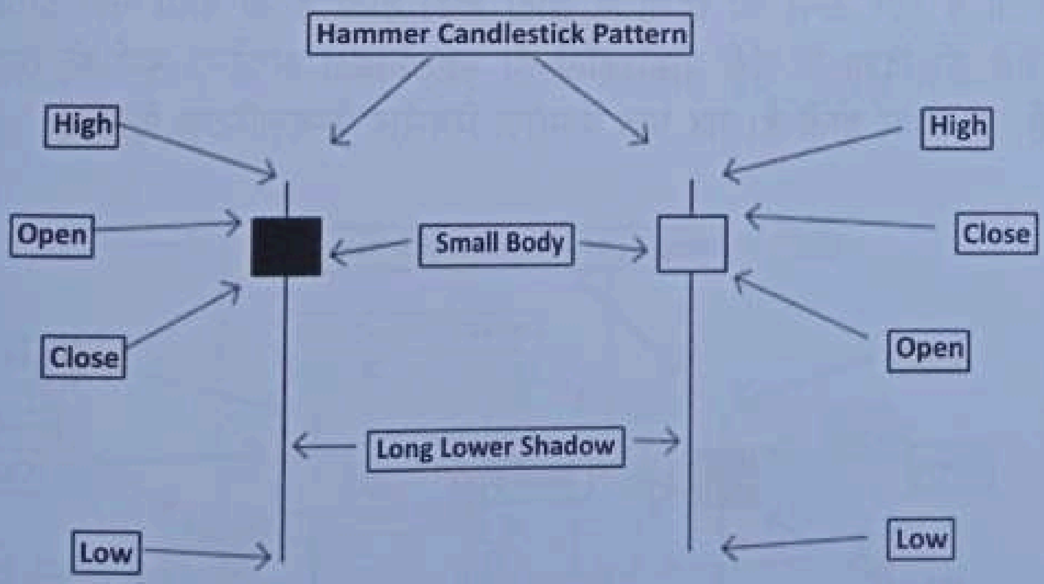

इस पैटर्न में आमतौर पर नीचे की दिशा की शैडो रियल बॉडी के साइज से कम से कम दुगनी होनी चाहिए। रियल बॉडी का कलर रेड या ग्रीन हो सकता है। लेकिन ग्रीन रियल बॉडी के साथ तैयार हुआ हैमर अधिक मजबूत बुलिश सिग्नल देता है।

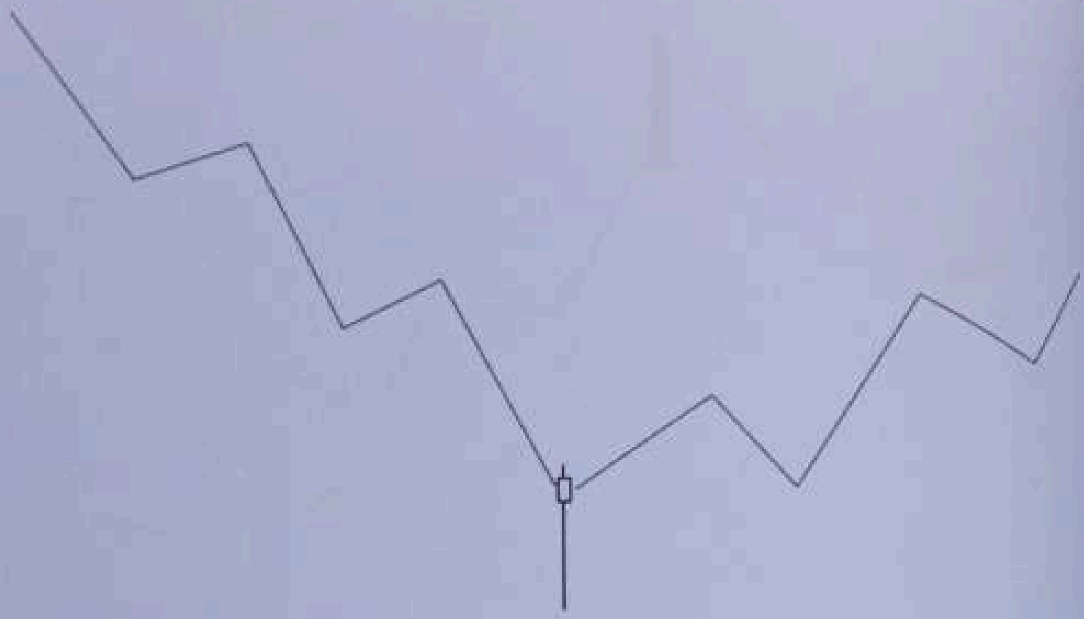

यह पैटर्न संभावित अपसाइड रिवर्सल के वॉर्निंग सिग्नल की तरह कार्य करता है।

हैंगिंग मैन –

इस कैन्डलस्टिक पैटर्न में ऐसी कैन्डल तैयार होती है जिसकी स्मॉल बॉडी होती है और ऊपर की दिशा में छोटी शैडो होती है या शैडो नहीं होती और नीचे की दिशा में लंबी शैडो होती है। यह कैन्डल अपट्रेन्ड पूर्ण हो रहा होता है तब तैयार होती है। यह एक बेअरीश रिवर्सल कैन्डलस्टिक पैटर्न है।

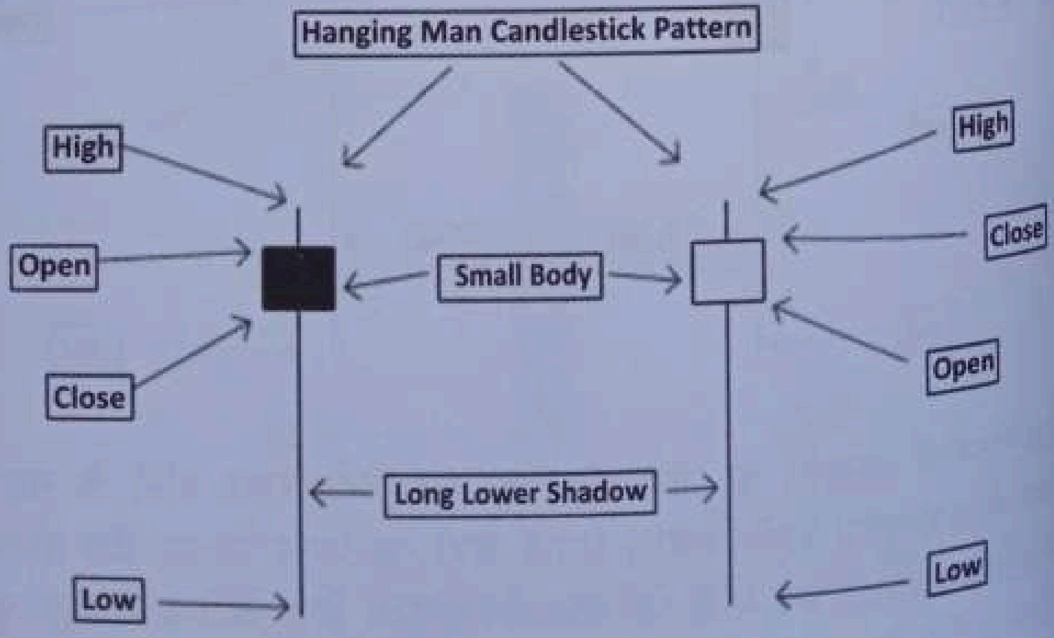

इस पैटर्न में आमतौर पर नीचे की दिशा की शैडो रियल बॉडी के साइज से कम से कम दुगनी होनी चाहिए। रियल बॉडी का कलर रेड या ग्रीन हो सकता है। लेकिन रेड रियल बॉडी के साथ तैयार हुआ हैंगिंग मैन अधिक मजबूत बेअरीश सिग्नल देता है।

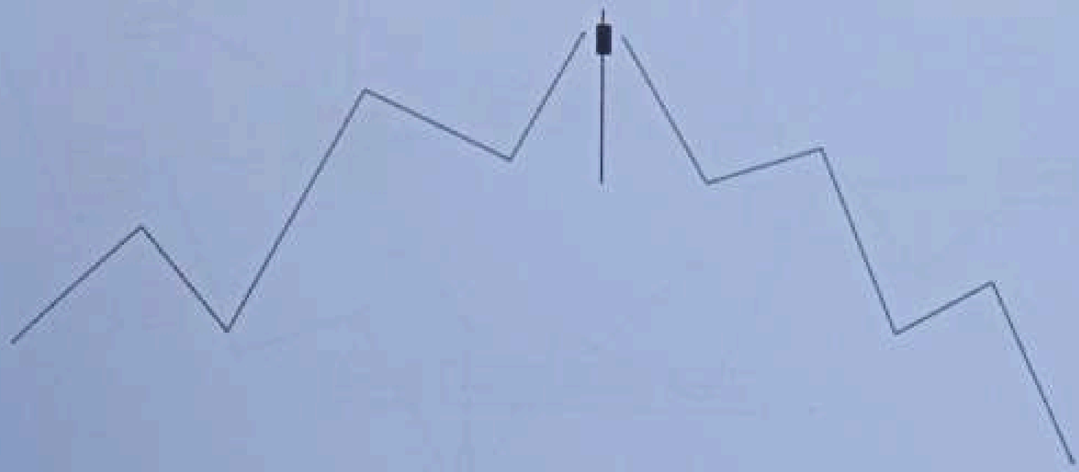

यह पैटर्न संभावित डाउनसाइड रिवर्सल के वॉर्निंग सिग्नल की तरह कार्य करता है।

इन्वर्टेड हैमर पैटर्न -

यह पैटर्न हैमर पैटर्न के विपरीत नज़र आता है। यह एक बुलिश रिवर्सल कैन्डलस्टिक पैटर्न है।

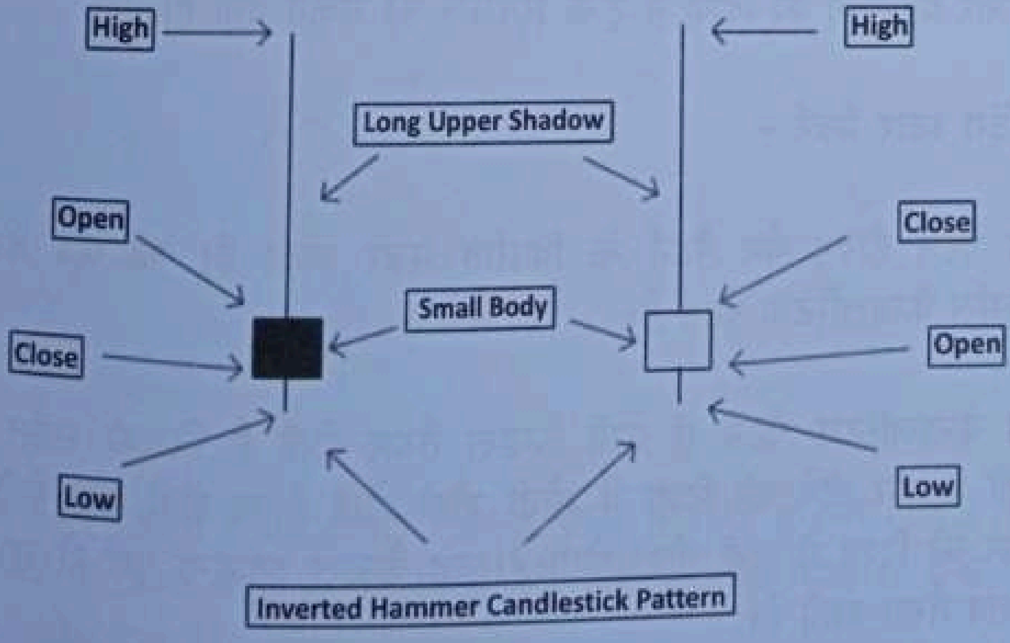

इस कैन्डलस्टिक पैटर्न में ऐसी कैन्डल तैयार होती है जिसकी स्मॉल बॉडी होती है और नीचे की दिशा में छोटी शैडो होती है या शैडो नहीं होती और ऊपर की दिशा में लंबी शैडो होती है। यह कैन्डल डाउनट्रेन्ड पूर्ण हो रहा होता है तब तैयार होती है।

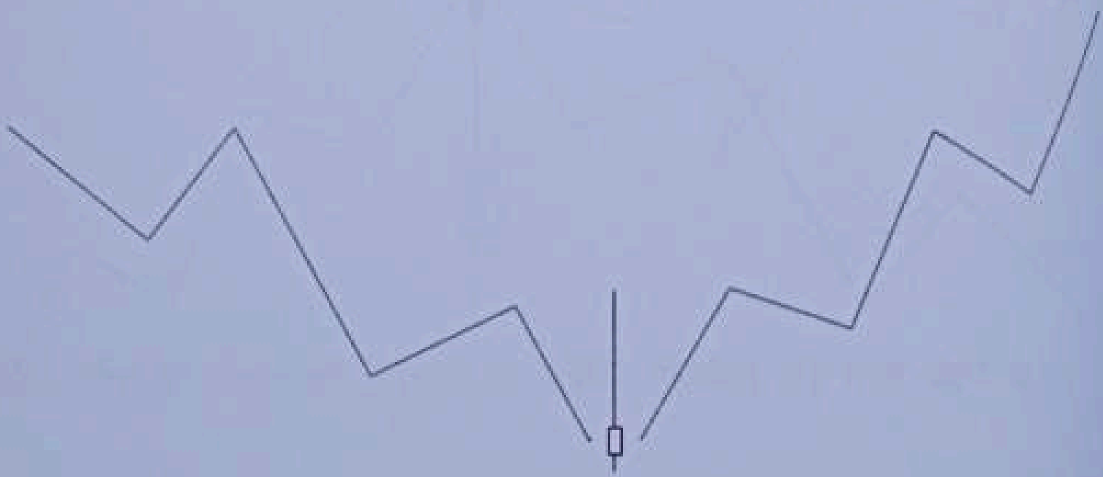

इस पैटर्न में आमतौर पर ऊपर की दिशा की शैडो रियल बॉडी के साइज से कम से कम दुगनी होनी चाहिए। रियल बॉडी का कलर रेड या ग्रीन हो सकता है। लेकिन ग्रीन रियल बॉडी के साथ तैयार हुआ इन्वर्टेड हैमर अधिक मजबूत बुलिश सिग्नल देता है।

यह पैटर्न संकेत देता है कि खरीदार भाव को ज्यादा से ज्यादा ऊपर ले जा रहे है और वह तेजी की दिशा में ट्रेन्ड रिवर्सल का संकेत देता है।

शूटिंग स्टार पैटर्न -

यह पैटर्न हैंगिंग मैन पैटर्न के विपरीत नज़र आता है। यह एक बेअरीश रिवर्सल कैन्डलस्टिक पैटर्न है।

इस कैन्डलस्टिक पैटर्न में ऐसी कैन्डल तैयार होती है जिसकी स्मॉल बॉडी होती है और नीचे की दिशा में छोटी शैडो होती है या शैडो नहीं होती और ऊपर की दिशा में लंबी शैडो होती है। यह कैन्डल अपट्रेन्ड पूर्ण हो रहा होता है तब तैयार होती है।

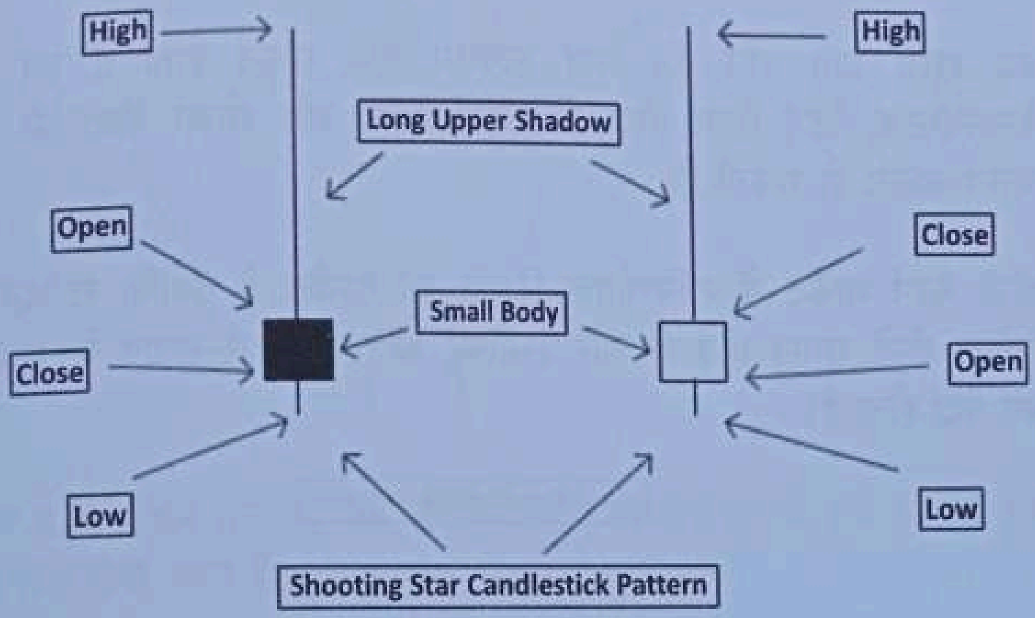

इस पैटर्न में आमतौर पर ऊपर की दिशा की शैडो रियल बॉडी के साइज से कम से कम दुगनी होनी चाहिए। रियल बॉडी का कलर रेड या ग्रीन हो सकता है। लेकिन रेड रियल बॉडी के साथ तैयार हुआ शूटिंग स्टार अधिक मजबूत बेअरीश सिग्नल देता है।

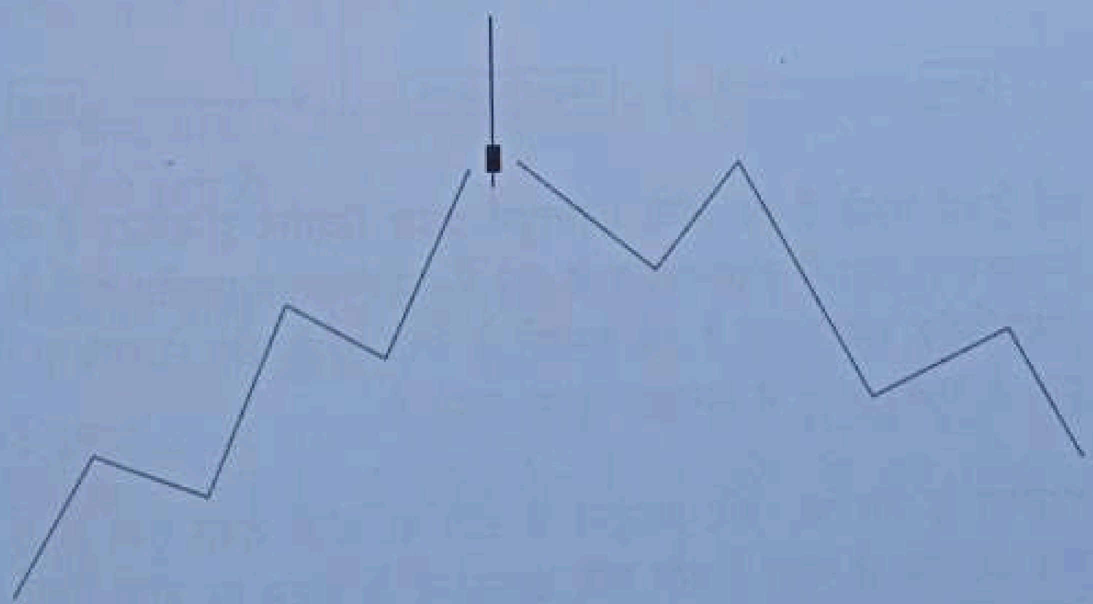

यह पैटर्न दर्शाता है कि खरीदार अपनी पकड़ गंवा रहे है और विक्रेता भाव को ज्यादा से ज्यादा नीचे ले जा रहे है और वह मंदी की दिशा में ट्रेन्ड रिवर्सल का संकेत देता है।

डॉजी पैटर्न -

जब खुला भाव और बंद भाव लगभग एक समान होता है तब डॉजी कैन्डलस्टिक पैटर्न तैयार होता है। उसमें अपर और लोअर शैडो की लंबाई अलग-अलग हो सकती है।

डॉजी पैटर्न मार्केट में अनिर्णायक स्थिति को दर्शाता है क्योंकि खरीदार और विक्रेता दोनों समान होते है और इसलिए भाव के उतार-चढ़ाव के मामले में भ्रम पैदा होता है।

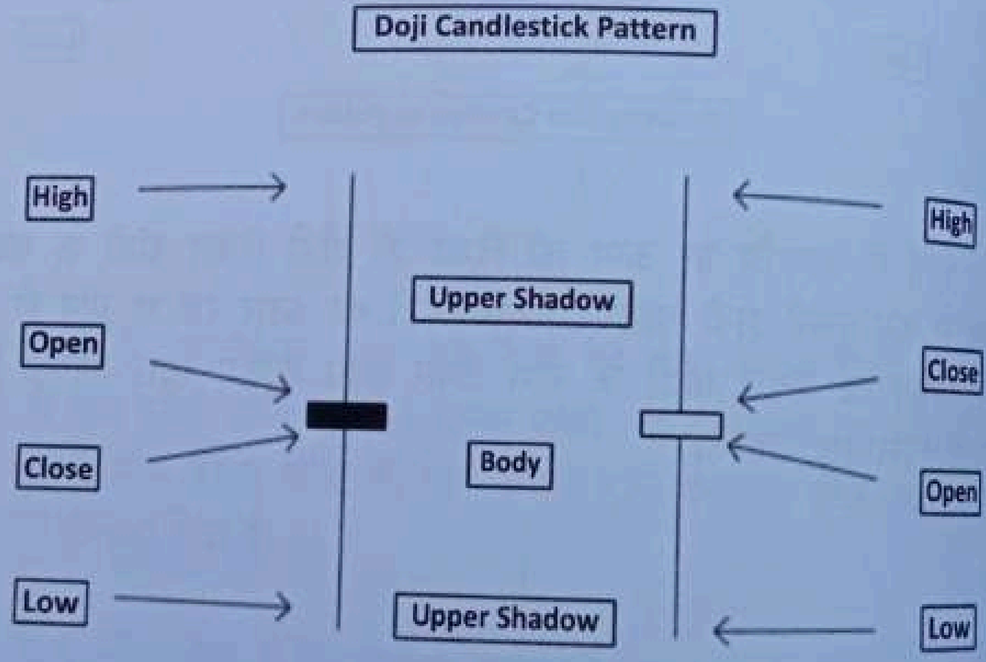

कई ट्रेडर्स मानते है कि डॉजी महत्वपूर्ण प्राइस रिवर्सल इन्डिकेटर है क्योंकि इस स्तर पर भाव में उतार-चढ़ाव के बारे में अनिश्चितता प्रवर्तीत होती है। यह कैन्डलस्टिक क्या कहता है उसे समझने के लिए डॉजी कौन से स्तर पर तैयार हुआ है उसका ध्यान से निरीक्षण करना जरूरी है।

उदाहरण के तौर पर, यदि अपट्रेन्ड के टॉप पर डॉजी तैयार हुआ हो तो वह भाव को नीचे ले जाता है और यदि डाउनट्रेन्ड के बॉटम पर डॉजी तैयार हुआ हो तो वह भाव को ऊपर ले जाता है।

डॉजी तेजीवालों और मंदीवालों में समानता दर्शाता है और इसलिए वह रिवर्सल का वॉर्निंग सिग्नल है।

जब डॉजी तैयार होता है तब वॉल्यूम बहुत ही कम हो तो उसे अधिक मजबूत सिग्नल माना जाता है।

शैडो की लंबाई के आधार पर डॉजी पैटर्न के चार प्रकार है - स्टॅन्डर्ड डॉजी, लॉंग लेग्ड डॉजी, ड्रॅगनफ्लाय डॉजी और ग्रेवस्टोन डॉजी।

स्टॅन्डर्ड डॉजी - यह बहुत ही सरल डॉजी कैन्डलस्टिक पैटर्न है, जो ट्रेन्ड के टॉप पर या बॉटम पर तैयार होता है और वह ट्रेन्ड रिवर्सल का संकेत देता है। उसका आकार क्रॉस या प्लस साइन के जैसा होता है।

लॉंग लेग्ड डॉजी - इस कैन्डलस्टिक पैटर्न में ऊपर और नीचे की दिशा में लंबी शैडो होती है।

ड्रॅगनफ्लाय डॉजी - इस कैन्डलस्टिक पैटर्न में नीचे की दिशा में लंबी शैडो होती है और ऊपर की दिशा में शैडो नहीं होती या बहुत ही छोटी शैडो होती है। उसका आकार अंग्रेजी अक्षर (T) के जैसा होता है। वह बुलिश रिवर्सल कैन्डलस्टिक पैटर्न है, जो संकेत देता है कि असेट का भाव अधिक ऊपर जाएगा।

ग्रेवस्टोन डॉजी - यह पैटर्न ड्रॅगनफ्लाय डॉजी के विपरीत दिखता है यानी उसमें ऊपर की दिशा में लंबी शैडो होती है और नीचे की दिशा में शैडो नहीं होती या बहुत ही छोटी शैडो होती है। वह बेअरीश रिवर्सल कैन्डलस्टिक पैटर्न है, जो संकेत देता है कि असेट का भाव अधिक नीचे जाएगा।

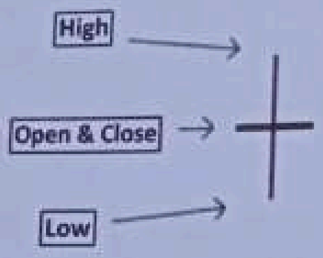

Standard Doji

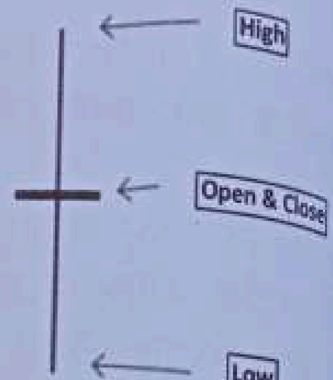

Long Legged Doji

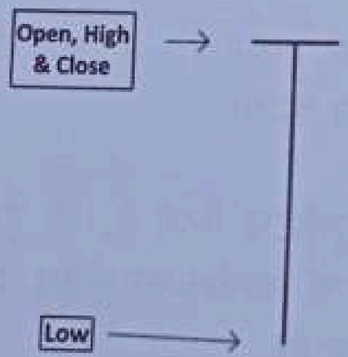

Dragonfly Doji

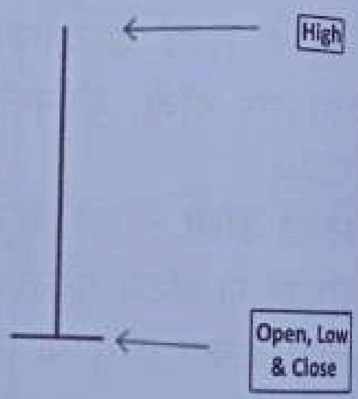

Gravestone Doji

टु कैन्डलस्टिक पैटर्न्स -

जैसे कि नाम से पता चलता है, ऐसे पैटर्न्स दो कैन्डल्स द्वारा तैयार होते है।

लोकप्रिय टु कैन्डलस्टिक पैटर्न्स -

- बुलिश एन्गल्फिंग पैटर्न
- बेअरीश एन्गल्फिंग पैटर्न
- बुलिश हरामी

- बेअरीश हरामी
- पीयर्सिंग पैटर्न
- डार्क क्लाऊड कवर

बुलिश एन्गाल्फिंग पैटर्न -

यह टु कैन्डल बुलिश रिवर्सल पैटर्न है, जो संकेत देता है कि वर्तमान डाउनट्रेन्ड पूर्ण होने वाला है और अपट्रेन्ड शुरू होने वाला है।

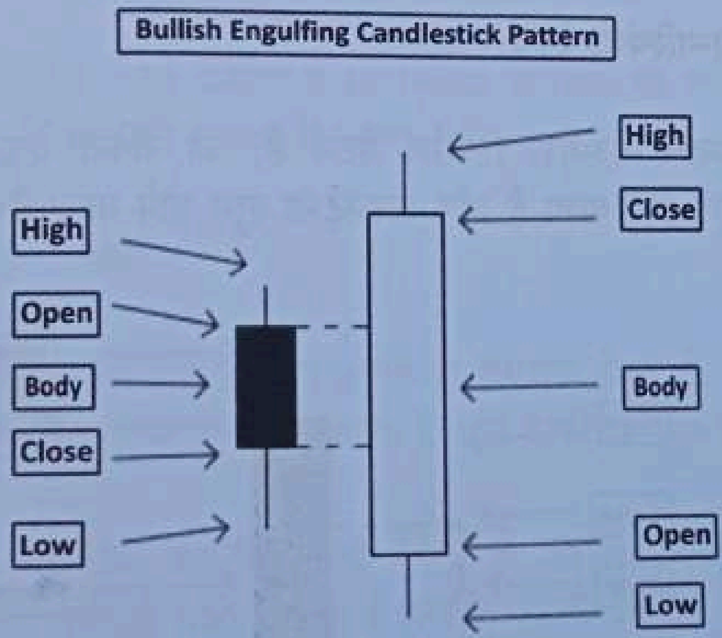

इस पैटर्न में पहले दिन स्मॉल ब्लॅक या रेड बेअरीश कैन्डल तैयार होती है, जो वर्तमान बेअरीश ट्रेन्ड के अनुरूप होती है। अगले दिन लॉग व्हॉईट या ग्रीन बुलिश कैन्डल तैयार होती है, जो पूरीतरह से पहले दिन के बेअरीश कैन्डल के रियल बॉडी को एन्गाल्फ करती है अर्थात उसे अपने में समा लेती है।

यह कैन्डलस्टिक पैटर्न दर्शाता है कि खरीदार विक्रेताओं पर भारी पड़ रहे है और वह असेट के भाव को ज्यादा से ज्यादा ऊपर ले जा रहे है।

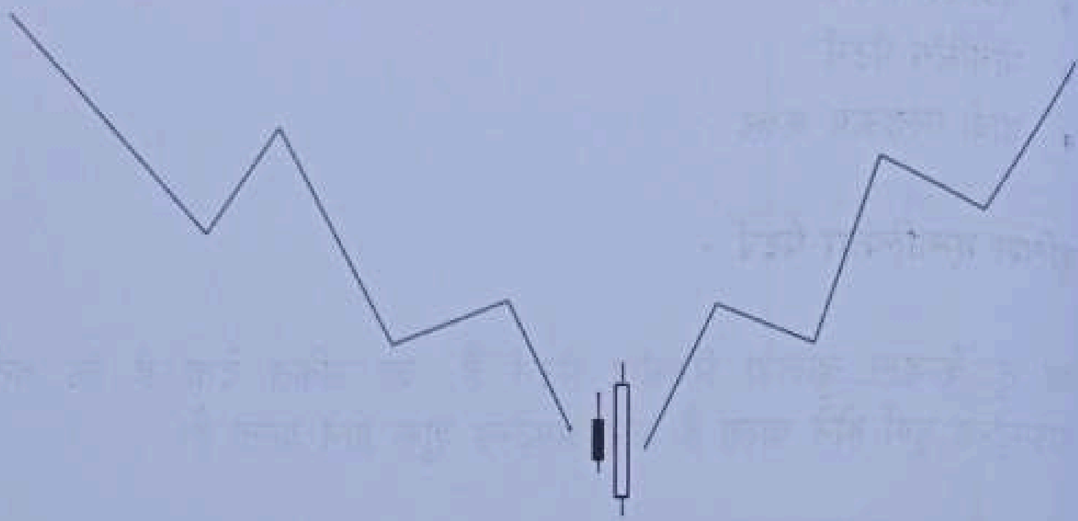

बेअरीश एन्गल्फिंग पैटर्न -

यह टु कैन्डल बेअरीश रिवर्सल पैटर्न है, जो संकेत देता है कि वर्तमान अपट्रेन्ड पूर्ण होने वाला है और डाउनट्रेन्ड शुरू होने वाला है।

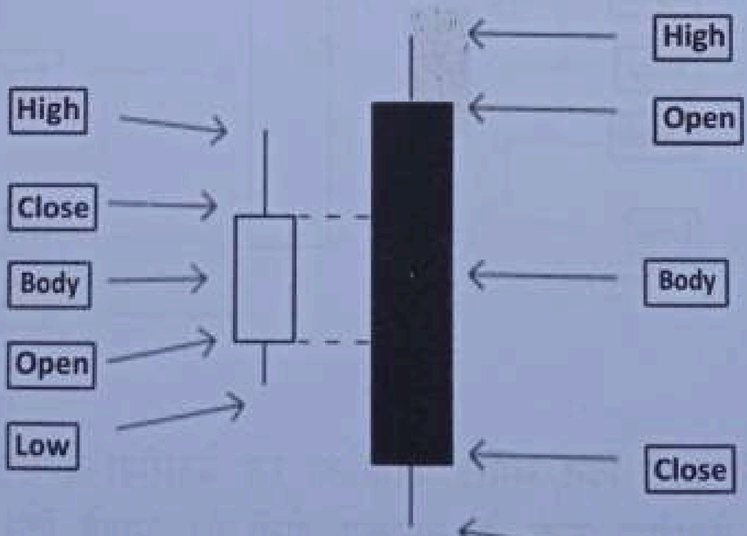

Bearish Engulfing Candlestick Pattern

इस पैटर्न में पहले दिन स्मॉल व्हाईट या ग्रीन बुलिश कैन्डल तैयार होती है, जो वर्तमान बुलिश ट्रेन्ड के अनुरूप होती है। अगले दिन लाँग ब्लॅक या रेड बेअरीश कैन्डल तैयार होती है, जो पूरीतरह से पहले दिन के बुलिश कैन्डल के रियल बॉडी को एन्गल्फ करती है अर्थात उसे अपने में समा लेती है।

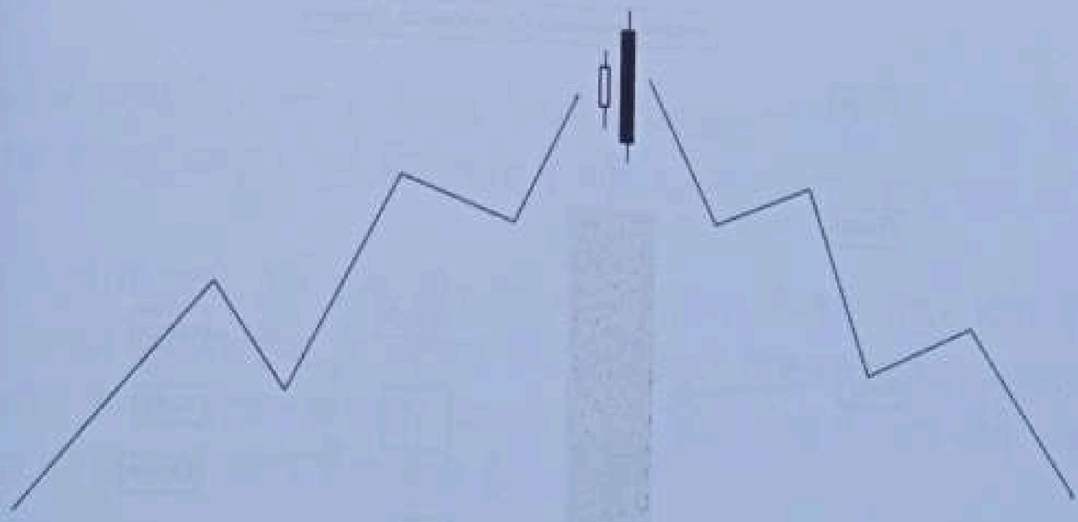

यह कैन्डलस्टिक पैटर्न दर्शाता है कि विक्रेता खरीदारों पर भारी पड़ रहे है और वह असेट के भाव को ज्यादा से ज्यादा नीचे ले जा रहे है।

बुलिश हरामी पैटर्न -

बुलिश हरामी पैटर्न यह टु कैन्डल बुलिश रिवर्सल पैटर्न है, जो संकेत देता है कि वर्तमान डाउनट्रेन्ड पूर्ण होने वाला है और अपट्रेन्ड शुरू होने वाला है।

इस पैटर्न का नाम जापनीज शब्द हरामी से पड़ा है, जिसका अर्थ प्रेगनन्ट वुमन अर्थात गर्भवती महिला होता है क्योंकि उसका ग्राफिक गर्भवती महिला से मेल खाता है।

इस पैटर्न में पहले दिन लॉंग रेड या ब्लॅक बेअरीश कैन्डल तैयार होती है, जो वर्तमान बेअरीश ट्रेन्ड के अनुरूप होती है। अगले दिन स्मॉल ग्रीन या व्हाईट बुलिश कैन्डल तैयार होती है, जिसकी स्मॉल बॉडी होती है और ऊपर और नीचे की दिशा में छोटी शैडो होती है।

दुसरी कैन्डल की बॉडी पिछली कैन्डल की बॉडी में समा जाती है।

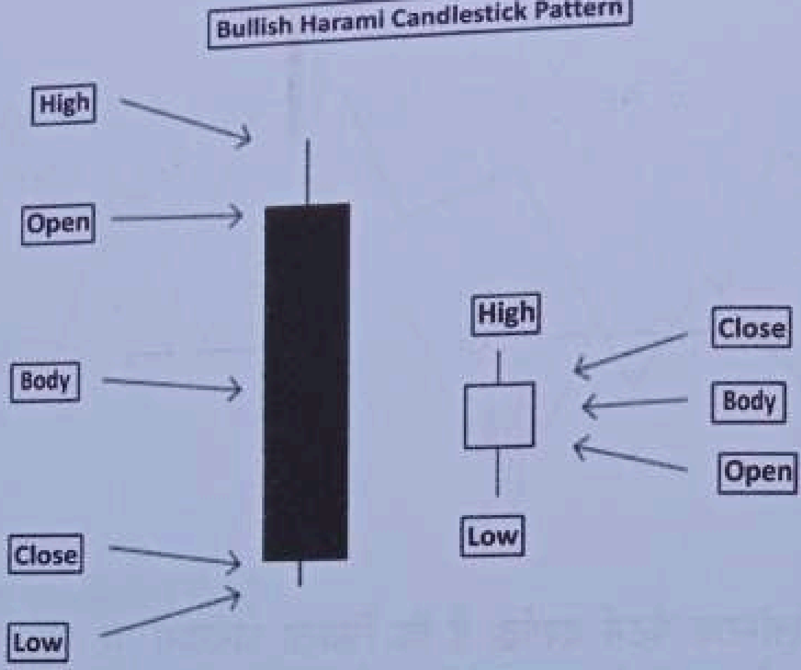

आदर्श स्थिति यह है कि लाँग कैन्डल की बॉडी की साइज यह स्मॉल कैन्डल की बॉडी की साइज से लगभग चार गुना होनी चाहिए।

यदि व्हाईट या ग्रीन कैन्डल के ऊपर और नीचे की दिशा की शैडो ब्लॅक या रेड कैन्डल से ज्यादा बड़ी नहीं हुई तो यह पैटर्न अधिक अच्छी तरह से कार्य करता है।

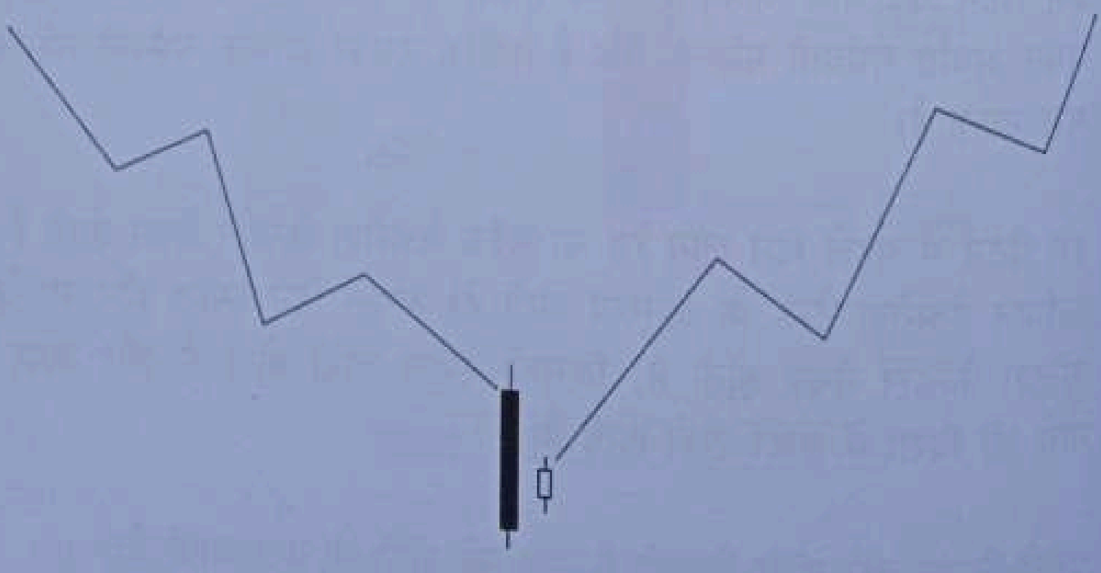

यह पैटर्न संकेत देता है कि खरीदारों ने भाव पर नियंत्रण हासिल कर लिया है और वह भाव को ज्यादा से ज्यादा ऊपर ले जाने के लिए तैयार है।

बेअरीश हरामी पैटर्न -

बेअरीश हरामी पैटर्न यह टु कैन्डल बेअरीश रिवर्सल पैटर्न है, जो संकेत देता है कि वर्तमान अपट्रेन्ड पूर्ण होने वाला है और डाउनट्रेन्ड शुरू होने वाला है।

इस पैटर्न में पहले दिन लाँग ग्रीन या व्हाईट बुलिश कैन्डल तैयार होती है, जो वर्तमान बुलिश ट्रेन्ड के अनुरूप होती है। अगले दिन स्मॉल रेड या ब्लॅक बेअरीश कैन्डल तैयार होती है, जिसकी स्मॉल बॉडी होती है और नीचे और ऊपर की दिशा में छोटी शैडो होती है।

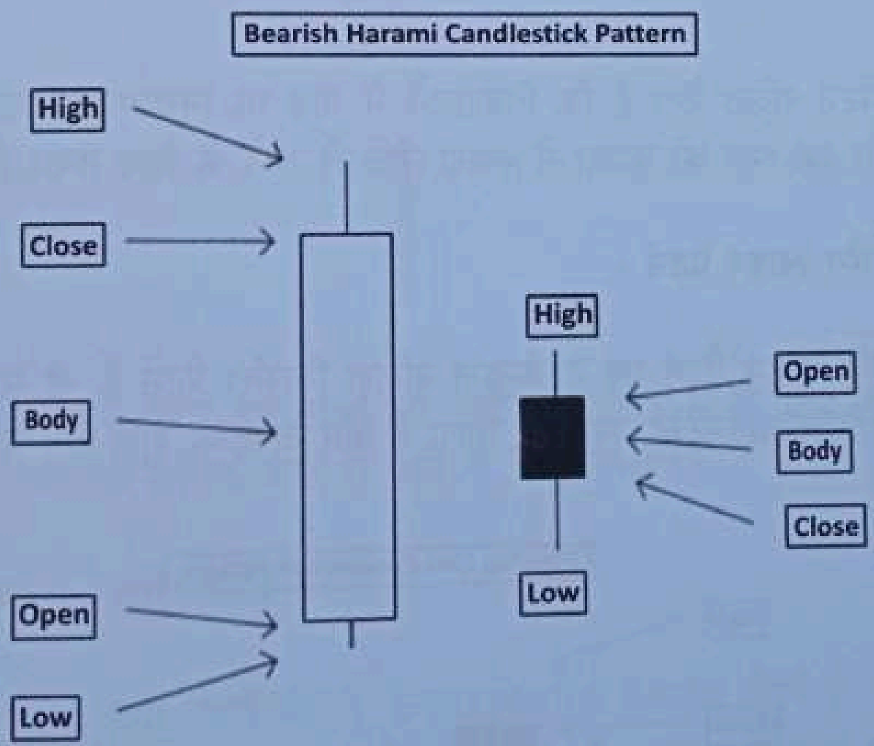

दुसरी कैन्डल की बॉडी पिछली कैन्डल की बॉडी में समा जाती है।

आदर्श स्थिति यह है कि लाँग कैन्डल की बॉडी की साइज यह स्मॉल कैन्डल की बॉडी की साइज से लगभग चार गुना होनी चाहिए।

यदि रेड या ब्लॅक कैन्डल के ऊपर और नीचे की दिशा की शैडो ग्रीन या व्हाईट कैन्डल से ज्यादा बड़ी नहीं हुई तो यह पैटर्न अधिक अच्छी तरह से कार्य करता है।

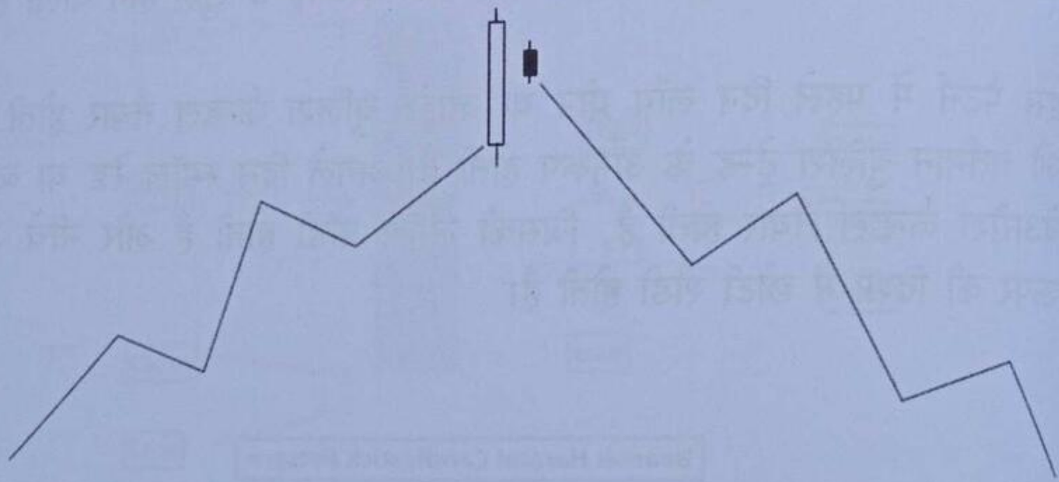

यह पैटर्न संकेत देता है कि विक्रेताओं ने भाव पर नियंत्रण हासिल कर लिया है और वह भाव को ज्यादा से ज्यादा नीचे ले जाने के लिए तैयार है।

पियर्सिंग लाइन पैटर्न -

पियर्सिंग लाइन पैटर्न यह टु कैन्डल बुलिश रिवर्सल पैटर्न है जो संकेत देता है कि वर्तमान डाउनट्रेन्ड पूर्ण होने वाला है और अपट्रेन्ड शुरू होने वाला है।

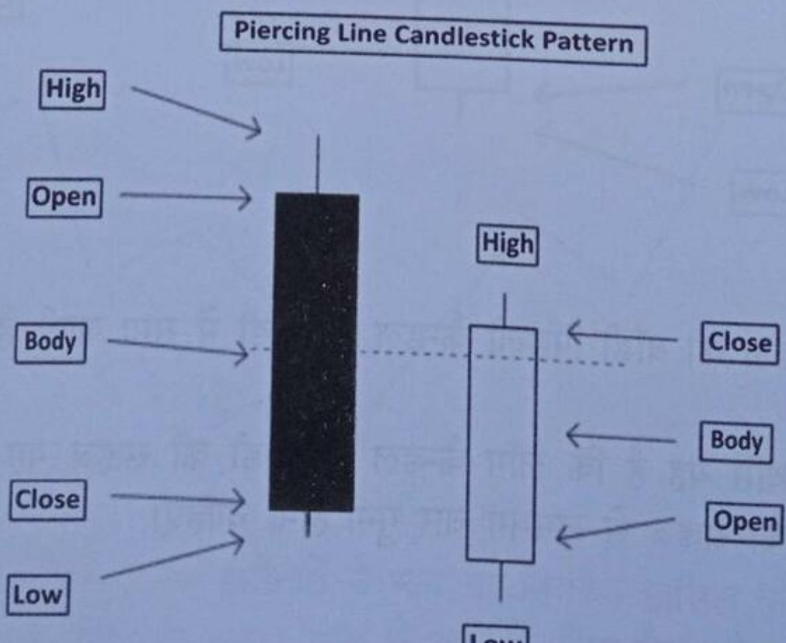

इस पैटर्न में पहले दिन लाँग रेड या ब्लॅक बेअरीश कैन्डल तैयार होती है, जो वर्तमान बेअरीश ट्रेन्ड के अनुरूप होती है। अगले दिन मजबूत ग्रीन या व्हाईट बुलिश कैन्डल तैयार होती है, जो पहले दिन के नीचले स्तर से भी नीचे खुलती है, लेकिन पहले दिन के मिड रेन्ज के ऊपर बंद होने में सफल होती है।

दुसरी कैन्डल का वॉल्यूम एवरेज वॉल्यूम से अधिक हो तो वह ज्यादा मजबूत बुलिश सिग्नल माना जाता है।

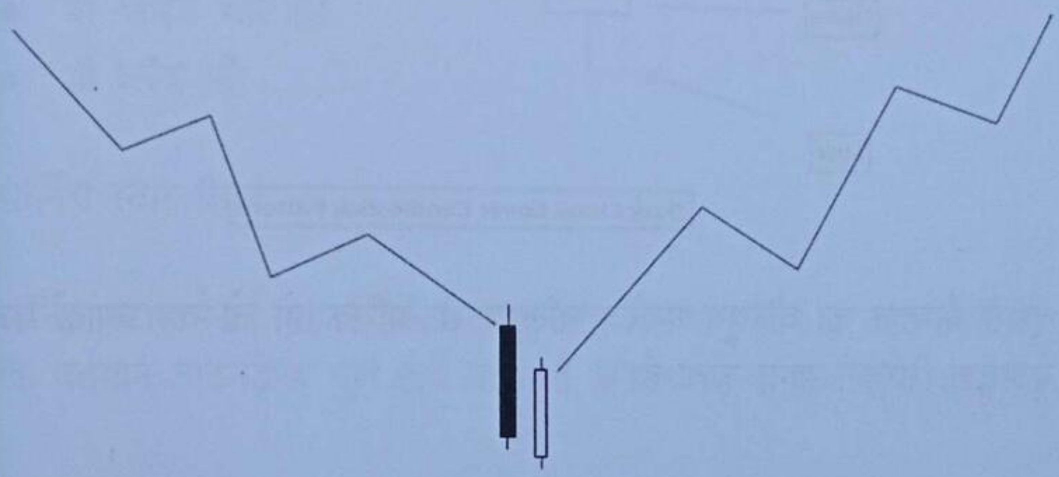

यह कैन्डलस्टिक पैटर्न दर्शाता है कि खरीदार विक्रेताओं पर हावी हो रहे है और वह भाव को अधिक ऊपर ले जाने के लिए तैयार है।

डार्क क्लाऊड कवर पैटर्न -

डार्क क्लाऊड कवर पैटर्न यह टु कैन्डल बेअरीश रिवर्सल पैटर्न है जो संकेत देता है कि वर्तमान अपट्रेन्ड पूर्ण होने वाला है और डाउनट्रेन्ड शुरू होने वाला है।

इस पैटर्न में पहले दिन लाँग ग्रीन या व्हाईट बुलिश कैन्डल तैयार होती है, जो वर्तमान बुलिश ट्रेन्ड के अनुरूप होती है। अगले दिन मजबूत रेड या ब्लॅक बेअरीश कैन्डल तैयार होती है, जो पहले दिन के ऊपरी स्तर से भी ऊपर खुलती है, लेकिन पहले दिन के मिड रेन्ज के नीचे बंद होती है।

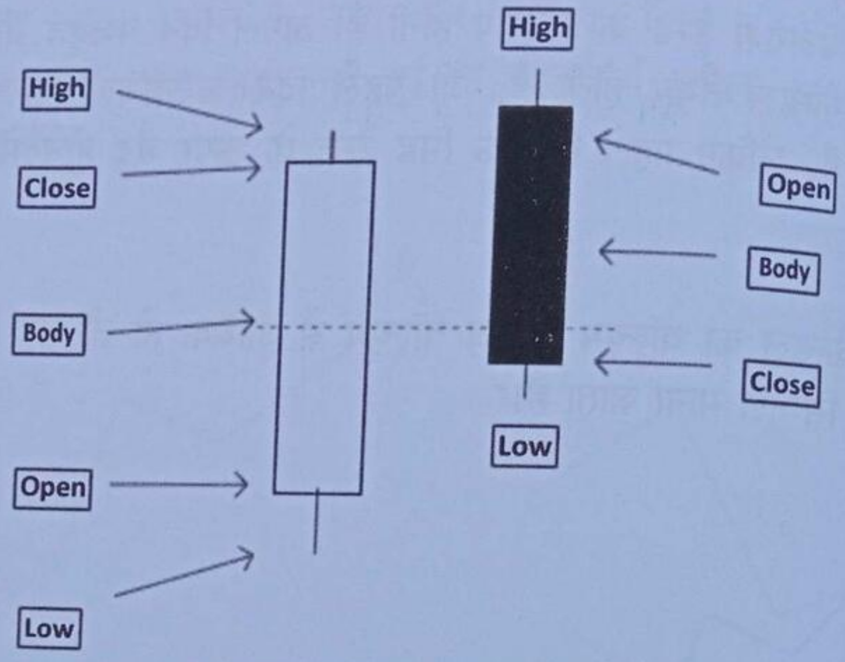

Dark Cloud Cover Candlestick Pattern

दुसरी कैन्डल का वॉल्यूम एवरेज वॉल्यूम से अधिक हो तो वह ज्यादा मजबूत बेअरीश सिग्नल माना जाता है।

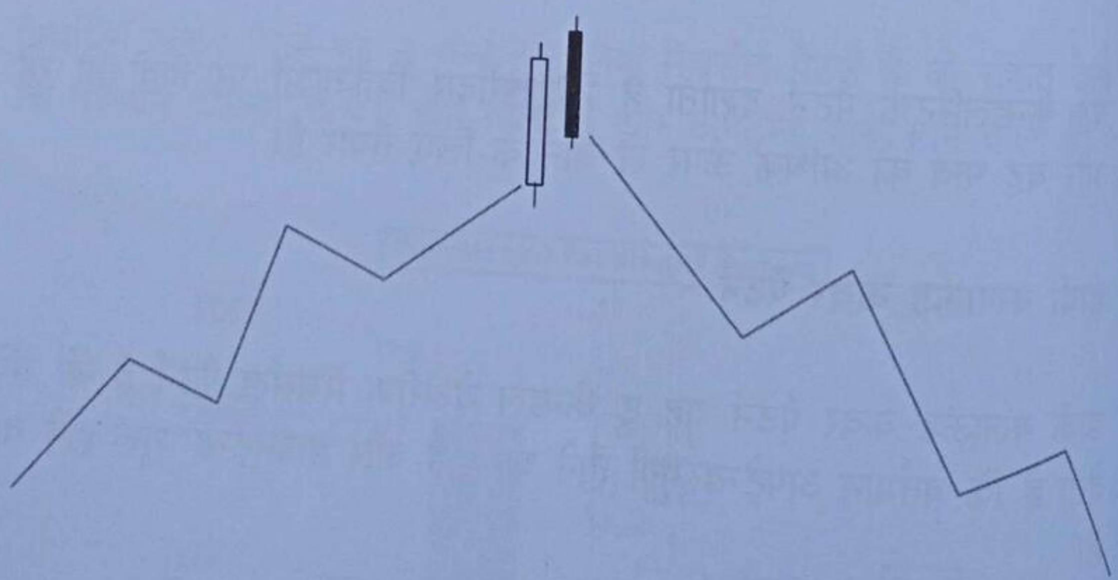

यह कैन्डलस्टिक पैटर्न दर्शाता है कि विक्रेता खरीदारों पर हावी हो रहे है और वह भाव को अधिक नीचे ले जाने के लिए तैयार है।

थ्री कैन्डलस्टिक पैटर्न्स -

जैसे कि नाम से पता चलता है, ऐसे पैटर्न्स तीन कैन्डल्स द्वारा तैयार होते है।

लोकप्रिय थ्री कैन्डलस्टिक पैटर्न्स -

- मॉर्निंग स्टार पैटर्न
- ईवनिंग स्टार पैटर्न
- थ्री व्हाईट सोल्जर्स
- थ्री ब्लॅक क्रो

मॉर्निंग स्टार पैटर्न -

मॉर्निंग स्टार पैटर्न यह थ्री कैन्डल बुलिश रिवर्सल पैटर्न है जो संकेत देता है कि वर्तमान डाउनट्रेन्ड पूर्ण होने वाला है और अपट्रेन्ड शुरू होने वाला है।

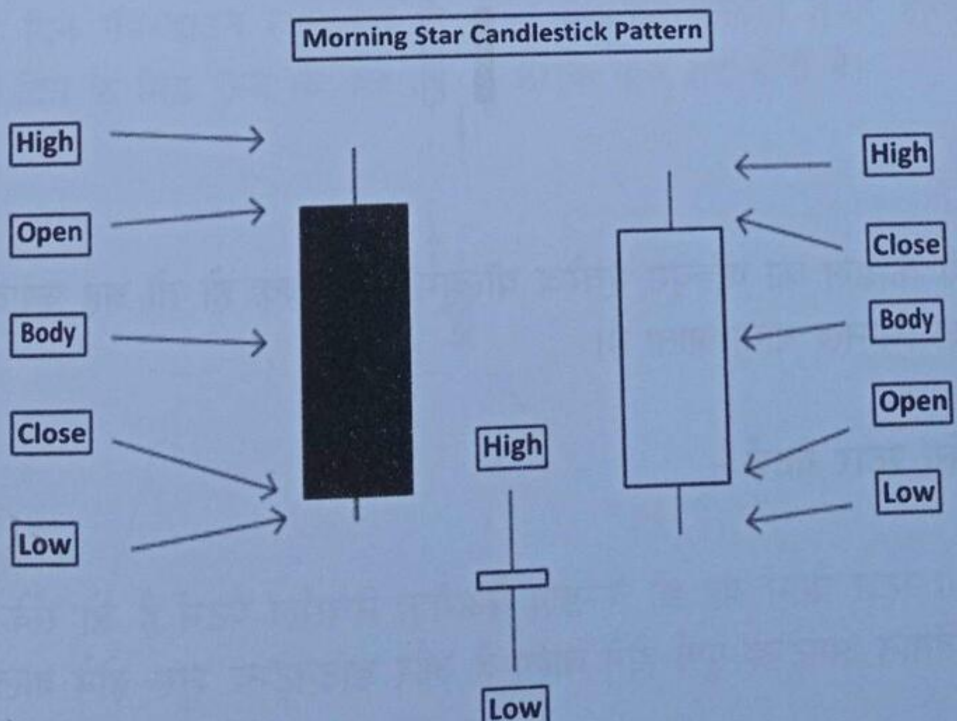

इस पैटर्न में पहले दिन लाँग रेड या ब्लॅक बेअरीश कैन्डल तैयार होती है, जो वर्तमान बेअरीश ट्रेन्ड के अनुरूप होती है। अगले दिन गॅप-डाउन स्मॉल बॉडी कैन्डल तैयार होती है। यह दुसरी कैन्डल बुलिश या बेअरीश कैन्डल हो सकती है। तीसरे दिन गॅप-अप लाँग ग्रीन या व्हाईट बुलिश कैन्डल तैयार होती है, जो पहले दिन के मिड रेन्ज के नजदीक या उसके ऊपर बंद होती है।

यह कैन्डलस्टिक पैटर्न दर्शाता है कि खरीदार किस प्रकार से विक्रेताओं से मार्केट का कब्जा ले रहे है। डाउनट्रेन्ड के बॉटम पर सपोर्ट लेवल के नजदीक यह पैटर्न तैयार हुआ तो वह मजबूत ट्रेन्ड रिवर्सल का संकेत माना जाता है।

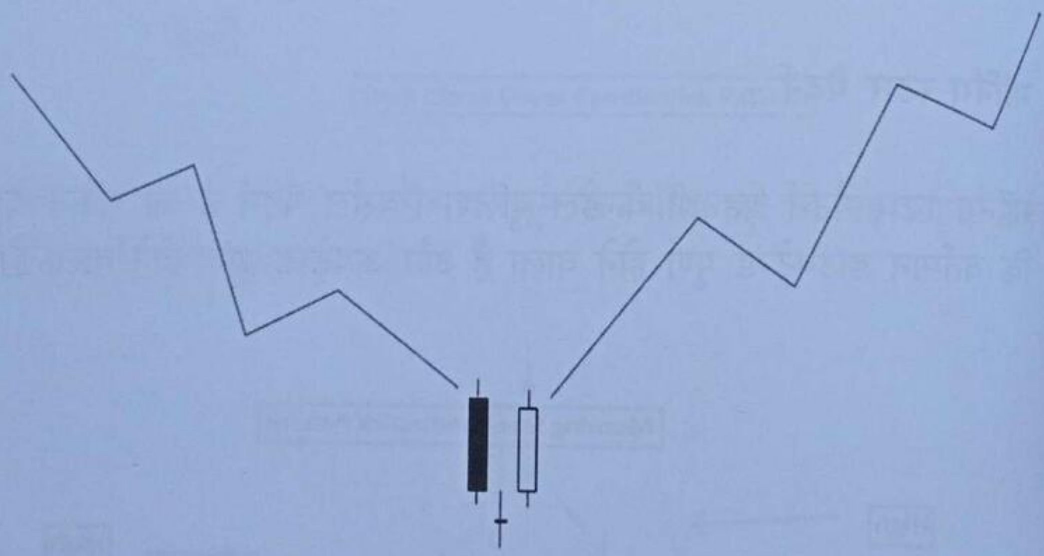

तीसरी कैन्डल का वॉल्यूम एवरेज वॉल्यूम से अधिक हो तो वह ज्यादा मजबूत बुलिश सिग्नल माना जाता है।

ईवनिंग स्टार पैटर्न -

ईवनिंग स्टार पैटर्न यह थ्री कैन्डल बेअरीश रिवर्सल पैटर्न है जो संकेत देता है कि वर्तमान अपट्रेन्ड पूर्ण होने वाला है और डाउनट्रेन्ड शुरू होने वाला है।

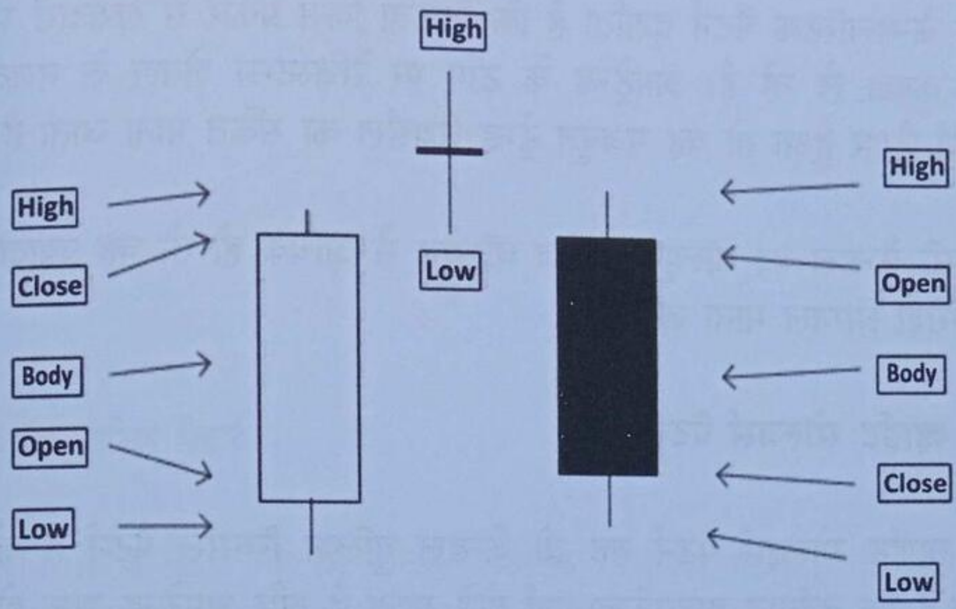

Evening Star Candlestick Pattern

इस पैटर्न में पहले दिन लाँग ग्रीन या व्हाईट बुलिश कैन्डल तैयार होती है, जो वर्तमान बुलिश ट्रेन्ड के अनुरूप होती है। अगले दिन गॅप-अप स्मॉल बॉडी कैन्डल तैयार होती है। यह दुसरी कैन्डल बुलिश या बेअरीश कैन्डल हो सकती है। तीसरे दिन गॅप-डाउन लाँग रेड या ब्लॅक बेअरीश कैन्डल तैयार होती है, जो पहले दिन के मिड रेन्ज के नजदीक या उसके नीचे बंद होती है।

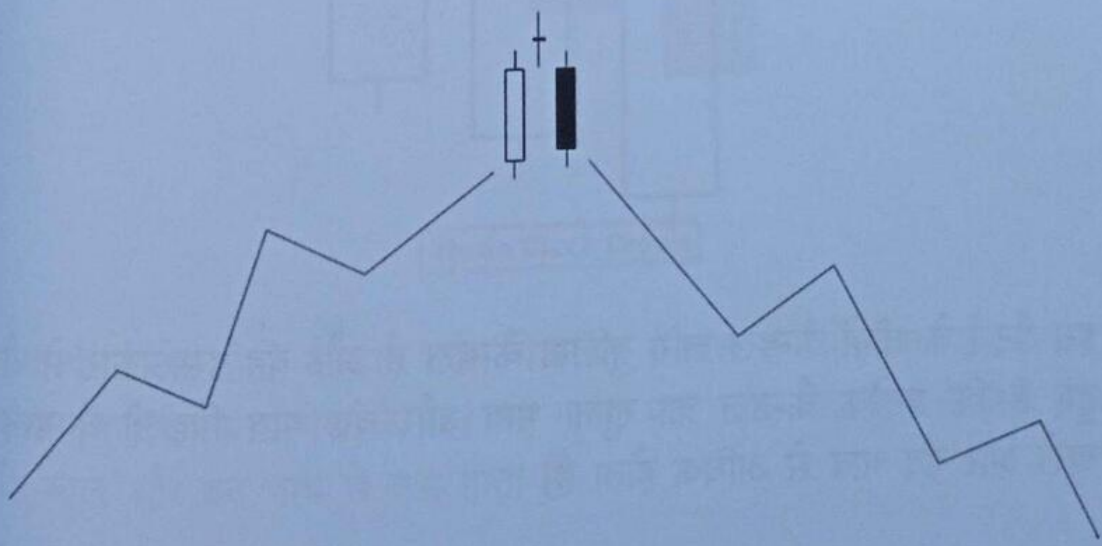

यह कैन्डलस्टिक पैटर्न दर्शाता है कि विक्रेता किस प्रकार से खरीदारों से मार्केट का कब्जा ले रहे है। अपट्रेन्ड के टॉप पर रेजिस्टन्स लेवल के नजदीक यह पैटर्न तैयार हुआ तो वह मजबूत ट्रेन्ड रिवर्सल का संकेत माना जाता है।

तीसरी कैन्डल का वॉल्यूम एवरेज वॉल्यूम से अधिक हो तो वह ज्यादा मजबूत बेअरीश सिग्नल माना जाता है।

थ्री व्हाईट सोल्जर्स पैटर्न -

थ्री व्हाईट सोल्जर्स पैटर्न यह थ्री कैन्डल बुलिश रिवर्सल पैटर्न है जो संकेत देता है कि वर्तमान डाउनट्रेन्ड पूर्ण होने वाला है और अपट्रेन्ड शुरू होने वाला है। यह कैन्डलस्टिक पैटर्न दर्शाता है कि खरीदार विक्रेताओं पर हावी हो रहे है और वह भाव को अधिक ऊपर ले जाने वाले है।

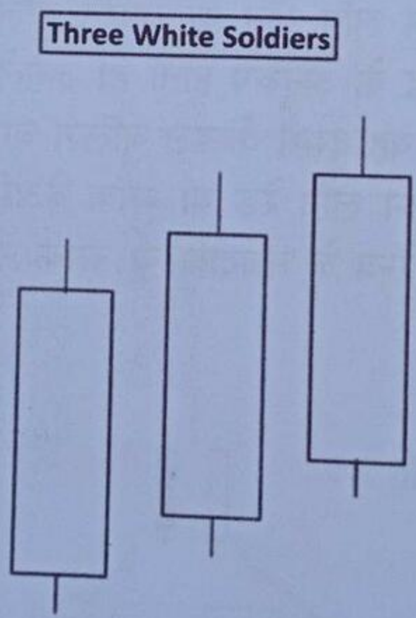

इस पैटर्न के तीनों कैन्डल लॉंग बुलिश कैन्डल है और वह इस प्रकार से तैयार हुए है कि प्रत्येक कैन्डल का खुला भाव और बंद भाव पिछली कैन्डल के खुले और बंद भाव से अधिक होता है।

इस पैटर्न की दुसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि तीनों कैन्डल लगभग एकसमान लंबाई की है और तीनों कैन्डल की शैडो तुलना में कम है।

थ्री ब्लॅक क्रोज़ पैटर्न -

थ्री ब्लॅक क्रोज़ पैटर्न यह थ्री कैन्डल बेअरीश रिवर्सल पैटर्न है जो संकेत देता है कि वर्तमान अपट्रेन्ड पूर्ण होने वाला है और डाउनट्रेन्ड शुरू होने वाला है। यह कैन्डलस्टिक पैटर्न दर्शाता है कि विक्रेता खरीदारों पर हावी हो रहे है और वह भाव को अधिक नीचे ले जाने वाले है।

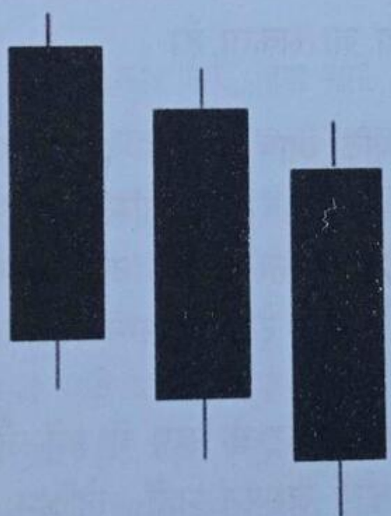

Three Black Crows

इस पैटर्न के तीनों कैन्डल लाँग बेअरीश कैन्डल है और वह इस प्रकार से तैयार हुए है कि प्रत्येक कैन्डल का खुला भाव और बंद भाव पिछली कैन्डल के खुले और बंद भाव से कम होता है।

इस पैटर्न की दुसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि तीनों कैन्डल लगभग एकसमान लंबाई की है और तीनों कैन्डल की शैडो तुलना में कम है।

महत्वपूर्ण नोट :

हालाँकि कैन्डलस्टिक पैटर्न्स मार्केट में भाग लेने वाले ट्रेडर्स का ध्यान आकर्षित करते है, फिर भी केवल उनके आधार पर कभी भी ट्रेडिंग न करें। टेक्निकल एनालिसिस के अन्य टुल्स के साथ उनका उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे संपूर्ण ट्रेन्ड को निश्चित रूप से देखा जा सकता है या उसका वास्तविक अंदाजा लगाया जा सकता है।

उदाहरण के तौर पर, यदि आप अधिक कन्फर्मेशन के लिए सिक्योरिटी के वॉल्यूम पर फोकस करते हो और कैन्डलस्टिक पैटर्न का उपयोग करके ट्रेडिंग सिग्नल प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हो और उसमें वॉल्यूम अधिक दिखाई दे रहा हो तो वह बहुत ही मजबूत ट्रेडिंग सिग्नल माना जाता है।

हालाँकि एक प्राइस एक्शन ट्रेडर के रूप में हमें जैसे टेक्निकल इन्डिकेटर्स के बारे में चिंता करने की कोई जरूरत नहीं, लेकिन फिर भी अधिक कन्फर्मेशन के लिए मैं मूविंग एवरेज को देखने की सलाह देता हूँ।

एक और बात का ध्यान रखें, कैन्डलस्टिक पैटर्न का कोई भी सबसे श्रेष्ठ या सबसे खराब पैटर्न नहीं। आपको तय करना है कि कौन सा पैटर्न आपके लिए काम करता है और उसका पालन करें।

यदि आप नए है, तो मैं आपको आग्रह करता हूँ कि जितना संभव हो सकें चार्ट को देखें और कैन्डलस्टिक पैटर्न को पहचानने का प्रयास करें जिससे आपकी आँखों को उन्हें आसानी से पहचानने की आदत हो जाए।

कैन्डलस्टिक पैटर्न का एडवान्स एनालिसिस

पिछले चैप्टर में, मैंने विभिन्न कैन्डलस्टिक का परिचय दिया था और कैन्डलस्टिक पैटर्न के महत्व को समझाया था। इस चैप्टर में, मैं आपको यह समझाने जा रहा हूँ कि अनुभवी ट्रेडर्स कैन्डल्स को कैसे देखते है और उनसे महत्वपूर्ण जानकारी कैसे प्राप्त करते है और उसके अनुसार किस प्रकार से ट्रेड करते है।

कैन्डलस्टिक केवल खुला भाव, ऊपरी भाव, निचला भाव और बंद भाव ही नहीं दिखाती, लेकिन यदि वॉल्यूम के साथ उसका सही एनालिसिस किया जाए, तो खरीदार और विक्रेता क्या कर रहे है उसके बारे में भी अधिक जानकारी मिल सकती है। मार्केट के ट्रेन्ड, मोमेन्टम, आदि का अंदाजा भी उससे निकाला जा सकता है।

कैन्डल्स का एनालिसिस किस प्रकार करें, इस बारे में विस्तार से बात करने से पहले, मैं आपको **''पाथ ऑफ प्राइस''** के कन्सेप्ट का उपयोग करके कैन्डल्स को किस प्रकार से विज्युअलाइज करना चाहिए इस बारे में बताता हूँ। इससे नए लोगों के लिए कैन्डलस्टिक्स को समझना आसान हो जाता है।

पाथ ऑफ प्राइस और कुछ नहीं बल्कि एक कैन्डल किस तरह से तैयार होती है वह बताने का एक तरीका है। मान लीजिए कि किसी सिक्योरिटी का भाव रू.५० पर खुला और रू.४० तक नीचे गिरा और बाद में उसने रू.७५ का टॉप बनाया और अंत में ट्रेडिंग सेशन पूर्ण होता है तब रू.७० के भाव से बंद हुआ। यदि इस प्रकार के भाव की जानकारी को कैन्डलस्टिक के माध्यम से दर्शाया जाता है तो एक बुलिश कैन्डल फॉर्मेशन बनाता है।

सरल शब्दों में, पाथ ऑफ प्राइस आपको बुलिश या बेअरीश कैन्डलस्टिक फॉर्मेशन के पिछे की सायकोलॉजी दिखाता है।

अगले पन्ने पर मैंने इस बात को कुछ इन्फोग्राफिक्स की मदद से समझाया है।

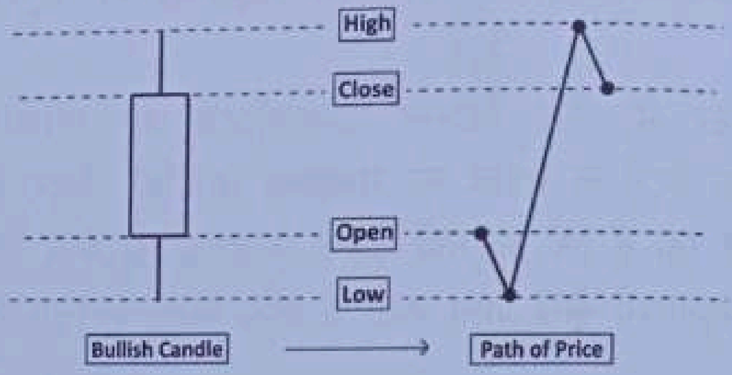

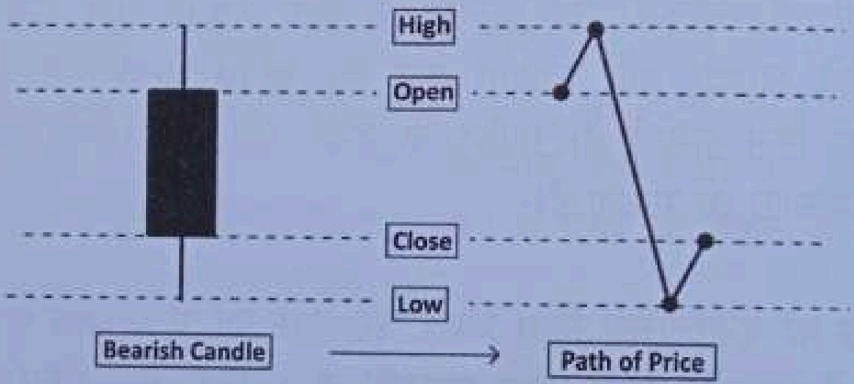

कैन्डलस्टिक्स का विस्तृत एनालिसिस :

कैन्डलस्टिक्स का विस्तृत एनालिसिस करने के लिए आपको चार बातों पर खास ध्यान देना होगा –

१. कैन्डलस्टिक बॉडी की साइज।
२. शैडो की लंबाई।
३. बॉडी टू शैडो रेशिओ।
४. कैन्डलस्टिक बॉडी की पोजिशन।

महत्वपूर्ण नोट : ऊपर दर्शाए कैन्डलस्टिक के कोई भी एक या एक से अधिक पहलूओं को ही ध्यान में लेकर कभी भी ट्रेड न करें। उन सभी का एक साथ उपयोग करने पर ही संपूर्ण चित्र नज़र आता है। उसे ध्यान में लेकर ही ट्रेड करें।

कैन्डलस्टिक बॉडी की साइज –

कैन्डलस्टिक बॉडी की साइज दर्शाती है कि बुलिश या बेअरीश माहौल का कितना मजबूत वर्चस्व है।

एक लॉंग कैन्डलस्टिक बॉडी, एक ही दिशा में ज्यादातर ट्रेडिंग और खरीदी या बिक्री का मजबूत दबाव दर्शाती है (स्ट्रेन्थ निश्चित करने के लिए अच्छा संकेत)।

एक शॉर्ट कैन्डलस्टिक बॉडी, एक ही दिशा में हल्के ट्रेडिंग और खरीदी या बिक्री का कमज़ोर दबाव दर्शाती है (वीकनेस निश्चित करने के लिए अच्छा संकेत)।

लॉंग या शॉर्ट ट्रेडिंग पोजिशन लेने से पहले एक बात को खास ध्यान में रखना चाहिए कि यदि कैन्डल कि बॉडी वाईड अर्थात चौड़ी हो तो ट्रेड आपकी दिशा में होने की संभावना अधिक होती है। इसके विपरीत, यदि कैन्डल की बॉडी नैरो (संकरी) हो तो ट्रेड आपके खिलाफ जाने की संभावना अधिक होती है।

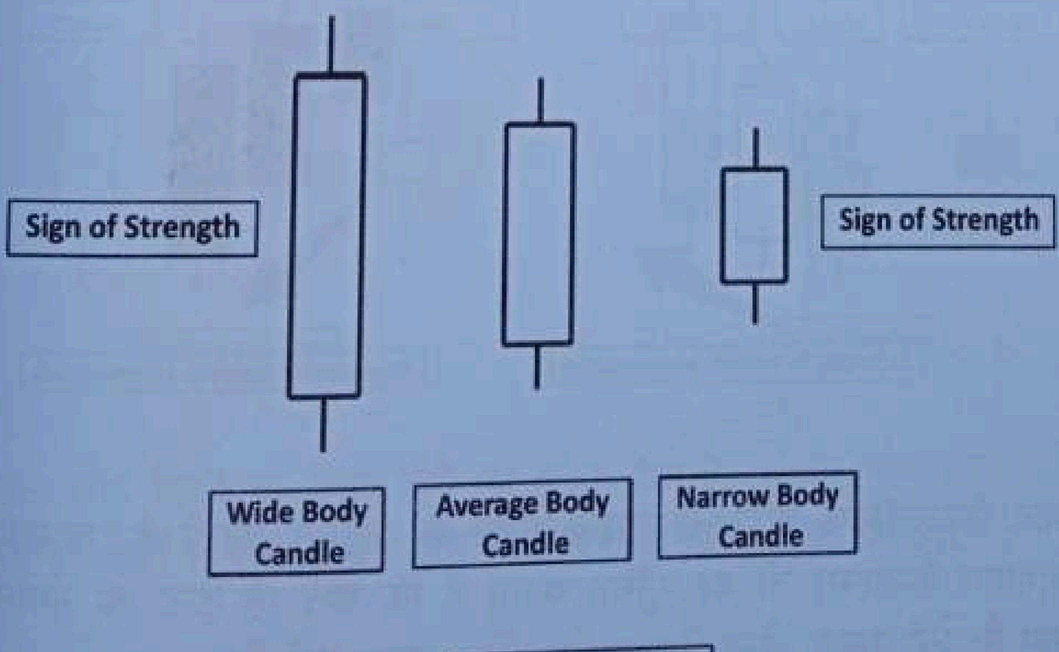

Bullish Candles

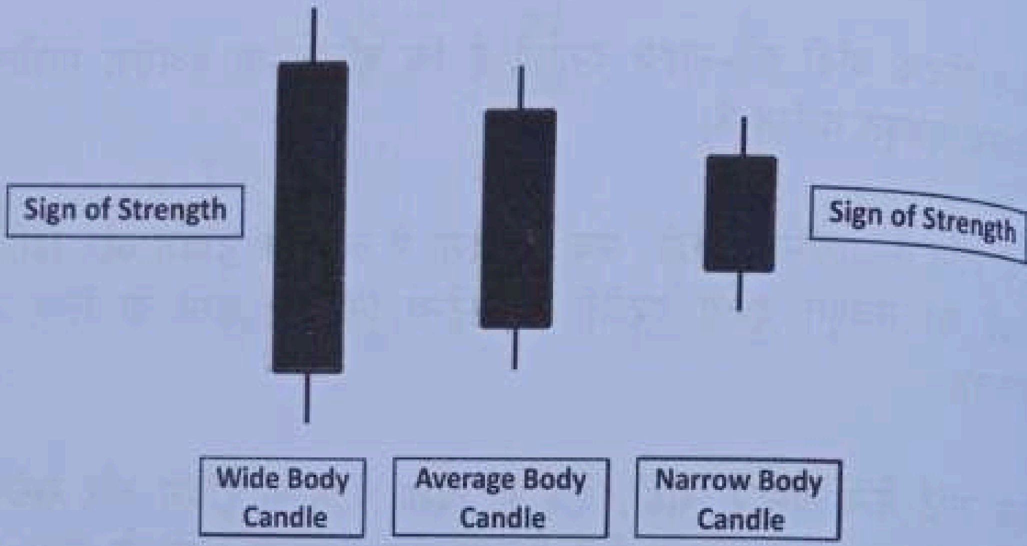

Bearish Candles

यदि कैन्डलस्टिक बॉडी की साइज समय के साथ बढ़ती है (खासकर कई लगातार कैन्डल्स) तो वह सूचित करता है कि चल रहे ट्रेन्ड का मोमेन्टम बढ़ रहा है। ऐसे समय, ट्रेन्ड के खिलाफ कभी न जाएँ।

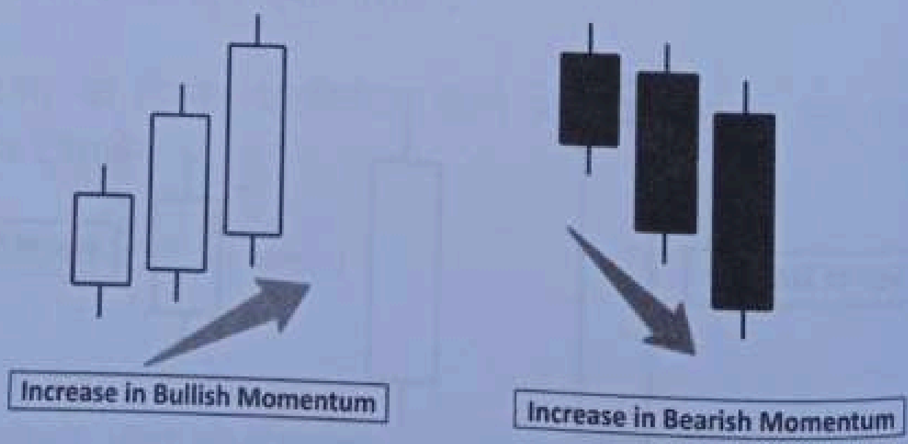

यदि कैन्डलस्टिक बॉडी की साइज समय के अनुसार घटती है (खासकर कई लगातार कैन्डल्स) तो वह सूचित करता है कि चल रहे ट्रेन्ड का मोमेन्ट घट रहा है। ऐसे समय, ट्रेन्ड रिवर्सल के संकेत नज़र आते है।

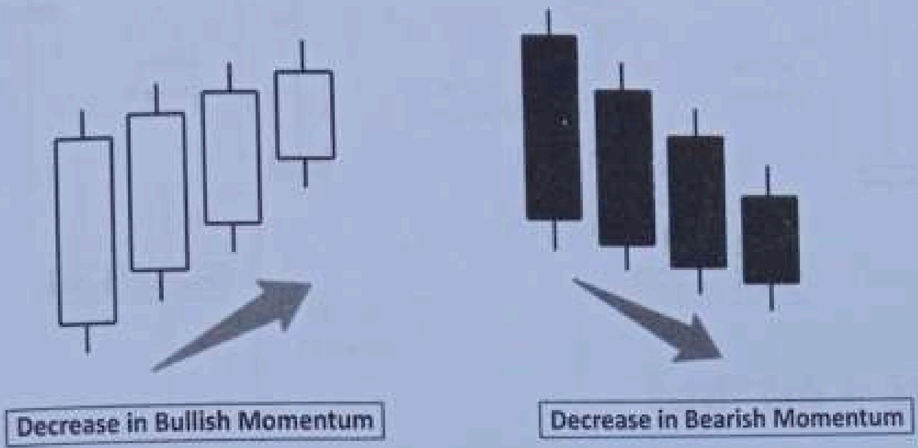

यदि कैन्डलस्टिक बॉडी कॉन्स्टन्ट हो तो ट्रेन्ड स्थिर (स्टेडी) होने का संकेत मिलता है।

कैन्डलस्टिक शैडो की लंबाई -

लाँग शैडो अनिश्चितता का संकेत हो सकता है तो शॉर्ट शैडो स्थिर मार्केट का संकेत हो सकता है, जिसमें अनिश्चितता कम होती है।

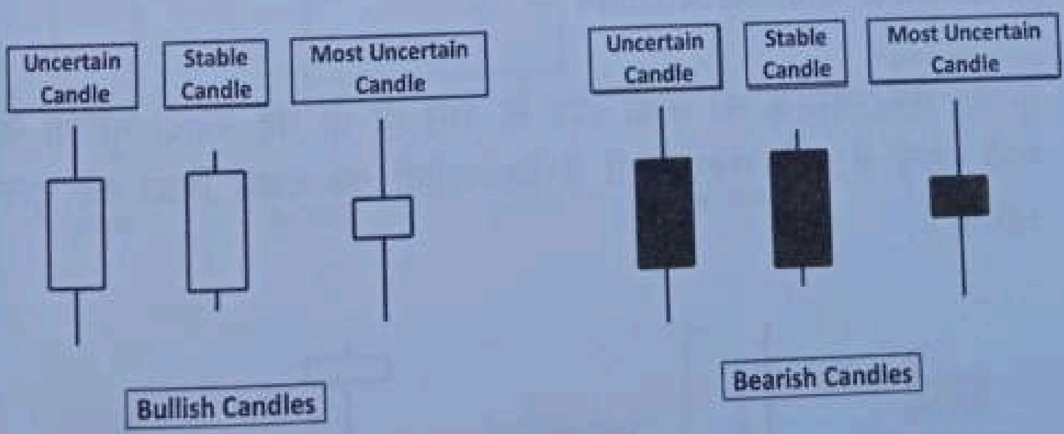

अपर शैडो बिक्री का दबाव होने का संकेत देता है, अर्थात भाव ऊपर जाने की संभावना नहीं है ऐसा संकेत देता है (रिजेक्शन ऑफ हायर प्राइस)।

लोअर शैडो खरीदी का दबाव होने का संकेत देता है, अर्थात भाव नीचे जाने की संभावना नहीं है ऐसा संकेत देता है (रिजेक्शन ऑफ लोअर प्राइस)।

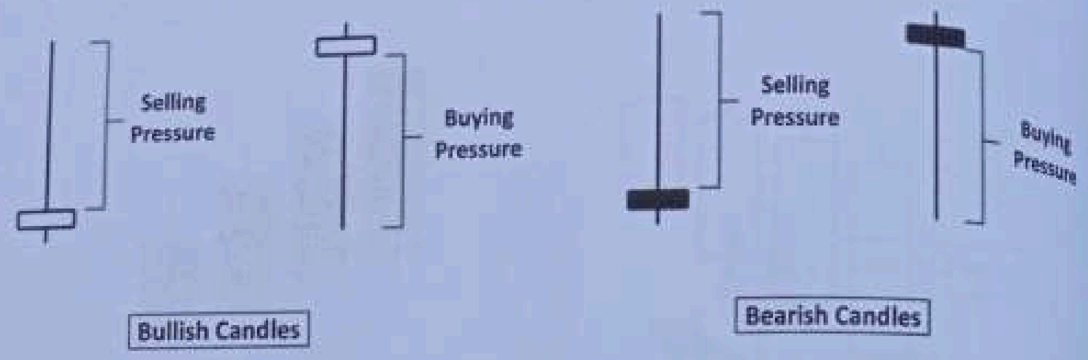

बॉडी टू शैडो रेशिओ –

जब ट्रेन्ड मजबूत होता है तब कैन्डलस्टिक बॉडी शैडो की तुलना में लंबी होती है।

जब ट्रेन्ड कमज़ोर होने लगता है तब शैडो कैन्डलस्टिक बॉडी की तुलना में लंबी होने लगती है।

जब साइडवे मूवमेन्ट या कन्सॉलिडेशन फेज होता है या ट्रेन्ड रिवर्सल होने की तैयारी होती है तब कैन्डलस्टिक की लंबी शैडो और छोटी बॉडी होती है।

कैन्डलस्टिक बॉडी की पोजिशन –

बुलिश कैन्डलस्टिक की बॉडी टॉप के पास हो तो वह ज्यादा बुलिश कैन्डल मानी जाती है, जो संकेत देती है कि खरीदी का दबाव बिक्री की तुलना में अधिक है।

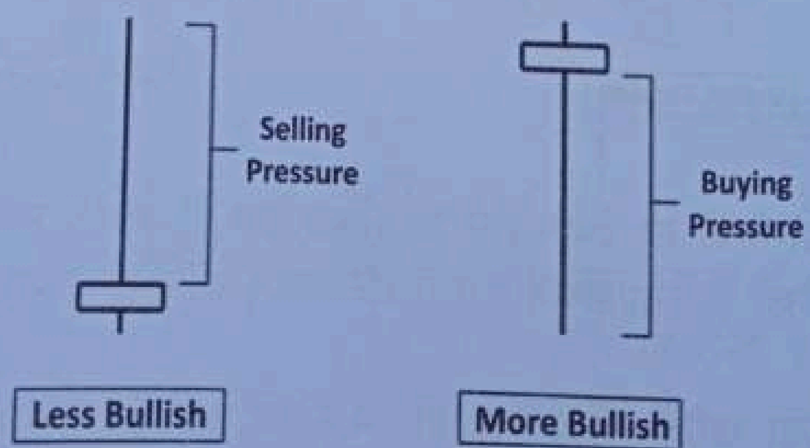

बेअरीश कैन्डल की बॉडी बॉटम के पास हो तो वह ज्यादा बेअरीश कैन्डल मानी जाती है, जो संकेत देती है कि बिक्री का दबाव खरीदी की तुलना में अधिक है।

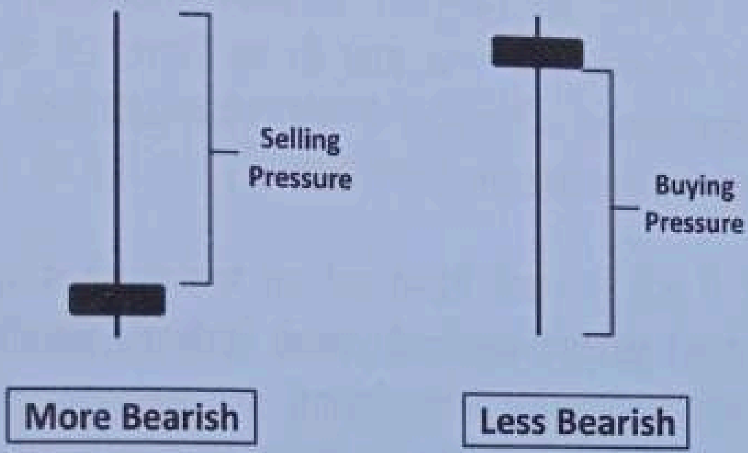

अब हमने ऊपर, जो सभी बातों को देखा है, उन्हें संक्षिप्त में दो चित्रों के द्वारा समझते है, जिसमें बुलिश और बेअरीश कैन्डल्स को उनके स्ट्रेन्थ के अनुसार दिखाया है।

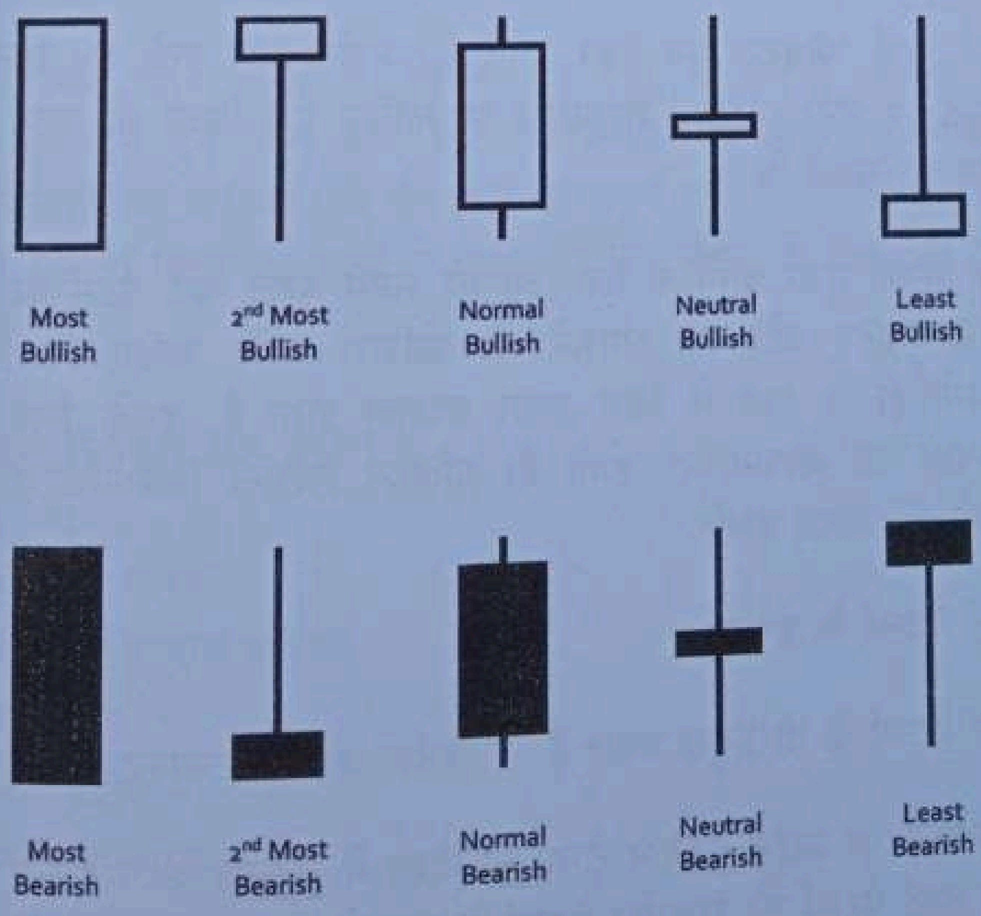

चार्ट पैटर्न्स

चार्ट पैटर्न यह टेक्निकल एनालिसिस का एक अभिन्न अंग है। यह सिक्योरिटी के भाव में परिवर्तन का विज्युअल प्रिझेन्टेशन होता है, जिसका आधार भूतकाल और वर्तमान के भाव पर होता है। वह सिक्योरिटी के भाव के बारे में सामूहिक मानव व्यवहार को दर्शाता है और उसके आधार पर भाव आगे किस दिशा में जाएगा इसका अंदाजा लगाया जाता है।

सरल शब्दों में कहें तो, चार्ट पैटर्न्स हमें यह पता लगाने में मदद करते है कि किसी सिक्योरिटी का भाव बढ़ाने और घटाने के लिए तेजीवालो और मंदीवालो के बीच प्रतिस्पर्धात्मक लड़ाई कौन जीतेगा।

चार्ट रीडिंग स्किल के आधार पर ट्रेडिंग करने वाले ट्रेडर्स, खरीदने और बेचने के बारे में बेहतर निर्णय ले सकते हैं। इस वजह से, यदि आपने हाल ही में ट्रेडिंग की शुरूआत की है, तो आपको चार्ट पैटर्न को पहचानना और उनका अर्थघटन करना सीखना जरूरी है।

चार्ट पैटर्न **'फ्रॅक्टल इन नेचर'** होते है, अर्थात आप उन्हें १५ मिनट, ३० मिनट, १ घंटा, दैनिक, साप्ताहिक या मासिक ऐसे किसी भी टाइम फ्रेम पर लागू कर सकते है।

एक सफल ट्रेडर बनने के लिए आपको सबसे पहले चार्ट पैटर्न का अध्ययन करना चाहिए और यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि किसी भी सिक्योरिटी के भाव में किस प्रकार बदलाव होता है, इसके लिए नियमित अभ्यास की आवश्यकता होती है। प्रतिदिन विभिन्न सिक्योरिटीज़ के चार्ट देखने की आदत डालें।

चार्ट पैटर्न्स के प्रकार :

चार्ट पैटर्न्स के दो प्रमुख प्रकार है - रिवर्सल और कन्टिन्युएशन पैटर्न्स।

जब चार्ट पर प्राइस एक्शन ट्रेन्ड की दिशा में बदलाव का संकेत देता हो तो ऐसे चार्ट पैटर्न्स को **रिवर्सल पैटर्न्स** के नाम से जाना जाता है।

सरल शब्दों में कहें तो, यदि आपको अपट्रेन्ड के दौरान रिवर्सल पैटर्न नज़र आया तो वह संकेत देता है कि भाव में अब गिरावट आ सकता है और यदि आपको डाउनट्रेन्ड के दौरान रिवर्सल पैटर्न नज़र आया तो वह संकेत देता है कि भाव में अब बढ़ोतरी हो सकती है।

वैसे ही, जब चार्ट पर प्राइस एक्शन मौजूदा ट्रेन्ड की दिशा में निरंतरता का संकेत देता हो तो ऐसे चार्ट पैटर्न्स को **कन्टिन्युएशन पैटर्न्स** के नाम से जाना जाता है।

सरल शब्दों में कहें तो, यदि आपको अपट्रेन्ड के दौरान कन्टिन्युएशन पैटर्न नज़र आया तो वह संकेत देता है कि भाव में हो रही बढ़ोतरी आगे भी जारी रहेगी और यदि डाउनट्रेन्ड के दौरान कन्टिन्युएशन पैटर्न नज़र आया तो समझना चाहिए कि भाव में हो रही गिरावट आगे भी जारी रहेगी।

इसके अलावा, कई **न्यूट्रल पैटर्न्स** भी है, जो ब्रेकआऊट की दिशा के आधार पर या तो रिवर्सल या कन्टिन्युएशन में से एक का संकेत देते है।

वैसे तो चार्ट पैटर्न अनेक है, लेकिन एक ट्रेडर के रूप में आपको सबसे सटीक परिणाम देने वाले और चार्ट पर अक्सर दिखने वाले पैटर्न्स को पहचानना सीखना चाहिए। नीचे मैंने कुछ महत्वपूर्ण चार्ट पैटर्न्स को दर्शाया है, जिनका उपयोग किसी भी प्रकार के फाइनान्शियल मार्केट में किया जा सकता है।

महत्वपूर्ण रिवर्सल चार्ट पैटर्न्स :

- हेड एन्ड शोल्डर
- इन्वर्टेड हेड एन्ड शोल्डर
- डबल टॉप
- डबल बॉटम
- राऊन्डिंग बॉटम
- राऊन्डिंग टॉप

हेड एन्ड शोल्डर –

यह पैटर्न लोकप्रिय है, आसानी से पहचाना जा सकता है और सबसे विश्वसनीय ट्रेन्ड रिवर्सल पैटर्न में से एक है।

यह एक बेअरीश रिवर्सल पैटर्न है, जो एक निश्चित अपट्रेन्ड के बाद नज़र आता है और संकेत देता है कि पैटर्न पूरा होने के बाद उल्लेखनीय रिवर्सल दिखाई देगा। यह पैटर्न दर्शाता है कि खरीदारों ने अपना दाँव खो दिया है और भाव यहाँ से नीचे जाने की संभावना है।

जैसा कि नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है, यह पैटर्न तीन टॉप द्वारा तैयार होता है, जिसमें पहला टॉप लेफ्ट शोल्डर कहलाता है, दुसरा टॉप (जो सबसे ऊँचा है) हेड के नाम से जाना जाता है और तीसरा टॉप राईट शोल्डर कहलाता है। लेफ्ट और राईट शोल्डर के बॉटम को जोड़ने वाली लाइन नेकलाइन कहलाती है। जब भाव नीचे की दिशा में नेकलाइन को तोड़ता है तभी पैटर्न पूरा हुआ, ऐसा माना जाता है।

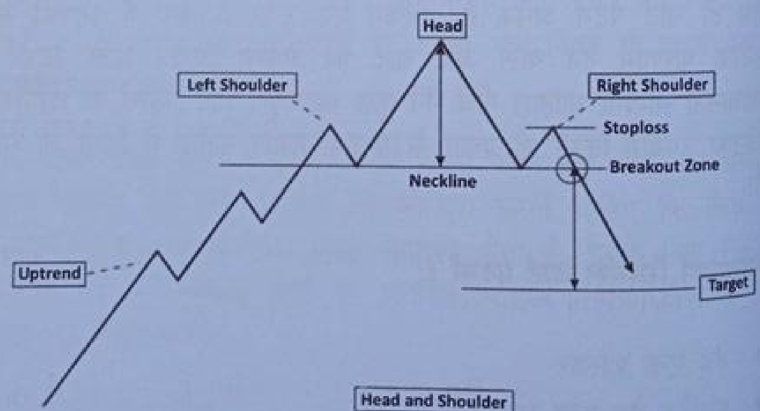

Head and Shoulder

जैसा कि ऊपर दिए गए चार्ट में नज़र आता है, दिर्घ बुलिश ट्रेन्ड के बाद भाव टॉप बनाता है और इसके बाद उसमें धीरे धीरे गिरावट होती है। दुसरा टॉप बनाने के लिए भाव फिर से बढ़ता है और पिछले टॉप से भी ऊपर जाता है और फिर से घटता है। भाव तीसरी बार फिर से बढ़ता है, लेकिन पहले टॉप के लेवल जितना ही बढ़ता है और फिर से गिरकर नेकलाइन तक आता है।

अब, एक बार भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके नीचे जाता है, तब शॉर्ट एन्ट्री ली जाती है।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, हेड का टॉप और नेकलाइन के बीच के भाव के फर्क के बराबर, नेकलाइन के नीचे गिना जाता है।

पिछले पन्ने पर दर्शाए चार्ट के अनुसार राईट शोल्डर के टॉप पर स्टॉप लॉस लगाया जाता है।

जब भाव नेकलाइन तोड़कर उसके नीचे जाता है, तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

इन्वर्टेड हेड एन्ड शोल्डर –

जैसा कि नाम दर्शाता है, ऊपर दर्शाए हेड एन्ड शोल्डर पैटर्न का यह इन्वर्टेड वर्जन है।

यह एक बुलिश रिवर्सल पैटर्न है, जो एक निश्चित डाउनट्रेन्ड के बाद नज़र आता है और संकेत देता है कि पैटर्न पूरा होने के बाद उल्लेखनीय रिवर्सल दिखाई देगा।

यह पैटर्न दर्शाता है कि विक्रेताओं ने अपना दाँव खो दिया है और भाव यहाँ से ऊपर जाने की संभावना है।

जैसा कि अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में दर्शाया है, यह पैटर्न तीन लो (नीचले लेवल) द्वारा तैयार होता है, जिसमें पहला लो लेफ्ट शोल्डर कहलाता है, दुसरा लो (जो सबसे नीचे है) हेड के नाम से जाना जाता है और तीसरा लो राईट शोल्डर कहलाता है। लेफ्ट और राईट शोल्डर के टॉप को जोड़ने वाली लाइन नेकलाइन कहलाती है। जब भाव ऊपर की दिशा में नेकलाइन को तोड़ता है तभी पैटर्न पूरा हुआ, ऐसा माना जाता है।

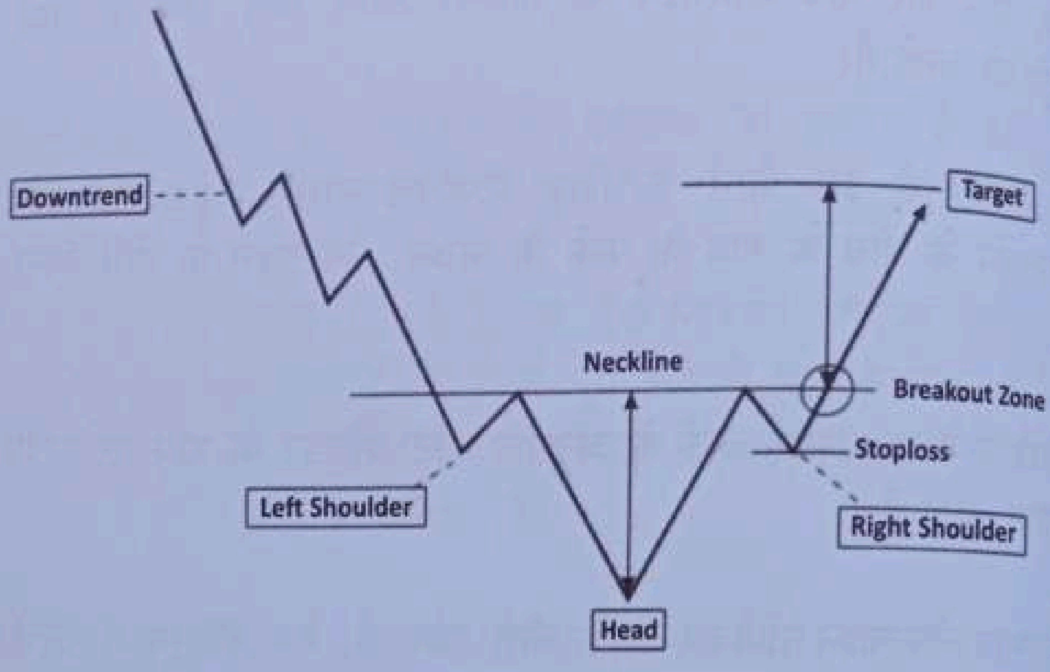

Inverted Head and Shoulder

जैसा कि ऊपर दिए गए चार्ट में नज़र आता है, दिर्घ बेअरीश ट्रेन्ड के बाद भाव बॉटम बनाता है और इसके बाद उसमें धीरे धीरे बढ़ोतरी होती है। दुसरा लो बनाने के लिए भाव फिर से घटता है और पिछले लो से भी नीचे जाता है और फिर से बढ़ता है। भाव तीसरी बार फिर से घटता है, लेकिन पहले लो के लेवल जितना ही घटता है और फिर से बढ़कर नेकलाइन तक आता है।

अब, एक बार भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके ऊपर जाता है, तब लॉंग एन्ट्री ली जाती है।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, हेड का नीचले लेवल और नेकलाइन के बीच के भाव के फर्क के बराबर, नेकलाइन के ऊपर गिना जाता है।

जब भाव नेकलाइन तोड़कर उसके ऊपर जाता है, तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

डबल टॉप –

यह एक बेअरीश रिवर्सल पैटर्न है, जो एक निश्चित अपट्रेन्ड के बाद नज़र आता है और संकेत देता है कि पैटर्न पूर्ण होने के बाद उल्लेखनीय रिवर्सल दिखाई देगा।

चार्ट पर इस पैटर्न को पहचानना आसान है। वह अंग्रेजी अक्षर (M) जैसा दिखता है। यह पैटर्न दर्शाता है कि खरीदारों ने अपनी बाजी गवाँ दी है और भाव यहाँ से नीचे जाने की संभावना है।

जैसा कि नीचे दिए चार्ट में दर्शाया है, यह पैटर्न लगातार दो टॉप और दो टॉप के बीच में मामूली गिरावट से तैयार होता है। दो टॉप के बीच तैयार हुए बॉटम पर से खींची हॉरिझोन्टल लाइन को नेकलाइन कहते है। जब भाव नीचे की दिशा में नेकलाइन को तोड़ता है तभी पैटर्न पूरा हुआ, ऐसा माना जाता है।

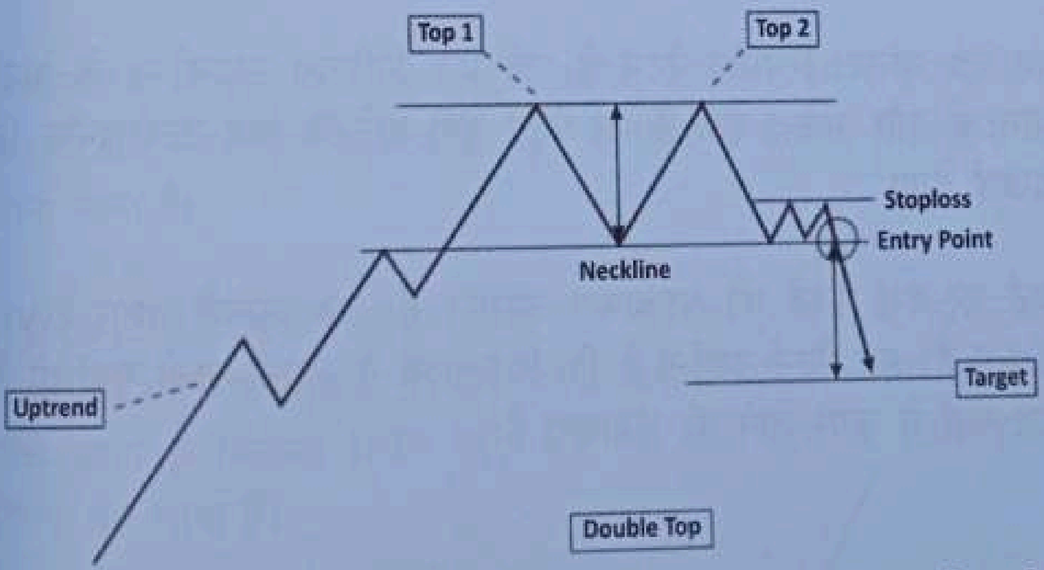

जैसा कि ऊपर दिए गए चार्ट में देखा जा सकता है, दिर्घ बुलिश ट्रेन्ड के बाद भाव टॉप बनाता है और उसके बाद उसमें धीरे धीरे गिरावट होती है। दुसरा टॉप बनाने के लिए भाव फिर से बढ़ता है और दुसरा टॉप बनाता है, जो पहले टॉप के लगभग समान होता है। इसके बाद भाव फिर से घटकर नेकलाइन तक आता है।

अब, एक बार भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके नीचे जाता है, तब शॉर्ट एन्ट्री ली जाती है।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, डबल टॉप के टॉप के पॉइन्ट और नेकलाइन के बीच के भाव के फर्क के बराबर, नेकलाइन के नीचे गिना जाता है।

नेकलाइन को तोड़कर उसके नीचे जाने से पहले, भाव में सामान्यतः कुछ कन्सॉलिडेशन नज़र आता है और उसके बाद ब्रेकआऊट होता है। भाव थोड़ा ऊपर जाता है (माइनर स्विंग हाई) और वह इस पैटर्न के लिए स्टॉप लॉस एरिया बन जाता है। उचित स्तर पर स्टॉप लॉस को लगने से रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ अनुकूल होता है।

जब भाव नेकलाइन तोड़कर उसके नीचे जाता है, तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

डबल बॉटम –

यह एक बुलिश रिवर्सल पैटर्न है, जो एक निश्चित डाउनट्रेन्ड के बाद नज़र आता है और संकेत देता है कि पैटर्न पूर्ण होने के बाद उल्लेखनीय रिवर्सल दिखाई देगा।

चार्ट पर इस पैटर्न को पहचानना आसान है। वह अंग्रेजी अक्षर (W) जैसा दिखता है। यह पैटर्न दर्शाता है कि विक्रेताओं ने अपनी बाजी गवाँ दी है और भाव यहाँ से ऊपर जाने की संभावना है।

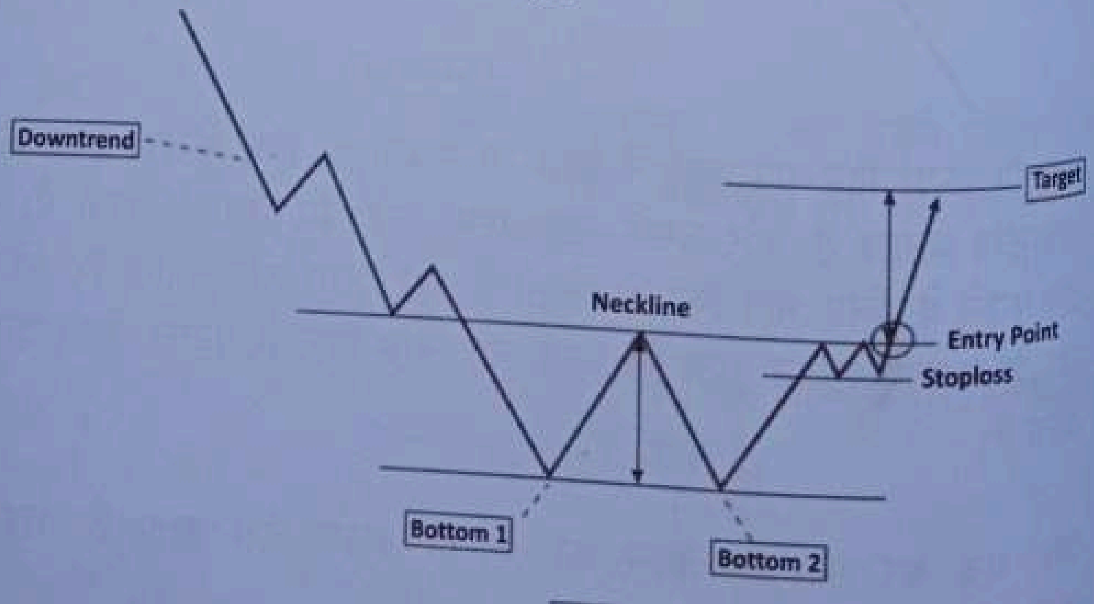

Double Bottom

जैसा कि पिछले पन्ने पर दिए चार्ट में दर्शाया है, यह पैटर्न लगातार दो बॉटम और दो बॉटम के बीच में मामूली बढ़ोतरी से तैयार होता है। दो बॉटम के बीच तैयार हुए टॉप पर से खींची हॉरिझोन्टल लाइन को नेकलाइन कहते है। जब भाव ऊपर की दिशा में नेकलाइन को तोड़ता है तभी पैटर्न पूरा हुआ, ऐसा माना जाता है।

जैसा कि पिछले पन्ने पर दिए गए चार्ट में देखा जा सकता है, दिर्घ बेअरीश ट्रेन्ड के बाद भाव बॉटम बनाता है और उसके बाद उसमें धीरे धीरे बढ़ोतरी होती है। दुसरा बॉटम बनाने के लिए भाव फिर से घटता है और दुसरा टॉप बनाता है, जो पहले बॉटम के लगभग समान होता है। इसके बाद भाव फिर से बढ़कर नेकलाइन तक आता है।

अब, एक बार भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके ऊपर जाता है, तब लॉग एन्ट्री ली जाती है।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, डबल बॉटम के नीचले पॉइन्ट और नेकलाइन के बीच के भाव के फर्क के बराबर, नेकलाइन के ऊपर गिना जाता है।

नेकलाइन को तोड़कर उसके ऊपर जाने से पहले, भाव में सामान्यतः कुछ कन्सॉलिडेशन नज़र आता है और उसके बाद ब्रेकआऊट होता है। भाव थोड़ा नीचे जाता है (माइनर स्विंग लो) और वह इस पैटर्न के लिए स्टॉप लॉस एरिया बन जाता है।

जब भाव नेकलाइन तोड़कर उसके ऊपर जाता है, तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

राऊन्डिंग बॉटम –

यह एक लॉग टर्म बुलिश पैटर्न है, जो एक निश्चित डाउनट्रेन्ड और लंबे समय के कन्सॉलिडेशन के बाद नज़र आता है और संकेत देता है कि पैटर्न पूर्ण होने के बाद उल्लेखनीय रिवर्सल दिखाई देगा।

इस पैटर्न को चार्ट पर पहचानना आसान है क्योंकि यह कटोरी या तश्तरी के तल के समान दिखता है। इसलिए इस पैटर्न को सॉसर बॉटम पैटर्न भी कहते है।

यह पैटर्न दर्शाता है कि कन्सॉलिडेशन के समय के बाद, विक्रेताओं ने बाजी गवाँ दी है और भाव यहाँ से ऊपर जाने की संभावना है।

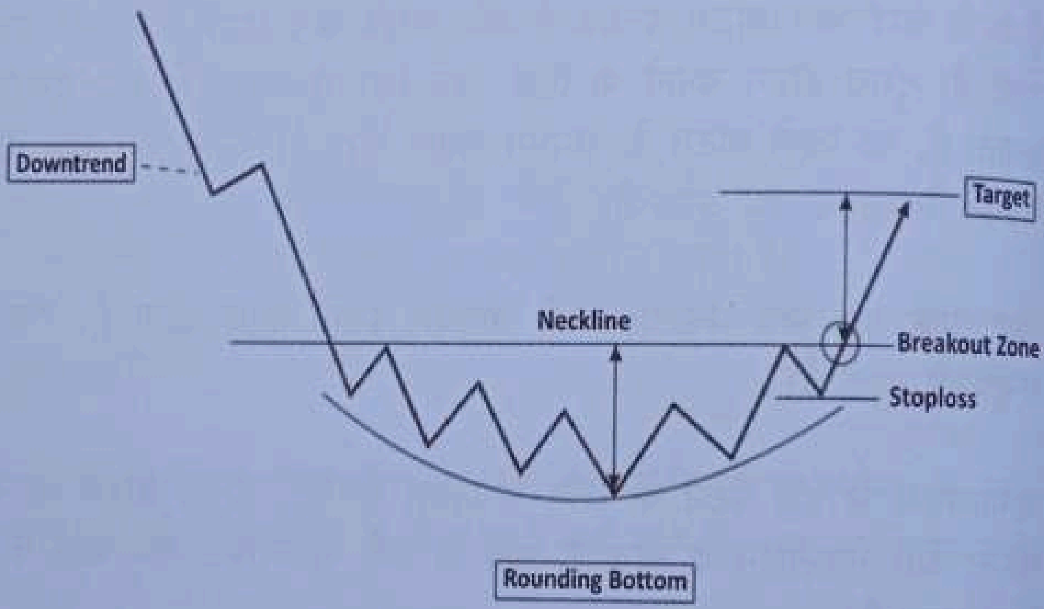

जैसा कि ऊपर दिए चार्ट में दर्शाया है, यह पैटर्न डाउनट्रेन्ड के बाद कन्सॉलिडेशन के समय में तैयार होता है। इस समय के दौरान भाव में गिरावट धीरे धीरे कम होती है, बॉटम तैयार होता है और उसके बाद भाव धीरे धीरे बढ़ने लगता है।

राऊन्डिंग बॉटम पैटर्न के बेअरीश और बुलिश बाजूओं के टॉप को स्पर्श करने वाली हॉरिझोन्टल लाइन को नेकलाइन कहते है। जब भाव ऊपर की दिशा में नेकलाइन को तोड़ता है तभी पैटर्न पूर्ण हुआ, ऐसा माना जाता है।

अब, एक बार भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके ऊपर जाता है, तब लाँग एन्ट्री ली जाती है।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, राऊन्डिंग बॉटम का निचला स्तर और नेकलाइन के बीच के भाव के फर्क के बराबर, नेकलाइन के ऊपर गिना जाता है।

इस पैटर्न के मामले में, स्टॉप लॉस को स्विंग लो पर लगाया जाता है, जो भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके ऊपर जाने से पहले नज़र आता है, जिसे पिछले पन्ने पर चार्ट में दर्शाया है। ऐसा करने से रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ अनुकूल होता है।

जब डाउनट्रेन्ड के दरम्यान वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी होती है और उसके बाद कन्सॉलिडेशन के वक्त फ्लैट या कम वॉल्यूम नज़र आता है और फिर से जब भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके ऊपर जाता है तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

इस पैटर्न को आमतौर पर लाँग टर्म पैटर्न माना जाता है और इसलिए साप्ताहिक या मासिक चार्ट पर यह पैटर्न तैयार होता है तब वह स्पष्ट संकेत देता है।

राऊन्डिंग टॉप –

यह एक लाँग टर्म बेअरीश पैटर्न है, जो एक निश्चित अपट्रेन्ड और लंबे समय के कन्सॉलिडेशन के बाद नज़र आता है और वह संकेत देता है कि पैटर्न पूर्ण होने के बाद उल्लेखनीय रिवर्सल दिखाई देगा।

इस पैटर्न को चार्ट पर पहचानना आसान है। यह राऊन्डिंग बॉटम पैटर्न से विपरीत है और उसे इन्वर्टेड सॉसर बॉटम पैटर्न के नाम से जाना जाता है। यह पैटर्न दर्शाता है कि कन्सॉलिडेशन के समय के बाद, खरीदारों ने बाजी गवाँ दी है और भाव यहाँ से नीचे जाने की संभावना है।

यह पैटर्न अपट्रेन्ड के बाद कन्सॉलिडेशन के दौरान तैयार होता है। इस समय के दौरान भाव की बढ़त धीरे धीरे कम होती है, टॉप तैयार होता है और उसके बाद भाव धीरे धीरे घटने लगता है।

राऊन्डिंग टॉप पैटर्न के बुलिश और बेअरीश बाजूओं के टॉप को स्पर्श करने वाली हॉरिझोन्टल लाइन को नेकलाइन कहते है। जब भाव नीचे की दिशा में नेकलाइन को तोड़ता है, तभी पैटर्न पूर्ण हुआ, ऐसा माना जाता है।

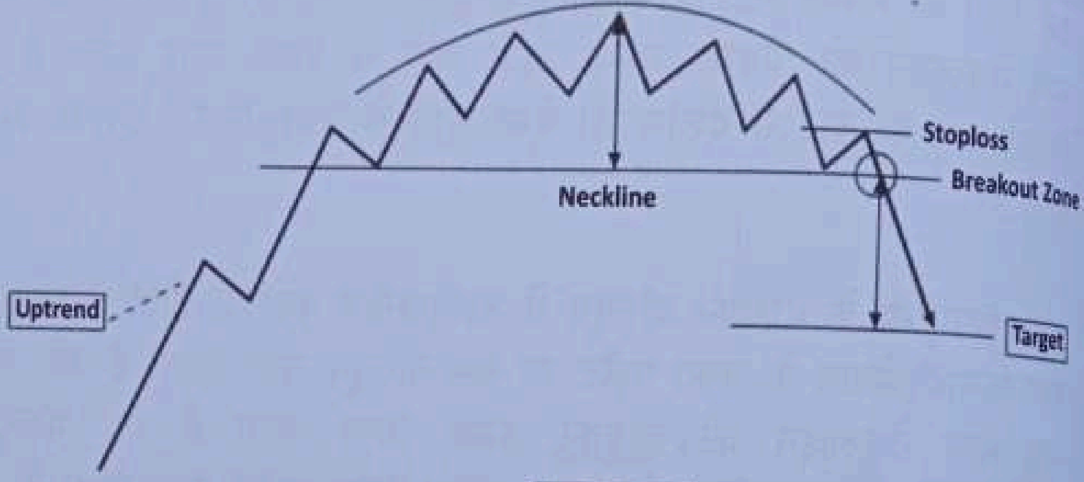

Rounding Top

अब, एक बार भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके नीचे जाता है, तब शॉर्ट एन्ट्री ली जाती है।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, राऊन्डिंग बॉटम का ऊपरी स्तर और नेकलाइन के बीच के भाव के फर्क के बराबर, नेकलाइन के नीचे गिना जाता है।

इस पैटर्न के मामले में, स्टॉप लॉस को स्विंग हाई पर लगाया जाता है, जो भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके नीचे जाने से पहले नज़र आता है, जिसे पिछले पन्ने पर चार्ट में दर्शाया है। ऐसा करने से रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ अनुकूल होता है।

जब अपट्रेन्ड के दरम्यान वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी होती है और उसके बाद कन्सॉलिडेशन के वक्त फ्लैट या कम वॉल्यूम नज़र आता है और फिर से जब भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके नीचे जाता है तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

इस पैटर्न को आमतौर पर लॉंग टर्म पैटर्न माना जाता है और इसलिए साप्ताहिक या मासिक चार्ट पर यह पैटर्न तैयार होता है तब वह स्पष्ट संकेत देता है।

महत्वपूर्ण कन्टिन्यूएशन चार्ट पैटर्न्स :

- असेन्डिंग ट्राइऐंगल
- डिसेन्डिंग ट्राइऐंगल
- बुलिश रेक्टेंगल पैटर्न
- बेअरीश रेक्टेंगल पैटर्न
- कप एन्ड हैन्डल पैटर्न
- इन्वर्टेड कप एन्ड हैन्डल

असेन्डिंग ट्राइऐंगल –

यह एक बुलिश कन्टिन्यूएशन पैटर्न है, जो अपट्रेन्ड के दौरान नज़र आता है और संकेत देता है कि पैटर्न पूरा होने के बाद सिक्योरिटी का भाव बढ़ना जारी रहेगा।

यह पैटर्न दर्शाता है कि खरीदार बहुत ही आक्रमक हो गए है और एक बार भाव पैटर्न को तोड़कर (ब्रेकआऊट देकर) ऊपर जाता है, तो भाव में और बढ़ोतरी होने की संभावना है।

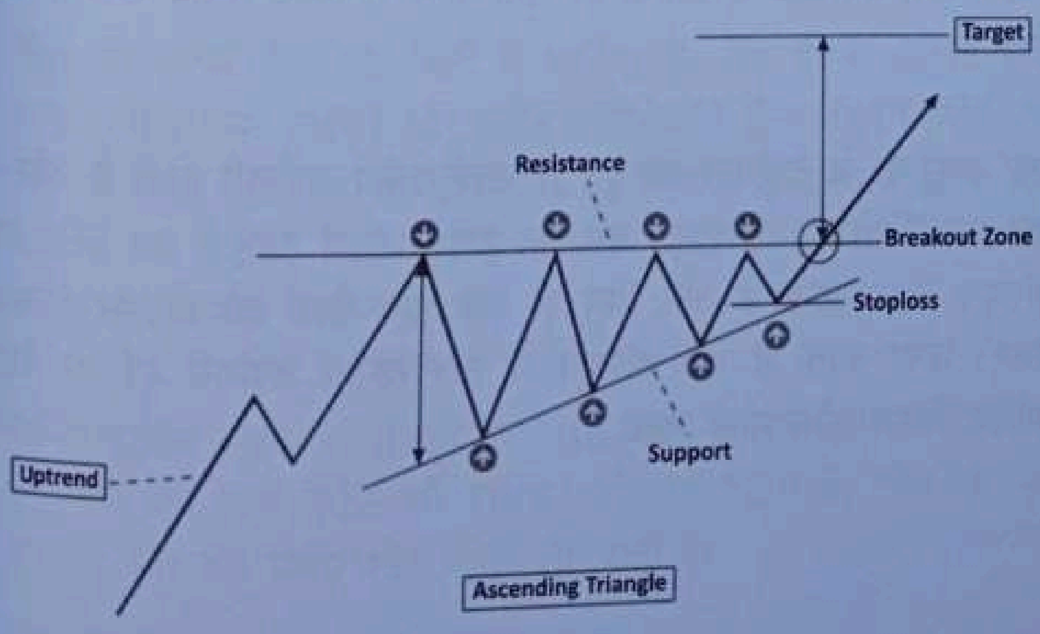

जैसा कि ऊपर दिए गए चार्ट में दर्शाया है, यह पैटर्न राइजिंग लोअर ट्रेन्ड लाइन (सपोर्ट लाइन) और फ्लैट होरिझोन्टल ट्रेन्डलाइन (रेजिस्टन्स लाइन) के बीच में तैयार होता है। यह दर्शाता है कि पिछला ट्रेन्ड जारी रहेगा और संकेत देता है कि खरीदार विक्रेताओं से अधिक आक्रमक हो गए है, क्योंकि भाव हायर लो बनाना जारी रखता है।

कन्टिन्यूएशन साइड पर ब्रेकआऊट नज़र आने के बाद ही यह पैटर्न पूर्ण होता है, यानी जब भाव रेजिस्टन्स को तोड़कर आगे बढ़ता है, तभी यह पैटर्न पूर्ण होता है और उस समय लाँग एन्ट्री ली जाती है।

यह बहुत ही पॉवरफुल कन्टिन्यूएशन चार्ट पैटर्न है। इसलिए यदि ट्रेडर पिछले अपट्रेन्ड में लाँग पोजिशन लेने से चूक गए हो तो उन्हें फिर से सिक्योरिटी में एन्टर होने का मौका मिलता है।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, असेन्डिंग ट्राइऐंगल के सबसे मोटे पॉइन्ट की उँचाई (हाइट) के बराबर, ब्रेकआऊट पॉइन्ट के ऊपर गिना जाता है।

इस पैटर्न के मामले में, स्टॉप लॉस को स्विंग लो पर लगाया जाता है, जो भाव रेजिस्टन्स को तोड़कर उसके ऊपर जाने से पहले नज़र आता है, जिसे पिछले पन्ने पर चार्ट में दर्शाया है। ऐसा करने से रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ अनुकूल होता है।

जब अपट्रेन्ड के दरम्यान वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी होती है और उसके बाद कन्सॉलिडेशन के वक्त भाव जब ट्राइऐंगल में होता है तब फ्लैट या कम वॉल्यूम नज़र आता है और फिर से जब भाव पैटर्न को तोड़कर (ब्रेकआऊट देकर) ऊपर जाता है तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

डिसेन्डिंग ट्राइऐंगल –

यह एक बेअरीश कन्टिन्यूएशन पैटर्न है, जो डाउनट्रेन्ड के दौरान नज़र आता है और संकेत देता है कि पैटर्न पूरा होने के बाद सिक्योरिटी का भाव गिरना जारी रहेगा।

यह पैटर्न दर्शाता है कि विक्रेता बहुत ही आक्रमक हो गए है और एक बार भाव पैटर्न को तोड़कर (ब्रेकआऊट देकर) नीचे जाता है, तो भाव में और गिरावट होने की संभावना है।

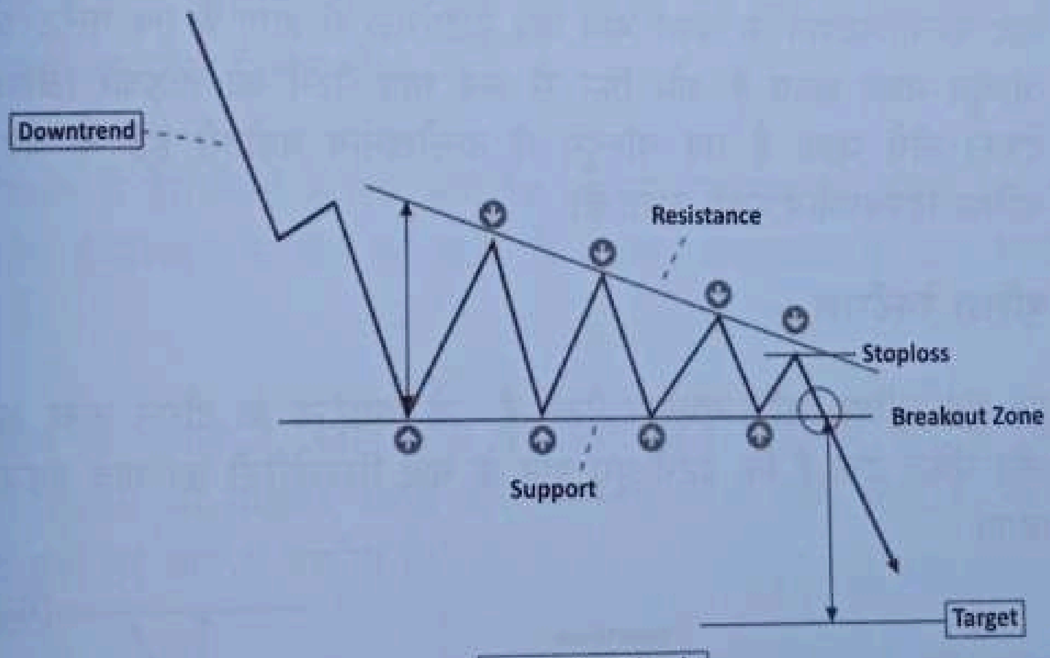

Descending Triangle

जैसा कि ऊपर दिए गए चार्ट में दर्शाया है, यह पैटर्न फॉलिंग अपर ट्रेन्ड लाइन (रेजिस्टन्स लाइन) और फ्लैट होरिझोन्टल ट्रेन्डलाइन (सपोर्ट लाइन) के बीच में तैयार होता है। यह दर्शाता है कि पिछला ट्रेन्ड जारी रहेगा और संकेत देता है कि विक्रेता खरीदारों से अधिक आक्रमक हो गए है, क्योंकि भाव लोअर हाई बनाना जारी रखता है।

कन्टिन्यूएशन साइड पर ब्रेकआऊट नज़र आने के बाद ही यह पैटर्न पूर्ण होता है, यानी जब भाव सपोर्ट को तोड़कर और भी घटता है, तभी यह पैटर्न पूर्ण होता है और उस समय शॉर्ट एन्ट्री ली जाती है।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, डिसेन्डिंग ट्राइऐंगल के सबसे मोटे पॉइन्ट की उँचाई (हाइट) के बराबर, ब्रेकआऊट पॉइन्ट के नीचे गिना जाता है।

इस पैटर्न के मामले में, स्टॉप लॉस को स्विंग हाई पर लगाया जाता है, जो भाव सपोर्ट को तोड़कर उसके नीचे जाने से पहले नज़र आता है, जिसे पिछले पन्ने पर चार्ट में दर्शाया है। ऐसा करने से रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ अनुकूल होता है।

जब डाउनट्रेन्ड के दरम्यान वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी होती है और उसके बाद कन्सॉलिडेशन के वक्त भाव जब ट्राइऐंगल में होता है तब फ्लैट या कम वॉल्यूम नज़र आता है और फिर से जब भाव पैटर्न को तोड़कर (ब्रेकआऊट देकर) नीचे जाता है तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

बुलिश रेक्टेंगल –

यह एक बुलिश कन्टिन्यूएशन पैटर्न है, जो अपट्रेन्ड के दौरान नज़र आता है और संकेत देता है कि पैटर्न पूरा होने के बाद सिक्योरिटी का भाव बढ़ना जारी रहेगा।

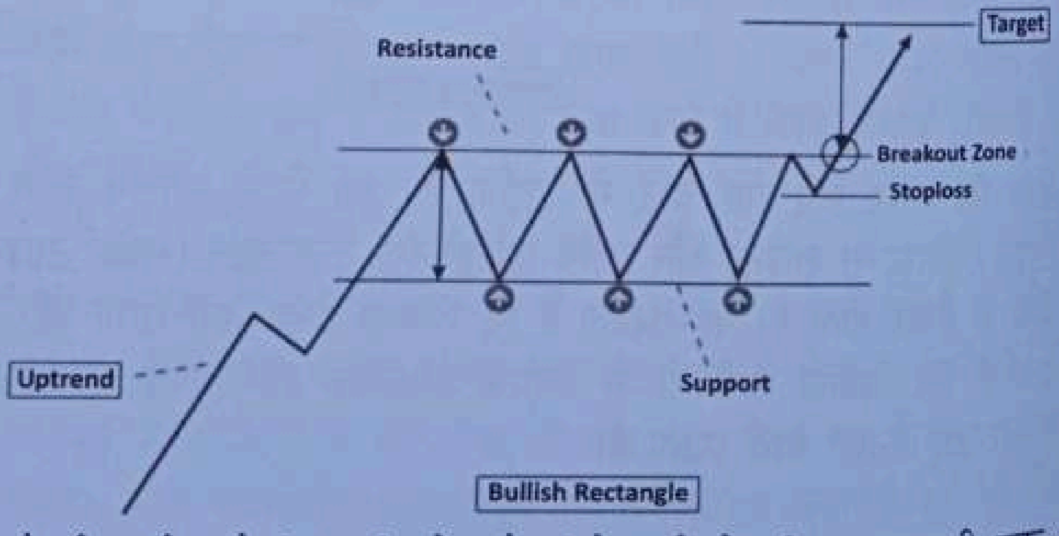

यह पैटर्न दर्शाता है कि खरीदारों और विक्रेताओं के बीच रस्साकशी शुरू थी और अंततः खरीदारों ने दाँव जीत लिया और इसलिए ऊपर की दिशा में ब्रेकआऊट नज़र आया। उसके बाद, खरीदार आक्रमक हो गए और भाव अधिक ऊपर गया।

जैसा कि पिछले पन्ने पर दिए गए चार्ट में दर्शाया है, यह पैटर्न फ्लैट अपर ट्रेन्डलाइन (रेजिस्टन्स लाइन) और फ्लैट लोअर ट्रेन्डलाइन (सपोर्ट लाइन) के बीच में तैयार होता है।

कन्टिन्यूएशन साइड पर ब्रेकआऊट नज़र आने के बाद ही यह पैटर्न पूर्ण होता है, यानी जब भाव रेजिस्टन्स को तोड़कर आगे बढ़ता है, तभी यह पैटर्न पूर्ण होता है और उस समय लाँग एन्ट्री ली जाती है।

यह बहुत ही पॉवरफुल कन्टिन्यूएशन चार्ट पैटर्न है। इसलिए यदि ट्रेडर पिछले अपट्रेन्ड में लाँग पोजिशन लेने से चूक गए हो तो उन्हें फिर से सिक्योरिटी में एन्टर होने का मौका मिलता है।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, रेक्टेंगल की ऊँचाई अर्थात दो फ्लैट ट्रेन्डलाइन के बीच की हाईट के बराबर, ब्रेकआऊट के ऊपर गिना जाता है।

इस पैटर्न के मामले में, स्टॉप लॉस को स्विंग लो पर लगाया जाता है, जो भाव रेजिस्टन्स को तोड़कर उसके ऊपर जाने से पहले नज़र आता है, जिसे पिछले पन्ने पर चार्ट में दर्शाया है।

जब अपट्रेन्ड के दरम्यान वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी होती है और उसके बाद कन्सॉलिडेशन के वक्त भाव जब रेक्टेंगल में होता है तब फ्लैट या कम वॉल्यूम नज़र आता है और फिर से जब भाव पैटर्न को तोड़कर (ब्रेकआऊट देकर) ऊपर जाता है तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

बेअरीश रेक्टेंगल –

यह एक बेअरीश कन्टिन्यूएशन पैटर्न है, जो डाउनट्रेन्ड के दौरान नज़र आता है और संकेत देता है कि पैटर्न पूरा होने के बाद सिक्योरिटी का भाव गिरना जारी रहेगा।

यह पैटर्न दर्शाता है कि खरीदारों और विक्रेताओं के बीच रस्साकशी शुरू थी और अंततः विक्रेताओं ने दाँव जीत लिया और इसलिए नीचे की दिशा में ब्रेकआऊट नज़र आया। उसके बाद, विक्रेता आक्रमक हो गए और भाव अधिक नीचे गया।

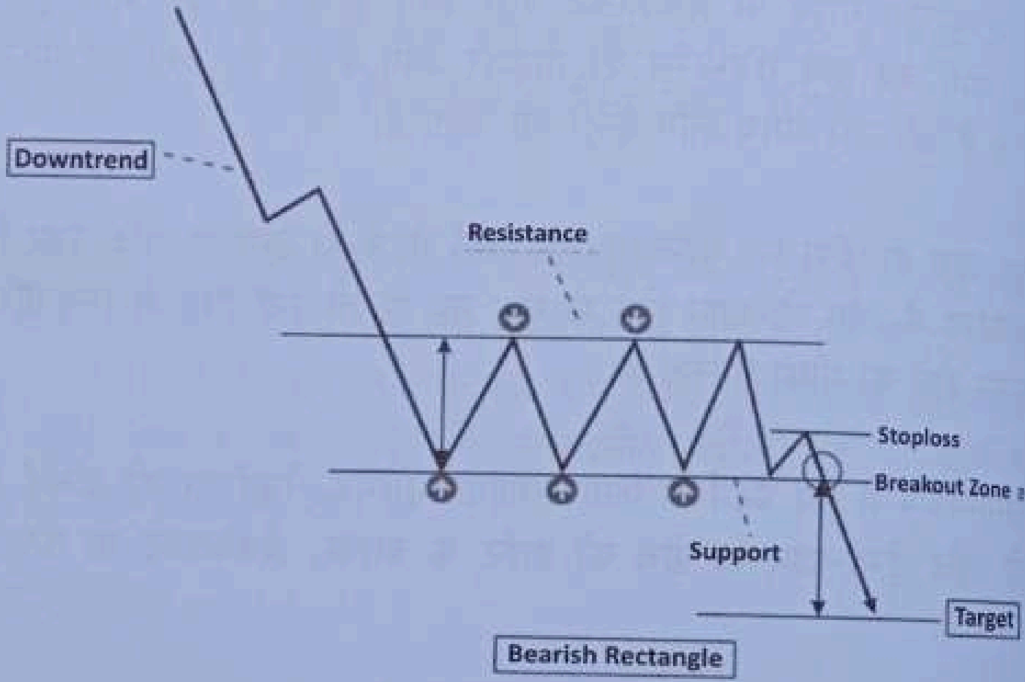

जैसा कि ऊपर दिए गए चार्ट में दर्शाया है, यह पैटर्न फ्लैट अपर ट्रेन्डलाइन (रेजिस्टन्स लाइन) और फ्लैट लोअर ट्रेन्डलाइन (सपोर्ट लाइन) के बीच में तैयार होता है।

कन्टिन्यूएशन साइड पर ब्रेकआऊट नज़र आने के बाद ही यह पैटर्न पूर्ण होता है, यानी जब भाव सपोर्ट को तोड़कर और भी घटता है, तभी यह पैटर्न पूर्ण होता है और उस समय शॉर्ट एन्ट्री ली जाती है।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, रेक्टेंगल की ऊँचाई अर्थात दो फ्लैट ट्रेन्डलाइन के बीच की हाईट के बराबर, ब्रेकआऊट के नीचे गिना जाता है।

इस पैटर्न के मामले में स्टॉप लॉस को स्विंग हाई पर लगाया जाता है, जो भाव सपोर्ट को तोड़कर उसके नीचे जाने से पहले नज़र आता है, जिसे पिछले पन्ने पर चार्ट में दर्शाया है।

जब डाउनट्रेन्ड के दरम्यान वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी होती है और उसके बाद कन्सॉलिडेशन के वक्त भाव जब रेक्टेंगल में होता है तब फ्लैट या कम वॉल्यूम नज़र आता है और फिर से जब भाव पैटर्न को तोड़कर (ब्रेकआऊट देकर) नीचे जाता है तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

कप एन्ड हैन्डल –

यह एक बुलिश कन्टिन्यूएशन पैटर्न है, जो अपट्रेन्ड के दौरान नज़र आता है और संकेत देता है कि पैटर्न पूरा होने के बाद सिक्योरिटी का भाव बढ़ना जारी रहेगा।

पैटर्न को उसके आकार से यह नाम मिला है, जो हैन्डल के साथ वाले एक पारंपरिक चाय के कप जैसा दिखता है।

यह सबसे ज्यादा दिखने वाले पैटर्न में से एक है, जिसका उपयोग दुनिया भर में व्यापक रूप से किया जाता है। मजबूत अपट्रेन्ड का अंदाजा लगाने के लिए और उसके आधार पर लॉंग पोजिशन लेने के लिए उसका व्यापक रूप से उपयोग होता है।

यह पैटर्न कप या बाऊल के आकार से पहचाना जाता है, जो कन्सॉलिडेशन पीरियड के बेस (आधार) के रूप में कार्य करता है। उसके बाद हैन्डल नज़र आता है, जो नीचे की ओर झुककर शॉर्ट पुलबैक को दर्शाता है। कप के टॉप पर दिखाई गई होरिझोन्टल लाइन को नेकलाइन के नाम से जाना जाता है।

हैन्डल तैयार होने के बाद भाव ऊपर की दिशा में नेकलाइन को तोड़ता है तभी पैटर्न पूरा हुआ ऐसा माना जाता है। उस समय सिक्योरिटी में लॉंग एन्ट्री ली जाती है।

यह बहुत ही पॉवरफुल कन्टिन्यूएशन चार्ट पैटर्न है। इसलिए यदि ट्रेडर पिछले अपट्रेन्ड में लॉंग पोजिशन लेने से चूक गए हो तो उन्हें ब्रेकआऊट के स्तर पर, सिक्योरिटी में फिर से एन्टर होने का मौका मिलता है।

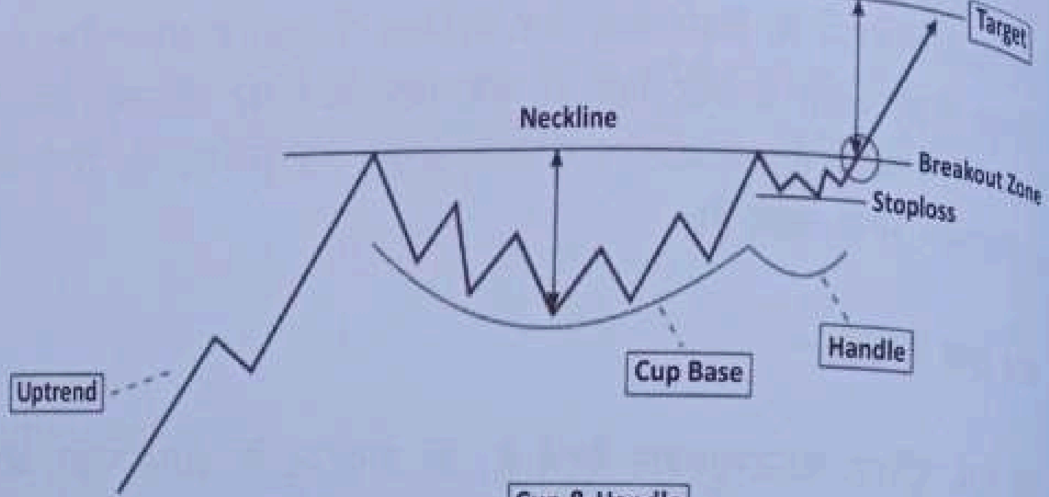

Cup & Handle

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, कप की ऊँचाई अर्थात नेकलाइन और कप के बॉटम के बीच की हाईट के बराबर, ब्रेकआऊट पॉइन्ट के ऊपर गिना जाता है।

इस पैटर्न के मामले में, स्टॉप लॉस को हैन्डल के सबसे नीचले पॉइन्ट पर लगाया जाता है। ऊपर दिए गए चार्ट में वह दर्शाया है।

जब भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके ऊपर जाता है, तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

इन्वर्टेड कप एन्ड हैन्डल –

जैसा कि नाम दर्शाता है, ऊपर दर्शाए कप एन्ड हैन्डल पैटर्न का यह इन्वर्टेड वर्जन है।

यह एक बेअरीश कन्टिन्यूएशन पैटर्न है, जो डाउनट्रेन्ड के दौरान नज़र आता है और संकेत देता है कि पैटर्न पूरा होने के बाद सिक्योरिटी का भाव गिरना जारी रहेगा।

यह सबसे ज्यादा दिखने वाले पैटर्न में से एक है, जिसका उपयोग दुनिया भर में व्यापक रूप से किया जाता है। मजबूत डाउनट्रेन्ड का अंदाजा लगाने के लिए और उसके आधार पर शॉर्ट पोजिशन लेने के लिए उसका व्यापक रूप से उपयोग होता है।

यह पैटर्न इन्वर्टेड कप या बाऊल के आकार का होता है, जो कन्सॉलिडेशन पीरियड के बेस (आधार) के रूप में कार्य करता है। उसके बाद हैन्डल नज़र आता है, जो ऊपर की ओर झुककर शॉर्ट पुलबैक को दर्शाता है।

इन्वर्टेड कप के बॉटम पर दिखाई गई होरिझोन्टल लाइन को नेकलाइन के नाम से जाना जाता है।

हैन्डल तैयार होने के बाद भाव नीचे की दिशा में नेकलाइन को तोड़ता है तभी पैटर्न पूरा हुआ ऐसा माना जाता है। उस समय सिक्योरिटी में शॉर्ट एन्ट्री ली जाती है।

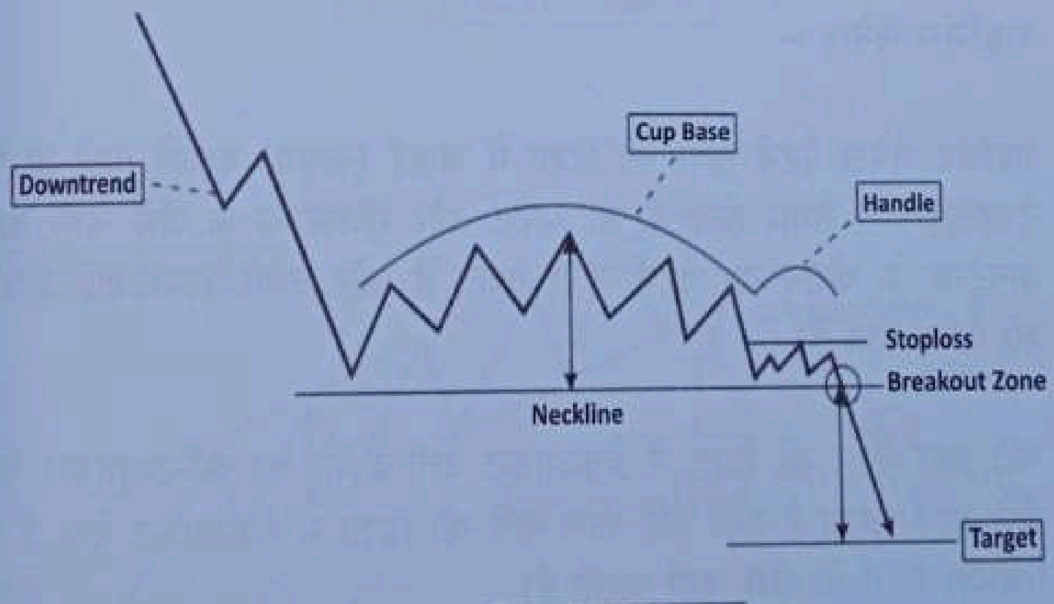

Inverted Cup & Handle

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, कप की ऊँचाई अर्थात नेकलाइन और कप के टॉप के बीच की हाईट के बराबर, ब्रेकआऊट पॉइन्ट के नीचे गिना जाता है।

इस पैटर्न के मामले में, स्टॉप लॉस को हैन्डल के सबसे ऊपरी पॉइन्ट पर लगाया जाता है। ऊपर दिए गए चार्ट में वह दर्शाया है।

जब भाव नेकलाइन को तोड़कर उसके नीचे जाता है, तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

महत्वपूर्ण न्यूट्रल चार्ट पैटर्न -

- राइजिंग चैनेल
- फॉलिंग चैनेल
- राइजिंग वेज
- फॉलिंग वेज
- सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल

राइजिंग चैनेल –

राइजिंग चैनेल पैटर्न ऊपर की दिशा में चढ़ाई (स्लोप) दर्शाने वाले दो पैरेलल ट्रेन्डलाइन से तैयार होता है जो सपोर्ट और रेजिस्टन्स के जैसे कार्य करते है। अपट्रेन्ड के दौरान यह पैटर्न नज़र आता है और उसमें हायर हाई और हायर लो तैयार होते है।

यदि भाव ऊपर की दिशा में ब्रेकआऊट देता है तो वह कन्टिन्यूएशन पैटर्न के जैसे कार्य करता है और यदि भाव नीचे की दिशा में ब्रेकआऊट देता है तो वह रिवर्सल पैटर्न के जैसे कार्य करता है।

यह पैटर्न दर्शाता है कि जैसे-जैसे भाव बढ़ता है, खरीदरों और विक्रेताओं के बीच रस्साकशी होती है और अंत में उनमें से एक का पलड़ा भारी होता है, जो ब्रेकआऊट की दिशा पर निर्भर करता है।

अगले पन्ने पर मैंने दिखाया है कि यह पैटर्न कन्टिन्यूएशन पैटर्न और रिवर्सल पैटर्न की तरह कैसे कार्य करता है।

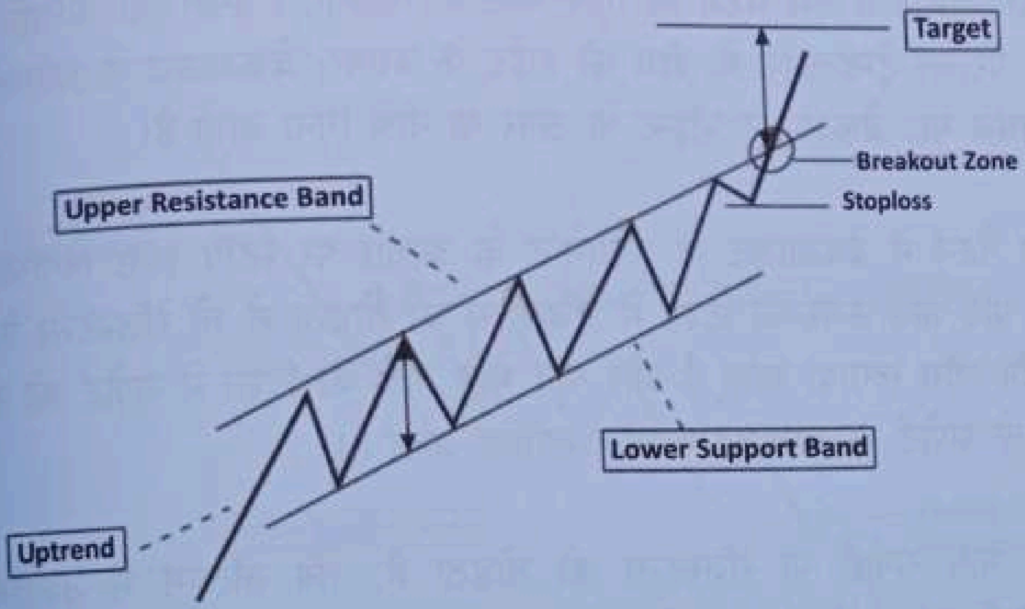

Rising Channel Continuation

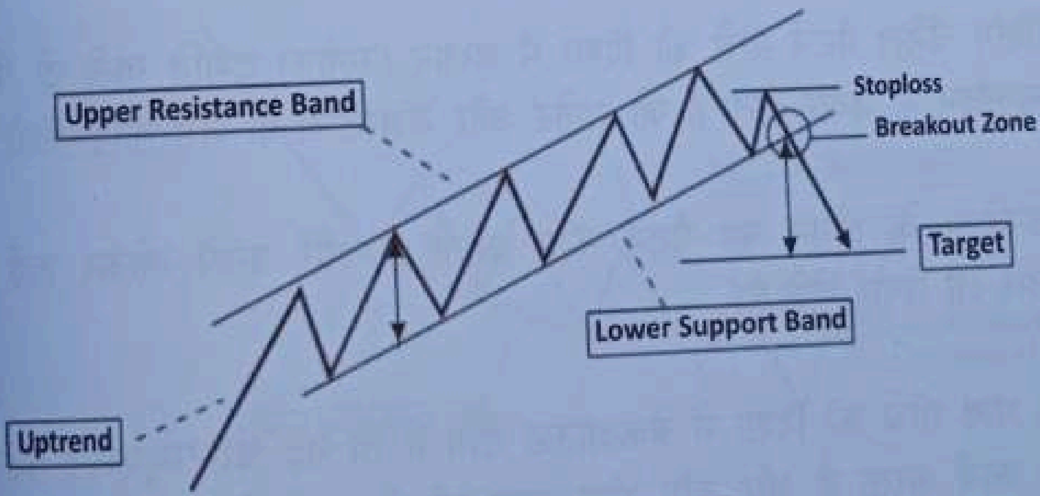

Rising Channel Reversal

इस पैटर्न के मामले में, ट्रेडर्स ब्रेकआऊट कौन सी दिशा में होता है, उसके आधार पर ट्रेड करते है। यदि भाव ऊपर की दिशा में रेजिस्टन्स को तोड़ता हो तो ट्रेडर्स लाँग पोजिशन लेते है (वर्तमान अपट्रेन्ड का कन्टिन्यूएशन) और यदि भाव नीचे की दिशा में सपोर्ट को तोड़ता हो तो ट्रेडर्स शॉर्ट पोजिशन लेते हैं (वर्तमान अपट्रेन्ड का रिवर्सल)।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, चैनेल की ऊँचाई अर्थात दो पैरेलल ट्रेन्डलाइन के बीच की हाईट के बराबर, ब्रेकआऊट के प्लेसमेन्ट के आधार पर, ब्रेकआऊट पॉइन्ट के ऊपर या नीचे गिना जाता है।

इस पैटर्न में ब्रेकआऊट के प्लेसमेन्ट के आधार पर स्टॉप लॉस लगाया जाता है। यदि भाव ऊपर की दिशा में रेजिस्टन्स को तोड़ता हो तो रेजिस्टन्स के नीचे स्टॉप लॉस लगाया जाता है और यदि भाव नीचे की दिशा में सपोर्ट को तोड़ता हो तो सपोर्ट के ऊपर स्टॉप लॉस लगाया जाता है।

जब भाव सपोर्ट या रेजिस्टन्स को तोड़ता है, तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

फॉलिंग चैनेल –

फॉलिंग चैनेल पैटर्न नीचे की दिशा में ढलान (स्लोप) दर्शाने वाले दो पैरेलल ट्रेन्डलाइन से तैयार होता है जो सपोर्ट और रेजिस्टन्स के जैसे कार्य करते है।

डाउनट्रेन्ड के दौरान यह पैटर्न नज़र आता है और उसमें लोअर हाई और लोअर लो तैयार होते है।

यदि भाव नीचे की दिशा में ब्रेकआऊट देता है तो वह कन्टिन्यूएशन पैटर्न के जैसे कार्य करता है और यदि भाव ऊपर की दिशा में ब्रेकआऊट देता है तो वह रिवर्सल पैटर्न के जैसे कार्य करता है।

यह पैटर्न दर्शाता है कि जैसे-जैसे भाव घटता है, खरीदरों और विक्रेताओं के बीच रस्साकशी होती है और अंत में उनमें से एक का पलड़ा भारी होता है, जो ब्रेकआऊट की दिशा पर निर्भर करता है।

नीचे मैंने दिखाया है कि यह पैटर्न कन्टिन्यूएशन पैटर्न और रिवर्सल पैटर्न की तरह कैसे कार्य करता है।

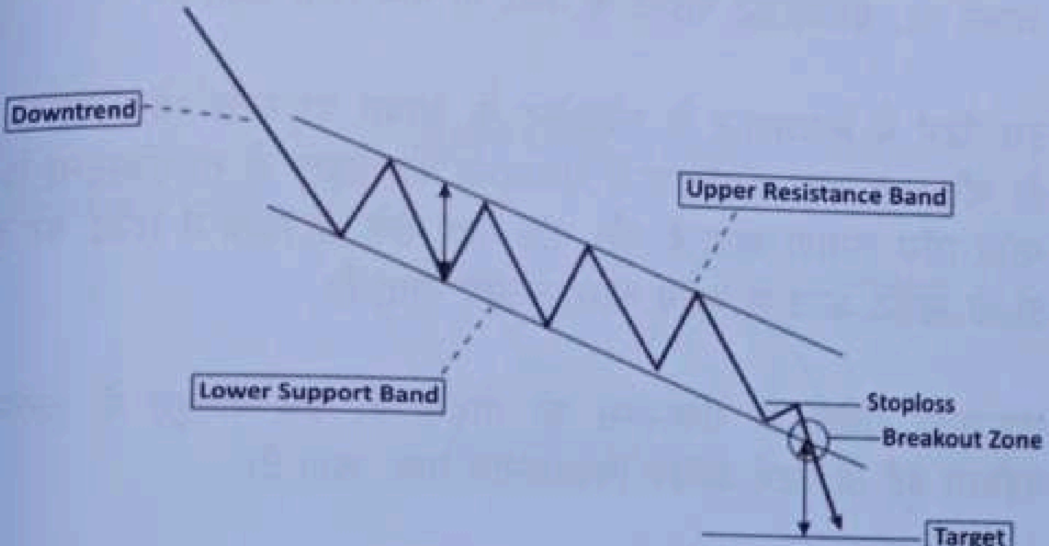

Falling Channel Continuation

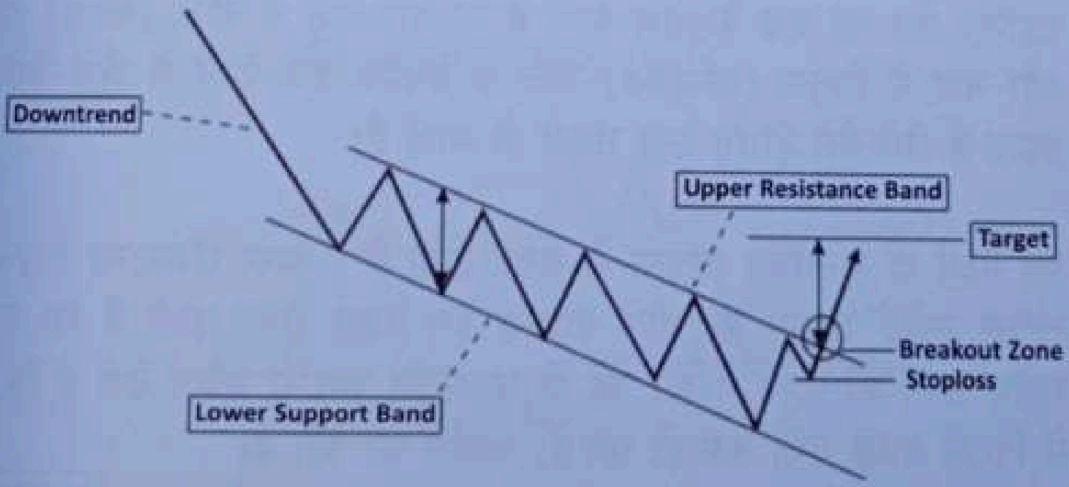

Falling Channel Reversal

इस पैटर्न के मामले में, ट्रेडर्स ब्रेकआऊट कौन सी दिशा में होता है, उसके आधार पर ट्रेड करते है। यदि भाव ऊपर की दिशा में रेजिस्टन्स को तोड़ता हो तो ट्रेडर्स लॉंग ट्रेड लेते है (वर्तमान अपट्रेन्ड का रिवर्सल) और यदि भाव नीचे की दिशा में सपोर्ट को तोड़ता हो तो ट्रेडर्स शॉर्ट ट्रेड लेते है (वर्तमान अपट्रेन्ड का कन्टिन्यूएशन)।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, चैनेल की ऊँचाई अर्थात दो पैरेलल ट्रेन्डलाइन के बीच की हाईट के बराबर, ब्रेकआऊट के प्लेसमेन्ट के आधार पर, ब्रेकआऊट पॉइन्ट के ऊपर या नीचे गिना जाता है।

इस पैटर्न में ब्रेकआऊट के प्लेसमेन्ट के आधार पर स्टॉप लॉस लगाया जाता है। यदि भाव ऊपर की दिशा में रेजिस्टन्स को तोड़ता हो तो रेजिस्टन्स के नीचे स्टॉप लॉस लगाया जाता है और यदि भाव नीचे की दिशा में सपोर्ट को तोड़ता हो तो सपोर्ट के ऊपर स्टॉप लॉस लगाया जाता है।

जब भाव सपोर्ट या रेजिस्टन्स को तोड़ता है, तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

राइजिंग वेज –

राइजिंग वेज यह एक बेअरीश पैटर्न है जो शुरूआत में चौड़ा (वाईड) होता है और बाद में सिकुड (कॉन्ट्रॅक्ट) जाता है क्योंकि इस पैटर्न में जैसे-जैसे भाव बढ़ता है वैसे-वैसे ट्रेडिंग रेन्ज संकरी हो जाती है।

यह पैटर्न दो कन्वर्जिंग लाइन्स से तैयार होता है - अपर रेजिस्टन्स लाइन और लोअर सपोर्ट लाइन। यह दोनों लाइन्स इस प्रकार तैयार होती है कि वेज का स्लोप ऊपर की दिशा में हो। यह दो कन्वर्जिंग लाइन्स संकेत देती है कि पैटर्न में दिखने वाली तेजी कम हो रही है, अर्थात घट रही है।

यदि यह पैटर्न डाउनट्रेन्ड में बनता है तो यह कन्टिन्यूएशन पैटर्न की तरह कार्य करता है और यदि यह पैटर्न अपट्रेन्ड में तैयार हुआ तो वह रिवर्सल पैटर्न की तरह कार्य करता है। दोनों मामलों में, भाव नीचे की दिशा में लोअर सपोर्ट लाइन को तोड़ते हुए नज़र आता है।

यह पैटर्न दर्शाता है कि वेज के भीतर भाव बढ़ने के कारण, खरीदारों और विक्रेताओं के बीच रस्साकशी शुरू है और अंत में विक्रेता बाजी मार लेते है और भाव वहाँ से नीचे जाने की संभावना होती है।

मैंने नीचे दिखाया है कि यह पैटर्न कन्टिन्यूएशन पैटर्न और रिवर्सल पैटर्न की तरह कैसे कार्य करता है।

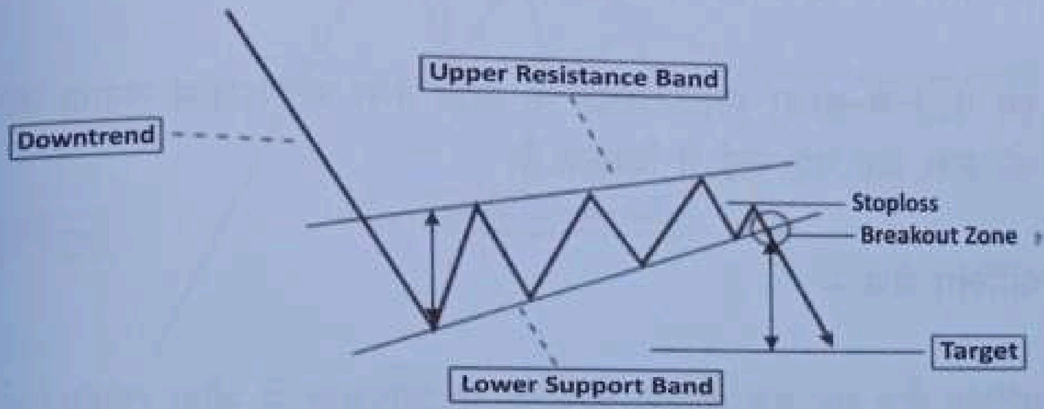

Rising Wedge Continuation

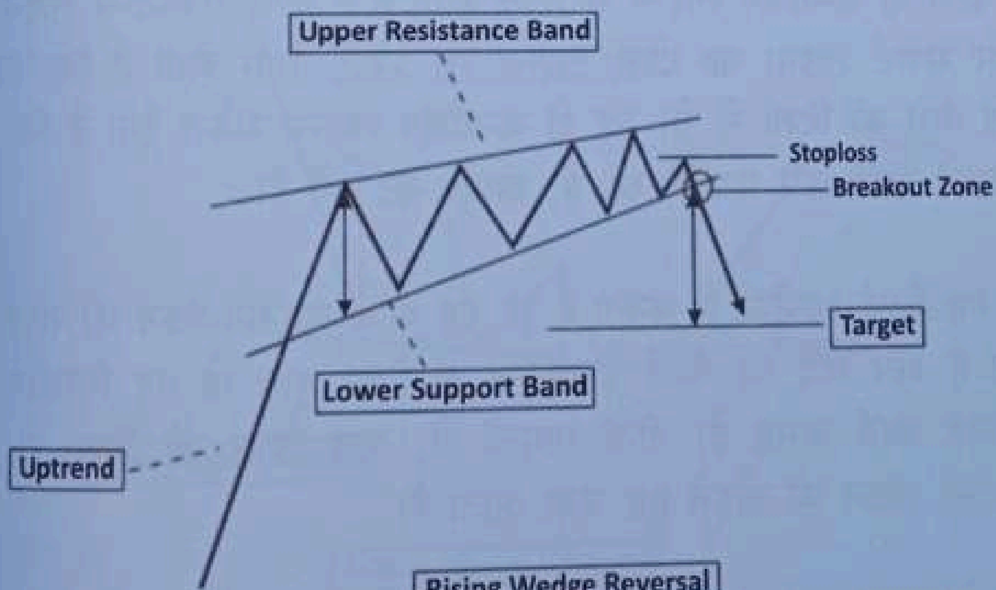

Rising Wedge Reversal

भाव जब नीचे की दिशा में लोअर सपोर्ट लाइन को तोड़ता है, तभी पैटर्न पूर्ण हुआ, ऐसा माना जाता है। उस समय सिक्योरिटी में शॉर्ट एन्ट्री ली जाती है।

भाव जब सपोर्ट लाइन को तोड़ता है, तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

इस पैटर्न के मामले में, टारगेट की गणना करने के लिए कोई तकनीक नहीं है। इसलिए इस पैटर्न के मामले में ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग करने अथवा टारगेट निश्चित करने के लिए टेक्निकल एनालिसिस के अन्य टुल्स का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

इस पैटर्न में लोअर सपोर्ट लाइन के थोड़ा ऊपर स्टॉप लॉस लगाया जाता है, जो ऊपर दिए गए चार्ट में दिखाया है।

फॉलिंग वेज –

फॉलिंग वेज यह एक बुलिश पैटर्न है जो शुरूआत में चौड़ा (वाईड) होता है और बाद में सिकुड (कॉन्ट्रॅक्ट) जाता है क्योंकि इस पैटर्न में जैसे-जैसे भाव घटता है वैसे-वैसे ट्रेडिंग रेन्ज संकरी हो जाती है।

यह पैटर्न दो कन्वर्जिंग लाइन्स से तैयार होता है - अपर रेजिस्टन्स लाइन और लोअर सपोर्ट लाइन। यह दोनों लाइन्स इस प्रकार तैयार होती है कि वेज का स्लोप नीचे की दिशा में हो। यह दो कन्वर्जिंग लाइन्स संकेत देती है कि पैटर्न में दिखने वाली मंदी कम हो रही है, अर्थात घट रही है।

यदि यह पैटर्न अपट्रेन्ड में बनता है तो यह कन्टिन्यूएशन पैटर्न की तरह कार्य करता है और यदि यह पैटर्न डाउनट्रेन्ड में तैयार हुआ तो वह रिवर्सल पैटर्न कि तरह कार्य करता है। दोनों मामलों में, भाव ऊपर की दिशा में अपर रेजिस्टन्स लाइन को तोड़ते हुए नज़र आता है।

यह पैटर्न दर्शाता है कि वेज के भीतर भाव घटने के कारण, खरीदारों और विक्रेताओं के बीच रस्साकशी शुरू है और अंत में खरीदार बाजी मार लेते है और भाव वहाँ से ऊपर जाने की संभावना होती है।

मैंने अगले पन्ने पर दिखाया है कि यह पैटर्न कन्टिन्यूएशन पैटर्न और रिवर्सल पैटर्न की तरह कैसे कार्य करता है।

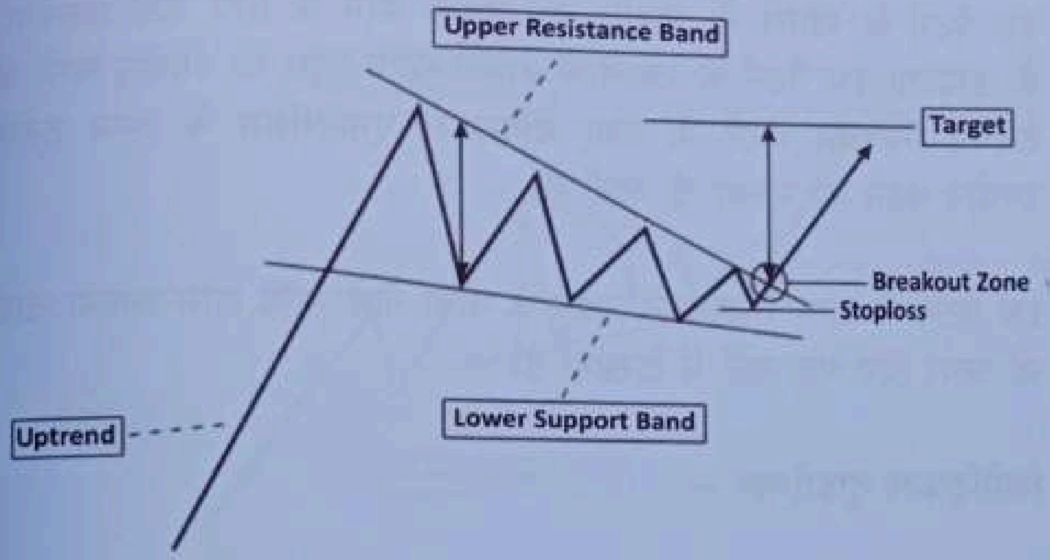

Falling Wedge Continuation

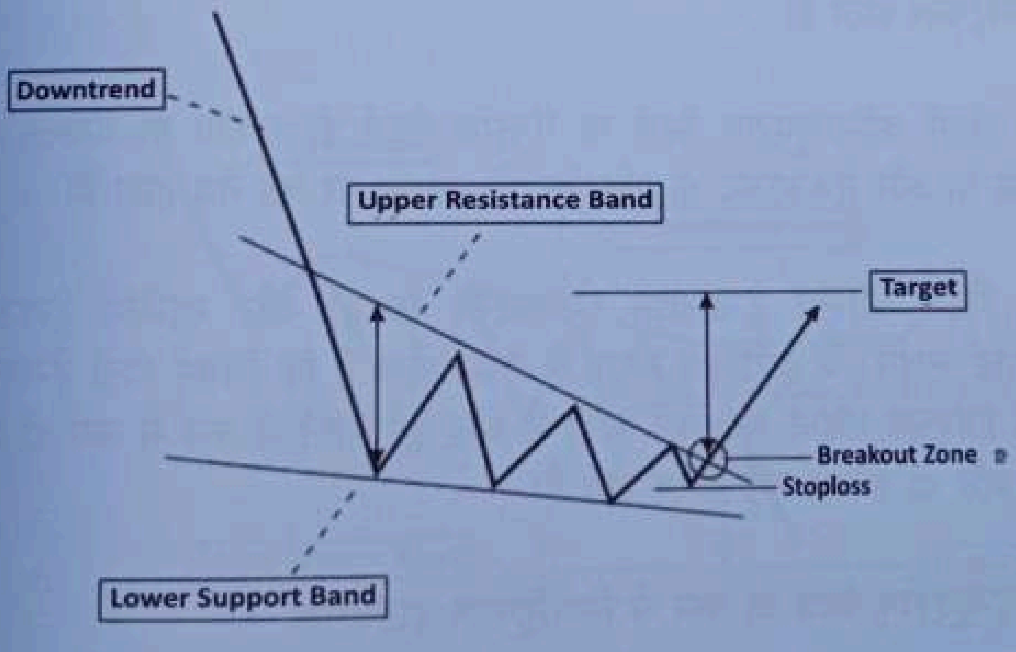

Falling Wedge Reversal

भाव जब ऊपर की दिशा में अपर रेजिस्टन्स लाइन को तोड़ता है, तभी पैटर्न पूर्ण हुआ, ऐसा माना जाता है। उस समय सिक्योरिटी में लॉंग एन्ट्री ली जाती है।

भाव जब अपर रेजिस्टन्स लाइन को तोड़ता है, तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

इस पैटर्न के मामले में, टारगेट की गणना करने के लिए कोई तकनीक नहीं है। इसलिए इस पैटर्न के मामले में ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग करने अथवा टारगेट निश्चित करने के लिए टेक्निकल एनालिसिस के अन्य टुल्स का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

इस पैटर्न में अपर रेजिस्टन्स लाइन के थोड़ा नीचे स्टॉप लॉस लगाया जाता है, जो ऊपर दिए गए चार्ट में दिखाया है।

सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल –

सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल पैटर्न दो कन्वर्जिंग ट्रेन्डलाइन के द्वारा इस प्रकार से तैयार होता है कि उसमें दो कन्वर्जिंग ट्रेन्डलाइन होरिझोन्टल लाइन के संबंध में सिमेट्रिकल होता है।

यह पैटर्न कन्टिन्यूएशन पैटर्न या रिवर्सल पैटर्न हो सकता है। पिछला ट्रेन्ड कैसा था और ब्रेकआऊट के प्लेसमेन्ट के आधार पर वह तय होता है।

यह पैटर्न फॉलिंग ट्रेन्डलाइन (रेजिस्टन्स लाइन) और राइजिंग ट्रेन्डलाइन (सपोर्ट लाइन) के द्वारा इस प्रकार से तैयार होता है कि जिसमें दोनों ट्रेन्डलाइन एक निश्चित पॉइन्ट पर मिल जाती है और इस पैटर्न में कम से कम दो हायर लो और दो लोअर हाई तैयार होते है।

कन्टिन्यूएशन पैटर्न के रूप में सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल –

यदि यह पैटर्न अपट्रेन्ड के दौरान ऊपर की दिशा में ब्रेकआऊट देता हो तो वह बुलिश कन्टिन्यूएशन सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल के नाम से जाना जाता है।

वैसे ही, यदि यह पैटर्न डाउनट्रेन्ड के दौरान नीचे की दिशा में ब्रेकआऊट देता हो तो वह बेअरीश कन्टिन्यूएशन सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल के नाम से जाना जाता है।

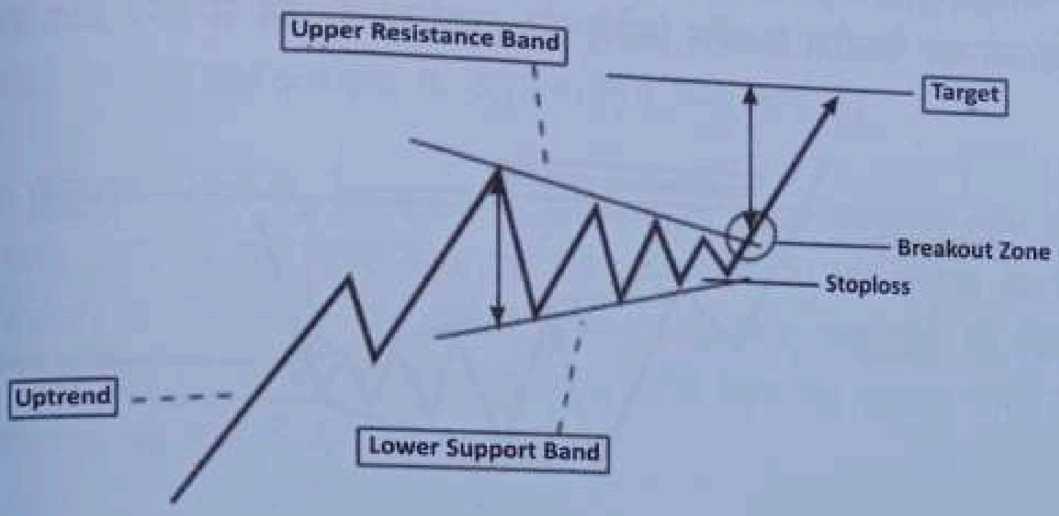

Bullish Continuation Symmetrical Triangle

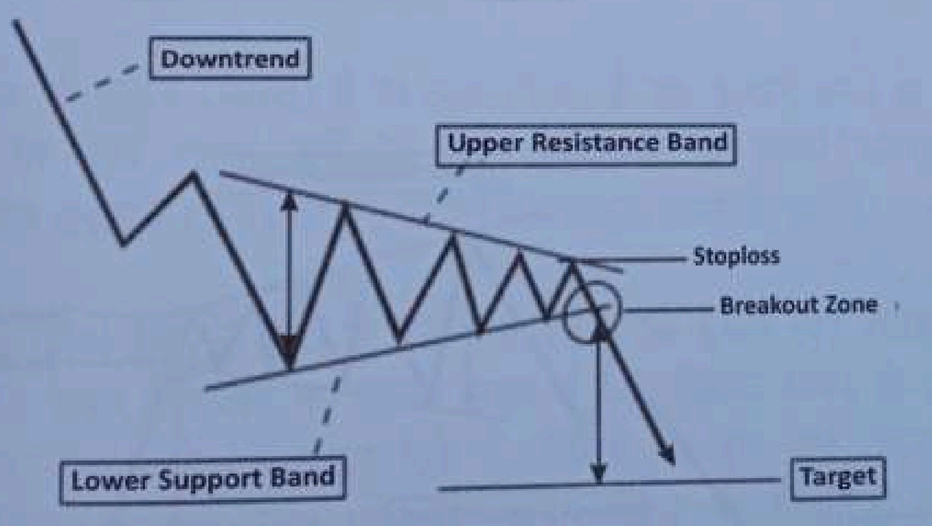

Bearish Continuation Symmetrical Triangle

रिवर्सल पैटर्न के रूप में सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल –

यदि यह पैटर्न डाउनट्रेन्ड के दौरान ऊपर की दिशा में ब्रेकआऊट देता हो तो वह बुलिश रिवर्सल सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल के नाम से जाना जाता है।

वैसे ही, यदि यह पैटर्न अपट्रेन्ड के दौरान नीचे की दिशा में ब्रेकआऊट देता हो तो वह बेअरीश रिवर्सल सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल के नाम से जाना जाता है।

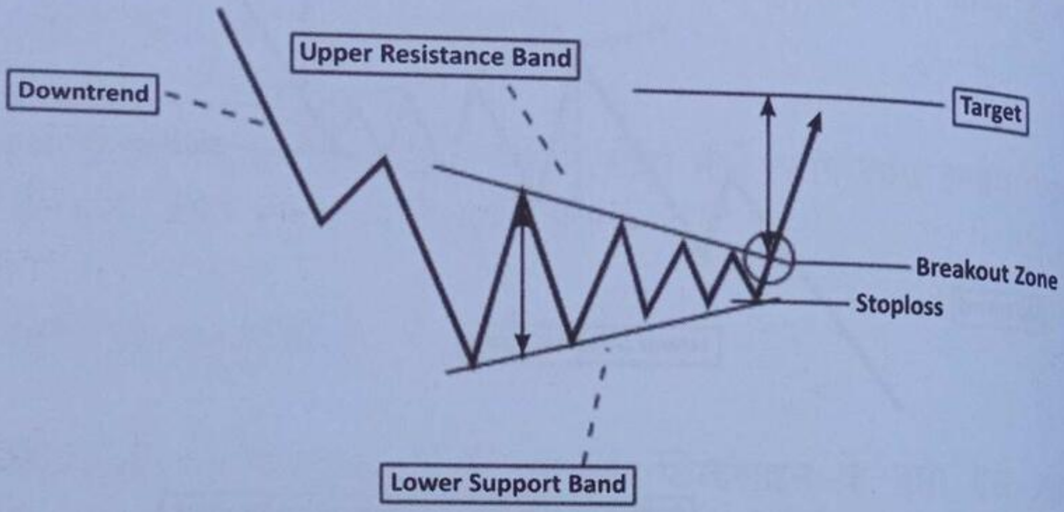

Bullish Reversal Symmetrical Triangle

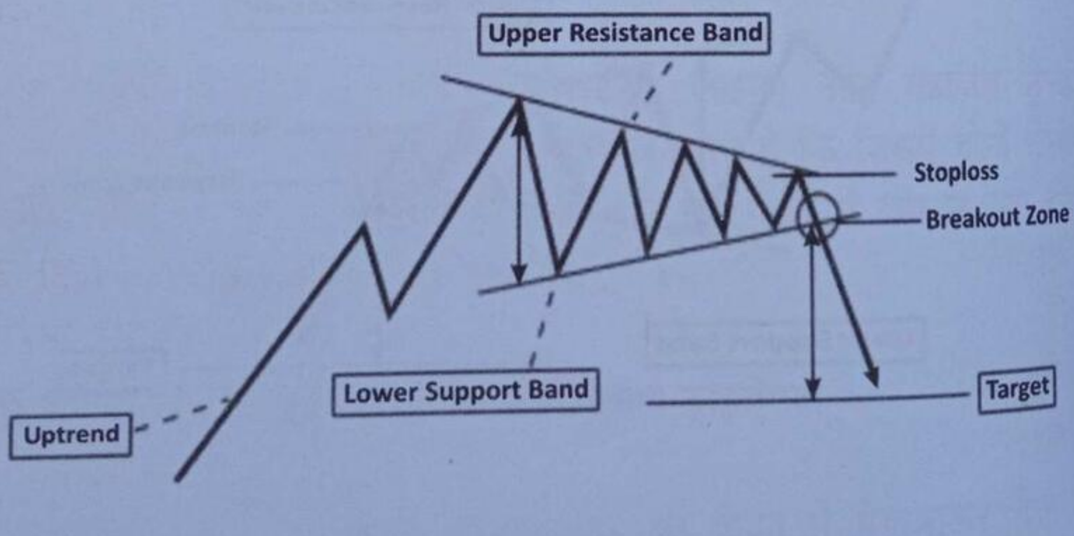

Bearish Reversal Symmetrical Triangle

सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल पैटर्न के मामले में, ट्रेडर्स ब्रेकआऊट कौन सी दिशा में होता है, उसके आधार पर ट्रेड करते है। यदि भाव ऊपर की दिशा में रेजिस्टन्स को तोड़ता हो तो ट्रेडर्स लॉंग ट्रेड लेते है और यदि भाव नीचे की दिशा में सपोर्ट को तोड़ता हो तो ट्रेडर्स शॉर्ट ट्रेड लेते है।

सामान्यरूप से इस पैटर्न के लिए संभावित टारगेट, सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल के सबसे मोटे पॉइन्ट की उँचाई (हाइट) के बराबर, ब्रेकआऊट के प्लेसमेन्ट के आधार पर, ब्रेकआऊट पॉइन्ट के ऊपर या नीचे गिना जाता है।

इस पैटर्न के मामले में, ब्रेकआऊट के प्लेसमेन्ट के आधार पर स्टॉप लॉस को लगाया जाता है। यदि भाव ऊपर की दिशा में रेजिस्टन्स को तोड़ता हो तो रेजिस्टन्स के नीचे स्टॉप लॉस लगाया जाता है और यदि भाव नीचे की दिशा में सपोर्ट को तोड़ता हो तो सपोर्ट के ऊपर स्टॉप लॉस को लगाया जाता है। ऊपर दिए गए चार्ट में मैंने वह दर्शाया है।

भाव जब सपोर्ट या रेजिस्टन्स को तोड़ता है, तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो पैटर्न को अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

बॉटम लाइन –

ब्रेकआऊट वास्तविक (रियल) है या झूटा (फेक) है यह कन्फर्म करने के लिए वॉल्यूम पर नज़र रखना कभी न भूलें। ब्रेकआऊट के समय वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो ही उसे रियल ब्रेकआऊट समझना चाहिए।

मैं प्रत्येक पाठक मित्र से चार्ट पर इन सभी पैटर्न्स को देखने और समझने के लिए खास समय निकालने का आग्रह करता हूँ और जितना संभव हो उताना अधिक अभ्यास करने की सलाह देता हूँ, जिससे वह इन चार्ट पैटर्न्स को बेहतर ढंग से पढ़-देख-समझ सकें और उनके आधार पर ट्रेडिंग के बारे में बेहतर निर्णय ले सकें।

वॉल्यूम एनालिसिस

वॉल्यूम एक निश्चित कालावधी के दौरान किसी सिक्योरिटी में हुए ट्रैनज़ैक्शन की संख्या को संदर्भित करता है।

वॉल्यूम एक महत्वपूर्ण मापदंड है जिसका उपयोग अधिकांश टेक्निकल एनालिस्ट सिक्योरिटीज़ के एनालिसिस में करते है। प्राइस मूवमेन्ट के साथ वॉल्यूम का एनालिसिस करके, ट्रेडर या निवेशक किसी भी सिक्योरिटी के भाव में उल्लेखनीय बदलाव के बारे में जानकारी हासिल कर सकता है।

अधिकांश इन्ट्राडे ट्रेडर्स और स्विंग ट्रेडर्स किसी भी सिक्योरिटी में मौजूदा ट्रेन्ड कितना मजबूत है यह जाँचने के लिए वॉल्यूम का उपयोग करते है।

नए ट्रेडर्स और जिन्होंने ट्रेडिंग में पैसा गंवाया है, ऐसे लोगों में मैंने एक खास बात देखी है कि वह वॉल्यूम का एनालिसिस नहीं करते। वॉल्यूम का एनालिसिस करके उससे अनुमान निकालने से ट्रेडर्स को अन्य ट्रेडर्स की तुलना में अधिक फायदा होता है।

प्राइस और वॉल्यूम के बीच के संबंध को दर्शाने वाली एक प्रसिद्ध कहावत इस प्रकार है,

''प्राइज इज द किंग, बट वॉल्यूम इज द क्वीन।''

हाँ, आपने इसे सही पढ़ा है। इसलिए यदि आप ट्रेडिंग कर रहे है और टेक्निकल एनालिसिस का उपयोग करते हो तो एन्ट्री पॉइन्ट तय करते समय केवल प्राइस एक्शन को न देखें। भाव के साथ वॉल्यूम को भी ध्यान में लीजिए और बाद में ही भविष्य में भाव की मूवमेन्ट कैसी होगी इसका अनुमान लगाएं।

अक्सर, ट्रेडिंग वॉल्यूम अधिक हो तो उससे सिक्योरिटी या मार्केट के भविष्य की चाल के बारे में अनुमान लगाना आसान होता है।

नीचे दिए टेबल में दिखाया है कि सिक्योरिटी के भाव में उतार-चढ़ाव की साथ वॉल्यूम में उतार या चढ़ाव होने से क्या होता है।

Price	Volume	Significance
» Rising Price	Rising Volume	Very Strong Bullish Momentum
» Rising Price	Falling Volume	Unreliable Bullish Momentum
» Falling Price	Rising Volume	Very Strong Bearish Momentum
» Falling Price	Falling Volume	Unreliable Bearish Momentum

भाव में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हो रही हो और वॉल्यूम भी अधिक हो तो वह दर्शाता है कि तेजी का ट्रेन्ड या बुलिश रिवर्सल बहुत ही मजबूत है। लेकिन यदि भाव बढ़ रहा हो और वॉल्यूम कम हो तो समझना चाहिए कि यह विश्वसनीय मूवमेन्ट नहीं है।

वैसे ही, भाव में उल्लेखनीय गिरावट हो रही हो और वॉल्यूम अधिक हो तो वह दर्शाता है कि मंदी का ट्रेन्ड या बेअरीश रिवर्सल बहुत ही मजबूत है। लेकिन यदि भाव घट रहा हो और वॉल्यूम कम हो तो समझना चाहिए कि यह विश्वसनीय मूवमेन्ट नहीं है।

इसके अलावा ट्रेडिंग वॉल्यूम का उपयोग दुसरे कई मापदंड समझने में भी किया जा सकता है। जैसे कि –

- लिक्विडिटी।
- सपोर्ट और रेजिस्टन्स कायम है या नहीं वह कन्फर्म करने के लिए।
- सपोर्ट और रेजिस्टन्स ब्रेकआऊट कन्फर्म करने के लिए।
- रिवर्सल चार्ट पैटर्न ब्रेकआऊट कन्फर्म करने के लिए।
- कन्टिन्यूएशन चार्ट पैटर्न ब्रेकआऊट कन्फर्म करने के लिए।

लिक्विडिटी –

किसी भी सिक्योरिटी में लिक्विडिटी अर्थात तरलता कितनी है, उसके लिए वॉल्यूम महत्वपूर्ण इन्डिकेटर है। जिन सिक्योरिटी में कम वॉल्यूम होता है, वह दर्शाता है कि उनमें खरीदी या बिक्री करने में किसी को खास रूचि नहीं है।

ऐसी सिक्योरिटीज़ के मामले में टेक्निकल एनालिसिस काम नहीं करता। एक और तथ्य यह है कि इस तरह के इललिक्विड सिक्योरिटीज़ में प्राइस एक्शन मेनिप्यूलेशन आसानी से होता है। यदि आप बहुत कम वॉल्यूम वाली सिक्योरिटीज़ खरीदते है, तो आप उसमें फस सकते है, क्योंकि उसमें लिक्विडिटी न होने के कारण, जब आप उन्हें बेचना चाहते है तब आप उन्हें बेच नहीं सकते।

इसलिए किसी भी सिक्योरिटीज़ में ट्रेडिंग करने से पहले उसके वॉल्यूम की जाँच करना बहुत जरूरी है।

उदाहरण : लो वॉल्यूम स्टॉक

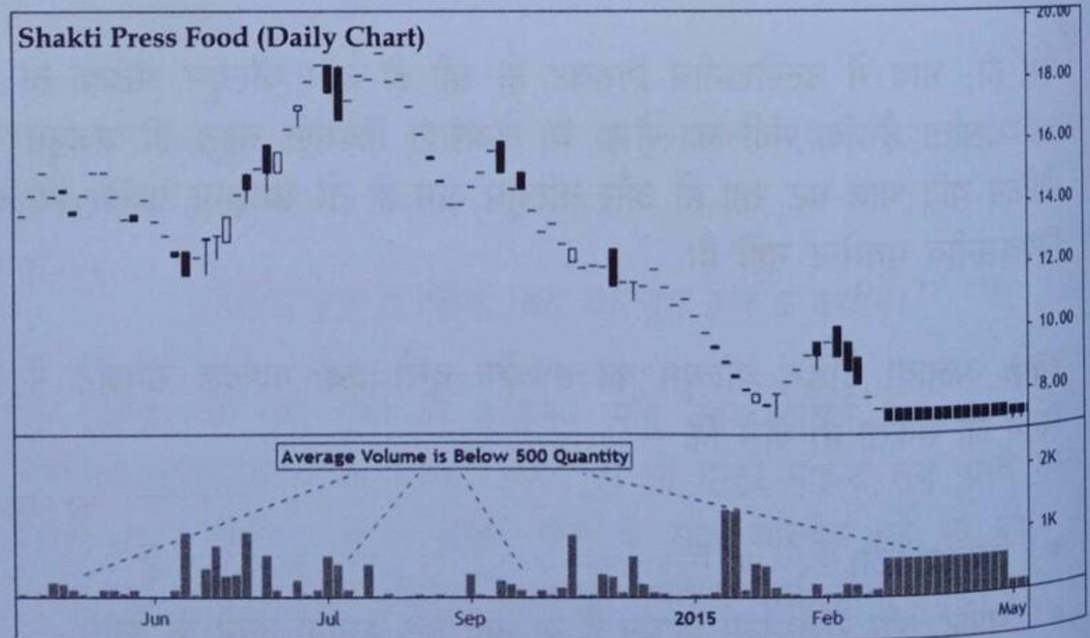

ऊपर दिए गए चार्ट में शक्ति प्रेस फूड के शेअर्स की मार्च २०१४ से जून २०१५ की मूवमेन्ट को दर्शाया है। उसमें दैनिक एवरेज वॉल्यूम ५०० था, जो स्पष्टरूप से दर्शाता है कि यह इललिक्विड (कम तरलता वाला) स्टॉक है और उसमें ट्रेडिंग या निवेश करना टालना चाहिए।

आप यह भी देख सकते है कि ज्यादातर ट्रेडिंग सेशन्स में इस स्टॉक में अपर सर्किट या लोअर सर्किट लगा था।

उदाहरण : हाई वॉल्यूम स्टॉक

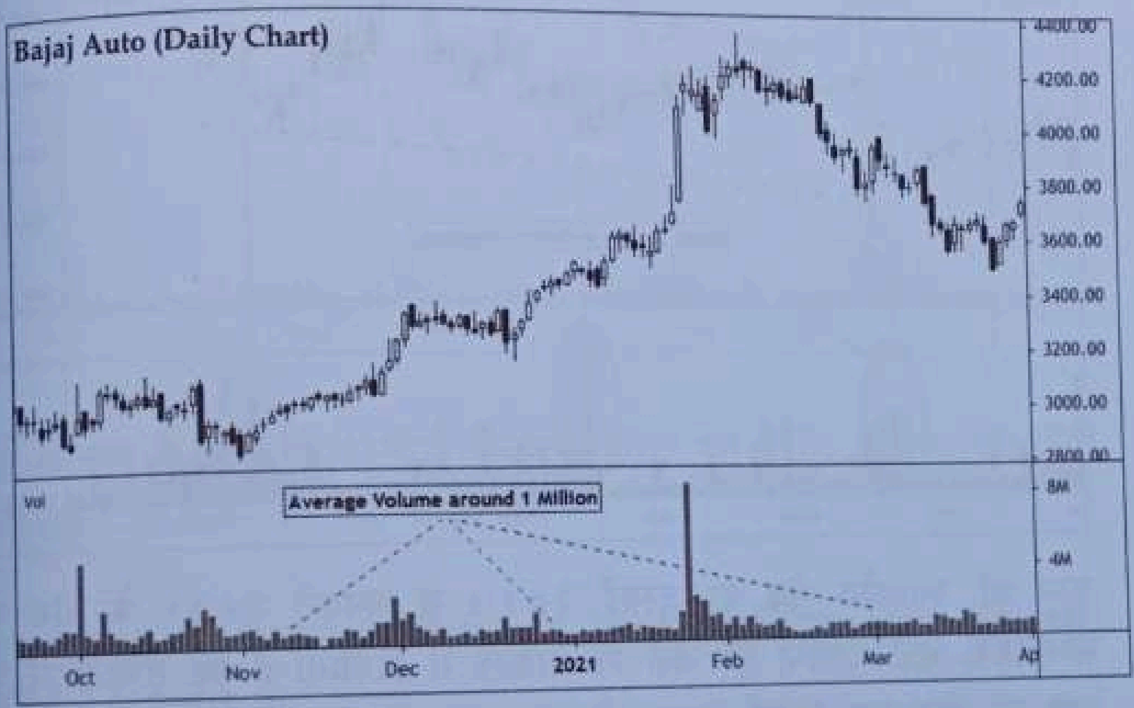

ऊपर दिए गए चार्ट में बजाज ऑटो के शेअर्स की दिसंबर २०२० से मार्च २०२१ के दौरान की मूवमेन्ट को दर्शाया है। उसमें दैनिक एवरेज वॉल्यूम १० लाख से अधिक था, जो स्पष्ट संकेत देता है कि इस स्टॉक में बहुत ही अच्छा वॉल्यूम है और ऐसे स्टॉक में ट्रेडिंग या निवेश के बारे में सोचा जा सकता है।

सपोर्ट और रेजिस्टन्स कायम है या नहीं यह कन्फर्म करना –

कोई भी सिक्योरिटी निश्चित लेवल पर सपोर्ट लेगा या रेजिस्टन्स का सामना करेगा, यह तय करने के लिए वॉल्यूम एक महत्वपूर्ण इन्डिकेटर है।

जब सिक्योरिटी का भाव सपोर्ट या रेजिस्टन्स के पास आ रहा होता है तब उसका एवरेज वॉल्यूम कम होता है लेकिन जब सिक्योरिटी का भाव सपोर्ट या रेजिस्टन्स के बहुत ही नजदीक आ जाता है तब उसमें वॉल्यूम बढ़ता है।

नीचे दिए उदाहरण से यह कन्सेप्ट बेहतर तरीके से समझने में मदद होगी।

उदाहरण : ट्रेन्डलाइन पर भाव को सपोर्ट मिलना

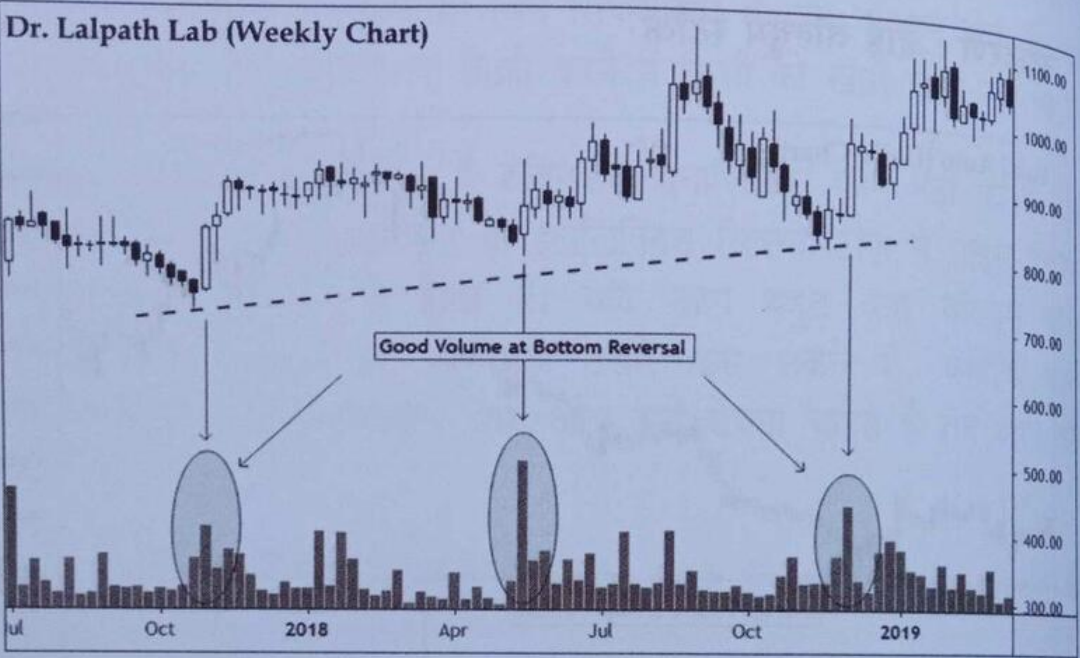

ऊपर डॉ. लालपैथ लैब का जुलाई २०१७ से जनवरी २०१९ के बीच का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है। जैसे कि सर्कल से दिखाया है कि ट्रेन्डलाइन पर भाव को तीन बार सपोर्ट मिला और हर बार वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई थी।

यहाँ पर वॉल्यूम में वृद्धि के साथ होने वाली भाव वृद्धि पर खास नज़र रखनी चाहिए।

अब वॉल्यूम से कन्फर्मेशन मिलने के बाद, ट्रेडर्स उन प्राइस पॉइन्ट्स पर खरीदी की पोजिशन ले सकते थे।

उदाहरण : ट्रेन्डलाइन पर भाव को रेजिस्टन्स का सामना करना

अगले पन्ने पर एचईजी लिमिटेड का फरवरी २०१९ से अक्टूबर २०१९ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है। आप देख सकते है कि बढ़े हुए वॉल्यूम के साथ फॉलिंग रेजिस्टन्स ट्रेन्डलाइन पर शेअर्स के भाव को किस प्रकार रेजिस्टन्स का सामना करना पड़ा।

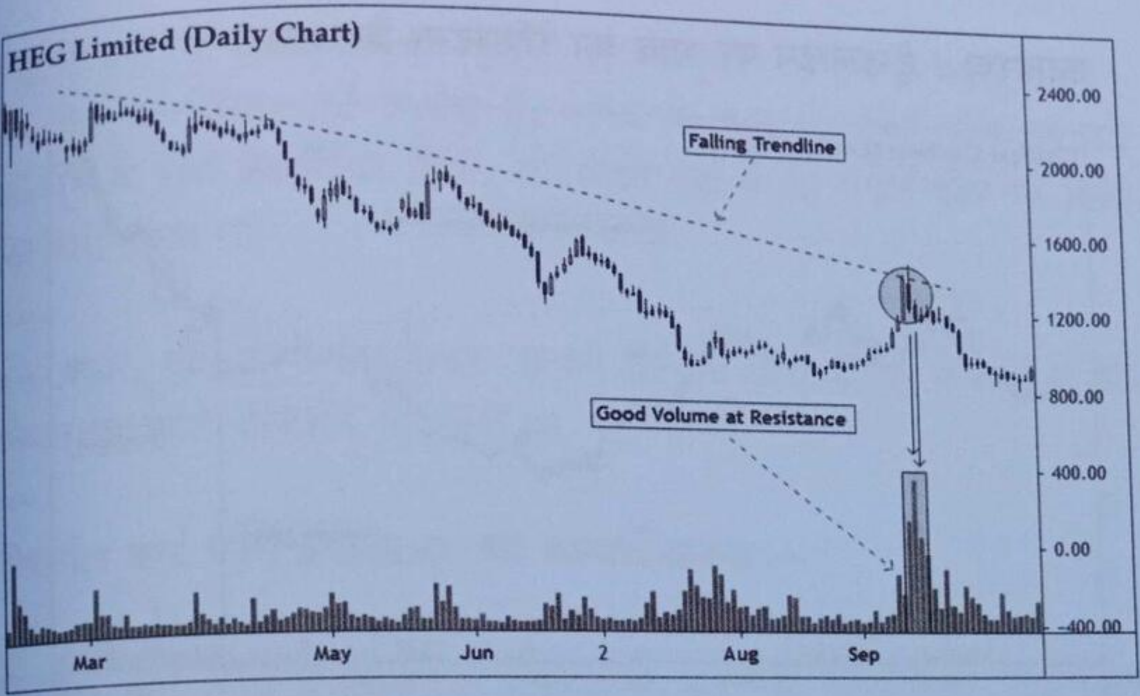

बड़े वॉल्यूम के साथ दो बेअरीश कैन्डल्स संकेत देते है कि फॉलिंग रेजिस्टन्स ट्रेन्डलाइन पर बिक्री का भारी दबाव था।

अब वॉल्यूम से कन्फर्मेशन मिलने के बाद, ट्रेडर्स उस लेवल पर शॉर्ट पोजिशन ले सकते थे।

सपोर्ट और रेजिस्टन्स के ब्रेकआऊट को कन्फर्म करने के लिए –

किसी सिक्योरिटी ने अपने सपोर्ट या रेजिस्टन्स ट्रेन्डलाइन से वास्तविक ब्रेकआऊट दिया है या झूटा ब्रेकआऊट दिया है यह निश्चित करने के लिए वॉल्यूम एक महत्वपूर्ण इन्डिकेटर है।

यदि वॉल्यूम अधिक हो तो समझना चाहिए कि वह वास्तविक ब्रेकआऊट है और यदि वॉल्यूम कम हो तो समझना चाहिए कि वह झूटा ब्रेकआऊट है।

इसलिए ब्रेकआऊट के मामले में वॉल्यूम को जाँचना बहुत जरूरी होता है।

आगे दिए उदाहरण से यह कन्सेप्ट बेहतर तरीके से समझने में मदद होगी।

उदाहरण : ट्रेन्डलाइन पर भाव का रेजिस्टन्स ब्रेकआऊट

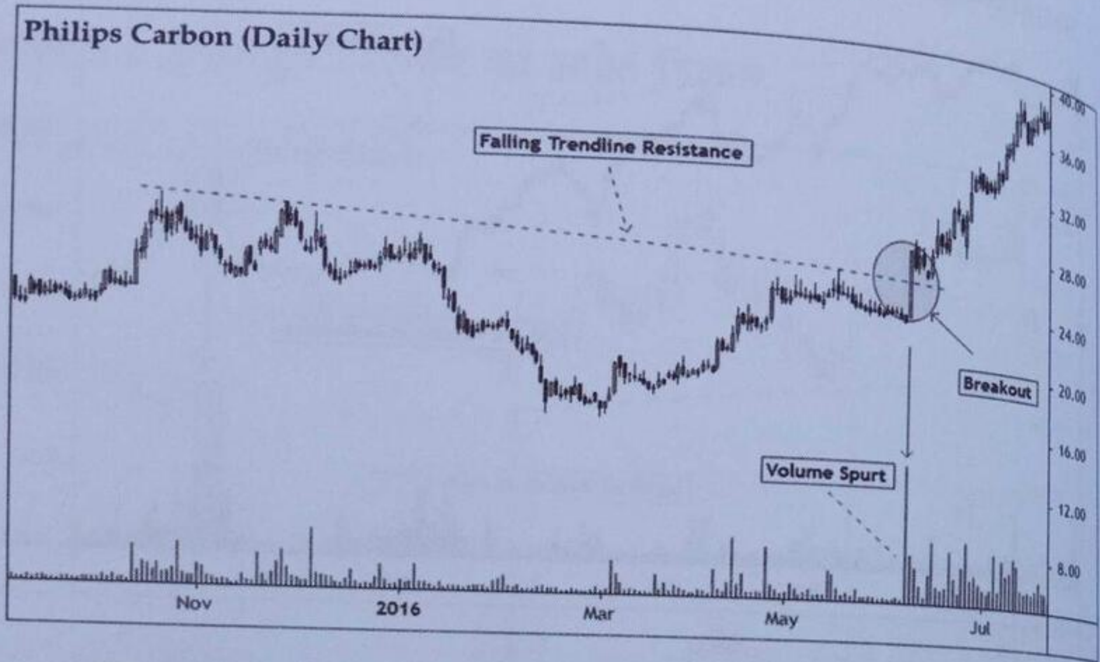

ऊपर फिलिप्स कार्बन का सितंबर २०१५ से जुलाई २०१६ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है। स्टॉक के भाव ने फॉलिंग रेजिस्टन्स ट्रेन्डलाइन पर बड़े वॉल्यूम के साथ ब्रेकआऊट दिया, जो संकेत देता है कि फॉलिंग ट्रेन्डलाइन रेजिस्टन्स लेवल पर खरीदी का भारी दबाव था।

इस प्रकार, वॉल्यूम से ब्रेकआऊट कन्फर्म होने के बाद, ट्रेडर्स आसानी से उस लेवल पर लाँग पोजिशन ले सकते थे।

उदाहरण : ट्रेन्डलाइन पर भाव का सपोर्ट ब्रेकआऊट

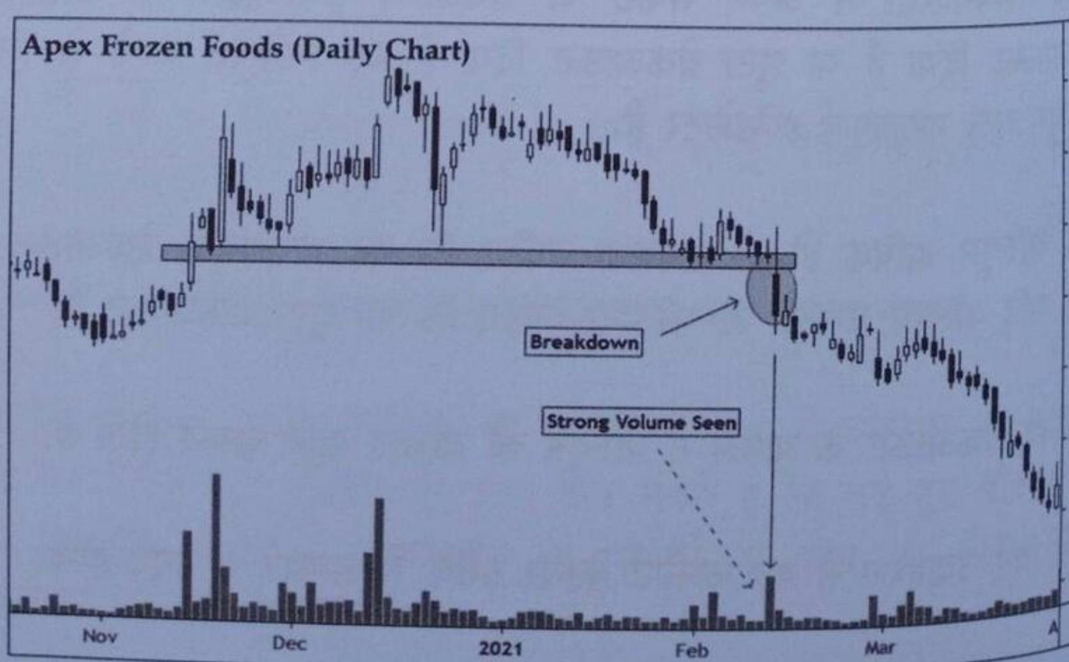

पिछले पन्ने पर एपेक्स फ्रोझन फूड्स का अक्टूबर २०२० से मार्च २०२१ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है। स्टॉक के भाव ने सपोर्ट झोन पर बड़े वॉल्यूम के साथ ब्रेकआऊट दिया, जो संकेत देता है कि सपोर्ट झोन पर बिक्री का भारी दबाव था।

इस प्रकार, वॉल्यूम से ब्रेकआऊट कन्फर्म होने के बाद, ट्रेडर्स आसानी से उस लेवल पर शॉर्ट पोजिशन ले सकते थे।

रिवर्सल चार्ट पैटर्न ब्रेकआऊट को कन्फर्म करना –

रिवर्सल चार्ट पैटर्न के मामले में ब्रेकआऊट के वक्त वॉल्यूम का एनालिसिस करना जरूरी होता है। मैंने चार्ट पैटर्न के चैप्टर में लोकप्रिय रिवर्सल चार्ट पैटर्न को समझाते समय इस बात को समझाया है।

जब भी सिक्योरिटी के भाव में चार्ट पैटर्न तैयार होने के बाद ब्रेकआऊट होता है तब वह ब्रेकआऊट कितना मजबूत है यह निश्चित करने के लिए वॉल्यूम को जाँचना जरूरी होता है।

बुलिश रिवर्सल पैटर्न के मामले में यदि बड़े वॉल्यूम के साथ प्राइस ब्रेकआऊट नज़र आया तो माना जा सकता है कि अपट्रेन्ड बहुत ही मजबूत होगा।

इसी तरह, बेअरीश रिवर्सल पैटर्न के मामले में यदि बड़े वॉल्यूम के साथ प्राइस ब्रेकआऊट नज़र आया तो समझना चाहिए कि डाउनट्रेन्ड बहुत ही मजबूत होगा।

अगले पन्ने पर दिए उदाहरण से यह कन्सेप्ट बेहतर तरीके से समझने में मदद होगी।

उदाहरण : बुलिश रिवर्सल चार्ट पैटर्न ब्रेकआऊट

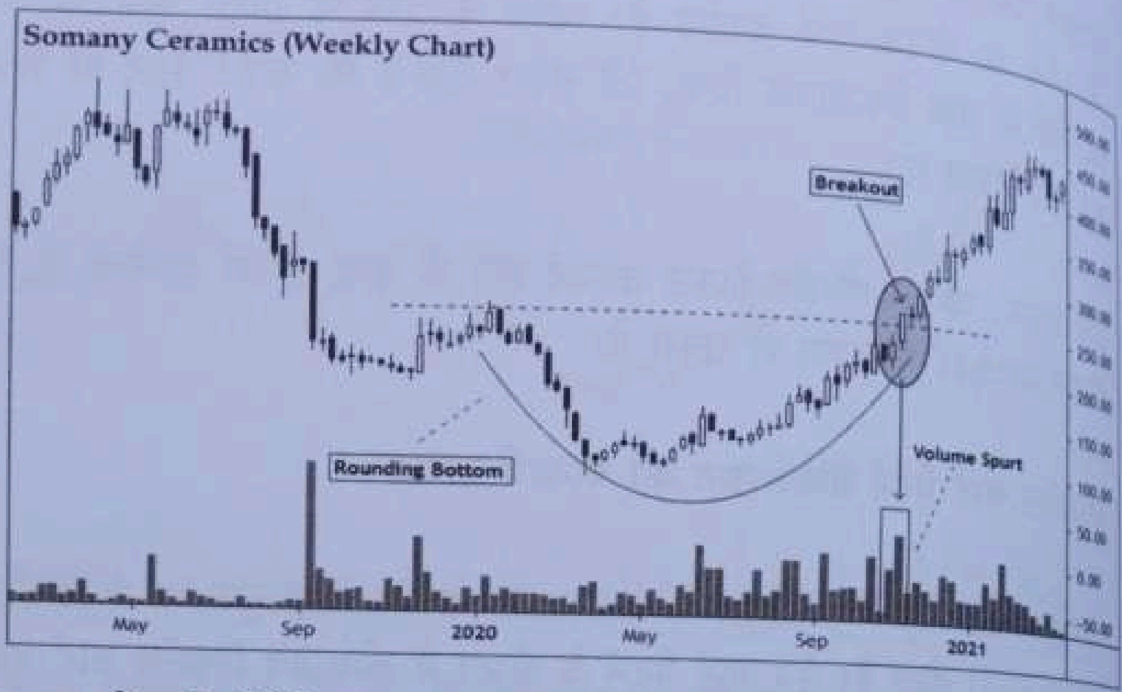

ऊपर सोमानी सिरेमिक्स का फरवरी २०१९ से मार्च २०२१ के बीच का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है, जो राऊन्डिंग बॉटम पैटर्न तैयार करता है। भाव, पैटर्न के नेकलाइन पर बड़े वॉल्यूम के साथ ब्रेकआऊट देता है, जो संकेत देता है कि वर्तमान डाउनट्रेन्ड पूरा हुआ है और मजबूत रिवर्सल आने वाले समय में नज़र आएगा।

अब वॉल्यूम से ब्रेकआऊट का कन्फर्मेशन मिलने के बाद, ट्रेडर्स उस स्तर पर लाँग पोजिशन ले सकते थे।

उदाहरण : बेअरीश रिवर्सल चार्ट पैटर्न ब्रेकआऊट

नीचे मारूति सुजुकी का जून २०१७ से अक्टूबर २०१८ के बीच का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है, जो डबल टॉप पैटर्न तैयार करता है।

भाव, पैटर्न के नेकलाइन पर बड़े वॉल्यूम के साथ ८४५८ के स्तर पर ब्रेकआऊट देता है, जो संकेत देता है कि वर्तमान अपट्रेन्ड पूरा हुआ है और मजबूत रिवर्सल आने वाले समय में नज़र आएगा।

अब वॉल्यूम से ब्रेकआऊट का कन्फर्मेशन मिलने के बाद, ट्रेडर्स उस स्तर पर शॉर्ट पोजिशन ले सकते थे।

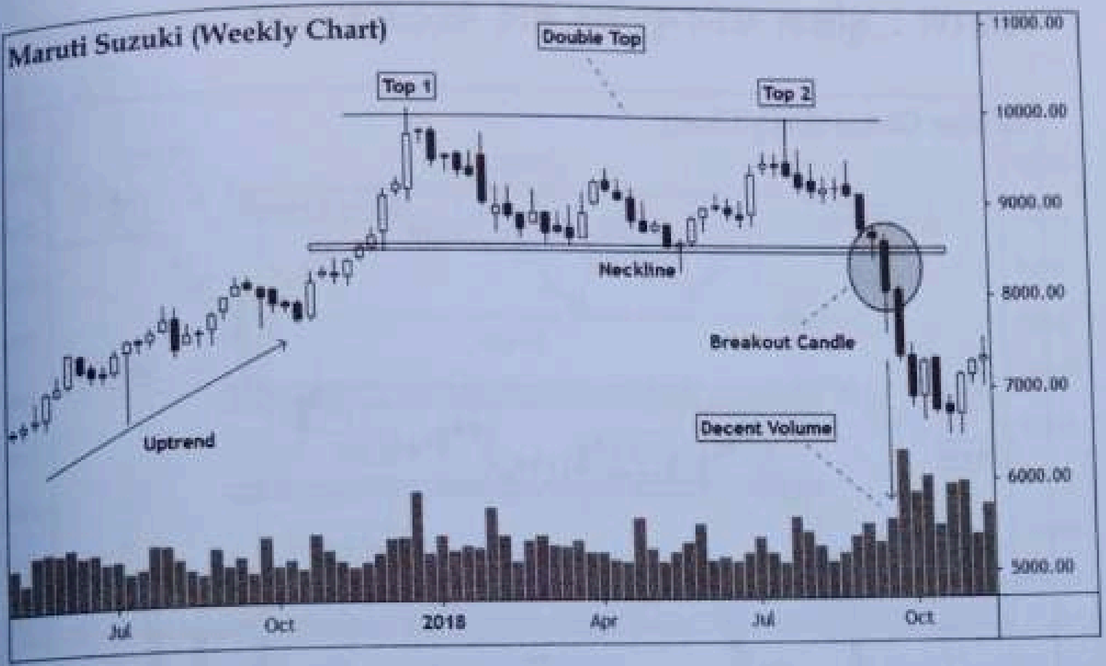

ऊपर दिए गए चार्ट में नज़र आता है कि ब्रेकआऊट के बाद भाव बहुत ही नीचे आया था।

कन्टिन्यूएशन चार्ट पैटर्न ब्रेकआऊट को कन्फर्म करना -

कन्टिन्यूएशन चार्ट पैटर्न के मामले में ब्रेकआऊट के वक्त वॉल्यूम का एनालिसिस करना जरूरी होता है। मैंने चार्ट पैटर्न के चैप्टर में लोकप्रिय कन्टिन्यूएशन चार्ट पैटर्न को समझाते समय इस बात को समझाया है।

जब भी सिक्योरिटी के भाव में चार्ट पैटर्न तैयार होने के बाद ब्रेकआऊट होता है तब वह ब्रेकआऊट कितना मजबूत है यह निश्चित करने के लिए वॉल्यूम को जाँचना जरूरी होता है।

बुलिश कन्टिन्यूएशन पैटर्न के मामले में यदि बड़े वॉल्यूम के साथ प्राइस ब्रेकआऊट हुआ तो समझना चाहिए कि अपट्रेन्ड और आगे जाएगा। इसी तरह, बेअरीश कन्टिन्यूएशन पैटर्न के मामले में यदि बड़े वॉल्यूम के साथ प्राइस ब्रेकआऊट हुआ तो समझना चाहिए कि डाउनट्रेन्ड और आगे जाएगा।

अगले पन्ने पर दिए उदाहरण से यह कन्सेप्ट बेहतर तरीके से समझने में मदद होगी।

उदाहरण : बुलिश कन्टिन्यूएशन चार्ट पैटर्न ब्रेकआऊट

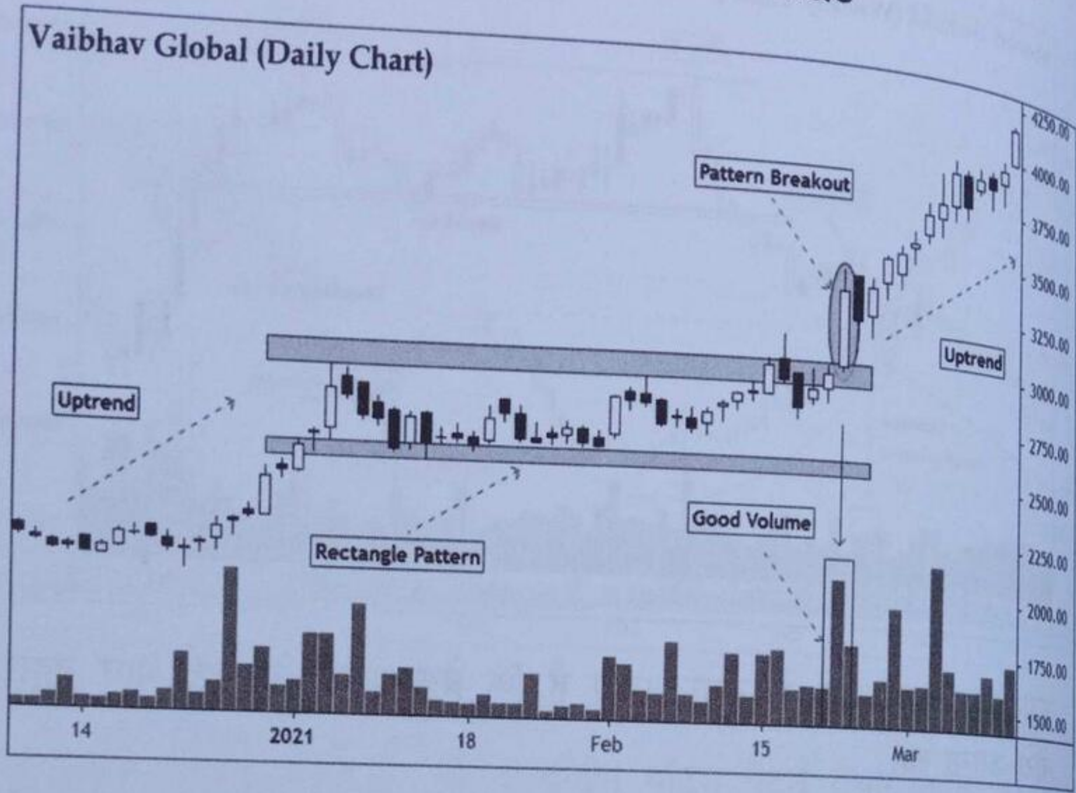

ऊपर वैभव ग्लोबल का दिसंबर २०२० से मार्च २०२१ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें अपट्रेन्ड के दौरान रेक्टेंगल पैटर्न तैयार हुआ है। बाद में, भाव बड़े वॉल्यूम के साथ ऊपर की दिशा में ब्रेकआऊट देता है, जो संकेत देता है कि वर्तमान अपट्रेन्ड अभी भी बरकरार है और भाव बढ़ना जारी रहेगा। अब वॉल्यूम से ब्रेकआऊट का कन्फर्मेशन मिलने के बाद, ट्रेडर्स उस स्तर पर लाँग पोजिशन ले सकते थे।

चार्ट पर, कुछ दिनों पहले कम वॉल्यूम के साथ ब्रेकआऊट का झूटा प्रयास भी नज़र आया था। वह दर्शाता है कि ट्रेडिंग में वॉल्यूम एनालिसिस का कितना महत्व है।

उदाहरण : बेअरीश कन्टिन्यूएशन चार्ट पैटर्न ब्रेकआऊट

अगले पन्ने पर महिन्द्रा एन्ड महिन्द्रा का नवंबर २०१८ से सितंबर २०१९ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें डाउनट्रेन्ड के दौरान रेक्टेंगल पैटर्न तैयार हुआ है।

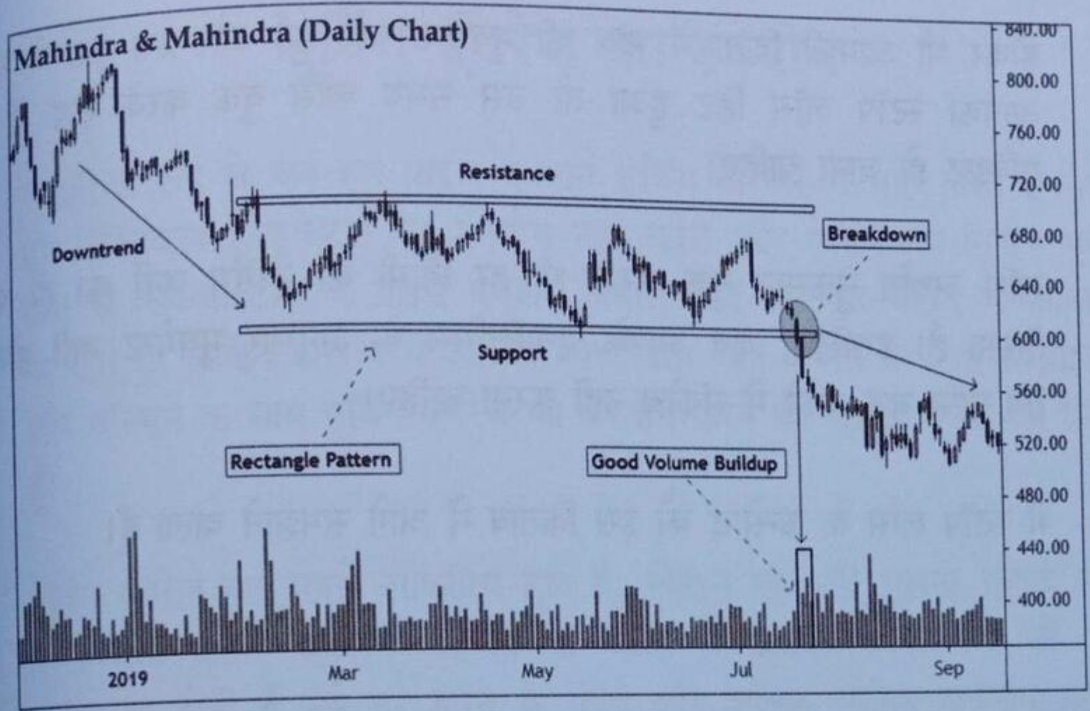

बाद में, भाव बड़े वॉल्यूम के साथ नीचे की दिशा में ब्रेकआऊट देता है, जो संकेत देता है कि वर्तमान डाउनट्रेन्ड अभी भी बरकरार है और भाव घटना जारी रहेगा।

अब वॉल्यूम से ब्रेकआऊट का कन्फर्मेशन मिलने के बाद, ट्रेडर्स उस स्तर पर शॉर्ट पोजिशन ले सकते थे।

बॉटम लाइन :

किसी भी ट्रेडर या निवेशक को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि ट्रेडिंग पोजिशन लेते समय सिर्फ वॉल्यूम को ही दिमाग में नहीं रखना चाहिए। प्राइस पैटर्न्स और अन्य प्राइस एक्शन पैरामीटर्स के साथ, वॉल्यूम का उपयोग एक एडिशनल कन्फर्मेशन के लिए करना चाहिए, जिससे अपनी दिशा में आप सही ट्रेडिंग का निर्णय ले सकोगे।

सिर्फ वॉल्यूम के आधार पर ही ट्रेडिंग पोजिशन नहीं लेनी चाहिए, क्योंकि कई बार सही मायने में अच्छे वॉल्यूम के साथ ब्रेकाआऊट नज़र आने पर भी भाव आपकी दिशा में बढ़ेगा या घटेगा नहीं ऐसा हो सकता है। सभी परिबल सही

होकर भी आपकी दिशा में भाव की मूवमेन्ट नहीं हुई और उस ट्रेड में यदि आपका स्टॉप लॉस हिट हुआ तो उस समय लॉस बुक करके ट्रेड में से एक्ज़िट हो जाना चाहिए।

लॉस अर्थात नुकसान बुक करना भी हर किसी की ट्रेडिंग जर्नी का ही एक हिस्सा है। इसलिए, जब आपके एनालिसिस के अनुसार मूवमेन्ट नहीं होती, तब लॉस बुक करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

मैं स्टॉप लॉस के कन्सेप्ट को इस किताब में आगे समझाने वाला हूँ।

मूविंग एवरेज का उपयोग

सैद्धांतिक रूप से जब हम प्राइस एक्शन ट्रेडिंग के बारे में बात करते है तब हम टेक्निकल इन्डिकेटर्स का उपयोग नहीं करते और ट्रेडिंग का निर्णय पूरी तरह से सिक्योरिटीज़ के प्राइस एक्शन अर्थात भाव के उतार-चढ़ाव के आधार पर लेते है। लेकिन वास्तव में अधिक स्पष्ट और सही निर्णय के लिए मैं प्राइस और वॉल्यूम के साथ मूविंग एवरेज का उपयोग करने की सलाह ट्रेडर्स को देता हूँ।

मूविंग एवरेज यह सबसे लोकप्रिय टूल है, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि प्राथमिकता प्राइस एक्शन को ही दी जाती है। प्राइस एक्शन में जो भी अस्पष्टता होती है उसे दूर करने के लिए और अधिक सटीक अनुमान प्राप्त करने के लिए हमें मूविंग एवरेज का उपयोग करना चाहिए।

मूविंग एवरेज यह एक बहुत ही अच्छा टूल साबित हो सकता है, यदि आपको पता हो कि कौन से एवरेज का उपयोग कब करना है। इस चैप्टर में, मैं सबसे प्रभावी और व्यापक रूप से उपयोग में आने वाली मूविंग एवरेज के बारे में बताने जा रहा हूँ जिसका प्राइस एक्शन ट्रेडिंग में बहुत ही महत्व है।

मूविंग एवरेज :

मूविंग एवरेज एक आसान टेक्निकल एनालिसिस टूल है, जो लगातार एवरेज प्राइस अपडेट करके प्राइस डेटा को अधिक उपयोगी बनाने का कार्य करता है। एवरेज अर्थात औसत यह निश्चित कालावधी के लिए लिया जाता है, जो मिनट भी हो सकता है और दिन, सप्ताह या महिना भी हो सकता है। यह ट्रेडर की पसंद पर निर्भर करता है।

मूविंग एवरेज भाव की दिशा निर्धारित नहीं करता लेकिन वह वर्तमान दिशा को परिभाषित करता है, जिसके आधार पर भविष्य का अनुमान लगाया जा सकता है। यह ट्रेन्ड पर आधारित इन्डिकेटर है, जिसका उपयोग ट्रेन्ड की दिशा निश्चित करने के लिए होता है।

मूविंग एवरेज प्राइस चार्ट पर जो 'नॉइज' दिखता है उसे घटाने या शांत करने का कार्य करता है। भाव किस दिशा में जा रहा है, इसका मजबूत अनुमान लगाने के लिए मूविंग एवरेज की दिशा की ओर देखें।

मूविंग एवरेज के प्रकार –

मूविंग एवरेज दो प्रकार के होते है - सिम्पल और एक्सपोनेन्शियल।

सिम्पल मूविंग एवरेज - सिम्पल मूविंग एवरेज यह एक आसान अंकशास्त्र है, जिसमें वर्तमान कीमतों को जोड़ा जाता है और फिर उसे कालावधी की संख्या से विभाजित किया जाता है।

एक्सपोनेन्शियल मूविंग एवरेज - यह मूविंग एवरेज वर्तमान डेटा पॉइन्ट्स को अधिक वेटेज (महत्त्व) देता है और इसलिए वह सिम्पल मूविंग एवरेज से अधिक परिणामकारक होता है।

मैं एवरेज की गणना में ज्यादा नहीं पड़ता क्योंकि आपने हाल ही में ट्रेडिंग या इन्वेस्टमेन्ट की शुरूआत की हो तो आपको शायद वह उबाऊ और भ्रमित करने वाला लग सकता है। आप आसानी से अपनी पसंद की मूविंग एवरेज चुन सकते है और किसी भी चार्टिंग वेबसाईट पर जाकर किसी भी चार्ट पर उसका उपयोग कर सकते है।

मूविंग एवरेज के मामले में कोई निश्चित कालावधी बहुत ही अच्छी या बहुत ही बूरी है, ऐसा नहीं कह सकते। दुनिया भर के ज्यादातर ट्रेडर्स जो मूविंग एवरेज पीरियड का उपयोग करते है, उसके बारे मैं विस्तार से समझाने वाला हूँ और चार्ट पर उनका उपयोग किस प्रकार करना चाहिए यह भी दिखलाने वाला हूँ।

आप मूविंग एवरेज का उपयोग शुरू कर सकते हो और आपके लिए क्या काम करता है यह देख सकते है और जब तक वह आपको अनुकूल परिणाम देता है तब तक उससे चिपके रहें।

मूविंग एवरेज का उपयोग –

मूविंग एवरेज का उपयोग प्रमुखता से सपोर्ट और रेजिस्टन्स को निश्चित करने के लिए होता है। इसके अलावा ट्रेडिंग सिग्नल जनरेट करने के लिए और स्टॉप लॉस निश्चित करने के लिए भी उसका उपयोग होता है।

१. सपोर्ट या रेजिस्टन्स को निश्चित करने के लिए -

मूविंग एवरेज का उपयोग सपोर्ट या रेजिस्टन्स को निश्चित करने के लिए किया जा सकता है।

अपट्रेन्ड में ५० दिन, १०० दिन या २०० दिनों के मूविंग एवरेज सपोर्ट के जैसे काम करते है, जो नीचे दिए उदाहरणों में दर्शाया है। अपट्रेन्ड में जब भी कोई सिक्योरिटी किसी मूविंग एवरेज पर सपोर्ट लेती है तब आप लाँग पोजिशन ले सकते है।

उदाहरण १ : ५० दिनों के मूविंग एवरेज का सपोर्ट

नीचे इन्फोसिस का जून २०२० से फरवरी २०२१ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप देख सकते है कि भाव को ५० दिनों के मूविंग एवरेज के पास स्पष्ट सपोर्ट मिल रहा है।

उदाहरण २ : १०० दिनों के मूविंग एवरेज का सपोर्ट

नीचे सन फार्मास्युटिकल का जनवरी २०१२ से मार्च २०१३ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप देख सकते है कि भाव को १०० दिनों के मूविंग एवरेज के पास स्पष्ट सपोर्ट मिल रहा है।

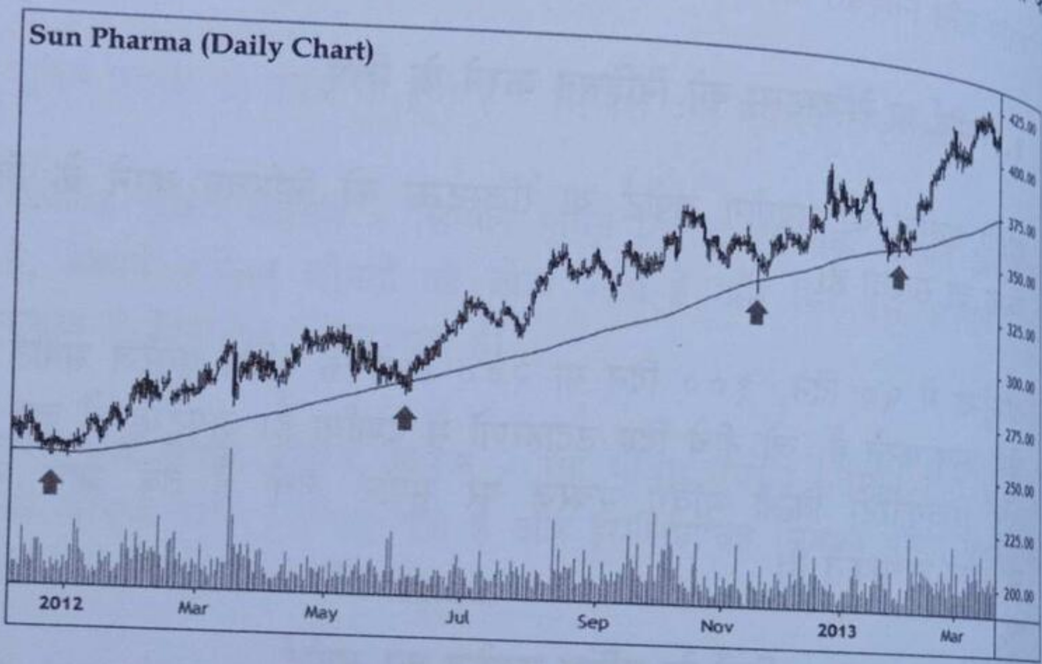

Sun Pharma (Daily Chart)

उदाहरण ३ : २०० दिनों के मूविंग एवरेज का सपोर्ट

नीचे रिलायन्स इन्डस्ट्रीज़ का जनवरी २०१६ से जून २०१९ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप देख सकते है कि भाव को २०० दिनों के मूविंग एवरेज के पास स्पष्ट सपोर्ट मिल रहा है।

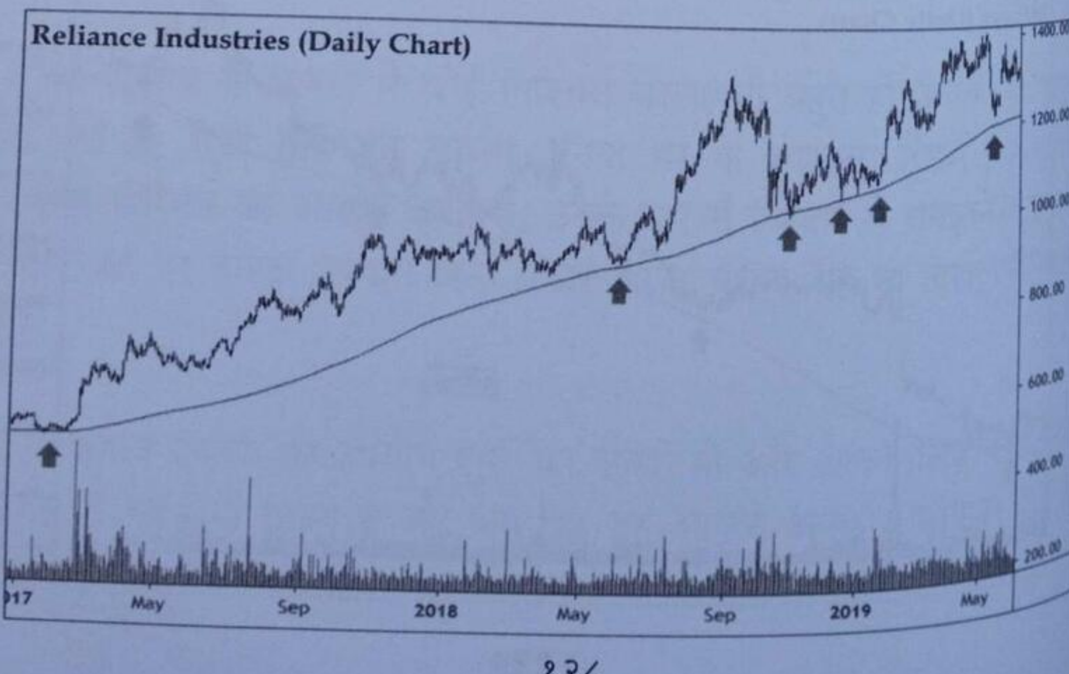

Reliance Industries (Daily Chart)

डाउनट्रेन्ड में ५० दिन, १०० दिन या २०० दिनों के मूविंग एवरेज रेजिस्टन्स के जैसे काम करते है, जो नीचे दिए उदाहरणों में दर्शाया है। डाउनट्रेन्ड में जब भी कोई सिक्योरिटी किसी मूविंग एवरेज पर रेजिस्टन्स का सामना करती है तब आप शॉर्ट पोजिशन ले सकते है।

उदाहरण १ : ५० दिनों के मूविंग एवरेज का रेजिस्टन्स

नीचे एक्सिस बैंक का अगस्त २०१५ से फरवरी २०१६ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप देख सकते है कि भाव को ५० दिनों के मूविंग एवरेज के पास स्पष्ट रेजिस्टन्स मिल रहा है।

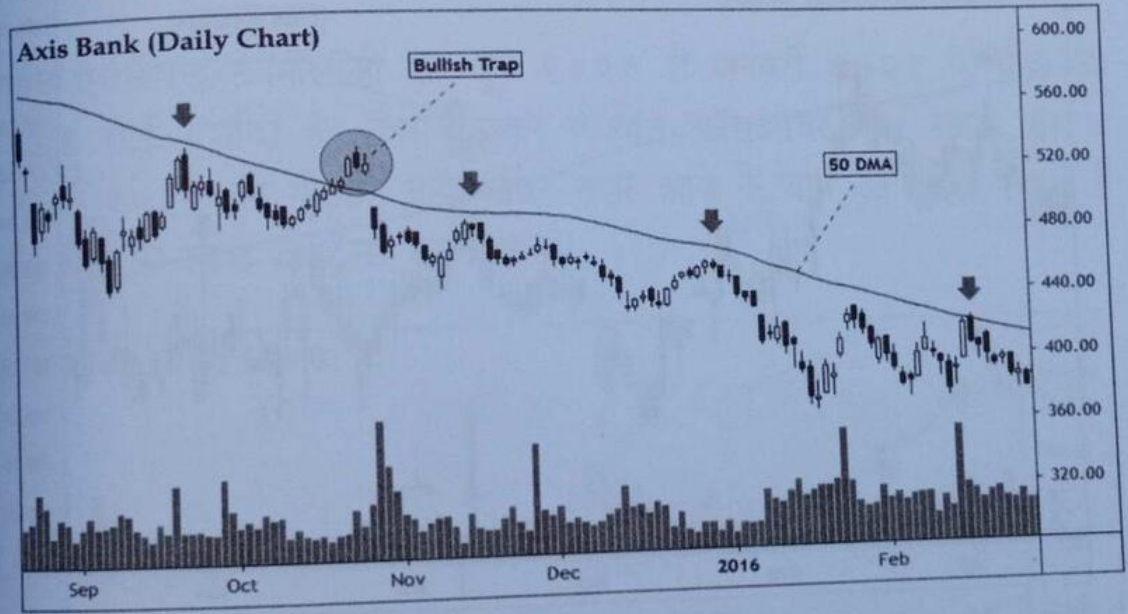

उदाहरण २ : १०० दिनों के मूविंग एवरेज का रेजिस्टन्स

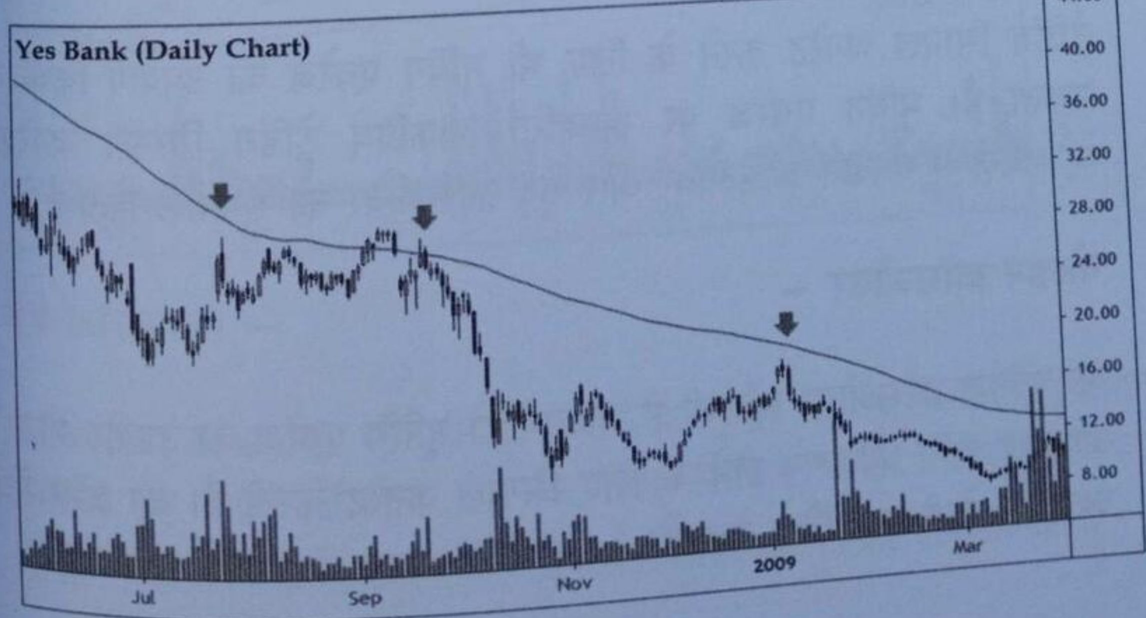

पिछले पन्ने पर यस बैंक का मई २००८ से अप्रैल २००९ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप देख सकते है कि भाव को १०० दिनों के मूविंग एवरेज के पास स्पष्ट रेजिस्टन्स मिल रहा है।

उदाहरण ३ : २०० दिनों के मूविंग एवरेज का रेजिस्टन्स

नीचे आयनॉक्स लीजर का जुलाई २००७ से नवंबर २००७ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप देख सकते है कि भाव को २०० दिनों के मूविंग एवरेज के पास स्पष्ट रेजिस्टन्स मिल रहा है।

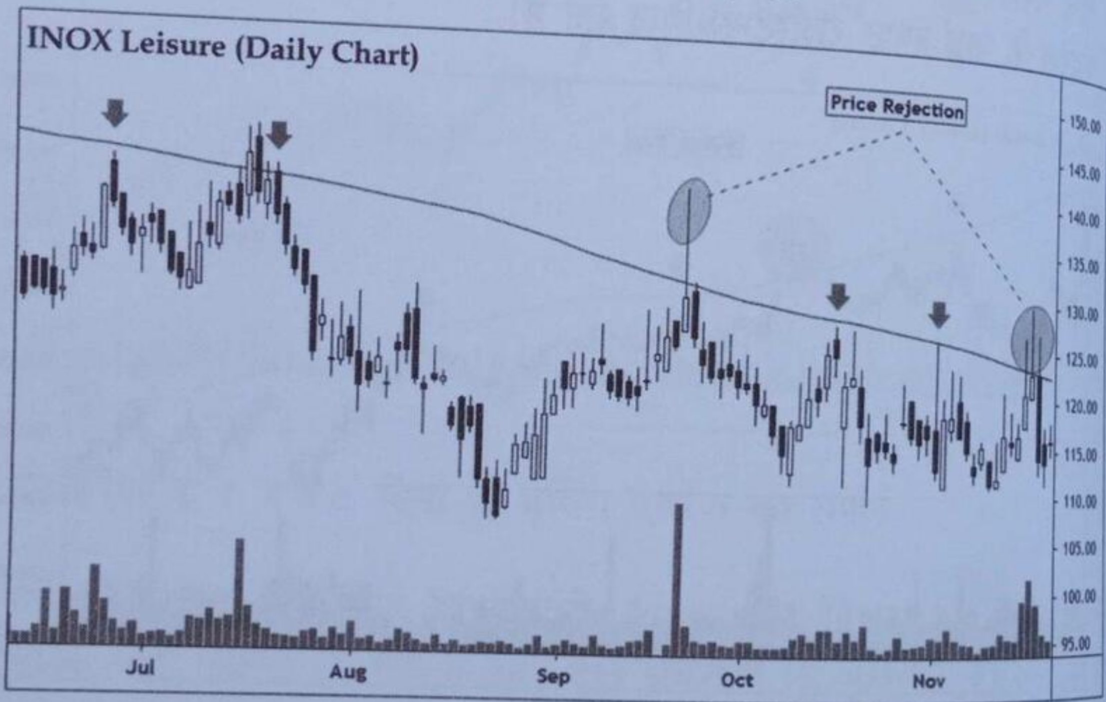

२. ट्रेडिंग सिग्नल जनरेट करने के लिए -

ट्रेडिंग सिग्नल जनरेट करने के लिए भी मूविंग एवरेज का उपयोग किया जा सकता है। मूविंग एवरेज पर आधारित लोकप्रिय ट्रेडिंग सिग्नल जनरेशन स्ट्रैटजीज़ में गोल्डन क्रॉसओवर और डेथ क्रॉसओवर का समावेश होता है।

गोल्डन क्रॉसओवर –

यह बुलिश क्रॉसओवर स्ट्रैटजी है, जिसमें दो मूविंग एवरेज का उपयोग होता है और वह लाँग पोजिशन लेने के लिए सिग्नल जनरेट करती है। वह क्रॉसओवर ज्यादातर तेजी का संकेत देता है।

जब शॉर्ट टर्म मूविंग एवरेज लाँग टर्म मूविंग एवरेज के ऊपर जाता है तब चार्ट पर गोल्डन क्रॉसओवर नज़र आता है। जब यह क्रॉसओवर होता है तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो ऐसे वक्त यह बुलिश क्रॉसओवर स्ट्रैटजी अधिक कारगर होती है।

यह दुनिया भर में सबसे अधिक व्यापक रूप से उपयोग में आने वाली क्रॉसओवर स्ट्रैटजी है। गोल्डन क्रॉसओवर स्ट्रैटजी में ५० और २०० दिनों के मूविंग एवरेज को लिया जाता है।

उदाहरण : गोल्डन क्रॉसओवर

नीचे एचसीएल टेक्नोलॉजी का जून २०२० से जनवरी २०२१ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप गोल्डन क्रॉसओवर देख सकते है। ७ जुलाई २०२० को गोल्डन क्रॉसओवर नज़र आने के बाद आप देख सकते है कि चार्ट पर स्पष्ट अपट्रेन्ड नज़र आया।

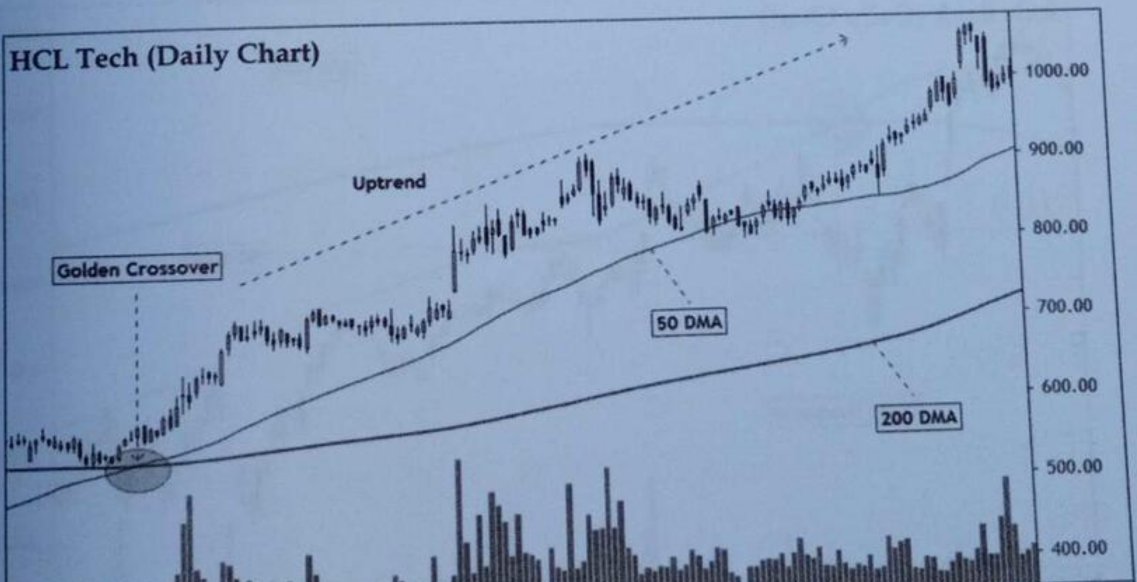

डेथ क्रॉसओवर –

यह बेअरीश क्रॉसओवर स्ट्रैटजी है, जिसमें दो मूविंग एवरेज का उपयोग होता है और वह शॉर्ट पोजिशन लेने के लिए सिग्नल जनरेट करती है। वह क्रॉसओवर ज्यादातर मंदी का संकेत देता है।

जब शॉर्ट टर्म मूविंग एवरेज लाँग टर्म मूविंग एवरेज के नीचे जाता है तब चार्ट पर डेथ क्रॉसओवर नज़र आता है। जब यह क्रॉसओवर होता है तब वॉल्यूम में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई तो ऐसे वक्त यह बेअरीश क्रॉसओवर स्ट्रैटजी अधिक कारगर होती है।

यह दुनिया भर में सबसे अधिक व्यापक रूप से उपयोग में आने वाली क्रॉसओवर स्ट्रैटजी है। डेथ क्रॉसओवर स्ट्रैटजी में ५० और २०० दिनों के मूविंग एवरेज को लिया जाता है।

उदाहरण : डेथ क्रॉसओवर

नीचे एक्सिस बैंक का जुलाई २०१५ से फरवरी २०१६ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप डेथ क्रॉसओवर देख सकते है। १४ सितंबर २०१५ को डेथ क्रॉसओवर नज़र आने के बाद आप देख सकते है कि चार्ट पर स्पष्ट डाउनट्रेन्ड नज़र आया।

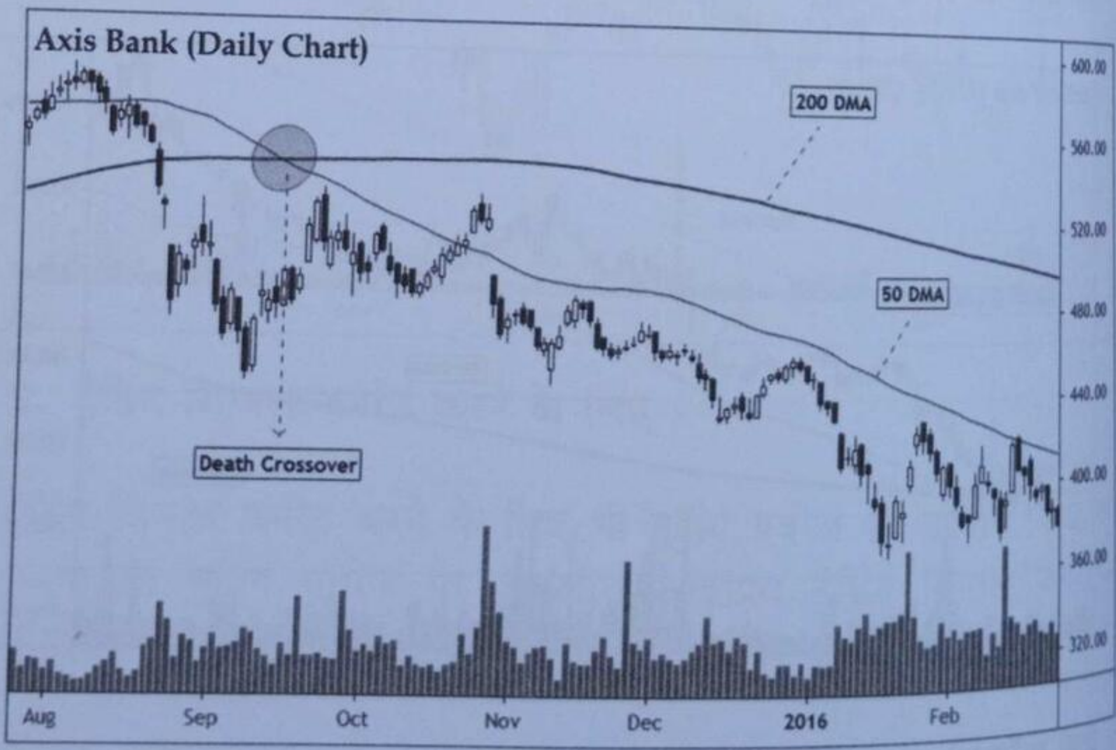

३. स्टॉप लॉस या ट्रेलिंग स्टॉप लॉस लगाना।

मूविंग एवरेज का उपयोग स्टॉप लॉस और ट्रेलिंग स्टॉप लॉस लगाने के लिए भी किया जा सकता है।

मैंने इस बारे में स्टॉप लॉस और ट्रेलिंग स्टॉप लॉस से संबंधित चैप्टर में आगे चर्चा की है।

महत्वपूर्ण नोट : ट्रेडिंग का निर्णय लेते समय सिर्फ और सिर्फ मूविंग एवरेज पर ही निर्भर नहीं होना चाहिए। सबसे पहले हमेशा प्राइस एक्शन को देखें, उसके बाद वॉल्यूम की जाँच कीजिए और इसके बाद ही अधिक कन्फर्मेशन के लिए मूविंग एवरेज का उपयोग कीजिए।

प्राइस रिजेक्शन और प्राइस एक्सेप्टन्स

अब जब आप प्राइस एक्शन ट्रेडिंग से जुड़े अधिकांश बेसिक कन्सेप्ट्स को समझ गए है, इसलिए अब इससे जुड़े महत्वपूर्ण कन्सेप्ट प्राइस रिजेक्शन और प्राइस एक्सेप्टन्स के बारे में बात करते है।

ट्रेडिंग में सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि ***सपोर्ट लेवल अथवा रेजिस्टन्स लेवल होल्ड करेंगे या असफल होंगे?*** इस सवाल का जवाब निर्धारित करता है कि आप किस प्रकार का ट्रेड करोगे (लाँग या शॉर्ट) और अंततः ट्रेडिंग में सफल होने के लिए इस सवाल का जवाब हासिल करना जरूरी है।

कई लोग समझ नहीं सकते कि सामान्यतः कई महत्वपूर्ण प्राइस एक्शन विशेषताएँ यह महत्वपूर्ण सपोर्ट झोन या रेजिस्टन्स झोन पर नज़र आते है और यदि आप ध्यान से सपोर्ट या रेजिस्टन्स लेवल पर प्राइस एक्शन का एनालिसिस करने में सक्षम हो गए तो, सपोर्ट लेवल या रेजिस्टन्स लेवल पर क्या होने की संभावना है, इसका अनुमान पहले से ही निकाला जा सकता है और यहीं पर प्राइस रिजेक्शन और प्राइस एक्सेप्टन्स का कन्सेप्ट उपयोग में आता है।

प्राइस रिजेक्शन और प्राइस एक्सेप्टन्स ऐसे एरियाज़ है, जहाँ पर प्राइस इक्विलिब्रियम नज़र नहीं आता। इसलिए वह आपको अनुकूल रिस्क रिवार्ड रेशिओ के साथ ब्रेकआऊट और पुलबैक ट्रेड करने का मौका देते है।

प्राइस रिजेक्शन –

जैसे कि नाम से पता चलता है, प्राइस रिजेक्शन का अर्थ सपोर्ट या रेजिस्टन्स लेवल को तोड़ने से इनकार करना, अर्थात रिजेक्ट करना है। रेजिस्टन्स या सपोर्ट एरिया पर रिवर्सल ट्रेडिंग के अवसरों को खोजने के लिए उसका उपयोग किया जा सकता है।

प्राइस एक्सेप्टन्स –

जैसे कि नाम से पता चलता है, प्राइस एक्सेप्टन्स का अर्थ सपोर्ट या रेजिस्टन्स लेवल को तोड़ने को स्वीकार करना, अर्थात एक्सेप्ट करना है। रेजिस्टन्स या सपोर्ट एरिया पर ब्रेकआऊट ट्रेडिंग के अवसरों को खोजने के लिए उसका उपयोग किया जा सकता है।

सिक्योरिटी का भाव स्पष्ट रिजेक्शन या एक्सेप्टन्स दर्शाता है या नहीं, यह कैसे पता चलेगा इस बात को मैं आपको कुछ उदाहरणों द्वारा समझाता हूँ।

उदाहरण : सपोर्ट पर प्राइस रिजेक्शन

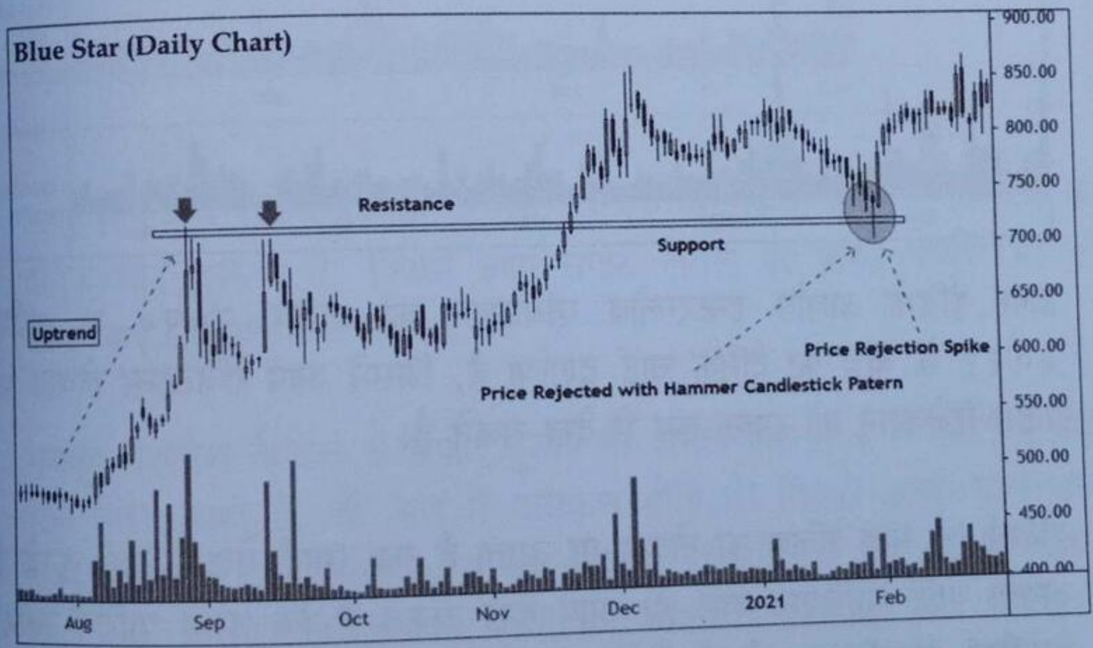

ऊपर ब्लु स्टार लिमिटेड का अगस्त २०२० से मार्च २०२१ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप सपोर्ट लेवल पर प्राइस रिजेक्शन को स्पष्ट रूप से देख सकते है।

शेअर्स का भाव सपोर्ट लेवल पर आता है तब स्मार्ट बायर्स उसमें एन्टर होते है और आप देख सकते है कि उसमें हैमर कैन्डलस्टिक पैटर्न तैयार होता है, जो मजबूत बुलिश रिवर्सल पैटर्न है। वह संकेत देता है कि प्राइस रिजेक्शन नज़र आएगा, अर्थात प्राइस सपोर्ट लेवल को ब्रेक नहीं करेगा, लेकिन वहाँ से रिवर्स होगा।

प्राइस रिजेक्शन होने के बाद ट्रेडर्स लाँग पोजिशन ले सकते है और मुनाफा कमा सकते है।

उदाहरण : रेजिस्टन्स पर प्राइस रिजेक्शन

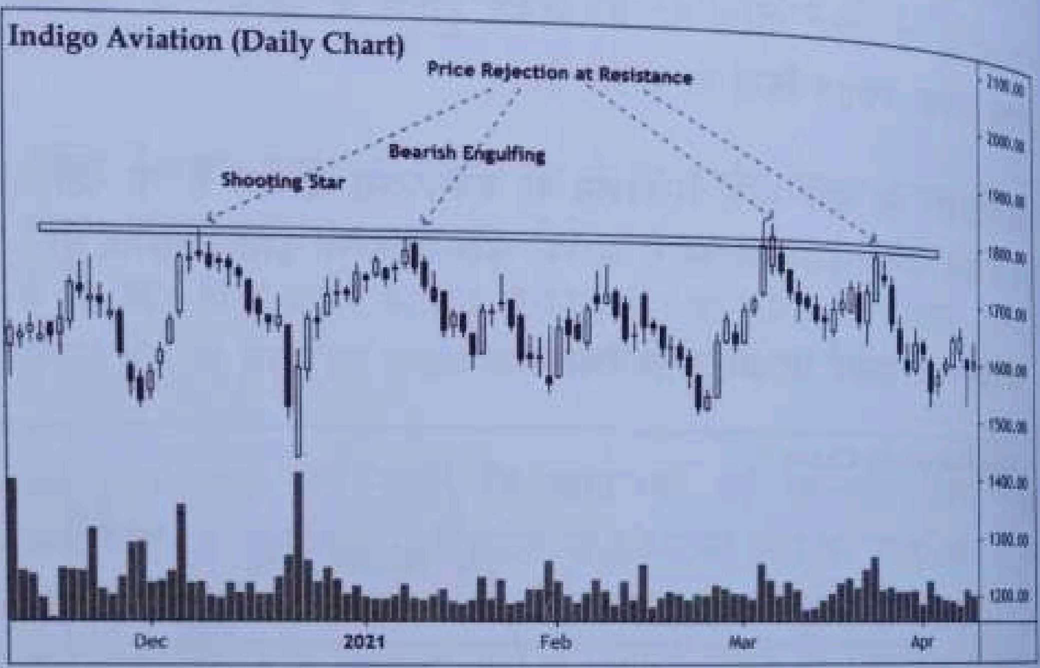

ऊपर इंडिगो अर्थात इन्टरग्लोब एविएशन का नवंबर २०२० से अप्रैल २०२१ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप रेजिस्टन्स लेवल पर प्राइस रिजेक्शन को स्पष्ट रूप से देख सकते है।

शेअर्स का भाव रेजिस्टन्स लेवल पर आता है तब स्मार्ट सेलर्स बिक्री करते है अथवा शॉर्ट पोजिशन लेते है। आप देख सकते है कि उसमें शूटिंग स्टार, बेअरीश एन्गल्फिंग पैटर्न और बेअरीश हरामी जैसे बेअरीश रिवर्सल कैन्डलस्टिक पैटर्न तैयार होते है।

वह संकेत देते है कि प्राइस रिजेक्शन नज़र आएगा, अर्थात प्राइस रेजिस्टन्स लेवल को ब्रेक नहीं करेगा, लेकिन वहाँ से रिवर्स होगा।

एक बार रेजिस्टन्स एरिया पर प्राइस रिजेक्शन होने के बाद भाव अपनी दिशा बदलता है और उसमें तुरंत गिरावट होती है। प्राइस रिजेक्शन होने के बाद ट्रेडर्स शॉर्ट पोजिशन लेकर मुनाफा कमा सकते है।

उदाहरण : सपोर्ट पर प्राइस एक्सेप्टन्स

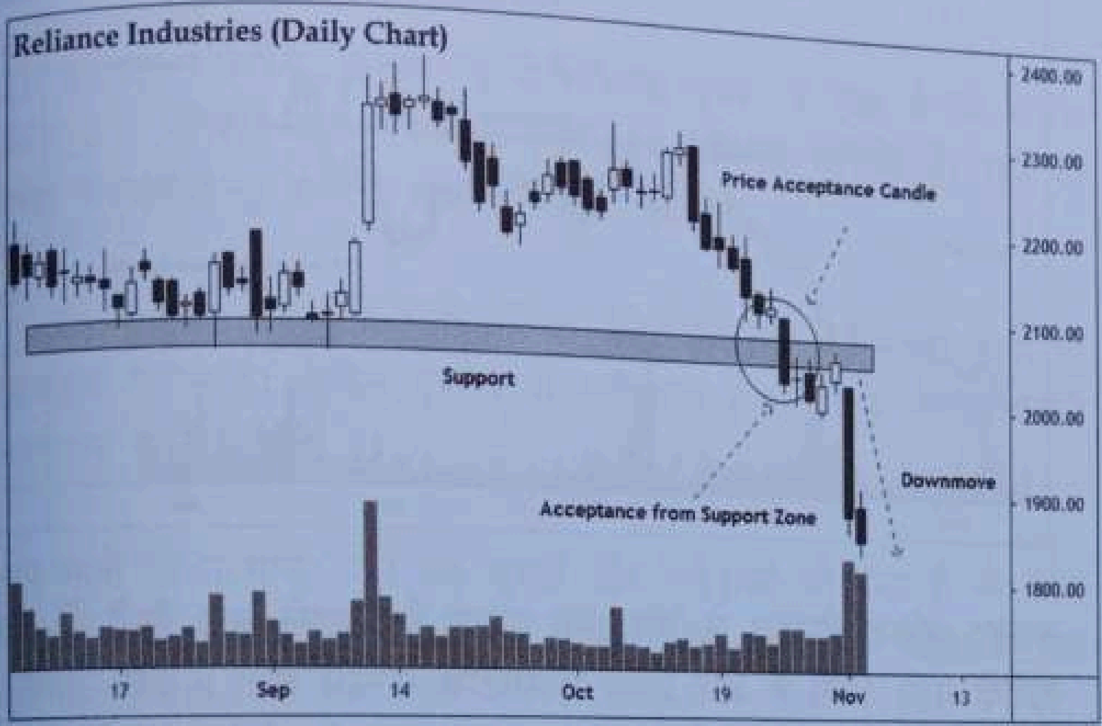

ऊपर रिलायन्स इन्डस्ट्रीज़ का अगस्त २०२० से नवंबर २०२० के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप सपोर्ट लेवल पर प्राइस एक्सेप्टन्स को स्पष्ट रूप से देख सकते है।

मजबूत बेअरीश कैन्डल से सपोर्ट टुटता है। अगले कुछ दिनों में छोटी पुलबैक रैली नज़र आती है, जो अंत में असफल होती है। जिससे प्राइस एक्सेप्टन्स कन्फर्म होता है और उसके तुरंत बाद गिरावट नज़र आती है। परिणाम स्वरूप जिन ट्रेडर्स ने शॉर्ट पोजिशन ली होगी उन्हें मुनाफा हुआ होगा।

उदाहरण : रेजिस्टन्स पर प्राइस एक्सेप्टन्स

अगले पन्ने पर माइन्डट्री लिमिटेड का दिसंबर २०२० से अप्रैल २०२१ के बीच का दैनिक चार्ट दर्शाया है, जिसमें आप रेजिस्टन्स लेवल पर प्राइस एक्सेप्टन्स को स्पष्ट रूप से देख सकते है।

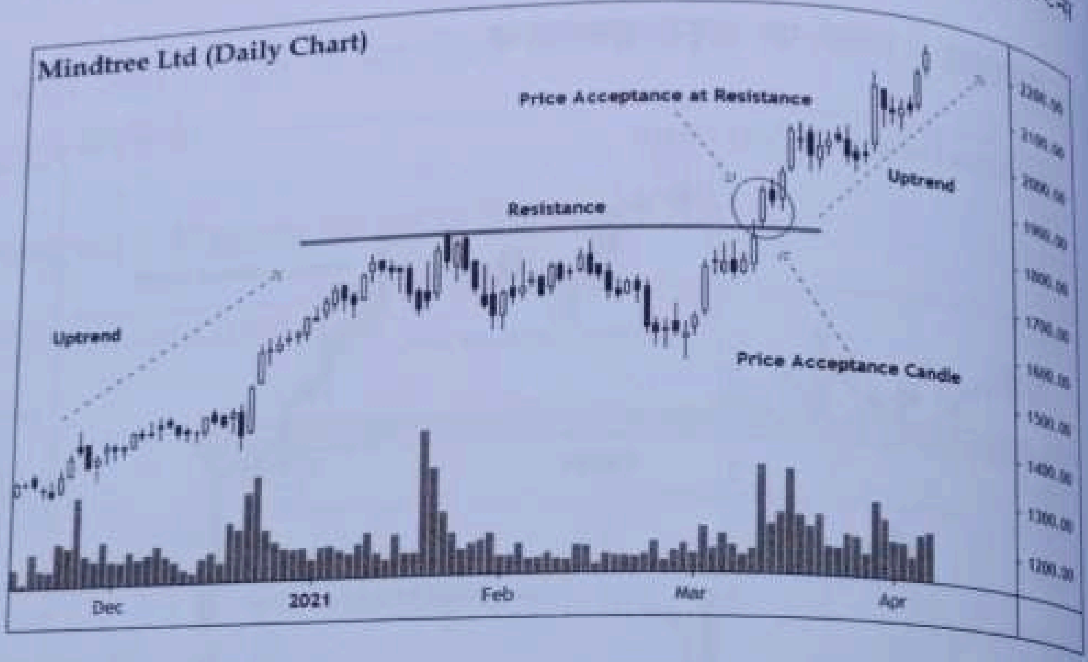

मजबूत बुलिश कैन्डल से रेजिस्टन्स टुटता है। अगले कुछ दिनों में मजबूत खरीदी नज़र आती है और प्राइस एक्सेप्टन्स कन्फर्म होता है और उसके बाद जोरदार तेजी नज़र आती है। परिणाम स्वरूप जिन ट्रेडर्स ने लॉंग पोजिशन ली होगी उन्हें मुनाफा हुआ होगा।

बॉटम लाइन –

जब भी सपोर्ट झोन के नजदीक ***बुलिश मारूबोजू*** जैसी मजबूत बुलिश कैन्डल नज़र आती है या ***हैमर, इन्वर्टेड हैमर, बुलिश एन्गल्फिंग, बुलिश हरामी, मॉर्निंग स्टार,*** आदि जैसे बुलिश रिवर्सल कैन्डलस्टिक पैटर्न नज़र आते है तब सपोर्ट लेवल पर प्राइस रिजेक्शन की संभावना अधिक होती है। अन्यथा सपोर्ट लेवल पर प्राइस एक्सेप्टन्स की संभावना अधिक होती है।

जब भी रेजिस्टन्स झोन के नजदीक ***बेअरीश मारूबोजू*** जैसी मजबूत बेअरीश कैन्डल नज़र आती है या ***हैंगिंग मैन, शूटिंग स्टार, बेअरीश एन्गल्फिंग, बेअरीश हरामी, मॉर्निंग स्टार,*** आदि जैसे बेअरीश रिवर्सल कैन्डलस्टिक पैटर्न नज़र आते है तब रेजिस्टन्स लेवल पर प्राइस रिजेक्शन की संभावना अधिक होती है। अन्यथा रेजिस्टन्स लेवल पर प्राइस एक्सेप्टन्स की संभावना अधिक होती है।

रिस्क मैनेजमेन्ट

मार्क डग्लस ने अपनी किताब 'द डिसिप्लिन्ड ट्रेडर' में कहा है कि सफल ट्रेडिंग ८० प्रतिशत मनी मैनेजमेन्ट और २० प्रतिशत स्ट्रैटजी है। यही पर ***रिस्क मैनेजमेन्ट*** का कन्सेप्ट उपयोगी साबित होता है।

एक सफल ट्रेडर बनने के लिए, रिस्क मैनेजमेन्ट यह ट्रेडिंग का बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेकिन दुर्भाग्य से अधिकांश ट्रेडर्स रिस्क मैनेजमेन्ट की अवगणना करते है।

आप मानो या न मानो, मैंने कई ट्रेडर्स और निवेशकों को देखा है जो रिस्क मैनेजमेन्ट को अधिक महत्व नहीं देते और इसलिए वह शेअर बाज़ार में बड़ी रकम गवाते है।

आगे पढ़ने से पहले मैं प्रसिद्ध हेज फंड मैनेजर लेरी हाईट का एक प्रसिद्ध सूत्र बताना चाहता हूँ।

''ट्रेडिंग और जीवन में विजय प्राप्त करने के लिए मेरे पास दो मूल नियम है :

१. यदि आपने शर्त नहीं लगाई, तो आप जीत नहीं सकते।
२. यदि आपने सभी चिप्स गवाँ दिए तो आप भविष्य में शर्त नहीं लगा सकते।''

दुसरा महत्वपूर्ण मुद्दा, जो व्यक्ति को हमेशा याद रखना चाहिए वह यह है कि आपका नुकसान जितना बड़ा होगा, भविष्य में उसकी भरपाई करना उतना ही कठिण होगा।

अगले पन्ने पर दिए गए टेबल से यह बात अधिक स्पष्ट होगी।

नुकसान (%)	भविष्य में ब्रेकईवन के लिए जरूरी मुनाफा (%)
१०	११
२०	२५
३०	४३
४०	६७
५०	१००
६०	१५०
७०	२३३
८०	४००
९०	९००

१० प्रतिशत नुकसान को रिकवर करने के लिए आपको भविष्य में ११ प्रतिशत मुनाफा कमाना होगा। वैसे ही ५० प्रतिशत नुकसान रिकवर करने के लिए आपको भविष्य में १०० प्रतिशत मुनाफा कमाना होगा। इसलिए ट्रेडिंग में रिस्क मैनेजमेन्ट बहुत ही महत्वपूर्ण है।

रिस्क मैनेजमेन्ट :

रिस्क मैनेजमेन्ट ट्रेडर्स का नुकसान घटाने में मददगार साबित होता है और उन्हें सभी रूपए गवाँने से बचाता है। यदि सही रिस्क मैनेजमेन्ट स्ट्रैटजी न हो तो एक ट्रेडर जिसने बहुत मुनाफा कमाया है वह भी सिर्फ एक या दो खराब ट्रेड में वह सब कुछ खो सकता है।

हालाँकि ट्रेडिंग में दीर्घकालिक सफलता के लिए रिस्क मैनेजमेन्ट आवश्यक है, लेकिन बहुत से लोग इस पर पर्याप्त ध्यान नहीं देते।

इसलिए मैं आप से बिनती करता हूँ कि ट्रेडिंग के दौरान रिस्क मैनेजमेन्ट के महत्वपूर्ण पहलू की कभी भी अवगणना न करें।

रिस्क मैनेजमेन्ट स्ट्रैटजीज़ :

रिस्क मैनेजमेन्ट टुल्स और स्ट्रैटजी को समझना कुछ खास मुश्किल नहीं है, ट्रेडिंग में आए नए लोग भी उसे आसानी से समझ सकते है। एकमात्र समस्या यह है कि ईगो (अंहकार), ग्रीड (लालच) और फियर (डर) इन जैसी मानवी भावनाओं के कारण ट्रेडिंग करते समय लोगों के लिए उन पर अमल करना मुश्किल होता है।

जो लोग ट्रेडिंग में नए है, उनके लिए रिस्क मैनेजमेन्ट स्ट्रैटजीज़ पर अमल करने की आदत डालने के लिए बहुत अभ्यास करना पड़ता है।

रिस्क मैनेजमेन्ट स्ट्रैटजीज़ –

- ट्रेन्ड को फॉलो करें।
- ट्रेड प्लान करें।
- सही रिस्क : रिवॉर्ड रेशिओ के साथ ट्रेड करें।
- भावनाओं पर नियंत्रण रखें।
- पोजिशन साईजिंग।
- स्टॉप लॉस के नियम का पालन करें।
- मुनाफा बुक करें।

ट्रेन्ड फॉलो करें –

ट्रेडिंग में रिस्क मैनेज करने के लिए सबसे बुनियादी, आसान और सबसे महत्वपूर्ण तरीका यह है कि हमेशा ट्रेन्ड की दिशा में ट्रेड करें।

जो ट्रेन्ड चल रहा है उस दिशा में ही आपने ट्रेड किया तो आपके गलत साबित होने की संभावना बहुत ही कम होती है और इसलिए पैसे गवाँने का जोखीम अपने आप कम हो जाता है।

यदि कोई सिक्योरिटी या इन्डेक्स स्पष्ट अपट्रेन्ड में हो तो लॉंग पोजिशन लेने का प्रयास करें, अर्थात सपोर्ट लेवल पर खरीदी करें और बाद में रेजिस्टन्स लेवल पर बिक्री करें।

वैसे ही, यदि कोई सिक्योरिटी या इन्डेक्स में स्पष्ट डाउनट्रेन्ड हो तो शॉर्ट पोजिशन लेने का प्रयास करें, अर्थात रेजिस्टन्स पर बिक्री करें और बाद में सपोर्ट पर फिर से खरीदी करें।

कोन्ट्रेरियन ट्रेड लेने का कभी भी प्रयास न करें, अर्थात ट्रेन्ड के विपरीत दिशा में जाकर कभी भी ट्रेड न करें।

ट्रेडिंग के बारे में एक पूरानी कहावत हमेशा ध्यान में रखें, ***'ट्रेन्ड ईज योर फ्रेन्ड'*** अर्थात ट्रेन्ड ही आपका मित्र है।

ट्रेड प्लान करें –

बिजनेस में एक पूरानी और प्रसिद्ध कहावत है - ***'ईफ यू फेल टु प्लान, यु प्लान टु फेल'*** अर्थात यदि आप योजना बनाने में असफल हुए तो आप असफल होने की योजना बना रहें है। यही सिद्धांत ट्रेडिंग में भी लागू होता है।

सफल ट्रेडर्स बहुत ही अनुशासित होते है और हमेशा अपने ट्रेडिंग प्लान के अनुसार ट्रेडिंग करते है।

ट्रेडिंग में सफल होने के लिए प्लान करना और उस पर अमल करना बहुत ही जरूरी होता है। ट्रेडिंग के संदर्भ में ट्रेड प्लान करने का तात्पर्य है कि ट्रेड में कब एन्टर होना है, कब तक पोजिशन को होल्ड करना है और कब ट्रेड में से एक्झिट होना है। ट्रेडिंग प्लान के अभाव में, व्यक्ति गैर-जिम्मेदार तरीके से ट्रेडिंग करता है और एन्ट्री या एक्झिट के लिए कोई निश्चित स्ट्रैटजी को नहीं अपनाता तो परिणाम स्वरूप पैसे गवाँने की आफत आ सकती है।

इसलिए ट्रेडिंग जर्नल मेन्टेन करने की आदत बहुत जरूरी है। इस किताब में आगे मैंने उस बारे में विस्तार से चर्चा की है।

सही रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ के साथ ट्रेड करें -

अन्य महत्वपूर्ण रिस्क मैनेजमेन्ट के तरिकों में पूर्वनिर्धारीत रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ के आधार पर ट्रेडिंग का समावेश होता है।

रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ निवेशकों के ट्रेड में पैसे गवाँने के जोखीम को मैनेज करने में मददगार साबित होता है।

रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ ट्रेड से संभावित लाभ की तुलना ट्रेड से संभावित नुकसान से करता है। ट्रेड के एन्ट्री पॉइन्ट और स्टॉप लॉस ऑर्डर के बीच के फर्क (रिस्क) को टारगेट प्राइस और एन्ट्री पॉइन्ट के बीच के फर्क (रिवॉर्ड) से विभाजित करके यह रेशिओ प्राप्त किया जाता है।

यदि आपका रिस्क रिवार्ड रेशिओ १:२ हो और आपने १० रू. का स्टॉप लॉस रखा हो तो आपको उस ट्रेड में २० रू. का मुनाफा होने की संभावना होती है।

एक व्यापक धारणा है कि ट्रेडिंग में लगातार मुनाफा कमाने के लिए रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ १:२ या उससे अधिक होना जरूरी है।

आदर्श रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ के बारे में कोई निश्चित नियम नहीं है। व्यक्ति की जोखीम उठाने की क्षमता और ट्रेडिंग स्टाईल पर वह निर्भर करता है। आपके लिए कौन सा रेशिओ अनुकूल है, यह ट्रायल-एन्ड-एरर से निश्चित हो सकता है। लेकिन किसी भी परिस्थिति में वह १:२ या उससे अधिक होना चाहिए।

किसी भी ट्रेड में एन्टर होने से पहले, ट्रेडर को उस ट्रेड के लिए संभावित रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ की गणना करनी चाहिए और यदि वह रेशिओ ट्रेडर के स्वीकार्य रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ से कम हो तो ऐसे ट्रेड में आगे नहीं बढ़ना चाहिए, ऐसे ट्रेड को टालना चाहिए।

भावनाओं पर नियंत्रण रखें –

फियर और ग्रीड अर्थात डर और लालच फाइनेन्शियल मार्केट में बहुत ज्यादा हावी होते है। ट्रेडिंग सायकोलॉजी में भी यह दो शब्द महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

ट्रेडर किसी ट्रेड में एन्टर या एक्झिट होने से कतराता है, तब उसमें फियर अर्थात डर नज़र आता है। दुसरी ओर ट्रेडर तुरंत पैसे कमाने के लालच में अपनी क्षमता से अधिक रूपयों का ट्रेड करता है तब उसमें ग्रीड अर्थात लालच नज़र आता है।

आपके पास सही प्लान और ट्रेडिंग सिस्टम है, लेकिन यदि आपने फियर या ग्रीड के कारण उस प्लान का ईमानदारी से पालन नहीं किया तो आप कभी भी निरंतर कमाई नहीं कर सकते।

इसलिए यदि आप लंबी अवधि के लिए ट्रेडिंग में सफल होना चाहते है तो आपको अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना होगा और फियर और ग्रीड आपके ट्रेडिंग के निर्णय को प्रभावित नहीं करेंगे, इसकी पुष्टी करनी होगी।

ट्रेडिंग में नए से एन्टर हुए पाठक मित्रों को ट्रेडिंग सायकोलॉजी से संबंधित किताबें पढ़ने और उनमें से सिखने की मैं सलाह देता हूँ। यह बहुत ही गहन विषय है, जिसे पढ़ने से आपको ट्रेडिंग में निर्णय लेने के लिए मदद होगी।

पोजिशन साईजिंग –

ट्रेडिंग में रिस्क मैनेज करने के लिए पोजिशन साईजिंग महत्वपूर्ण है। जैसे कि नाम से पता चलता है, वह पोजिशन की साइज तय करने का विकल्प है। दुसरे शब्दों में कहे तो पोजिशन साईजिंग यह ट्रेडर निश्चित ट्रेड में कितने पैसे लगाता है, यह दर्शाता है।

ट्रेडर स्वयं कितना जोखीम उठा सकता है और उसका ट्रेडिंग पोर्टफोलिओ या ट्रेडिंग कैपिटल कितना है, उसे ध्यान में लेना चाहिए और उसके आधार पर ट्रेडिंग पोजिशन की साइज का निर्णय लेना चाहिए।

मैंने इस किताब में आगे कुछ प्रॅक्टिकल उदाहरणों द्वारा इस कन्सेप्ट को समझाने का प्रयास किया है क्योंकि वह ट्रेडिंग के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज है।

स्टॉप लॉस के नियम का पालन करें –

रिस्क मैनेजमेन्ट का सबसे आसान और परिणाम कारक विकल्प है स्टॉप लॉस के नियम का पालन करना।

स्टॉप लॉस का उपयोग करने के पिछे का विचार यह है कि मार्केट आपकी सोच के खिलाफ गया तो ऐसे वक्त आप अपनी पोजिशन क्लोज करके नुकसान को सीमित कर सकते है, जिससे आप बड़े नुकसान से बच जाते है और आपकी पूँजी धूलजाने से बच जाती है।

मुनाफा बुक करें –

सिक्योरिटीज़ में ट्रेडिंग के दरम्यान अपनी पोजिशन में से नियमित रूप से मुनाफा बुक करते रहना बहुत ही महत्वपूर्ण है। आपको किसी भी ट्रेडिंग पोजिशन में एन्टर होने से पहले ही कब पोजिशन एक्झिट करनी है या प्रॉफिट बुक करना है, यह स्पष्ट करना चाहिए।

अक्सर यह कहा जाता है कि ट्रेडिंग में सफल होने के लिए व्यक्ति को नुकसान को मर्यादित करने और मुनाफे को बढ़ाने को सिखना चाहिए। लेकिन एक सच्चाई यह भी है कि आप जब मुनाफा बुक करते है (अर्थात पोजिशन एक्झिट करते है) तभी मुनाफा बुक हुआ ऐसा कहा जाता है। इसके बिना सिर्फ कागज पर मुनाफा दिखता है। पोजिशन खड़ी हो और मुनाफा दिखता हो, फिर भी उसके कभी भी धूल जाने की संभावना होती है। कई बार ऐसा भी होता है कि यह मुनाफा देखते ही देखते नुकसान में बदल जाता है।

प्रोफेशनल ट्रेडर्स आमतौर पर मुनाफा बुक करने के लिए ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग करते है। मैंने इस बात को किताब में आगे विस्तार से समझाया है।

पोजिशन साईजिंग

ट्रेडिंग में रिस्क मैनेज करने के लिए पोजिशन साईजिंग एक महत्वपूर्ण तरीका है। जैसे कि नाम से पता चलता है, यह पोजिशन की साइज निश्चित करने का एक विकल्प है। वास्तव में, ट्रेडिंग करने से पहले, रिस्क मैनेजमेन्ट की शुरुआत पोजिशन साईजिंग से ही होती है।

जैसे कि नाम दर्शाता है, ट्रेडिंग करते समय ट्रेडर जो पोजिशन लेते है, उसकी साइज निश्चित करने का वह एक तरीका है। दुसरे शब्दों में कहें तो, पोजिशन साइज यह ट्रेडर ने किसी भी ट्रेड में लगाई रकम का उल्लेख करती है।

ट्रेडर स्वयं कितना जोखीम उठा सकते है और उनका ट्रेडिंग पोर्टफोलिओ या ट्रेडिंग कैपिटल कितना है उसे ध्यान में लेना चाहिए और उसके आधार पर ट्रेडिंग पोजिशन की साइज का निर्णय लेना चाहिए।

कितनी क्वान्टिटी में सिक्योरिटी खरीदनी या बेचनी है, इसका निर्णय लेने के लिए प्रोफेशनल ट्रेडर्स पोजिशन साईजिंग के कन्सेप्ट का उपयोग करते है। इससे उन्हें जोखीम कम करने में और अधिक कमाई करने में मदद होती है।

यदि आपकी पोजिशन साइज बहुत ही अधिक या बहुत ही कम होगी तो इसका मतलब है कि आप बहुत बड़ा जोखीम उठा रहे है या आप पर्याप्त जोखीम नहीं उठा रहे जो ट्रेडिंग से मुनाफा कमाने के लिए आवश्यक है।

पोजिशन साइज की गणना –

आदर्श पोजिशन साइज की गणना के तरीके को समझने से पहले इस गणना से जुड़े दो महत्वपूर्ण कारकों को समझने का प्रयास करते है –

१. अकाऊन्ट रिस्क
२. ट्रेड रिस्क

अकाऊन्ट रिस्क अर्थात ट्रेडिंग कैपिटल का एक निर्धारित प्रतिशत अर्थात आप किसी भी ट्रेड के लिए निश्चित कितना जोखीम उठाने को तैयार है, उसकी लिमिट।

उदाहरण के तौर पर, यदि आपका ट्रेडिंग कैपिटल रू.१,००,००० है और आपकी जोखीम उठाने की तय लिमिट १ प्रतिशत है, तो इसका अर्थ यह होता है कि किसी निश्चित ट्रेड के लिए आप रू.१००० का जोखीम उठाने को तैयार हो।

आमतौर पर किसी भी ट्रेड के लिए ट्रेडर को अपने ट्रेडिंग कैपिटल के २ से ५ प्रतिशत से अधिक जोखीम नहीं उठाना चाहिए। इतना ही नहीं, सभी ट्रेड के लिए अकाऊन्ट रिस्क लिमिट में बदलाव नहीं करना चाहिए।

ट्रेड रिस्क यह ट्रेड एन्ट्री पॉइन्ट और आपने जिस पॉइन्ट पर स्टॉप लॉस ऑर्डर निश्चित किया है उसके बीच का फर्क है।

स्टॉप लॉस को कुछ निश्चित मापदंड के आधार पर तय किया जाता है, जो मैंने अगले चैप्टर में समझाया है।

उदाहरण के तौर पर, यदि आपने किसी कंपनी के शेअर्स रू.१०० के भाव से खरीदे और स्टॉप लॉस रू.९० पर रखा, तो इस मामले में आपका ट्रेड रिस्क रू.१० प्रति शेअर होता है।

अब जब आपने यह निर्धारित कर लिया है कि आपके एन्ट्री पॉइन्ट से आपका स्टॉप लॉस कितना दूर होगा, तो आप उसके आधार पर उस ट्रेड के लिए आदर्श (आयडियल) पोजिशन साइज की गणना कर सकते है।

आयडियल पोजिशन साइज = अकाऊन्ट रिस्क / ट्रेड रिस्क

उदाहरण :

मान लीजिए कि एक ट्रेडर रू.५,००,००० की पूँजी से ट्रेडिंग कर रहा है और एबीसी नाम की कंपनी के शेअर्स रू.८० के भाव से खरीदने है और वह रू.७६ का स्टॉप लॉस और रू.९० का टारगेट रखता है।

इस ट्रेडर के आयडियल ट्रेडिंग साइज की गणना इस प्रकार की जाती है -

ट्रेडर ने सभी ट्रेड के लिए २ प्रतिशत की रिस्क लिमिट रखी है ऐसा मानते हुए, इस मामले में अकाऊन्ट रिस्क रू.५,००,००० के २ प्रतिशत अर्थात रू.१०,००० होता है।

ट्रेड रिस्क = एन्ट्री - स्टॉप लॉस = ८० - ७६ = रू.४

अब आयडियल पोजिशन साइज = १०,००० / ४ = २५०० शेअर्स

मान लीजिए कि एबीसी कंपनी डेरिवेटिवज में भी ट्रेड करती है और उसमें ५०० शेअर्स का ट्रेडिंग लॉट है।

इस मामले में व्यक्ति कैश मार्केट में २५०० शेअर्स ट्रेड कर सकता है या डेरिवेटिवज में ५ लॉट (२५००/५००) ट्रेड कर सकता है।

बाज़ार की स्थिति चाहे जो भी हो, ट्रेड सेटअप कैसा भी हो या आपकी स्ट्रैटजी जो भी हो, इस पद्धति को अपनाकर आप आयडियल पोजिशन साइज निर्धारित कर सकते है।

एक बात हमेशा ध्यान में रखें, बड़ी ट्रेडिंग पोजिशन हमेशा चिंता को बढ़ाती है।

प्रसिद्ध अमेरिकी ट्रेडर और लेखक जॅक स्क्वेजर का एक सूत्र है,

''पोजिशन जितनी बड़ी, उतना जोखीम भी अधिक होता है और ऐसे समय में हम डर के मारे ट्रेडिंग का निर्णय लेते है, जजमेन्ट या अनुभव के आधार पर नहीं।''

इसलिए किसी भी व्यक्ति को अपनी आर्थिक क्षमता और भावनात्मक स्थिति को ध्यान में लेकर ट्रेडिंग करना चाहिए और इसलिए ऐसे समय में पोजिशन साईजिंग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इनिशियल स्टॉप लॉस

स्टॉप लॉस ऑर्डर यह एक टूल है जिसका उपयोग ट्रेडर्स और इन्वेस्टर्स द्वारा नुकसान को मर्यादित करने के लिए और रिस्क एक्सपोजर को घटाने के लिए होता है। स्टॉप लॉस ऑर्डर लगाने का अर्थ यह होता है कि यदि ट्रेड आपके खिलाफ गया तो ऐसे वक्त ट्रेडिंग में होने वाले नुकसान को मर्यादित करना।

सेल स्टॉप लॉस ऑर्डर यह एक ऐसा ऑर्डर है जो लॉंग पोजिशन में सुरक्षा प्रदान करता है। उसे वर्तमान बाज़ार भाव के नीचे सेट किया जाता है और यदि भाव घटकर उस स्तर पर आया तो वह ट्रिगर होता है।

बाय स्टॉप लॉस ऑर्डर यह एक ऐसा ऑर्डर है जो शॉर्ट पोजिशन में सुरक्षा प्रदान करता है। उसे वर्तमान बाज़ार भाव के ऊपर सेट किया जाता है और यदि भाव बढ़कर उस स्तर पर आया तो वह ट्रिगर होता है।

जब कोई भी व्यक्ति अपनी मेहनत की कमाई से सिक्योरिटीज़ में ट्रेडिंग करता है तब वह ऐसी आशा करता है कि उसे नुकसान न हो। इसलिए किसी भी ट्रेड को एक्जिक्युट करते ही तुरंत ट्रेडिंग सिस्टम में स्टॉप लॉस लगाना महत्वपूर्ण होता है।

स्टॉप लॉस का क्या महत्व है, यह समझाने के लिए मैंने नीचे दो महत्वपूर्ण सूत्र दिए है –

"शॉर्ट टर्म ट्रेडिंग हो या लॉंग टर्म इन्वेस्टमेन्ट, हमेशा स्टॉप लॉस निश्चित करें और उस पर अमल करें। एक बार स्टॉप लॉस ट्रिगर हुआ तो लॉस बुक करें और एक्झिट हो जाए। कभी भी ज्यादा आशावादी न बनें और नुकसान हो रहा हो तब भी पोजिशन को होल्ड करके न रखें।"

- अज्ञात

"आप सही है या गलत है यह मायने नहीं रखता, आप जब सही है तो कितने पैसे कमाते हो और आप जब गलत होते है तब कितने पैसे गवाँते है, यह मायने रखता है।"

- जार्ज सोरोस

स्टॉप लॉस ऑर्डर बड़े और अनियंत्रित नुकसान से बचाता है। खासकर जब मार्केट अथवा आप जिस सिक्योरिटी में ट्रेड करते है उसमें बहुत वोलैटिलिटी नज़र आती है तब स्टॉप लॉस ऑर्डर खास महत्वपूर्ण होता है।

मैंने ऐसे कई लोगों को देखा है जो कहते है कि हम तो स्टॉप लॉस अपने दिमाग में ही सेट करते है और जब ट्रेड हमारे खिलाफ जाता है तब हम लॉस बुक करते है। लेकिन मैं सभी को सुझाव देता हूँ कि कभी भी अपने दिमाग में स्टॉप लॉस को न रखें, उसे सिस्टम में सेट करें।

यदि आपने सिस्टम में स्टॉप लॉस नहीं लगाया और उसे सिर्फ दिमाग में ही रखा तो यह केवल कुछ समय की बात है जब एक बड़े नुकसान की स्थिति आपके नियंत्रण से बाहर हो जाती और आपका अधिकांश ट्रेडिंग प्रॉफिट धूल जाता है।

मैंने ऐसे भी लोग देखें है, जिन्होंने ट्रेडिंग में सही स्टॉप लॉस स्ट्रैटजी को लागू नहीं किया और उन पर घर और अन्य संपत्ति बेचने तक की बारी आई।

इसलिए, आप जब भी किसी ट्रेड को एक्झिक्युट करते है तभी अपने ट्रेडिंग सिस्टम में स्टॉप लॉस को सेट कर दे।

स्टॉप लॉस ऑर्डर का उपयोग करने का एक महत्वपूर्ण फायदा यह है कि आपको अपनी ट्रेडिंग पोजिशन को लगातार मॉनिटर करने की आवश्यकता नहीं होती।

कई लोग और खासकर नए ट्रेडर्स यह तय नहीं कर सकते कि स्टॉप लॉस कहाँ पर लगाए। इसलिए स्टॉप लॉस की गणना करने वाले कई सामान्य तरीकों के बारे में मैंने इस चैप्टर में समझाने का प्रयास किया है।

कई स्टॉप लॉस स्ट्रैटज़ी है, लेकिन अंत में ट्रेडर के जोखीम उठाने की व्यक्तिगत क्षमता और प्रत्येक ट्रेड में वह महत्तम कितनी रकम गवाँ सकते है, इस पर निर्भर करता है।

एन्ट्री लेवल के ज्यादा दूर स्टॉप लॉस सेट करने से बड़ा नुकसान हो सकता है और वैसे ही एन्ट्री लेवल के बहुत करीब स्टॉप लॉस सेट करने से बहुत जल्द स्टॉप लॉस हिट हो सकता है और आप जल्दी से ट्रेड से बाहर निकल सकते है।

इसलिए, सही भाव पर स्टॉप लॉस सेट करना बहुत महत्वपूर्ण होता है और ट्रेड आपके खिलाफ जाता हो तो एक्झिट करने में ही होशियारी है।

ट्रेडिंग में सफल होने के लिए, प्रत्येक ट्रेडर को एक ट्रेडिंग प्लान स्थापित करना अनिवार्य है और स्टॉप लॉस निश्चित करना यह किसी भी ट्रेडिंग प्लान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

ट्रेडिंग प्लान आपको यह जानने में मदद करता है कि मुनाफा कब बुक करना है और यदि आपकी योजना के अनुसार ट्रेड नहीं हुआ तो नुकसान कब बुक करना है।

यह एक हकिकत है कि ९५ प्रतिशत लोग ट्रेडिंग में पैसे गवाँते है और उसका सिर्फ एक ही कारण है कि वह उचित ट्रेडिंग प्लान नहीं बनाते और गैर-जिम्मेदाराना तरीके से ट्रेडिंग करते है और एन्टर या एक्झिट कब होना है यह उन्हें पता नहीं होता।

आगे मैंने कुछ लोकप्रिय स्टॉप लॉस स्ट्रैटजीज़ को समझाया है। हमेशा याद रखें, कोई भी स्ट्रैटजी सही या गलत नहीं होती। आप जो भी स्ट्रैटजी पसंद करते है, वह आपके ट्रेडिंग स्टाईल, जोखीम उठाने की क्षमता और आप प्रत्येक ट्रेड में महत्तम कितने रूपए गवाँने को तैयार हो, उस पर निर्भर करती है।

आपके लिए कौन सी स्ट्रैटजी सही है और कौन सी स्ट्रैटजी सही नहीं, यह केवल एक निश्चित समय के लिए प्रत्येक स्ट्रैटजी को आजमाने के बाद ही पता चल सकता है।

दुसरे लोक जिस स्ट्रैटजी से कमाई कर रहे है, वह स्ट्रैटजी आपको भी कमाई करके देगी, ऐसा कभी भी न सोचें।

स्टॉप लॉस स्ट्रैटजी के प्रकार :

१. पर्सन्टेज पर आधारित स्टॉप लॉस
२. मूविंग एवरेज पर आधारित स्टॉप लॉस
३. सपोर्ट या रेजिस्टन्स पर आधारित स्टॉप लॉस
४. पैटर्न पर आधारित स्टॉप लॉस

पर्सन्टेज पर आधारित स्टॉप लॉस -

इस तरीके में स्टॉप लॉस की गणना आपके ट्रेड के एन्ट्री प्राइस के निश्चित 'X' प्रतिशत नीचे (लाँग पोजिशन के लिए) या उसके ऊपर (शॉर्ट पोजिशन के लिए) के रूप में की जाती है। आप ट्रेड पर महत्तम कितना नुकसान लेने के लिए तैयार हो, उस पर यह निर्भर करता है। मैंने कुछ उदाहरणों द्वारा इस बात को समझाने का प्रयास किया है।

मान लीजिए कि आप किसी कंपनी के शेअर्स रू.१०० के भाव से खरीदते है (लाँग पोजिशन) और आप उसमें पाँच प्रतिशत तक जोखीम उठाने को तैयार है। तो इस मामले में आपको सिस्टम में रू.९५ का स्टॉप लॉस ऑर्डर लगाना होगा। यदि शेअर्स का भाव रू.९५ हुआ तो आपकी पोजिशन स्क्वेअर ऑफ हो जाएगी और परिणाम स्वरूप आपको प्रति शेअर रू.५ का नुकसान होगा (रू.१०० का ५ प्रतिशत)।

वैसे ही मान लीजिए कि आप किसी कंपनी का फ्यूचर कॉन्ट्रॅक्ट रू.५०० के भाव से बेचते है (शॉर्ट पोजिशन) और आप उसमें पाँच प्रतिशत तक जोखीम उठाने को तैयार है। तो इस मामले में आपको सिस्टम में रू.५२५ का स्टॉप लॉस ऑर्डर लगाना होगा। यदि शेअर्स का भाव रू.५२५ हुआ तो आपकी पोजिशन स्क्वेअर ऑफ हो जाएगी और परिणाम स्वरूप आपको प्रति शेअर रू.२५ का नुकसान होगा (रू.५०० का ५ प्रतिशत)।

स्टॉप लॉस लगाने की यह सबसे सरल स्ट्रैटजी है। लेकिन यह कोई वैज्ञानिक तरीका नहीं है और इसलिए यह सिर्फ नए ट्रेडर के लिए ही उपयुक्त है।

मूविंग एवरेज पर आधारित स्टॉप लॉस –

इस तरीके में स्टॉप लॉस को मूविंग एवरेज के नीचे लगाया जाता है, जो ट्रेड एन्ट्री प्राइस के नीचे होता है (लाँग पोजिशन के लिए) अथवा मूविंग एवरेज के ऊपर लगाया जाता है, जो ट्रेड एन्ट्री प्राइस के ऊपर होता है (शॉर्ट पोजिशन के लिए)।

अब मूविंग एवरेज के पीरियड का चयन आपके ट्रेडिंग पर निर्भर करता है, यानी के आपने इन्ट्राडे, स्विंग, पोजिशनल या शॉर्ट टर्म ट्रेड लिया है। प्रसिद्ध मूविंग एवरेज १०, २०, ५०, २०० दिनों की होती है और उन्हें चार्ट पर लगाकर स्टॉप लॉस को पूर्वनिर्धारित किया जा सकता है।

मैंने कुछ उदाहरणों द्वारा इस बात को समझाने का प्रयास किया है।

मान लीजिए कि आप किसी कंपनी के शेअर्स रू.१०० के भाव से शॉर्ट टर्म स्विंग ट्रेडिंग के लिए खरीदते है (लाँग पोजिशन) जिनकी ५० दिनों की मूविंग एवरेज रू.९६ पर है। तो इस मामले में आपको सिस्टम में रू.९६ से थोड़े कम भाव पर स्टॉप लॉस ऑर्डर लगाना होगा।

वैसे ही मान लीजिए कि आप इन्ट्राडे ट्रेडिंग के लिए शॉर्ट पोजिशन लेते है और किसी कंपनी के शेअर्स रू.२०० के भाव से बेचते है जिनकी २० दिनों की मूविंग एवरेज रू.२०५ पर है। तो इस मामले में आपको सिस्टम में रू.२०५ से थोड़े ऊपर के भाव पर स्टॉप लॉस ऑर्डर लगाना होगा।

सपोर्ट या रेजिस्टन्स पर आधारित स्टॉप लॉस –

अनुभवी ट्रेडर्स स्टॉप लॉस लगाने के लिए अक्सर इस तरीके का उपयोग करते है। यह तरीका अधिक सटीक और विश्वसनीय है।

इस तरीके में लाँग पोजिशन के लिए सपोर्ट लेवल के नीचे स्टॉप लॉस लगाया जाता है और शॉर्ट पोजिशन के लिए रेजिस्टन्स लेवल के ऊपर लगाया जाता है।

पहले दिखाए तरीकों की तुलना में यह थोड़ा मुश्किल तरीका है क्योंकि इस तरीके में आपको चार्ट का अभ्यास करना पड़ता है और महत्वपूर्ण सपोर्ट या रेजिस्टन्स लेवल को ढूँढना पड़ता है।

चार्ट पर सपोर्ट और रेजिस्टन्स लेवल्स को किस प्रकार प्लॉट किया जाता है, इसकी जानकारी पुस्तक में पहले दी है।

इस बात को मैंने कुछ उदाहरणों द्वारा समझाने का प्रयास किया है।

मान लीजिए कि आप किसी कंपनी के शेअर्स रू.५० के भाव से शॉर्ट टर्म के लिए खरीदते है (लाँग पोजिशन), जिसका चार्ट रू.४५ पर मजबूत सपोर्ट दर्शाता है। तो इस मामले में आपको सिस्टम में रू.४५ से थोड़े कम भाव पर स्टॉप लॉस ऑर्डर लगाना होगा।

वैसे ही मान लीजिए कि आप किसी कंपनी का फ्यूचर कॉन्ट्रॅक्ट प्रति शेअर रू.२५० के भाव से बेचते है (शॉर्ट पोजिशन), जिसका चार्ट रू.२६० पर मजबूत रेजिस्टन्स दर्शाता है। तो इस मामले में आपको सिस्टम में रू.२६० के थोड़े ऊपर स्टॉप लॉस ऑर्डर लगाना होगा।

पैटर्न पर आधारित स्टॉप लॉस –

स्टॉप लॉस लगाने के लिए इस स्ट्रैटजी का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और विभिन्न चार्ट पैटर्न्स या कैन्डलस्टिक पैटर्न्स पर से मिले ट्रेडिंग सिग्नल के आधार पर सिक्योरिटीज़ में ट्रेड करने वाले ट्रेडर्स इसका उपयोग करते है।

इस स्ट्रैटजी में, स्टॉप लॉस पूरी तरह से चार्ट पैटर्न या कैन्डलस्टिक पैटर्न पर निर्भर करता है, जिसके आधार पर ट्रेड पोजिशन ली गई थी।

उदाहरण के तौर पर, मान लीजिए कि आपने किसी स्टॉक के चार्ट में कप एन्ड हैन्डल पैटर्न को देखा और उसके आधार पर आपने लाँग पोजिशन ली, तो आपको पैटर्न के हैन्डल के हाल ही के स्विंग लो के नीचे स्टॉप लॉस को लगाना होगा। अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में यह दर्शाया है।

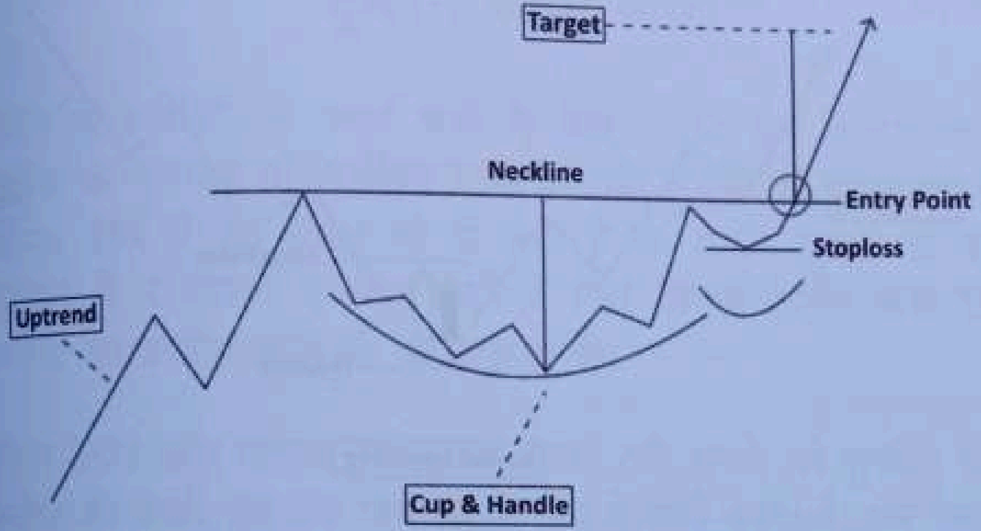

वैसे ही मान लीजिए कि आपने किसी स्टॉक के चार्ट में हेड एन्ड शोल्डर पैटर्न को देखा और उसके आधार पर आपने शॉर्ट पोजिशन ली, तो आपको राईट शोल्डर के एज के बिल्कुल ऊपर स्टॉप लॉस को लगाना होगा। नीचे दिए गए चार्ट में यह दर्शाया है।

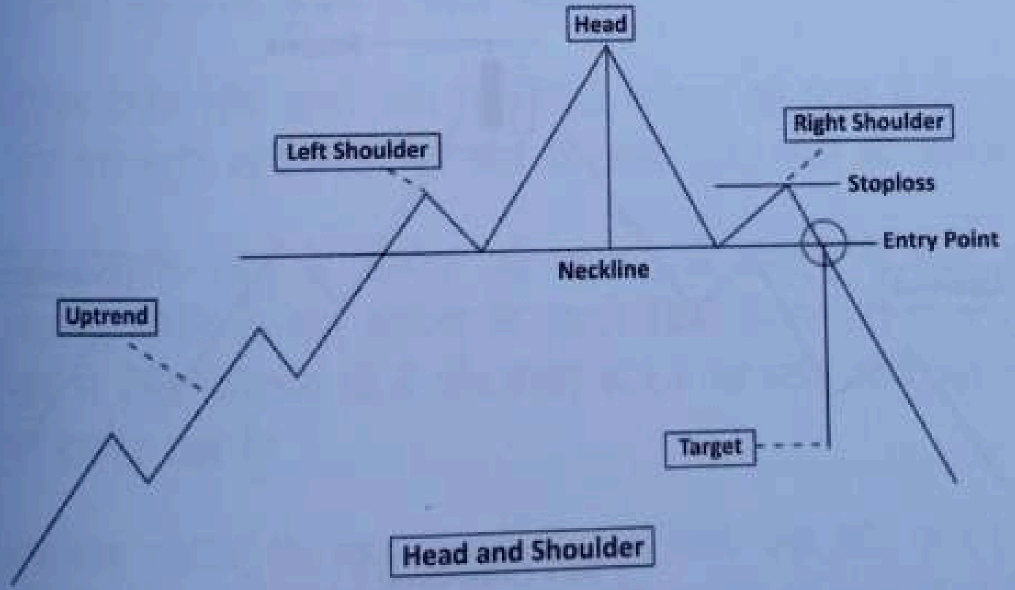

यदि आपको किसी स्टॉक के चार्ट में बुलिश एन्गल्फिंग पैटर्न जैसा कैन्डलस्टिक पैटर्न दिखाई दिया और उसके आधार पर आपने लॉंग पोजिशन ली, तो आपको बुलिश एन्गल्फिंग कैन्डलस्टिक पैटर्न के नीचले स्तर से नीचे स्टॉप लॉस को लगाना होगा। अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में इस स्थिति को दर्शाया है।

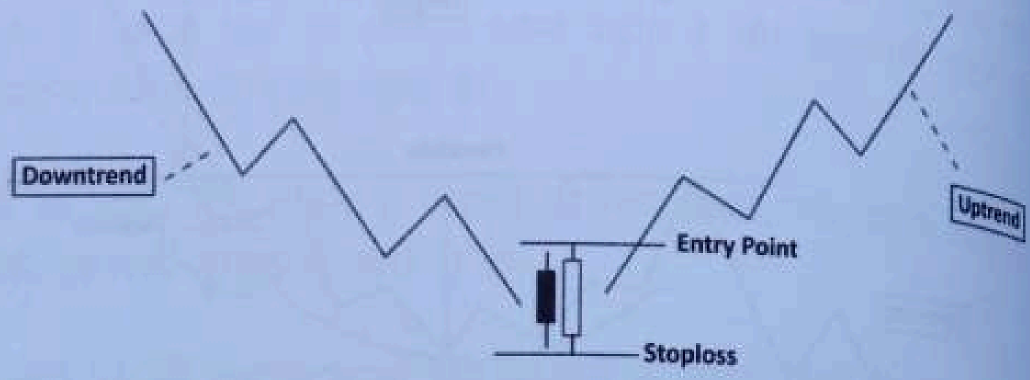

Bullish Engulfing

वैसे ही यदि आपको किसी स्टॉक के चार्ट में डार्क क्लाऊड कवर जैसा कैन्डलस्टिक पैटर्न दिखाई दिया और उसके आधार पर आपने शॉर्ट पोजिशन ली, तो आपको डार्क क्लाऊड कवर कैन्डलस्टिक पैटर्न के टॉप के ऊपर स्टॉप लॉस को लगाना होगा। नीचे दिए गए चार्ट में इस स्थिति को दर्शाया है।

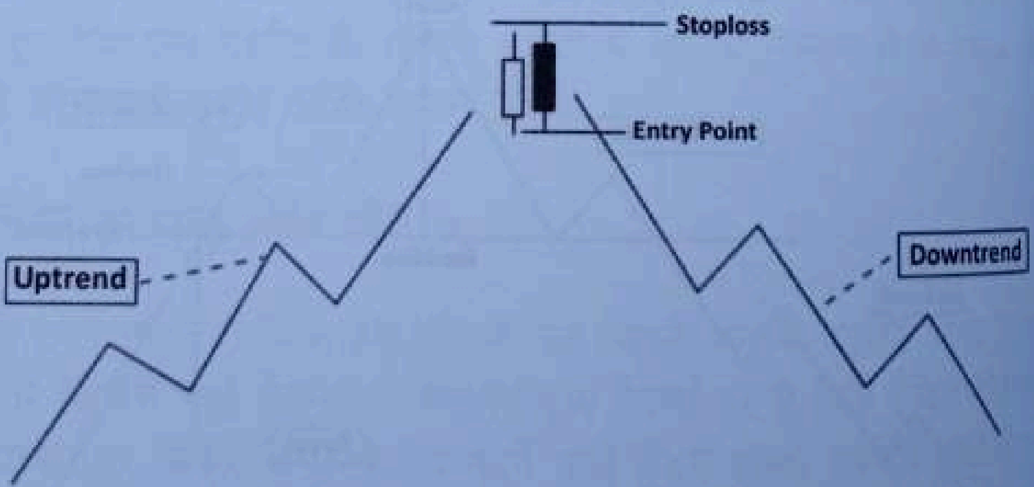

Dark Cloud Cover

बॉटम लाइन :

किसी भी सिक्योरिटी में स्टॉप लॉस के तरीके को निश्चित किए बिना कभी भी ट्रेड न करें क्योंकि यदि आपने सिस्टम में स्टॉप लॉस को नहीं लगाया और यदि ट्रेड आपके सोच के खिलाफ गया तो आपकी पूरी पूँजी धूल सकती है।

ट्रेलिंग स्टॉप लॉस

ट्रेडिंग या इन्वेस्टिंग में कमाई करने के लिए अक्सर ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति को नुकसान को मर्यादित करने को और मुनाफे को बढ़ाने को सिखना चाहिए। साथ ही यह सलाह भी दी जाती है कि आपके मुनाफे को कभी भी नुकसान में न बदलने दें। ऐसा करने के लिए आपको ट्रेलिंग स्टॉप लॉस के कन्सेप्ट का उपयोग करने की आवश्यकता है।

ट्रेलिंग स्टॉप लॉस आपके नुकसान को घटाने और मुनाफे को सुरक्षित करने का कन्सेप्ट है। उसमें जब तक भाव आपके हित में आगे बढ़ता है, तब तक ट्रेडिंग पोजिशन को ओपन रखा जाता है।

जैसे कि ऊपर उल्लेख किया है, ट्रेलिंग स्टॉप लॉस दो उद्देश्यों को पूरा करता है। सबसे पहले, वह पूँजी के नुकसान से रक्षण करता है। दुसरा, वह आपके मुनाफे को भी सुरक्षित करता है, जिससे आपका नोशनल प्रॉफिट (काल्पनिक मुनाफा) वास्तविक मुनाफे में बदल जाता है।

ट्रेलिंग स्टॉप लॉस अपने आप सिक्योरिटी के भाव की दिशा में ट्रेल करता है और उसे स्टॉप लॉस ऑर्डर की तरह मॅन्युअली रीसेट करने की जरूरत नहीं।

ट्रेलिंग स्टॉप लॉस के कन्सेप्ट को आसानी से समझने के लिए हम एक उदाहरण देखते है। मान लीजिए कि आपने किसी सिक्योरिटी में रू.१०० के भाव से लाँग पोजिशन ली है और उसमें रू.९० का स्टॉप लॉस और रू.१३० का टारगेट रखा है।

अब मान लीजिए कि भाव आपकी दिशा में आगे बढ़ा और रू.११० हुआ। ऐसे में आप अपने स्टॉप लॉस को रू.९० से बढ़ाकर रू.१०० करते है।

मान लीजिए कि भाव और भी आगे बढ़ा और रू.१३० हुआ। ऐसे में आप अपने स्टॉप लॉस को रू.१०० से बढ़ाकर रू.१२० करते है। आपने ट्रेड की शुरूआत में रू.१३० का टारगेट निश्चित किया था, लेकिन अब भाव उस स्तर पर पहुँच गया फिर भी आप मुनाफा बुक नहीं करते, लेकिन अपना ट्रेलिंग स्टॉप लॉस बढ़ाते जाते है।

अब मान लीजिए कि भाव रू.१५० हुआ। अब आपका ट्रेलिंग स्टॉप लॉस रू.१४० हो जाता है। इस प्रकार से आप अपना ट्रेलिंग स्टॉप लॉस बढ़ाते जाते है और जब भी करेक्शन आता है और भाव आपके ट्रेलिंग स्टॉप लॉस को हिट करता है तभी आप अपनी पोजिशन एक्झिट करते है।

सरल शब्दों में कहें तो, लाँग पोजिशन के मामले में, ट्रेलिंग स्टॉप लॉस वर्तमान बाज़ार भाव से नीचे लगाया जाता है और भाव जैसे-जैसे बढ़ता है, वैसे-वैसे ट्रेलिंग स्टॉप लॉस भी बढ़ते जाता है।

नीचे दिए गए चार्ट में यही कन्सेप्ट उदाहरण के द्वारा समझाने का प्रयास किया है।

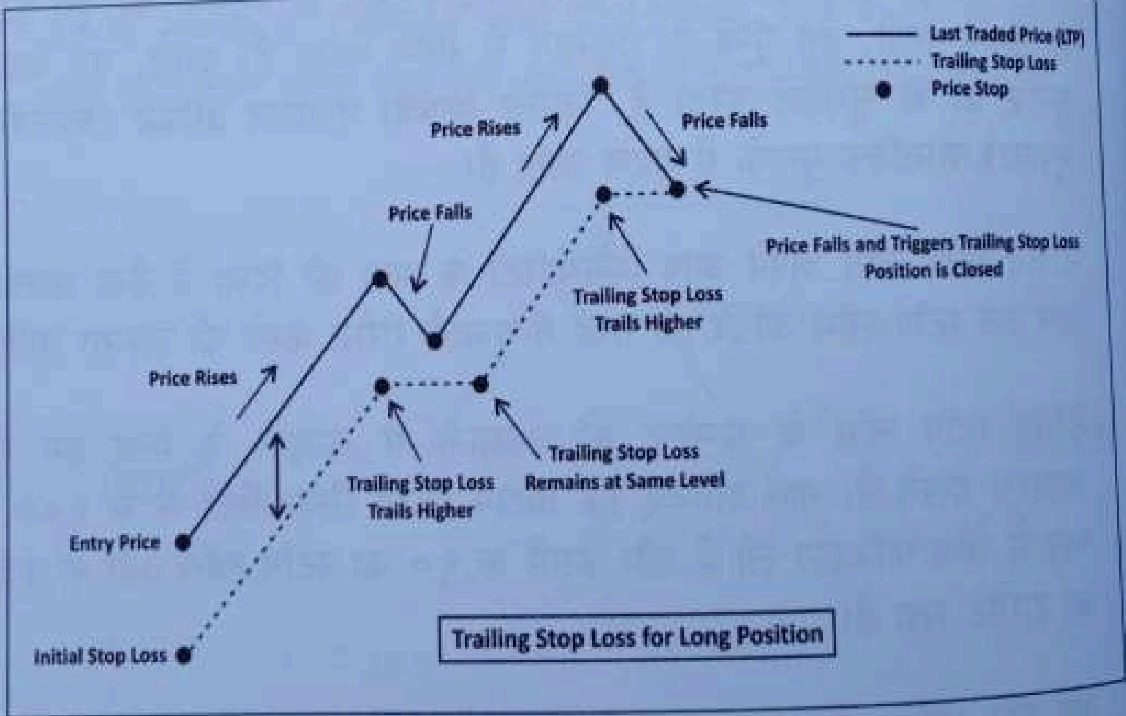

अब मान लीजिए कि आपने किसी सिक्योरिटी में रू.५०० के भाव से शॉर्ट पोजिशन ली है और उसमें रू.५२० का स्टॉप लॉस और रू.४२५ का टारगेट रखा है।

मान लीजिए कि भाव आपकी दिशा में घटा और रू.४८० हुआ। ऐसे में आप अपने स्टॉप लॉस को रू.५२० से घटाकर रू.५०० करते है।

मान लीजिए कि भाव और ज्यादा घटकर रू.४५० हुआ। ऐसे में आप अपना स्टॉप लॉस को रू.५०० से घटाकर रू.४७० करते है। आपने ट्रेड की शुरूआत में रू.४२५ का टारगेट निश्चित किया था, लेकिन अब भाव उस स्तर पर पहुँच गया फिर भी आप मुनाफा बुक नहीं करते, लेकिन अपना ट्रेलिंग स्टॉप लॉस घटाते जाते है।

अब मान लीजिए कि भाव घटकर रू.३८० हुआ। अब आपका ट्रेलिंग स्टॉप लॉस रू.४०० हो जाता है। इस प्रकार से आप अपने ट्रेलिंग स्टॉप लॉस को घटाते जाते है और जब भी पुलबैक रैली आती है और भाव आपके ट्रेलिंग स्टॉप लॉस को हिट करता है तभी आप अपनी पोजिशन एक्झिट करते है।

सरल शब्दों में कहें तो, शॉर्ट पोजिशन के मामले में, ट्रेलिंग स्टॉप लॉस वर्तमान बाज़ार भाव से ऊपर लगाया जाता है और भाव जैसे-जैसे घटता है वैसे-वैसे ट्रेलिंग स्टॉप लॉस भी घटते जाता है।

नीचे गए दिए चार्ट में इस कन्सेप्ट को उदाहरण द्वारा समझाने का प्रयास किया है।

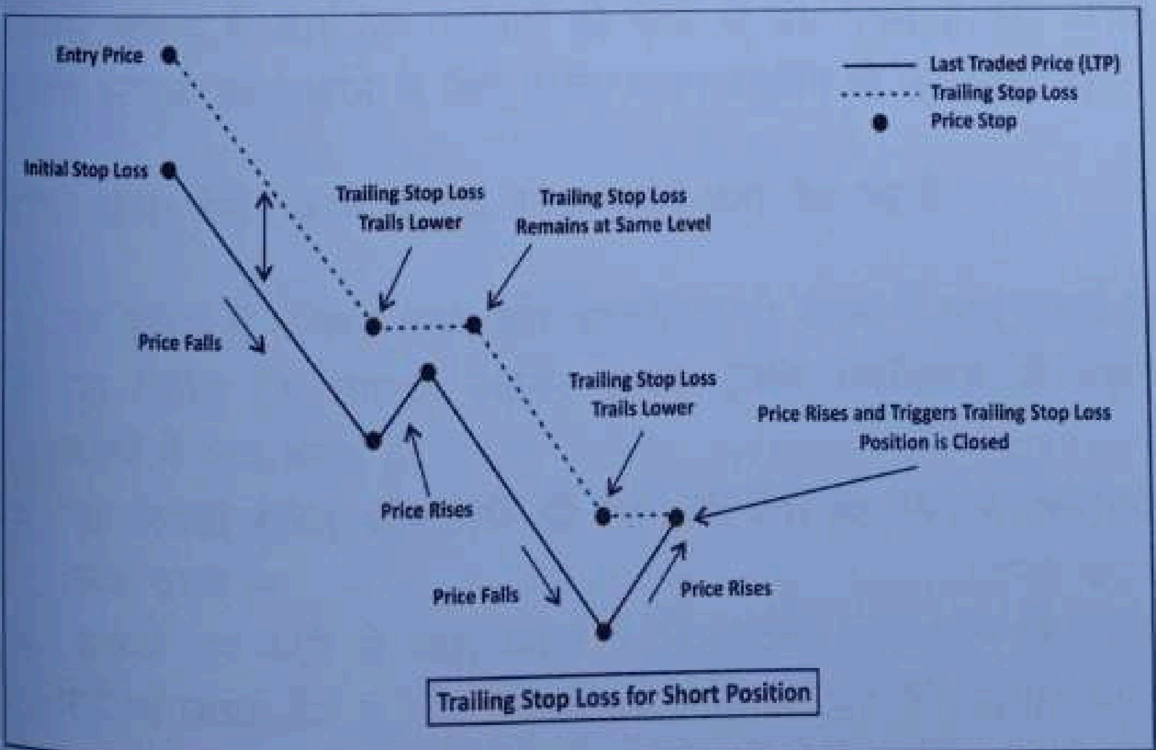

Trailing Stop Loss for Short Position

सैद्धांतिक रूप से इनिशियल स्टॉप लॉस के समान, ट्रेलिंग स्टॉप लॉस को भी कई स्ट्रैटजीज़ का उपयोग करके लगाया जा सकता है। लेकिन वास्तविक रूप से आपके ब्रोकर के ट्रेडिंग सिस्टम में ट्रेलिंग स्टॉप लॉस लगाने के लिए आपके पास दो ही विकल्प होते है - प्रतिशतता के रूप में ट्रेल करें या एब्सोल्यूट वॅल्यू (रूपए) के रूप में ट्रेल करें।

ट्रेडिंग जर्नल

ट्रेडिंग जर्नल ट्रेडिंग परफॉरमन्स मैनेजमेन्ट के लिए सबसे प्रभावी टूल है। यह ट्रेडर को निरंतर अच्छा प्रदर्शन करने और मुनाफा कमाने में मदद करता है।

ट्रेडिंग जर्नल आपकी 'डायरी' की तरह है, जिसमें आप अपने सभी ट्रेडिंग एक्टिविटीज़ का रेकॉर्ड रखते है। एक विस्तृत जर्नल मेन्टेन करने से ट्रेड रिझल्ट्स का एनालिसिस करने में आसानी होती है और कौन से ट्रेड ने कैसे काम किया और कौन से ट्रेड में कितना नुकसान हुआ, इसका अंदाजा भी तुरंत मिलता है।

आपके जर्नल में आपने ट्रेड किए सिक्योरिटीज़, एन्ट्री लेवल, स्टॉप लॉस और टारगेट, पोजिशन साइज, रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ, आप ट्रेड में सफल हुए या नहीं, मार्केट की स्थिति ट्रेड के समय कैसी थी, आदि डेटा का समावेश कर सकते है। इसके अलावा, आप अपनी भावनात्मक बातों का उल्लेख भी उसमें कर सकते है।

ट्रेडिंग जर्नल आपको ट्रेडिंग में की गई गलतियों को ढूँढने में मदद करता है, जिससे भविष्य में आप उन गलतियों को करने से बच सकते है और अपनी ट्रेडिंग स्ट्रैटजी को सुधारने के लिए उसका फाइन-टयुनिंग भी कर सकते है।

ट्रेडिंग जर्नल मेन्टेन करने के कुछ प्रमुख फायदें नीचे दिए गए है –

१. यह ट्रेडिंग में आपकी ताकत और कमजोरियों को जानने में मदद करता है।
२. यह विनिंग ट्रेड लगातार बढ़ाकर आपके ट्रेडिंग परफॉरमन्स को बेहतर बनाने में मदद करता है।
३. यह आपकी ट्रेडिंग एक्टिविटी की जिम्मेदारी निश्चित करने के लिए वह मदद करता है।
४. आपको तय करने में मदद करता है कि आपके लिए कौन सी ट्रेडिंग स्ट्रैटजी अच्छी है।
५. यह आपको एक ही गलती को बार बार दोहराने से रोकता है।

ट्रेडिंग जर्नल में नोट करने लायक प्रमुख बातें :

आपके ट्रेडिंग जर्नल में जो प्रमुख बातें होनी चाहिए, उन्हें नीचे दर्शाया गया है। आपको इन सभी बातों का समावेश करना है, ऐसा जरूरी नहीं।

आप अपने ट्रेडिंग स्टाईल के अनुसार अपना ट्रेडिंग जर्नल तैयार कर सकते है।

- **तारीख और समय -** जर्नल में प्रत्येक एन्ट्री की तारीख और समय को खास लिखना चाहिए, जिससे आपने कौन से ट्रेड में कब पोजिशन ली थी, यह पता चल सकें।

- **ट्रेडेड इन्स्ट्रूमेन्ट -** आपने किस फाइनान्शियल इन्स्ट्रूमेन्ट में ट्रेड किया है, उसकी जानकारी यहाँ पर देनी है। जैसे कि स्टॉक, करन्सी, कमोडिटी, इन्डेक्स, डेरिवेटिव कॉन्ट्रॅक्ट आदि।

- **ट्रेड की दिशा -** यहाँ पर आप ट्रेड की दिशा को दर्शाते है, अर्थात आपने किसी ट्रेड में लाँग पोजिशन ली है या शॉर्ट पोजिशन ली है, उसे दर्शाता है।

- **प्राइस पॉइन्ट -** प्राइस पॉइन्ट में तीन अलग अलग फिल्ड को दर्शाया जा सकता है - एन्ट्री प्राइस, स्टॉप लॉस और एक्झिट प्राइस।

- **पोजिशन साइज -** यहाँ पर आप अपने ट्रेड की पोजिशन साइज को दर्शाते है।

- **रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ -** यहाँ पर आप अपने ट्रेड का रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ दर्शाते है। यदि आप अपने ट्रेडिंग जर्नल के लिए एक्सेल स्प्रेडशीट का उपयोग करते हो तो उसमें आप प्राइस पॉइन्ट एन्टर करते हो तो अपनेआप रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ की गणना हो सकती है। यह डेटा आपको बाद में एनालिसिस करने में मदद करता है कि क्या आपने घाटे वाले ट्रेड में बहुत अधिक जोखीम उठाया था या मुनाफे वाले ट्रेड में बहुत काम जोखीम उठाया था।

- **ट्रेड रिझल्ट** - यहाँ पर आप दर्शाते है कि पोजिशन स्क्वेअर-ऑफ करने के बाद आपको कितना मुनाफा या नुकसान हुआ।

- **चार्ट** - कुछ प्रोफेशनल ट्रेडर्स या जो ट्रेडिंग जर्नल मेन्टेन करने के लिए एक्सेल या अन्य इलेक्ट्रॉनिक इन्स्ट्रूमेन्ट का उपयोग करते है, वह प्रत्येक ट्रेड के लिए प्राइस चार्ट भी दर्शाते है। जब समय होता है तब वह इस चार्ट का अभ्यास करते है और अपने ट्रेड का एनालिसिस करते हैं।

- **एडिशनल नोट्स** - आप अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप, अपने ट्रेडिंग जर्नल में एडिशनल इन्फॉर्मेशन भी सामील कर सकते है, जैसे कि आपने कोई ट्रेड क्यों लिया, उस ट्रेड के समय मार्केट की स्थिति कैसी थी, कौन सी खबर का आपके ट्रेड पर परिणाम हुआ, आदि।

ट्रेडिंग जर्नल को तैयार करना –

ट्रेडिंग जर्नल को बनाना बहुत ही आसान है। इसे बनाने के दो विकल्प है – आप आपनी सभी ट्रेडिंग एक्टिविटी और उससे संबंधित जानकारी को एक फिजिकल डायरी में अपने हाथ से लिखें अथवा एक्सेल स्प्रेडशीट में ईलेक्ट्रॉनिक स्वरूप में डेटा मेन्टेन करें।

नीचे दिए चित्र में एक्सेल पर आधारित ट्रेडिंग जर्नल स्प्रेडशीट के एक नमुने को दर्शाया है।

	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K
1	Traded	Direction	Price Points			Position	Risk:Reward	Result	Chart	Additional Notes
2	Instrument	of Trade	Entry	SL	Target	Size	Ratio			
3										
4										
5										

इससे कोइ फर्क नहीं पड़ता है कि आप एक्सेल पर आधारित ट्रेडिंग जर्नल मेन्टेन करते हो या फिजिकल डायरी में हाथ से लिखकर मेन्टेन करते है। महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपने प्रत्येक ट्रेड की जानकारी को अपने जर्नल में सामील करें और वह भी प्रतिदिन। यदि आप ढंग से अपने ट्रेडिंग जर्नल में आपके सभी रेकॉर्ड को नोट करने से चूक गए तो आपका ट्रेडिंग परफॉरमन्स कैसा था, यह आपको पता नहीं चलेगा।

कई लोग ट्रेडिंग जर्नल बनाना शुरू तो करते है, लेकिन कुछ दिनों के बाद वह जर्नल मेन्टेन करने की प्रक्रिया बंद करते है। यदि आप ट्रेडिंग में नए हो, तो शुरूआत में ट्रेडिंग जर्नल मेन्टेन करना उबाऊ और समय लेने वाला लगता है। लेकिन मेरा विश्वास कीजिए, अपने प्रत्येक ट्रेड को रेकॉर्ड करना आपको कन्सिस्टन्सी और डिसिप्लिन सिखाता है, जिससे दिर्घावधी में आपको ट्रेडिंग में अच्छा फायदा होगा।

हमेशा याद रखें कि, केवल ट्रेडिंग जर्नल मेन्टेन करना काफी नहीं। आपको अपनी गलतियों के बारे में जानने के लिए अपनी ट्रेडिंग गतिविधि की निगरानी करनी होगी जिसके लिए आपको अपने ट्रेडिंग जर्नल की लगातार समीक्षा करनी होगी। ऐसा करने से आप एक ही गलती को बार बार दोहराने से बच सकते है।

केस स्टडीज़

इस चैप्टर में, मैंने ४९ केस स्टडीज़ दी है जिसके द्वारा इस किताब में जिन सैद्धांतिक बातों को मैंने समझाया है, उन्हें वास्तविक उदाहरणों के साथ बेहतर ढंग से समझने में आपको मदद होगी। मैंने स्टॉक्स, इन्डाइसीस, कमोडिटीज़, क्रिप्टो-करन्सीज़, बुलियन आदि के उदाहरणों का उपयोग किया है।

अधिकांश उदाहरणों में मैंने ट्रेलिंग स्टॉप लॉस के कन्सेप्ट का उपयोग किया है और ट्रेड में एन्टर होते ही स्टॉप लॉस शुरू करने की रणनीति का उपयोग करने का सुझाव दिया है। मैं मानता हूँ कि नए ट्रेडर्स को सबसे पहले अपनी पूँजी को बचाने का ध्येय रखना चाहिए और सिखते वक्त कम जोखीम उठाना चाहिए। पेपर पर जो मुनाफा दिखता है, उसे वास्तव में बुक करने में सक्षम होना सीखना चाहिए।

वक्त गुजरते, जैसे ट्रेडर को अधिक अनुभव प्राप्त होता है, वैसे वह ट्रेलिंग स्टॉप लॉस लगाने के अन्य तरीकों को अपना सकता है, जैसे कि मूविंग एवरेज, क्लोजिंग प्राइस (बंद भाव) के आधार पर ट्रेलिंग स्टॉप लॉस, सपोर्ट और रेजिस्टन्स पर आधारित स्टॉप लॉस, वोलेटाईल स्टॉक्स के लिए व्यापक स्टॉप लॉस, आदि।

इन केस स्टडीज़ के द्वारा मैंने रियल टाईम ट्रेडिंग के दौरान जिन विभिन्न स्थितियों से गुजरना पड़ता है, उनका अनुभव देने का प्रयास भी किया है।

केस स्टडी १ : अप ट्रेन्डिंग मार्केट में ट्रेडिंग (HH-HL स्ट्रक्चर)

अक्टूबर २०१५ से बजाज फाइनान्स का साप्ताहिक चार्ट अगले पन्ने पर दर्शाया है। उसमें भाव हायर हाई, हायर लो स्ट्रक्चर (HH-HL) बना रहा है।

स्टॉक रू.१२०० के आसपास हायर हाई लेवल से नीचे आकर रू.८०० के आसपास आया था। यहाँ पर बुलिश हरामी पैटर्न तैयार हुआ था, जिसमें वॉल्यूम उल्लेखनीय था, जो बुलिश ट्रेन्ड रिवर्सल दर्शाता है।

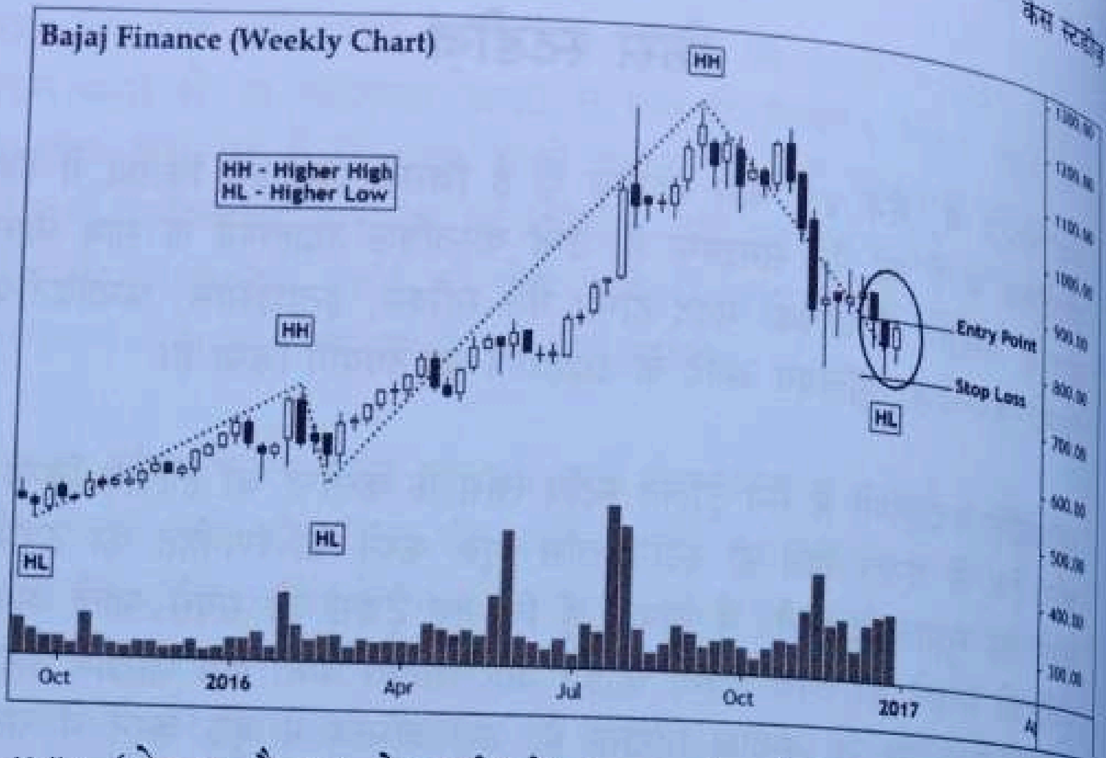

८४७ (सेकन्ड कैन्डल के हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ७५५ (सेकन्ड कैन्डल का लो) के नीचे लगाकर शुरूआती टारगेट १२०० के ऊपर अर्थात पिछले हायर हाई के स्तर से ऊपर रखा जाता है।

लाँग पोजिशन लेने के बाद, स्टॉक में तेजी शुरू हुई और भाव में अच्छी बढ़ोतरी हुई, जिसे नीचे दिए गए चार्ट में देखा जा सकता है।

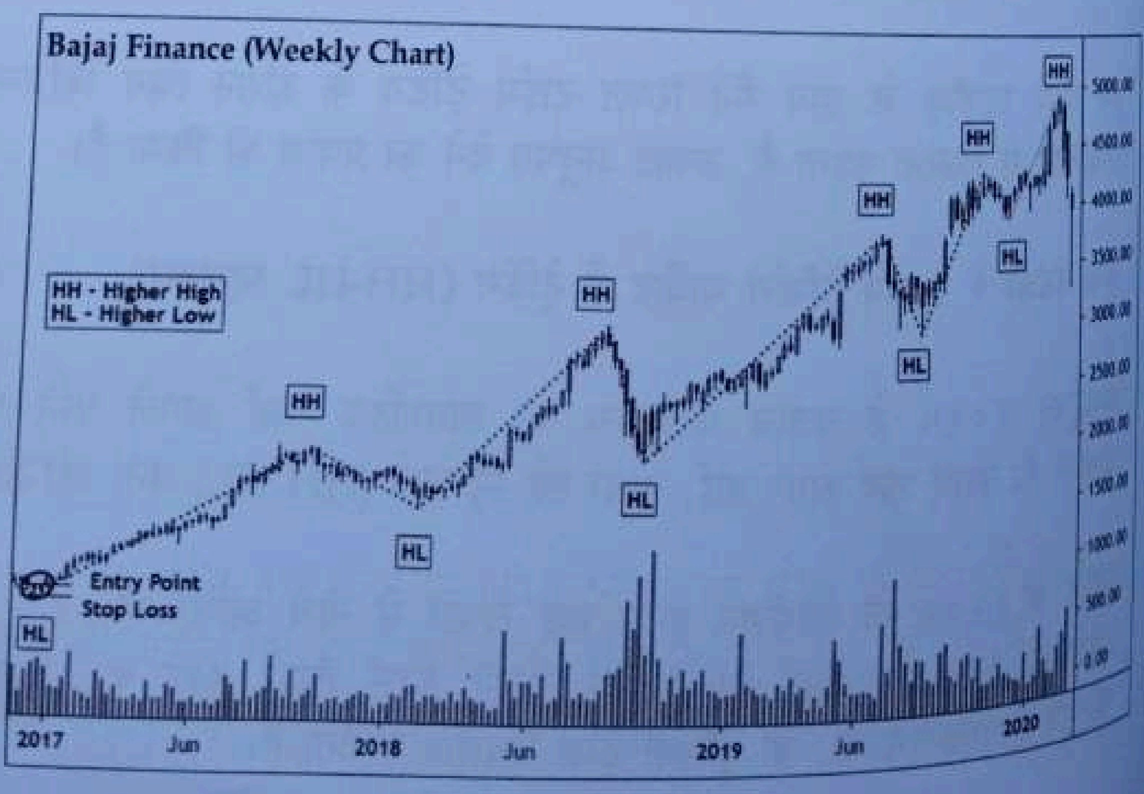

हमेशा याद रखें, आप HH&HL स्ट्रक्चर के आधार पर किसी भी सिक्योरिटी में खरीदी करते हो तब आपको अपना स्टॉप लॉस लगातार बढ़ाते रहना चाहिए और इस प्रक्रिया के दौरान यदि स्टॉक नया हायर हाई और हायर लो बनाता है तो आपको अपना स्टॉप लॉस पिछले स्विंग लो पर शिफ्ट करना चाहिए, जो चार्ट में हायर लो (HL) के रूप में दर्शाया है।

जब तक आपके नजदीक का स्विंग लो टुटता नहीं, तब तक आपको स्टॉक बेचना नहीं चाहिए और अपने स्टॉप लॉस को ऊपर की दिशा में ट्रेल करते रहना चाहिए और अपसाइड प्रॉफिट को लॉक करना चाहिए।

केस स्टडी २ : डाउन ट्रेन्डिंग मार्केट में ट्रेडिंग (LL-LH स्ट्रक्चर)

नीचे बीएसई लिमिटेड का दैनिक चार्ट दर्शाया है। शेअर्स का ३ फरवरी २०१७ को लिस्टिंग होने के बाद का यह चार्ट है। उसमें भाव लोअर लो, लोअर हाई स्ट्रक्चर (LL-LH) बना रहा है।

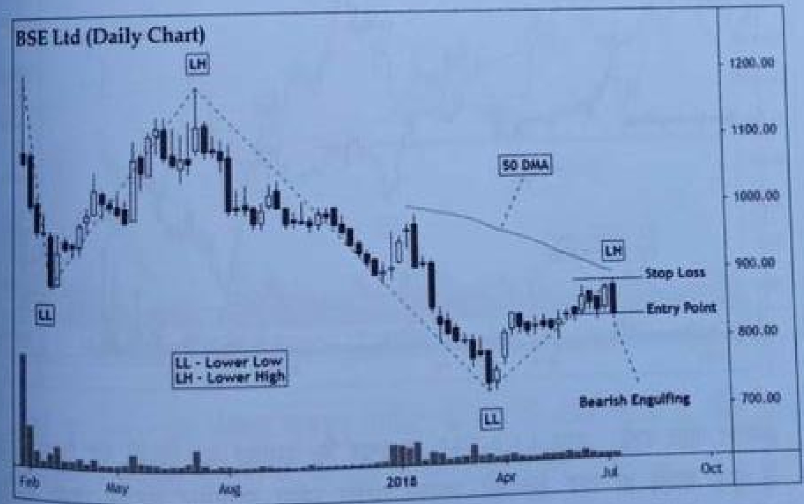

१२०० के भाव से स्टॉक का लिस्टिंग होने के बाद, वह मार्च २०१८ तक ७२६ के स्तर पर आ गया था और बाद में बाऊन्स बैक करके वह जुलाई २०१८ में ८८१ के स्तर पर पहुँच गया, जो LL&LH स्ट्रक्चर को दर्शाता है।

यहाँ पर बेअरीश एन्गल्फिंग पैटर्न तैयार हुआ था, जो बेअरीश ट्रेन्ड रिवर्सल का संकेत देता है। भाव भी ५० दिनों के मूविंग एवरेज के नीचे था, जिससे अधिक बेअरीश कन्फर्मेशन मिलता है।

८२६.७० (बेअरीश एन्गल्फिंग पैटर्न के लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ८८१ (बेअरीश एन्गल्फिंग के हाई) के ऊपर लगाकर शुरूआती टारगेट ७२६ के नीचे अर्थात पिछले लोअर लो के स्तर के नीचे रखा जाता है।

शॉर्ट पोजिशन लेने के बाद, शेअर्स का भाव उम्मीद के मुताबिक नीचे आने लगा और उसमें अच्छी गिरावट देखने को मिली। नीचे दिए गए चार्ट में यह दर्शाया है।

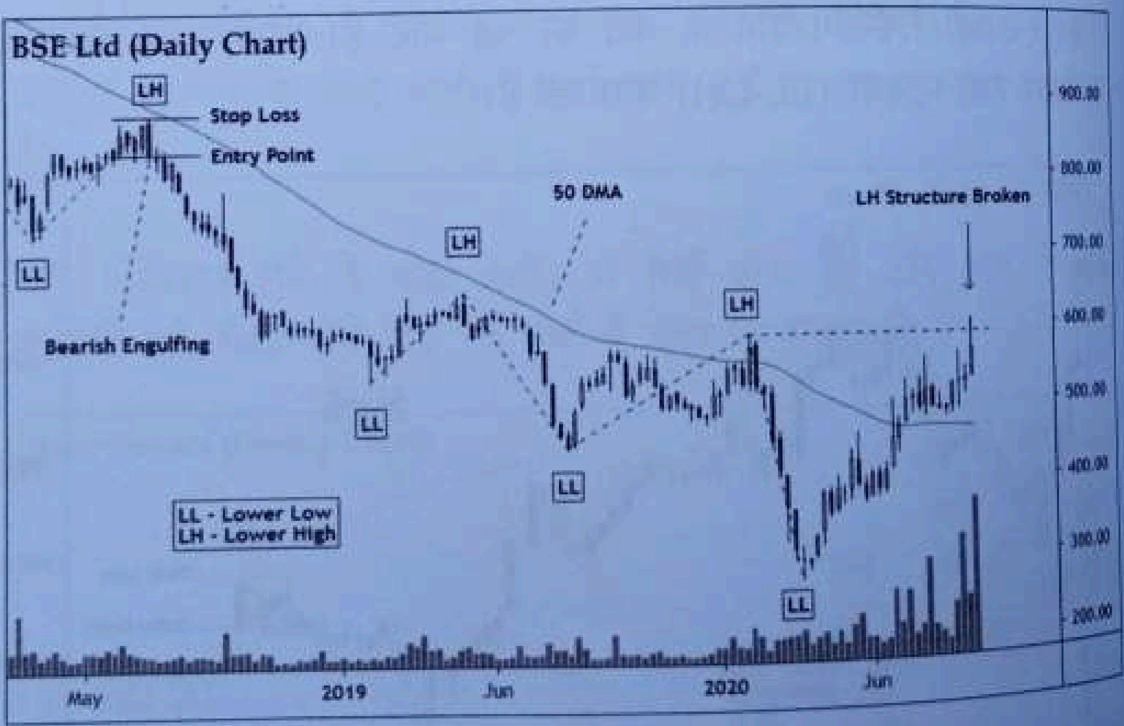

हमेशा याद रखें, आप LL&LH स्ट्रक्चर के आधार पर किसी भी सिक्योरिटी में ट्रेड करते हो तब आपको अपना स्टॉप लॉस लगातार घटाते रहना चाहिए और इस प्रक्रिया के दौरान यदि स्टॉक नया लोअर लो और लोअर हाई बनाता है तो आपको अपना स्टॉप लॉस पिछले स्विंग हाई पर शिफ्ट करना चाहिए, जो चार्ट में लोअर हाई (LH) के रूप में दर्शाया है।

जब तक आपके नजदीक का स्विंग हाई टुटता नहीं, तब तक आपको शॉर्ट पोजिशन में से बाहर नहीं निकलना चाहिए और अपने स्टॉप लॉस को नीचे की दिशा में ट्रेल करते रहना चाहिए और डाउनसाइड प्रॉफिट को लॉक करना चाहिए।

केस स्टडी ३ : साइडवे रेन्जिंग मार्केट में स्विंग ट्रेडिंग

जनवरी २०१० से स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का मासिक चार्ट नीचे दर्शाया है। उसमें भाव रेन्ज बाऊन्ड या साइडवे ट्रेन्ड को दर्शाता है। यह स्टॉक लगभग ८ सालों तक यानी २०१० से २०१८ के बीच १५० से ३५० के बीच अटका हुआ था।

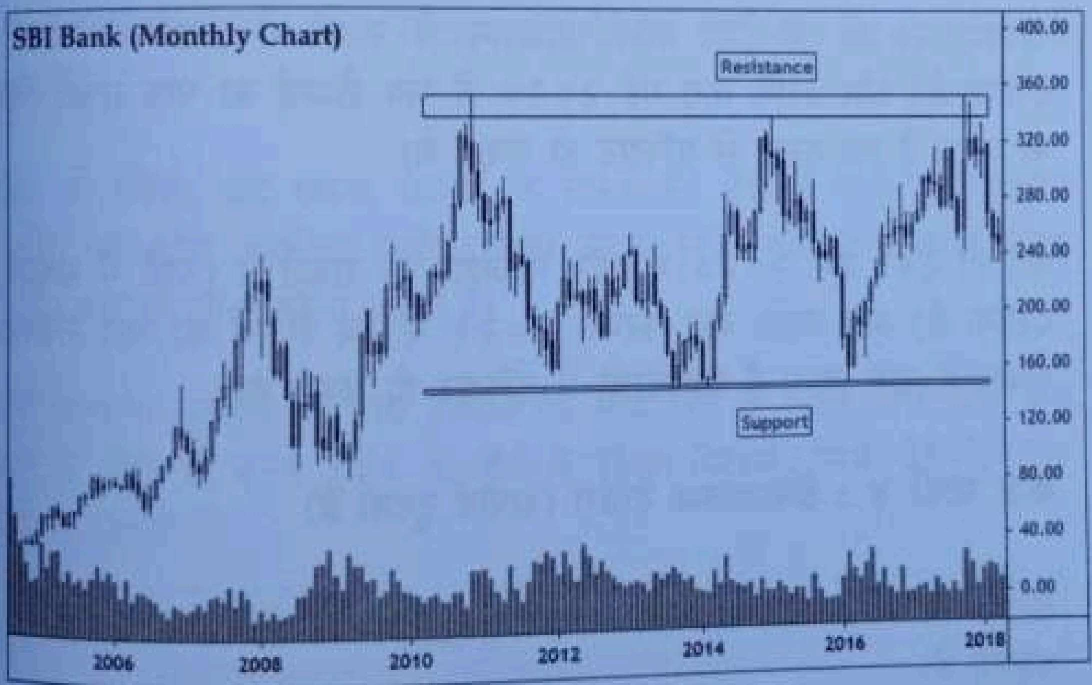

यहाँ पर १५० का लेवल मजबूत सपोर्ट के रूप में कार्य करता है और ३५० का लेवल मजबूत रेजिस्टन्स के रूप में कार्य करता है।

इस तरह के रेन्जबाऊन्ड मार्केट में जब शेअर्स का भाव सपोर्ट लेवल के पास आता है तब लाँग पोजिशन ली जा सकती है और जब स्टॉक का भाव रेजिस्टन्स के पास आता है तब शॉर्ट पोजिशन ली जा सकती है।

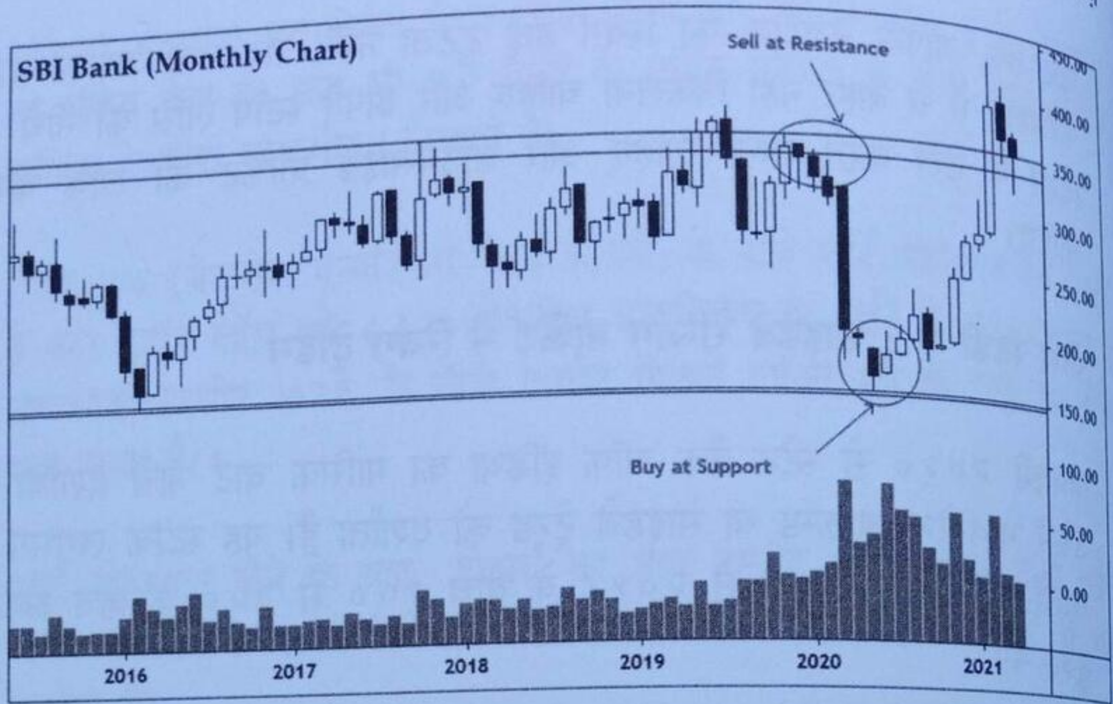

जनवरी २०२० में ट्रेडर शॉर्ट पोजिशन ले सकते थे (चार्ट में सर्कल से दर्शाया है) और उसके बाद मई २०२० में जब शेअर्स का भाव सपोर्ट लेवल पर आता है तब उसमें से एक्झिट हो सकते थे।

वैसे ही ट्रेडर जून २०२० में लाँग पोजिशन ले सकते थे (चार्ट में सर्कल से दर्शाया है) और उसके बाद फरवरी २०२१ में जब शेअर्स का भाव रेजिस्टन्स लेवल के पास आता है तब उसमें से एक्झिट हो सकते थे।

केस स्टडी ४ : ब्रेकआऊट ट्रेडिंग (सपोर्ट टुटता है)

अगले पन्ने पर अप्रैल २०१२ से बजाज कन्जुमर के शेअर्स का मासिक चार्ट दर्शाया है।

अगस्त २०१५ में ५०० के लेवल के आसपास टॉप बनाने के बाद भाव में करेक्शन आया और ३४०-३५५ के आसपास उसे अच्छा सपोर्ट मिला।

मार्च २०१९ में यह सपोर्ट टुट गया और भारी वॉल्यूम के साथ मजबूत बेअरीश कैन्डल तैयार हुई, जिससे यह ब्रेकआऊट ट्रेडिंग का श्रेष्ठ उदाहरण बन गया।

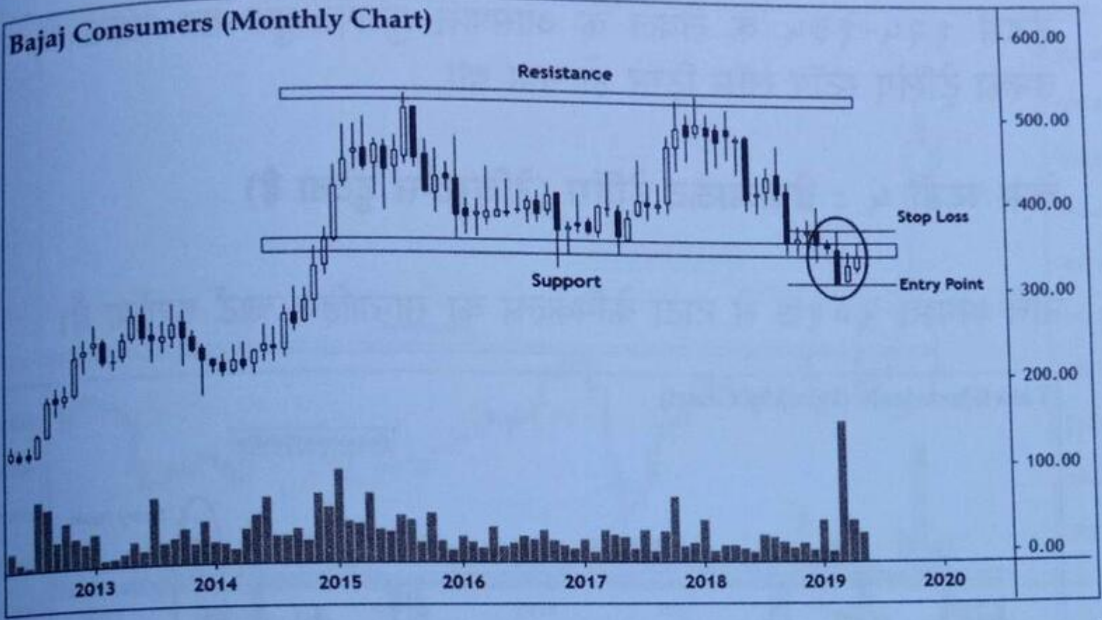

अब ३०९ (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ३७० (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

ट्रेडर को हमेशा याद रखना चाहिए कि ब्रेकआऊट ट्रेड में कभी भी निश्चित टारगेट नहीं होता, इसलिए उन्हें लगातार अपना स्टॉप लॉस ट्रेल करना पड़ता है और मुनाफा लॉक करना पड़ता है।

अब साधारण पुलबैक के बाद शेअर्स का भाव फिर से घटने लगा और एक साल के भीतर ही उसने ११६ के नीचे के लेवल दिखाएँ, जिसे नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है।

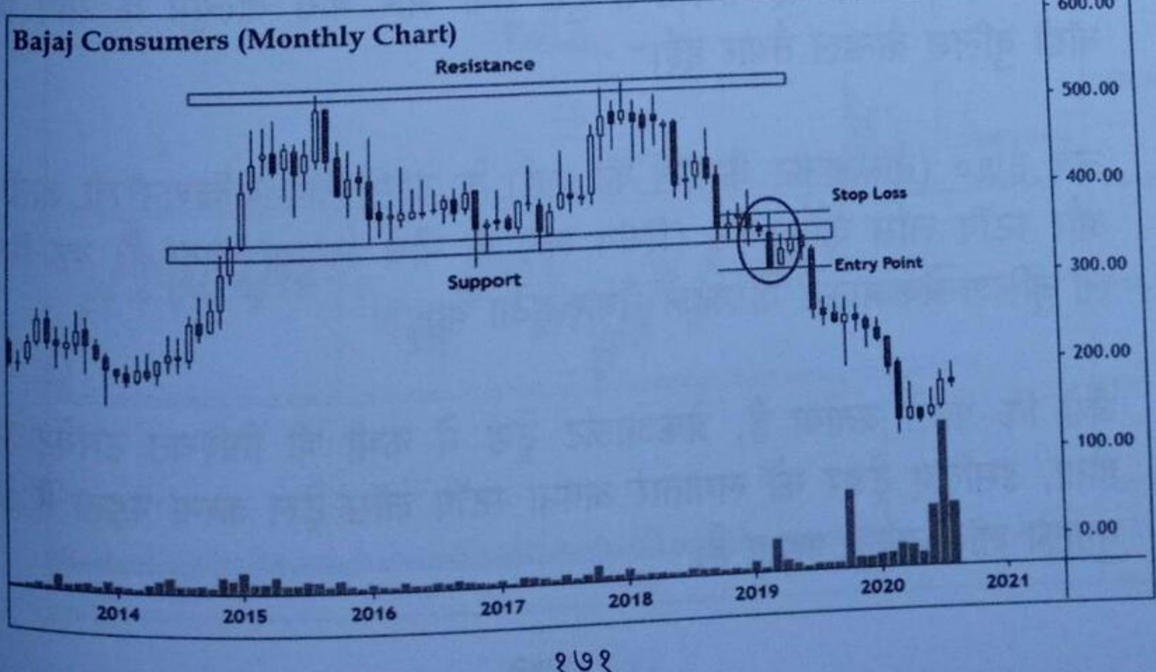

ट्रेडर्स १२५-१३५ के लेवल के आसपास मुनाफा बुक कर सकते थे, जब उनका ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ट्रिगर हो गया था।

केस स्टडी ५ : ब्रेकआऊट ट्रेडिंग (रेजिस्टन्स टुटता है)

नीचे अगस्त २०१७ से टाटा केमिकल्स का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है।

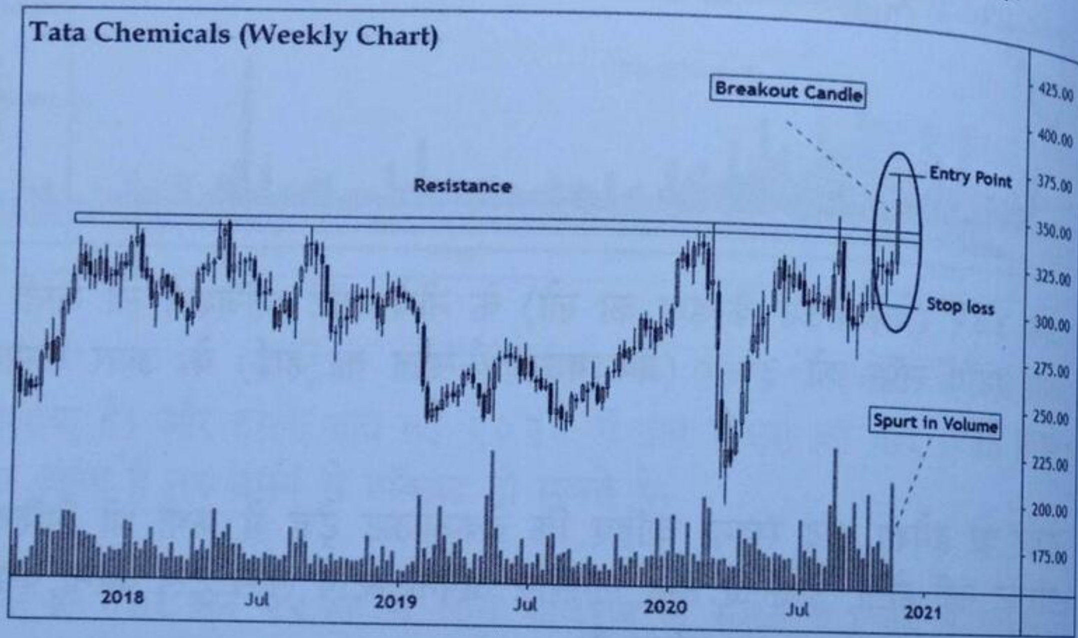

जनवरी २०१८ में ३३० के लेवल के आसपास टॉप बनाने के बाद शेअर्स का भाव बढ़ा ही नहीं। जनवरी २०१८ से अगस्त २०२० के बीच शेअर्स को कई बार उस लेवल पर रेजिस्टन्स का सामना करना पड़ा।

नवंबर २०२० में यह रेजिस्टन्स टुट गया और भारी वॉल्यूम के साथ बिग बॉडी बुलिश कैन्डल तैयार हुई।

अब ३७० (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ३०३ (स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है। यह स्विंग लो बुलिश ब्रेकआऊट के पहले तैयार हुआ था।

जैसे कि पहले बताया है, ब्रेकआऊट ट्रेड में कभी भी निश्चित टारगेट नहीं होता, इसलिए ट्रेडर को लगातार अपना स्टॉप लॉस ट्रेल करना पड़ता है और मुनाफा लॉक करना पड़ता है।

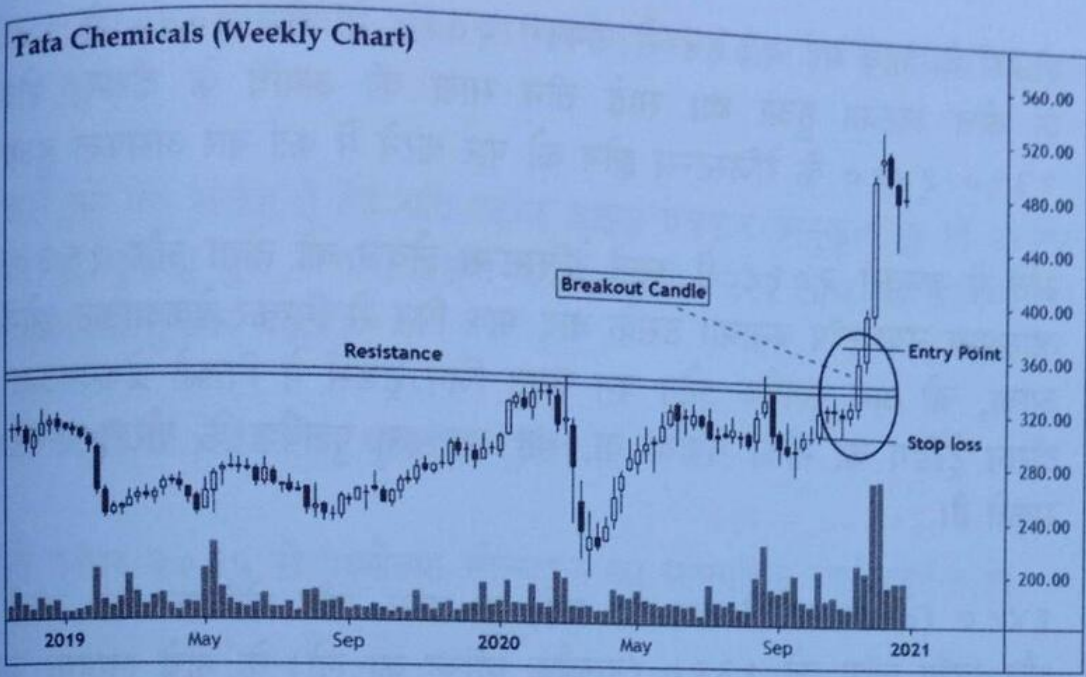

अब ब्रेकआऊट के बाद शेअर्स का भाव ३७० से बढ़कर तुरंत ५२० हुआ।

ट्रेडर्स ४६० के आसपास मुनाफा बुक कर सकते थे, जब उनका ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ट्रिगर हो गया था।

केस स्टडी ६ : बुलिश पुलबैक ट्रेडिंग

नीचे मई २०१४ से टीसीएस का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है।

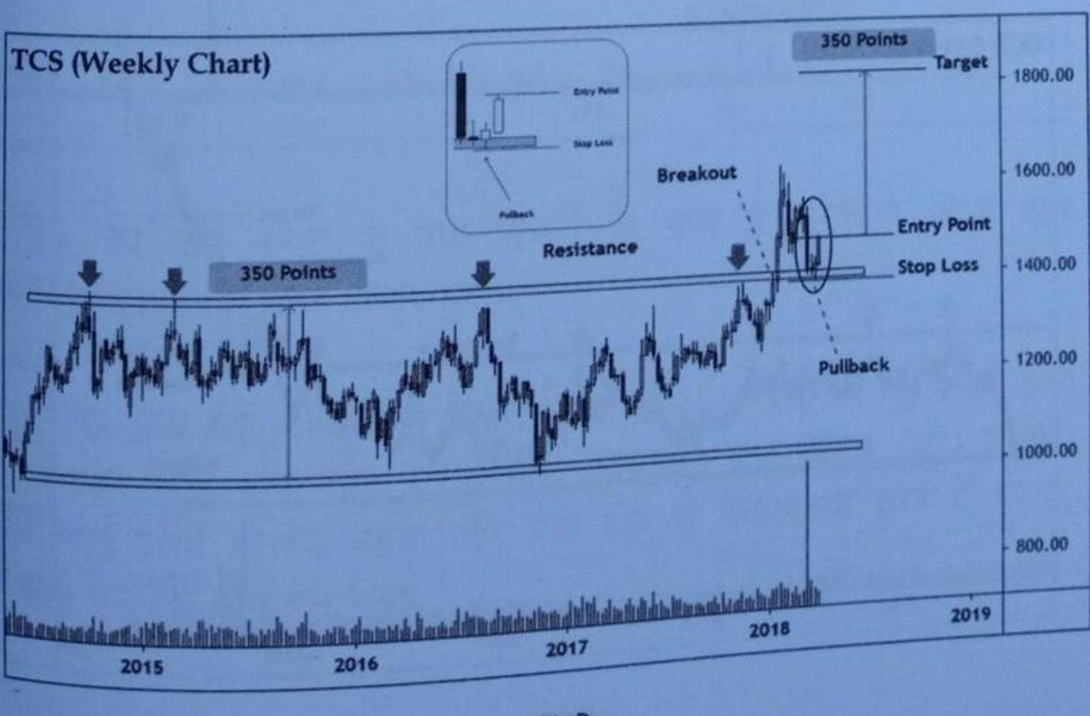

शेअर्स के भाव मई २०१४ से जनवरी २०१८ के बीच १००० से १४०० के बीच अटका हुआ था। साढ़े तीन साल की अवधि के दौरान, शेअर्स १३९०-१४१० के रेजिस्टन्स झोन को पार करने में कई बार असफल हुआ।

अंत में जनवरी २०१८ में उसने रेजिस्टन्स लेवल को तोड़ा और १६३० के आसपास नया टॉप बनाया। उसके बाद भाव फिर से गिरकर ब्रेकआऊट झोन में आया, जो अब पुलबैक झोन बन गया। जिन ट्रेडर्स ने पिछले ब्रेकआऊट के दौरान ट्रेडिंग का मौका गंवाया था, वह अब इस पुलबैक के दौरान एन्टर हो सकते है।

१४८० (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को १३९० (पुलबैक एरिया का लो) के नीचे लगाया जाता है।

अब इस मामले में टारगेट १८३० के आसपास आता है, जो एन्ट्री पॉइन्ट से ३५० पॉइन्ट्स (सपोर्ट और रेजिस्टन्स के बीच का संभावित अंतर) ऊपर है।

मजबूत बुलिश कैन्डल तैयार होने के बाद मजबूत पुलबैक नज़र आता है, जिसमें भारी वॉल्यूम के साथ भाव तुरंत बढ़ने लगता है। शेअर्स के भाव ने न केवल १८३० के स्तर को पार किया, बल्कि उससे भी आगे बढ़कर २२०० के लेवल को भी पार किया, जिसे नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है।

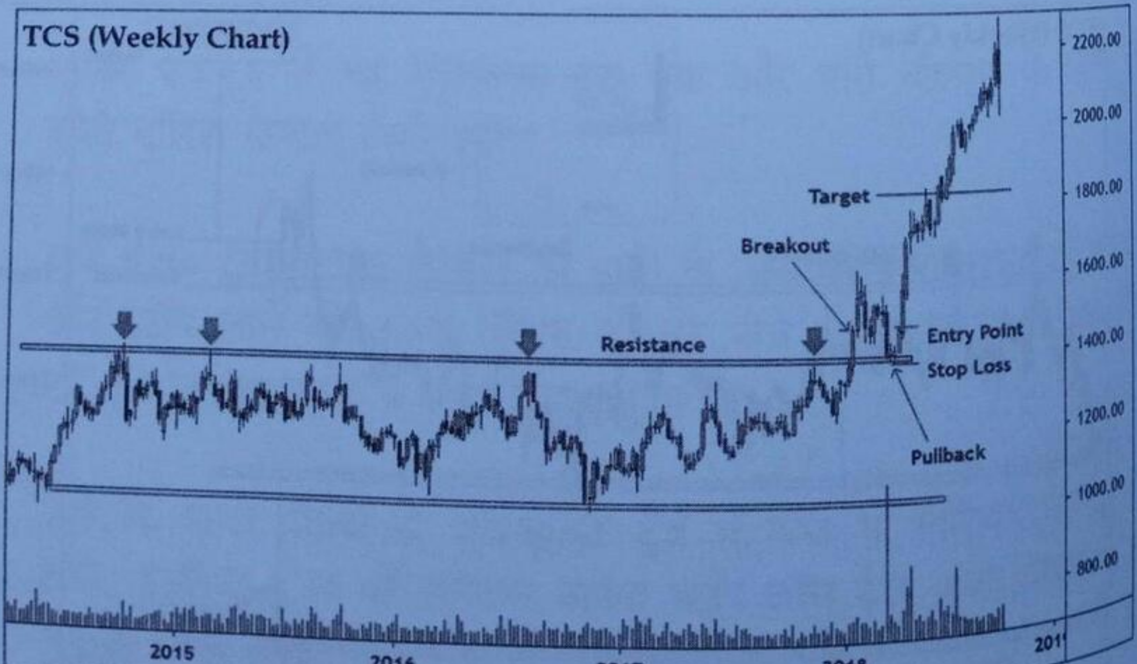

जिन ट्रेडर्स ने ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग किया होगा, उन्हें अच्छा मुनाफा मिला होगा।

ट्रेडर्स को मेरी सलाह है कि यदि स्टॉक प्राइस एक्शन अनुकूल हो तो टारगेट झोन पर मुनाफा बुक न करें, उसके बदले ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग करें और अपना मुनाफा बढ़ाएँ।

केस स्टडी ७ : बेअरीश पुलबैक ट्रेडिंग

नीचे नवंबर २०१५ से एक्सेल्या सोल्यूशन का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है।

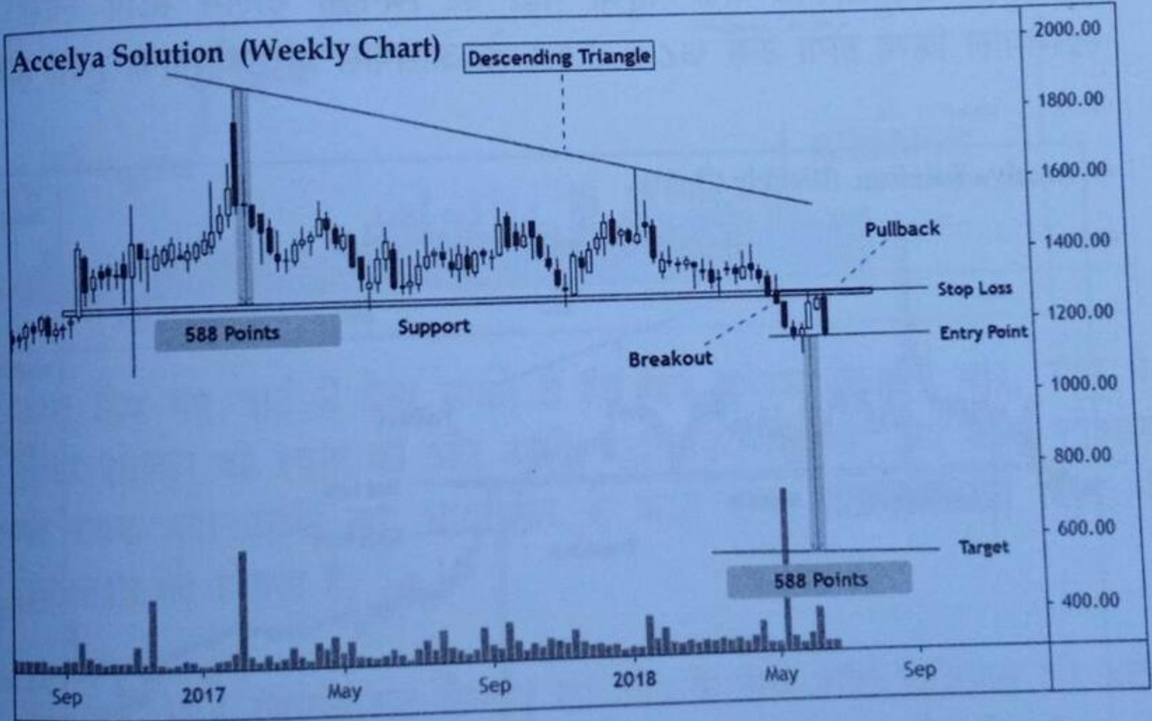

१८९० का टॉप बनाने के बाद शेअर्स के भाव में करेक्शन आया और डिसेन्डिंग ट्राइऐंगल पैटर्न तैयार हुआ।

शेअर्स का भाव मई २०१८ में देखते देखते १२८५-१२७० के सपोर्ट झोन को तोड़कर नीचे गया और १११० के आसपास नया बॉटम (लो) बनाया उसके बाद उसमें पुलबैक आया और भाव फिर से ब्रेकआऊट झोन में आया, जो अब पुलबैक झोन बन गया।

जिन ट्रेडर्स ने पिछले ब्रेकआऊट के दौरान ट्रेडिंग का मौका गंवाया था, वह अब इस पुलबैक के दौरान एन्टर हो सकते है।

११५८ (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को १२८५ (पुलबैक एरिया का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

अब इस मामले में टारगेट ५७० के आसपास आता है, जो एन्ट्री पॉइन्ट से ५८८ पॉइन्ट्स (डिसेन्डिंग ट्राइऐंगल के सबसे बड़े पॉइन्ट की ऊँचाई) नीचे है।

शेअर्स का भाव घटने लगता है और वह ७०० का नया बॉटम बनाता है। हालाँकि भाव टारगेट तक पहुँचा नहीं पर जिन्होंने ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का इस्तेमाल किया होगा उन्हें ७८०-८०० के आसपास अच्छा मुनाफा हुआ होगा।

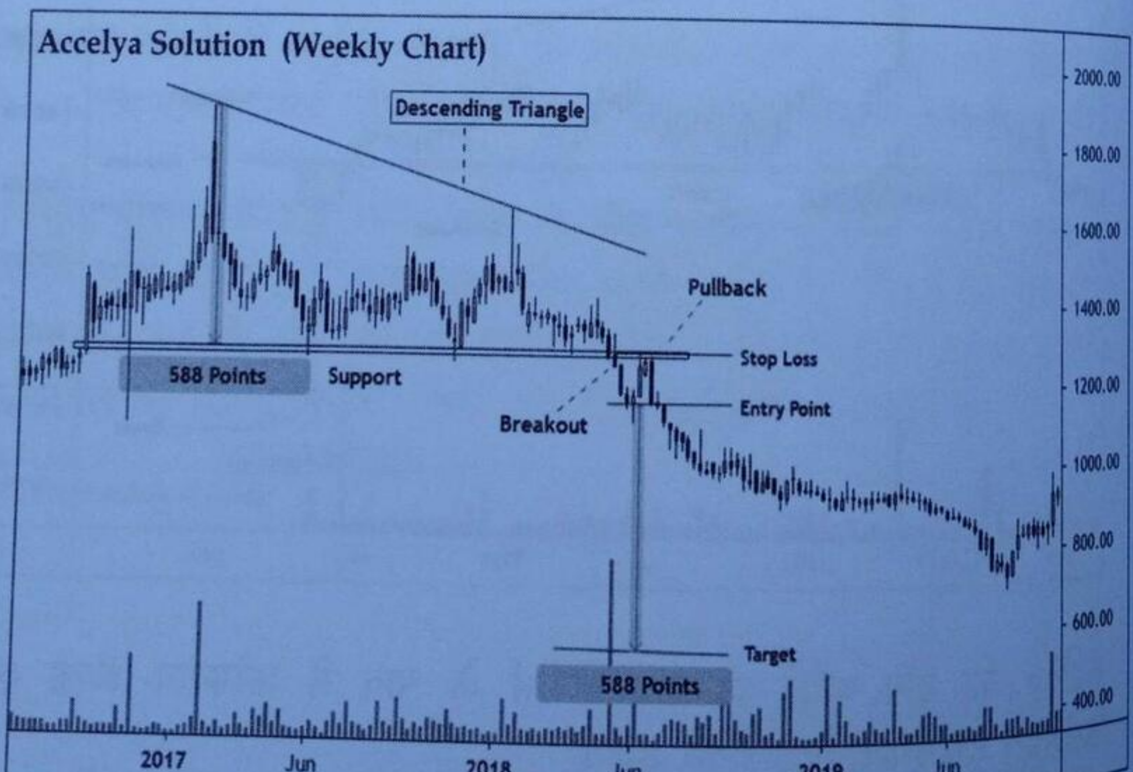

यह केस स्टडी ट्रेलिंग स्टॉप लॉस के महत्व को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

केस स्टडी ८ : हेड एन्ड शोल्डर पैटर्न

जैसे कि नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है, जुलाई २०१८ से नवंबर २०१८ के बीच यूएस डॉलर/भारतीय रूपए के दैनिक चार्ट पर हेड एन्ड शोल्डर पैटर्न तैयार हुआ।

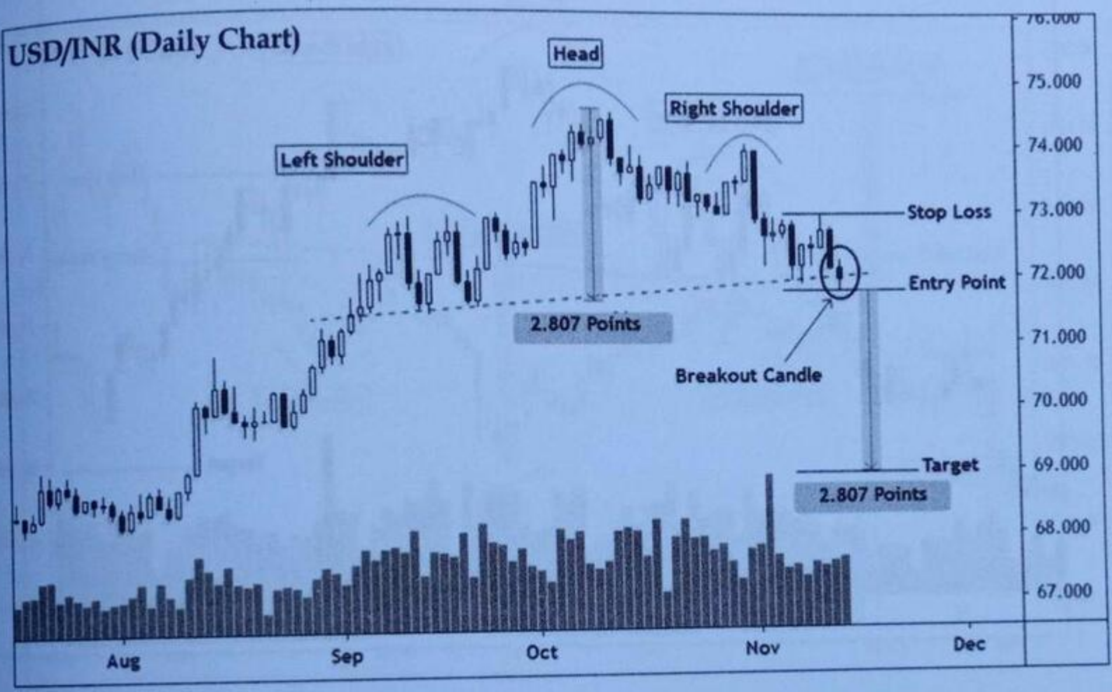

ऊपर दिए गए चार्ट में देख सकते है कि दिर्घ बुलिश ट्रेन्ड के बाद, भाव ने लेफ्ट शोल्डर की रचना की और उसके बाद हायर हेड और फिर राईट शोल्डर की रचना की। उसके बाद भाव फिर से घटने लगा और नीचे की दिशा में नेकलाइन को तोड़ता है।

अब ७१.७६८ (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और लगभग ६८.९७९ (नेकलाइन ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से २.८०७ पॉइन्ट्स नीचे) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ७२.९६८ (राईट शोल्डर के हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

आप अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद किस तरह से ट्रेन्ड रिवर्सल हुआ। रूपए की तुलना में डॉलर गिरकर ७१.७६८ के स्तर पर आया और फिर केवल १० ट्रेडिंग सेशन में वह ६९.५० पर पहुँच गया।

यहाँ पर भाव टारगेट को स्पर्श करने से पहले ही रिवर्स हुआ। लगातार दो लाँग बेअरीश कैन्डल के बाद ३० नवंबर २०१८ को डॉजी तैयार हुआ, जो रिवर्सल का स्पष्ट संकेत देता है।

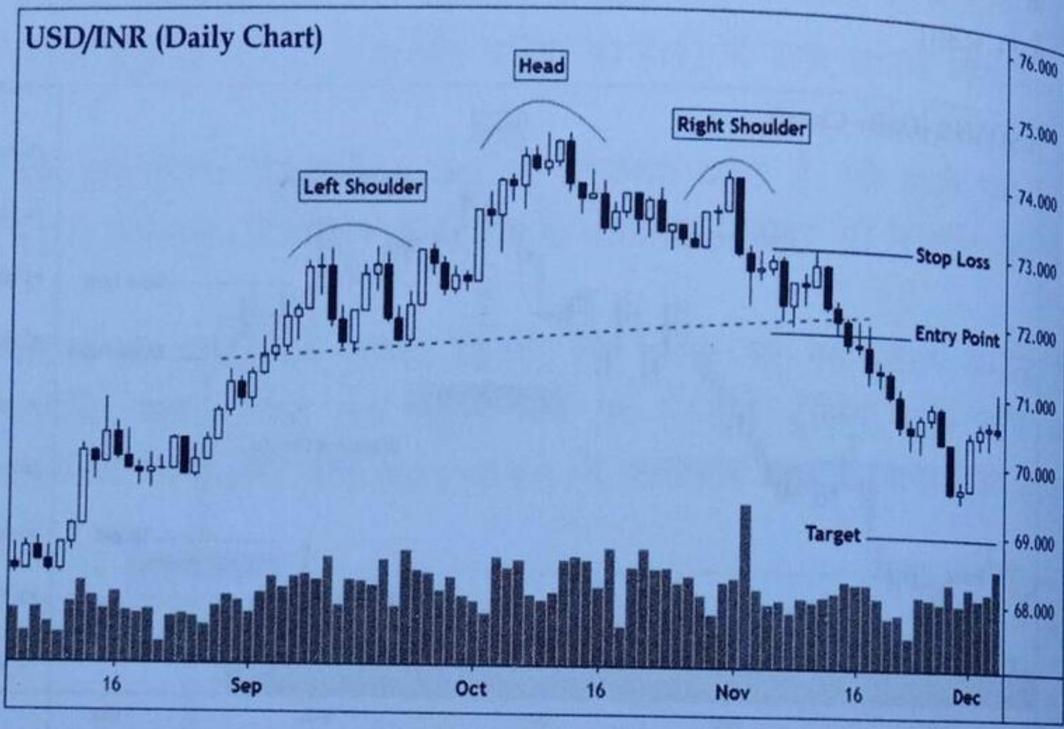

अगले दिन भाव पिछले दिन के बंद भाव के आसपास खुला और फिर बढ़ने लगा, दिन के टॉप पर गया और मजबूत बूलिश कैन्डल तैयार हुई। प्राइस एक्शन के आधार पर, ऐसे मामलों में ट्रेलिंग स्टॉप लॉस को भाव स्पर्श करें उससे पहले ही मुनाफा बुक करने की सलाह दी जाती है। हालाँकि, पूरी तरह से प्राइस एक्शन के आधार पर इस प्रकार से एक्झिट होने के लिए विशेष अनुभव की आवश्यकता होती है, जो निरंतर अभ्यास के माध्यम से संभव है।

अगर ट्रेडर ने इंतजार किया होता, तो भी दो दिन बाद अर्थात ६ दिसंबर २०१८ को ७०.६६० के आसपास ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ट्रिगर हो जाता। किसी भी स्थिति में, ट्रेडर को १.१ - १.२ पॉइन्ट्स का मुनाफा होता।

यह केस स्टडी ट्रेडिंग के मामले में फ्लेक्सिबिलिटी का महत्व दर्शाती है।

केस स्टडी ९ : इन्वर्टेड हेड एन्ड शोल्डर पैटर्न

जैसे कि नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है, जुलाई २०१९ से दिसंबर २०२० के बीच डीसीएम श्रीराम के शेअर्स के साप्ताहिक चार्ट पर इन्वर्टेड हेड एन्ड शोल्डर पैटर्न तैयार हुआ।

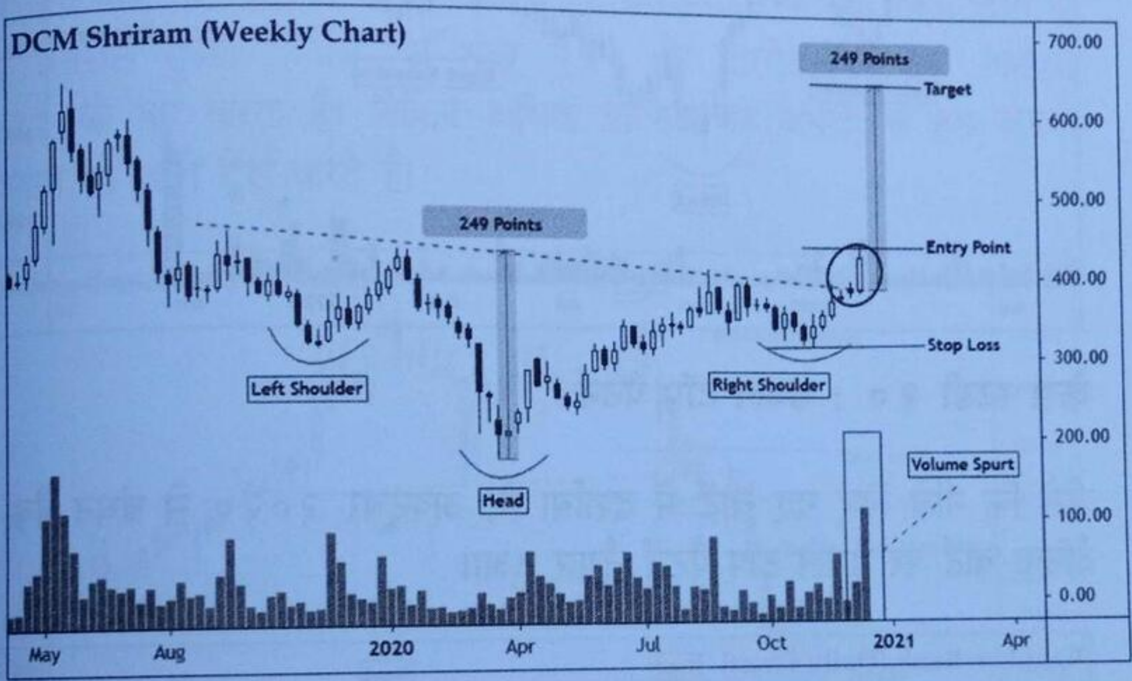

ऊपर दिए गए चार्ट में देख सकते है कि दिर्घ बेअरीश ट्रेन्ड के बाद, भाव ने लेफ्ट शोल्डर की रचना की और उसके बाद हायर हेड और फिर राईट शोल्डर की रचना की। उसके बाद भाव फिर से बढ़ने लगा और ऊपर की दिशा में नेकलाइन को तोड़ता है।

अब ४४१ (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और लगभग ६९० (नेकलाइन ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से २४९ पॉइन्ट्स ऊपर) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ३१५ (राईट शोल्डर का लो) के नीचे लगाया जाता है।

आप अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद किस तरह से ट्रेन्ड रिवर्सल हुआ। शेअर्स का भाव ४२५ से बढ़कर ७०० हुआ। भाव ने टारगेट को पार किया और ट्रेडर्स को सिर्फ चार महिने में ६० प्रतिशत से अधिक कमाई करके दी।

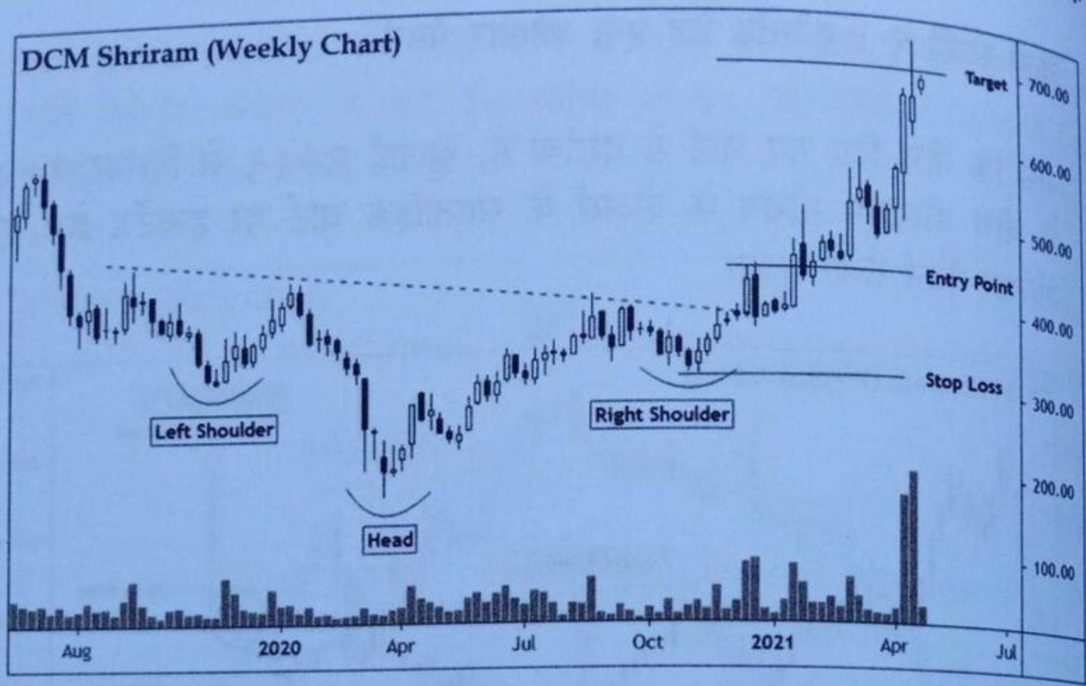

केस स्टडी १० : डबल टॉप पैटर्न

जैसे कि नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है, अक्टूबर २०२० से बंधन बैंक के दैनिक चार्ट पर डबल टॉप पैटर्न तैयार हुआ।

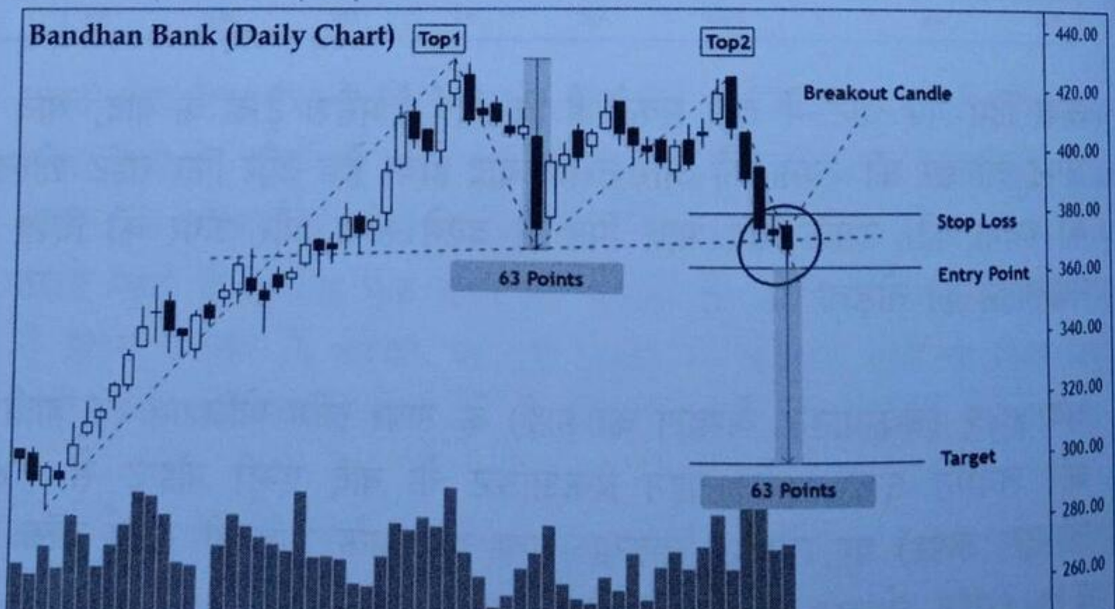

ऊपर दिए गए चार्ट में देख सकते है कि दिर्घ बुलिश ट्रेन्ड के बाद, भाव ने पहले टॉप की रचना की और उसके बाद दुसरे टॉप की रचना की और उसके बाद बेअरीश कैन्डल के साथ नीचे की दिशा में नेकलाइन को तोड़कर ब्रेकआऊट दिया।

अब ३६२ (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और लगभग २९९ (नेकलाइन ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से ६३ पॉइन्ट्स नीचे) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ३८० (ब्रेकआऊट से पहले वाली कैन्डल का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

आप नीचे दिए गए चार्ट में देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद किस तरह से ट्रेन्ड रिवर्सल हुआ। शेअर्स का भाव २९९ के टारगेट को २८ जनवरी २०२१ को पार करता है। लेकिन अधिक प्रॉफिट की अपेक्षा से हम अपनी पोजिशन को आगे ट्रेल करते है।

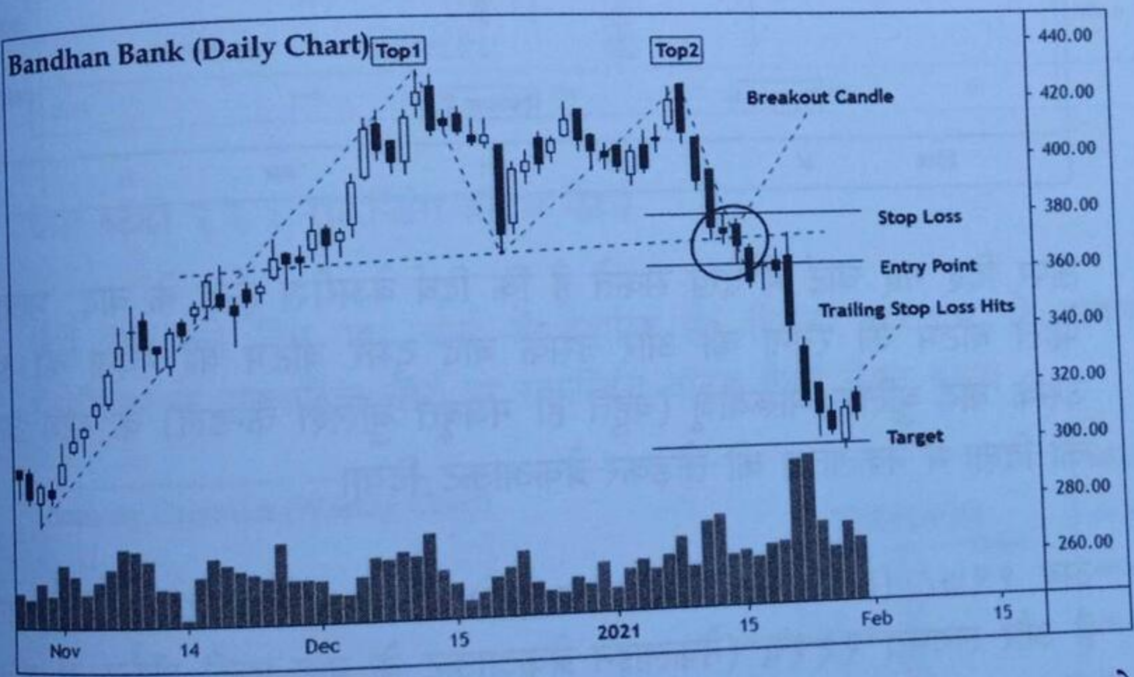

दुर्भाग्यवश, दुसरे ही दिन ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ट्रिगर हुआ और हम ३१५ के भाव पर एक्झिट होते है। इस प्रकार से हमे प्रति शेअर रू.४५ का मुनाफा हुआ। ऐसे वक्त, मुझे यकिन है कि कई नए ट्रेडर्स यह सोचेंगे कि एक दिन पहले ३०० के भाव पर प्रॉफिट बुक करते तो अच्छा होता। लेकिन सफल होने के लिए, ट्रेडर को ऐसी बातों पर कभी पछतावा नहीं करना चाहिए।

केस स्टडी ११ : डबल बॉटम पैटर्न

जैसे कि अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में दर्शाया है, दिसंबर २०१५ से एस एन्ड पी ५०० इन्डेक्स (अमरिकन मार्केट) के दैनिक चार्ट पर डबल बॉटम पैटर्न तैयार हुआ।

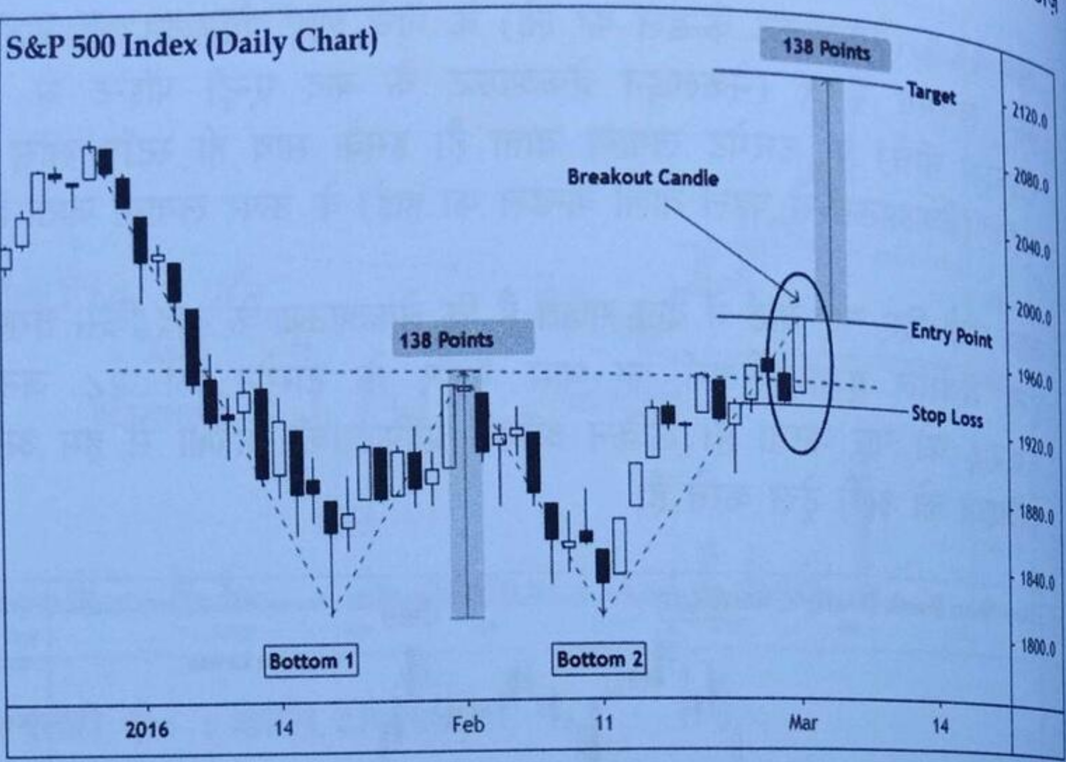

ऊपर दिए गए चार्ट में देख सकते है कि दिर्घ बेअरीश ट्रेन्ड के बाद, भाव ने पहले बॉटम की रचना की और उसके बाद दुसरे बॉटम की रचना की और उसके बाद बुलिश मारूबोजू (बहुत ही मजबूत बुलिश कैन्डल) के साथ ऊपर की दिशा में नेकलाइन को तोड़कर ब्रेकआऊट दिया।

अब १९७८ (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लॉंग पोजिशन ली जाती है और लगभग २११६ (नेकलाइन ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से १३८ पॉइन्ट्स ऊपर) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को १९३१ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है।

आप अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद किस तरह से ट्रेन्ड रिवर्सल हुआ। २११६ का टारगेट लगभग प्राप्त हुआ और एस एन्ड पी इन्डेक्स ने २० अप्रैल २०१६ को २१११.१० का टॉप बनाया। ब्रेकआऊट के बाद, इन्डेक्स १९५० से बढ़कर २११० हो गया, जो लगभग ८ प्रतिशत की बढ़ोतरी है।

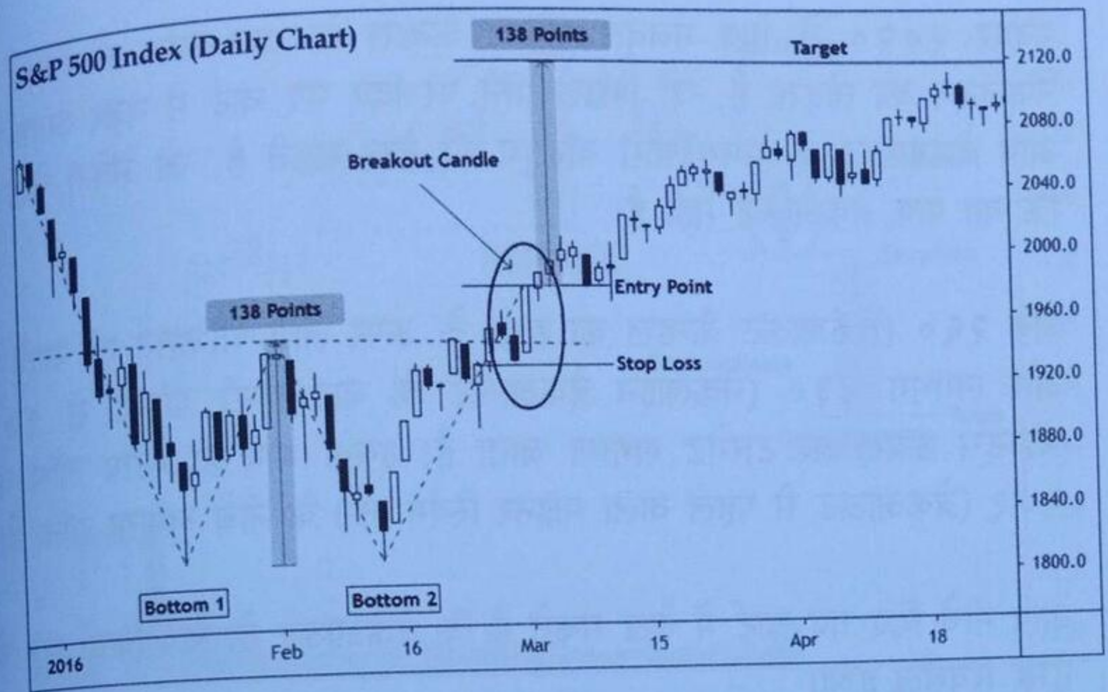

केस स्टडी १२ : राऊन्डिंग बॉटम पैटर्न

जैसे कि नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है, दिसंबर २०१९ से सोमाणी सिरेमिक्स के साप्ताहिक चार्ट पर राऊन्डिंग बॉटम पैटर्न तैयार हुआ।

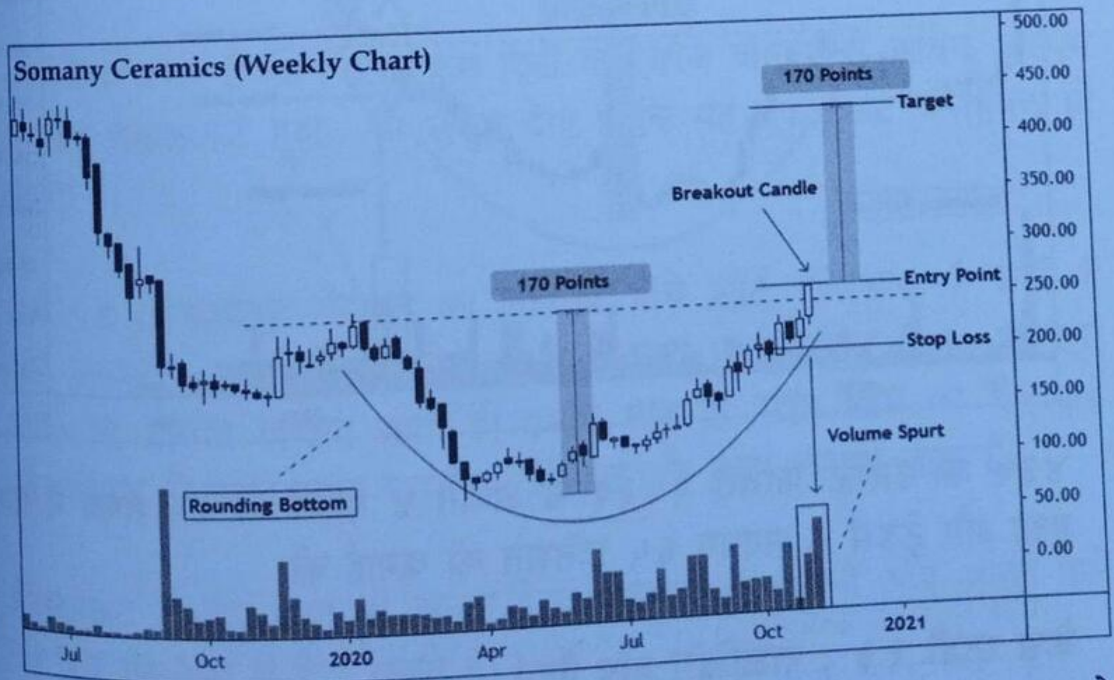

ऊपर दिए गए चार्ट में देख सकते है कि डाउन ट्रेन्ड के बाद, कुछ समय के लिए कन्सॉलिडेशन नज़र आता है। इस समय के दौरान भाव की गिरावट धीमी होती है। उसके बाद बॉटम तैयार होता है और धीरे-धीरे भाव बढ़ने लगता है।

नवंबर २०२० में भाव मजबूत बुलिश कैन्डल के साथ ऊपर की दिशा में नेकलाइन को तोड़ता है, जो पिछले पन्ने पर दिए गए चार्ट में नज़र आता है। आप ब्रेकआऊट के समय भारी वॉल्यूम को देख सकते है, जो संकेत देता है कि यह फेक ब्रेकआऊट नहीं है।

अब २६० (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और लगभग ४३० (नेकलाइन ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से १७० पॉइन्ट्स ऊपर) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को २०१ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है।

आप नीचे दिए गए चार्ट में देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद किस तरह से ट्रेन्ड रिवर्सल हुआ।

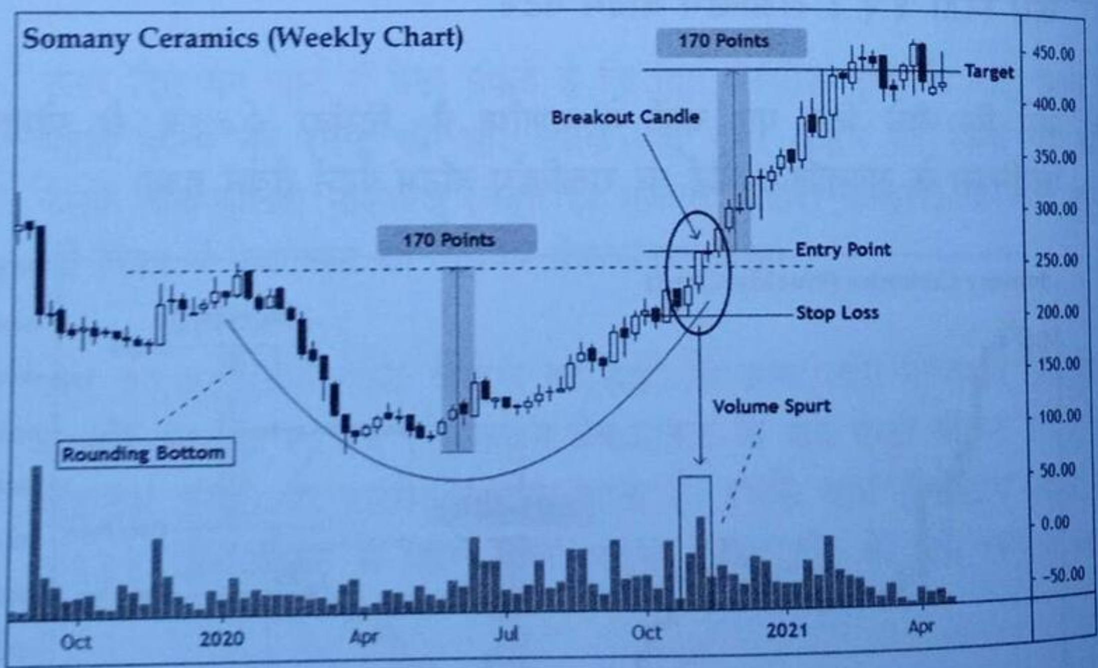

४३० का टारगेट फरवरी २०२१ में अर्थात ४ महिनों से कम समय में प्राप्त हुआ और ट्रेडर्स ने लगभग ६५ प्रतिशत की कमाई की।

केस स्टडी १३ : राऊन्डिंग टॉप पैटर्न

जैसे कि अगले पन्ने पर चार्ट में दर्शाया है, फरवरी २०१४ से नेटफ्लिक्स के दैनिक चार्ट पर राऊन्डिंग टॉप पैटर्न तैयार हुआ।

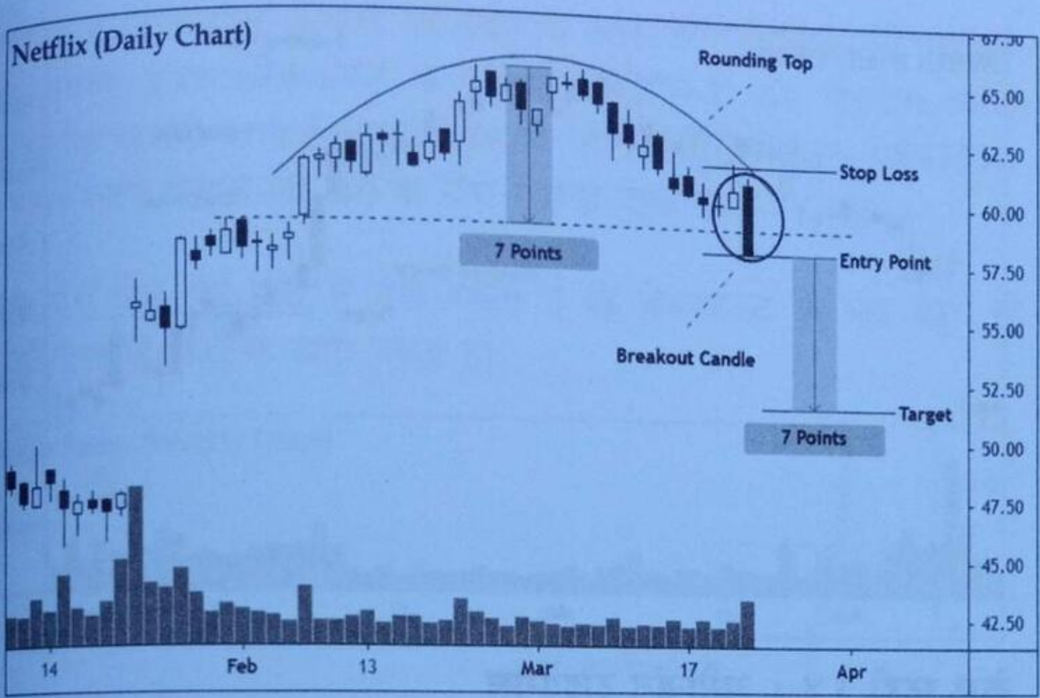

आप ऊपर दिए गए चार्ट में देख सकते है कि टॉप की रचना करने के बाद भाव धीरे-धीरे घटने लगता है और अंत में २१ मार्च २०१४ को भाव मजबूत बेअरीश कैन्डल के साथ नेकलाइन को तोड़ता है।

आप देख सकते है कि पिछले कुछ दिनों के एवरेज वॉल्यूम से अधिक वॉल्यूम के साथ ब्रेकआऊट हुआ, जो संकेत देता है कि यह ब्रेकआऊट वास्तविक हो सकता है।

अब ५८ (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और लगभग ५१ (नेकलाइन ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से ७ पॉइन्ट्स नीचे) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ६१.७४ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

ब्रेकआऊट के बाद बहुत ही अच्छा ट्रेन्ड रिवर्सल हुआ जिसे आप अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में देख सकते है।

शेअर्स के भाव में ब्रेकआऊट के बाद उल्लेखनीय गिरावट हुई और वह ४५ के स्तर तक नीचे गया।

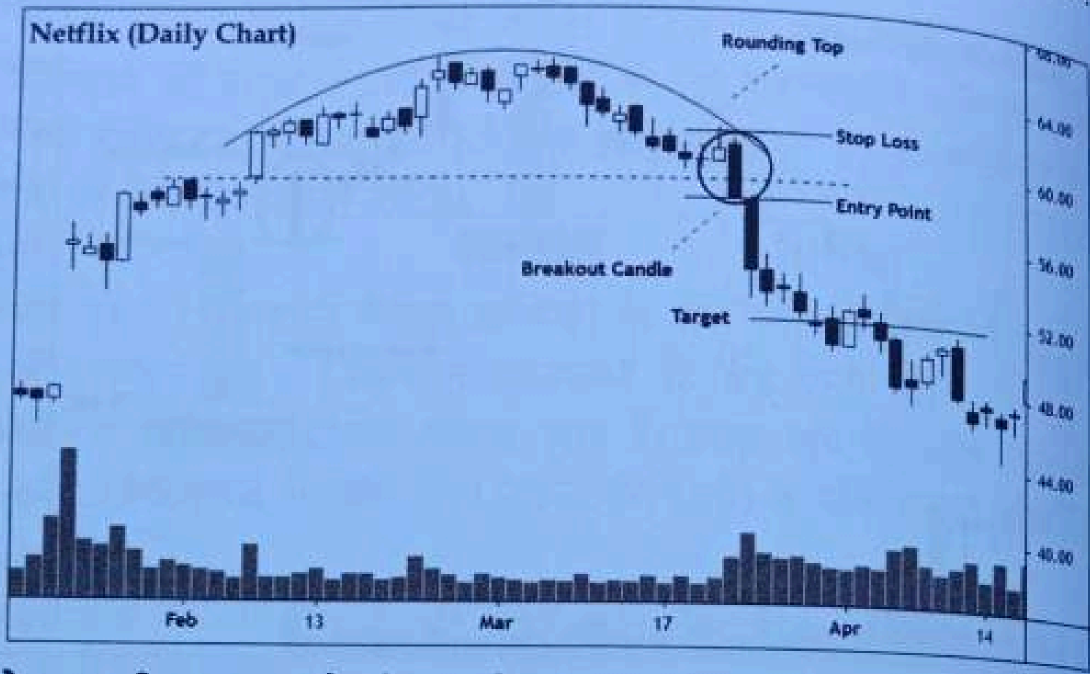

केस स्टडी १४ : असेन्डिंग ट्राइऐंगल

जैसे कि नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है, फरवरी २०१८ से बर्जर पेन्ट्स के साप्ताहिक चार्ट पर अगस्त २०१८ से असेन्डिंग ट्राइऐंगल पैटर्न कि रचना होने लगी।

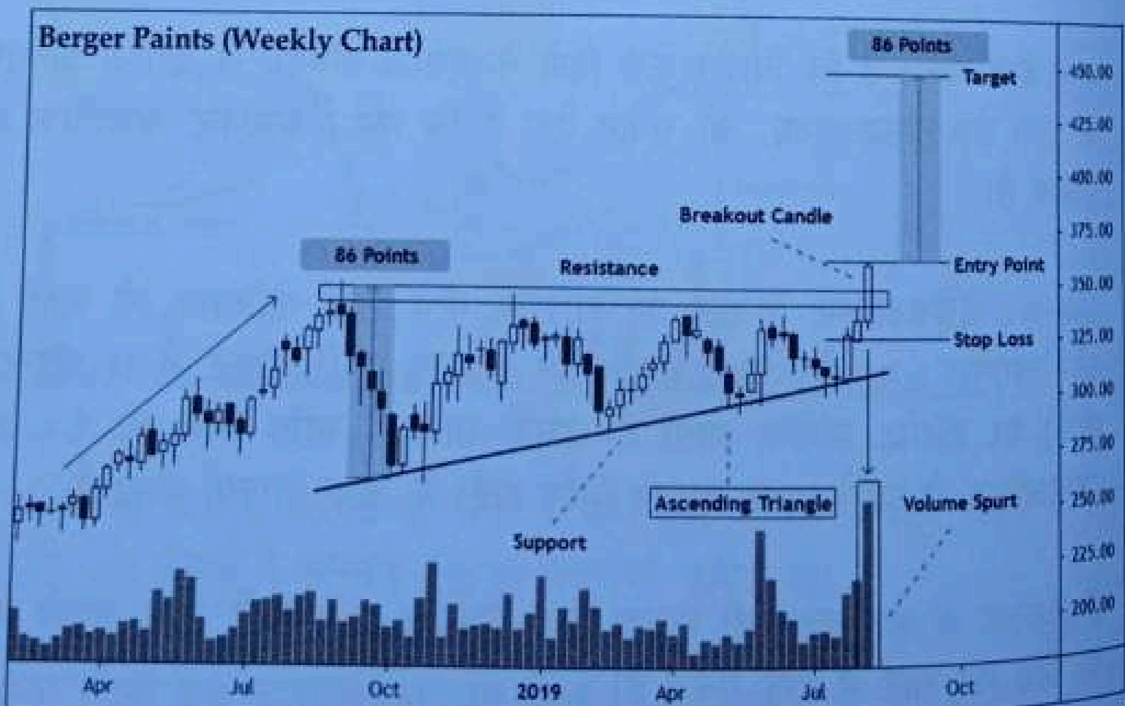

अंत में, ५ अगस्त २०१९ को भाव मजबूत बुलिश कैन्डल के साथ असेन्डिंग ट्राइऐंगल पैटर्न को तोड़ता है। उस समय वॉल्यूम बहुत ही अधिक था, जो दर्शाता है कि ब्रेकआऊट अधिक विश्वसनीय है।

अब ३६१ (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और लगभग ४४७ (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से ८६ पॉइन्ट्स ऊपर) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ३२५ (ब्रेकआऊट से पहले वाली कैन्डल का लो) के नीचे लगाया जाता है।

आप नीचे दिए गए चार्ट में देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद बहुत ही अच्छी तरह से अपट्रेन्ड आगे बढ़ता है।

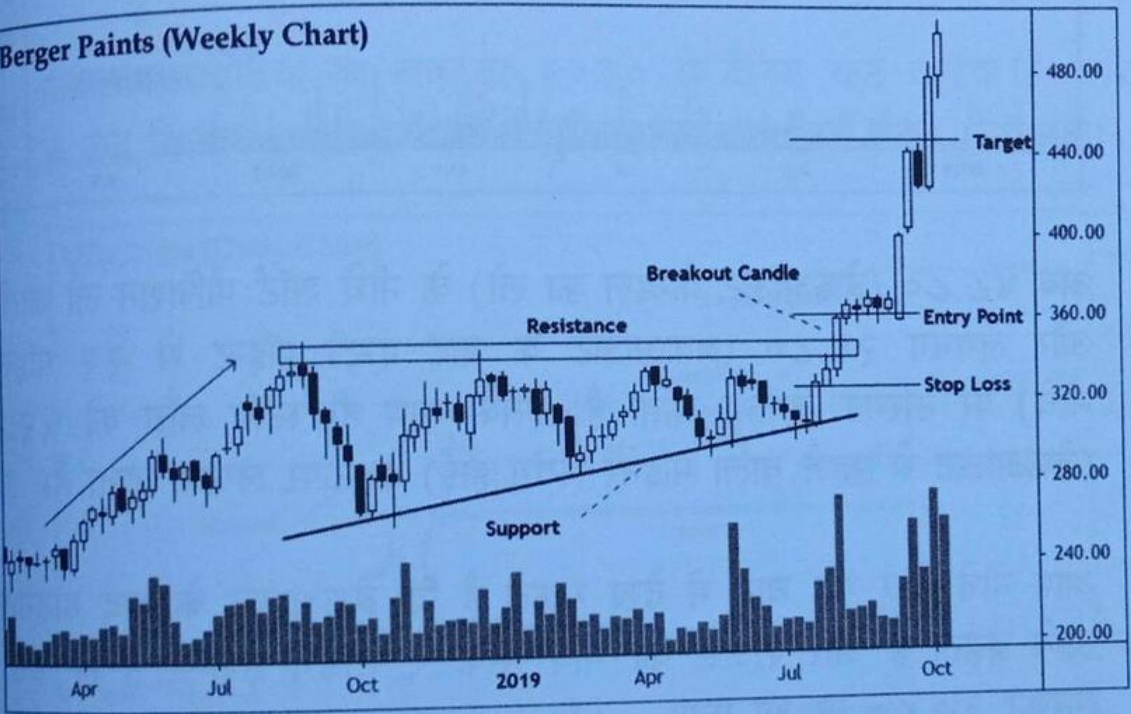

शेअर्स का भाव न केवल टारगेट के स्तर तक पहुँच गया बल्कि उससे भी आगे जाकर ५०० के लेवल पर पहुँच गया। जिन ट्रेडर्स ने ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग किया होगा, उन्हें अच्छा मुनाफा मिला होगा।

केस स्टडी १५ : डिसेन्डिंग ट्राइऐंगल

अगले पन्ने पर टाटा पॉवर का अक्टूबर २०१८ से साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है। डाउनट्रेन्ड के बाद जून २०१९ से उसमें डिसेन्डिंग ट्राइऐंगल पैटर्न कि रचना होने लगी।

अंत में, २६ फरवरी २०२० को भाव मजबूत बेअरीश कैन्डल के साथ डिसेन्डिंग ट्राइऐंगल पैटर्न को तोड़ता है। उस समय वॉल्यूम बहुत ही अधिक था, जो दर्शाता है कि ब्रेकआऊट अधिक विश्वसनीय है।

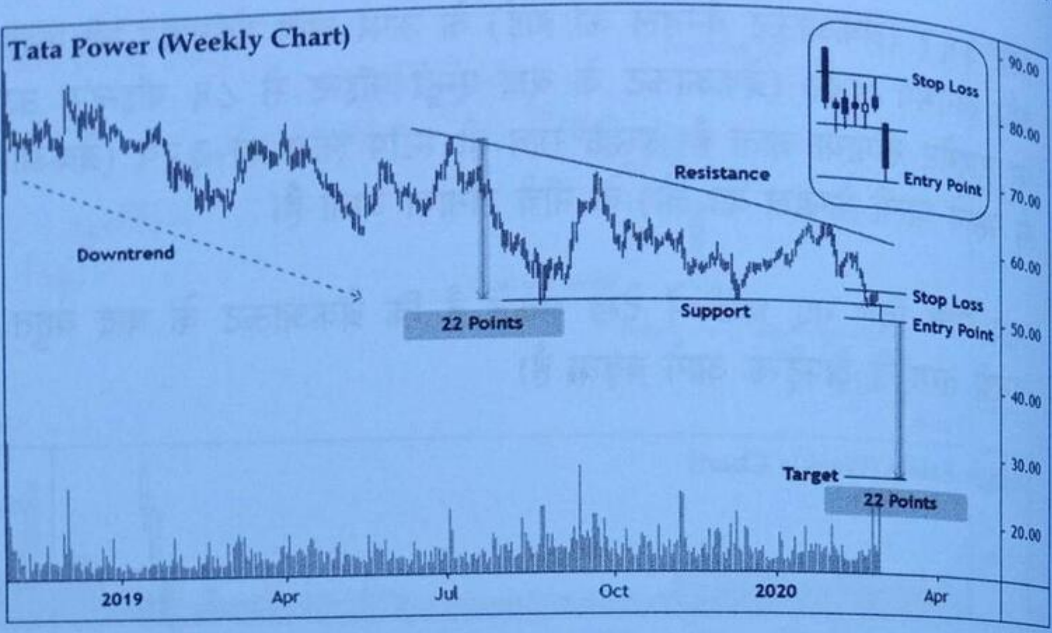

अब ४८.८० (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और लगभग २६.८० (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से २२ पॉइन्ट्स नीचे) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ५२.९५ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

आप नीचे दिए गए चार्ट में देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद डाउनट्रेन्ड आगे बढ़ता है और शेअर्स का भाव सिर्फ ९ ट्रेडिंग सेशन्स में ही ४८ से गिरकर ३७.८० पर आ गया।

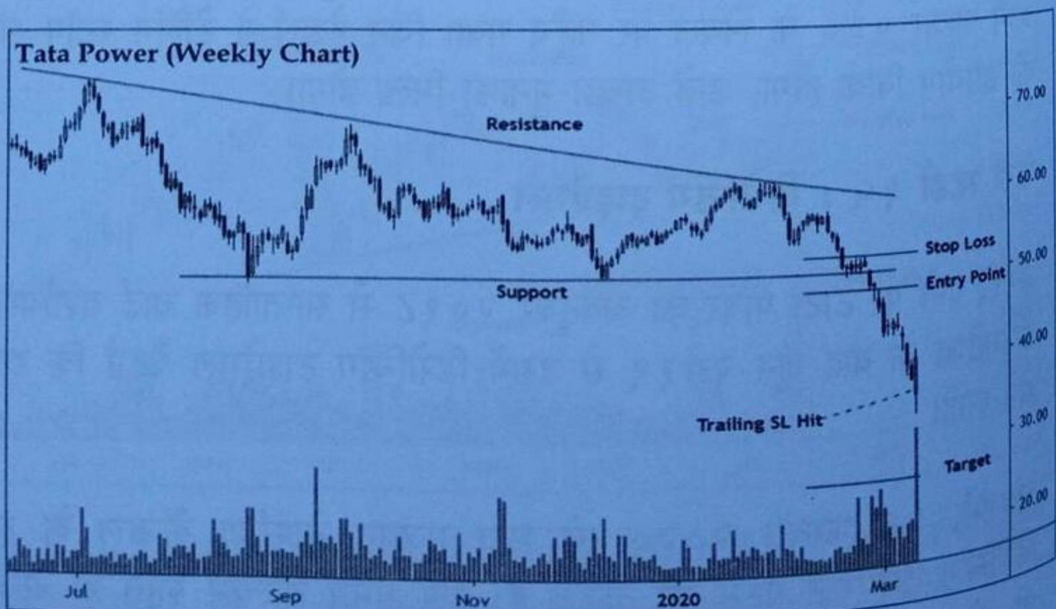

दुसरे ही दिन, १२ मार्च २०२० को शेअर्स का भाव नीचे खुला और ३३.८५ का बॉटम बनाया। उसके बाद भाव बहुत ही अच्छे वॉल्यूम के साथ बढ़ने लगा। अब ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ३८-३९ के आसपास ट्रिगर हुआ और सिर्फ १० ट्रेडिंग सेशन्स में ट्रेडर्स को २० प्रतिशत जितना अच्छा मुनाफा मिला।

केस स्टडी १६ : बुलिश रेक्टेंगल पैटर्न

नीचे एफल इंडिया का अक्टूबर २०२० से दैनिक चार्ट दर्शाया है। अपट्रेन्ड के बाद दिसंबर २०२० से उसमें बुलिश रेक्टेंगल पैटर्न तैयार होने लगा।

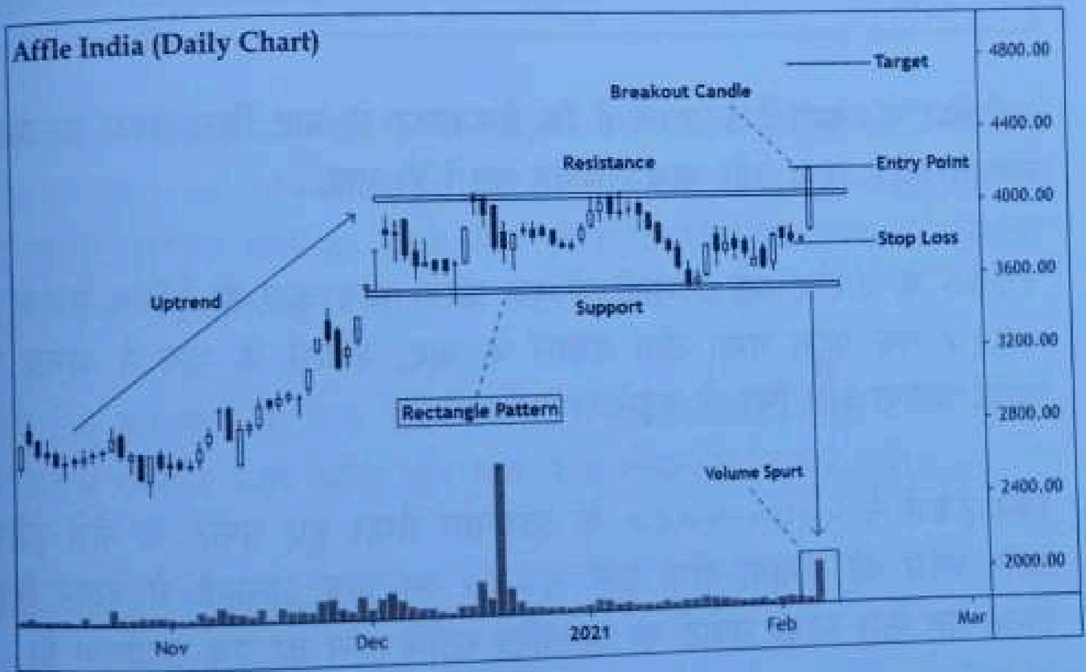

दो महिने के बाद, ५ फरवरी २०२१ को भाव मजबूत बुलिश कैन्डल के साथ बुलिश रेक्टेंगल पैटर्न को तोड़ता है। भारी वॉल्यूम के साथ यह ब्रेकआऊट नज़र आता है, जो संकेत देता है कि ब्रेकआऊट अधिक विश्वसनीय है। वह सूचित करता है कि अपट्रेन्ड आगे भी जारी रहेगा।

अब ४१७५ (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और लगभग ४७७० (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से ५९५ पॉइन्ट्स ऊपर) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ३७७० (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे लगाया जाता है।

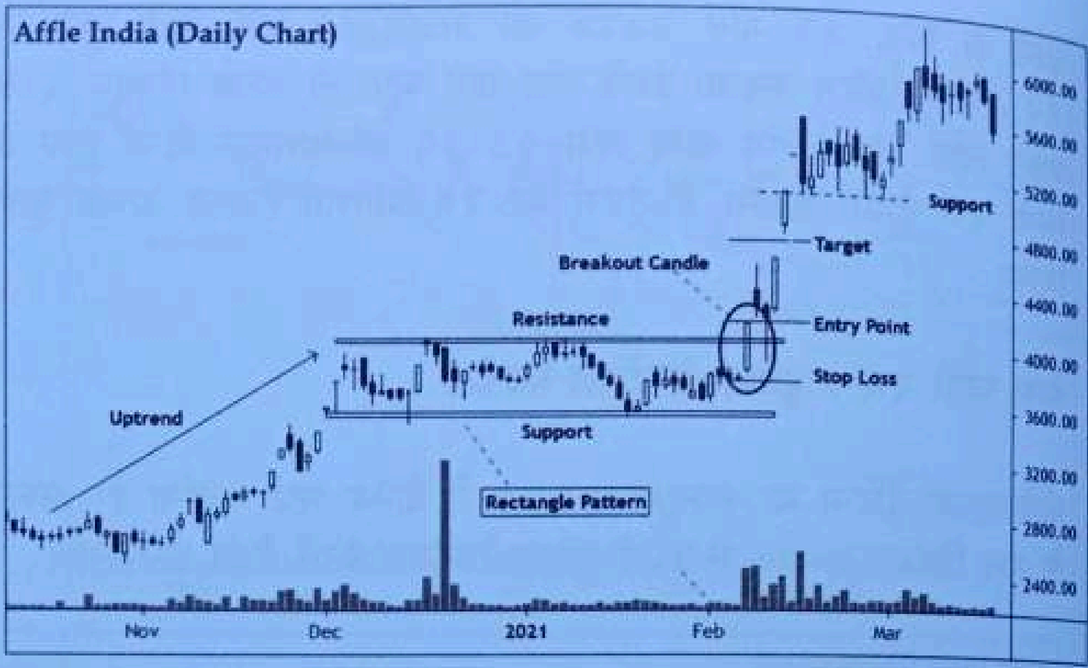

यहाँ फिर से, आप देख सकते हैं कि ब्रेकआउट के बाद किस प्रकार का प्राइस एक्शन नज़र आया और भाव लगातार बढ़ते ही गया।

४७७० के टारगेट को आसानी से पार करके भाव कुछ ही ट्रेडिंग सेशन्स में ५६१४ तक पहुँच गया। तीव्र उछाल के बाद, शेअर्स के भाव ने अच्छा सा सपोर्ट बनाया और फिर से बढ़ने लगा।

जिन ट्रेडर्स ने ५०७५-५०८० के आसपास तैयार हुए सपोर्ट के नीचे ट्रेलिंग स्टॉप लॉस को लगाया होगा उन्हें ६००० का भाव आसानी से देखने मिला होगा। यह केस स्टडी सपोर्ट पर आधारित स्टॉप लॉस का एक उदाहरण है।

केस स्टडी १७ : बेअरीश रेक्टेंगल पैटर्न

अगले पन्ने पर दालमिया भारत का जून २०१९ से दैनिक चार्ट दर्शाया है। डाउनट्रेन्ड के बाद सितंबर २०१९ से उसमें बेअरीश रेक्टेंगल पैटर्न तैयार होने लगा।

साढें पाँच महिनों के बाद, ३ मार्च २०२० को भाव मजबूत बेअरीश कैन्डल के साथ बेअरीश रेक्टेंगल पैटर्न को तोड़ता है।

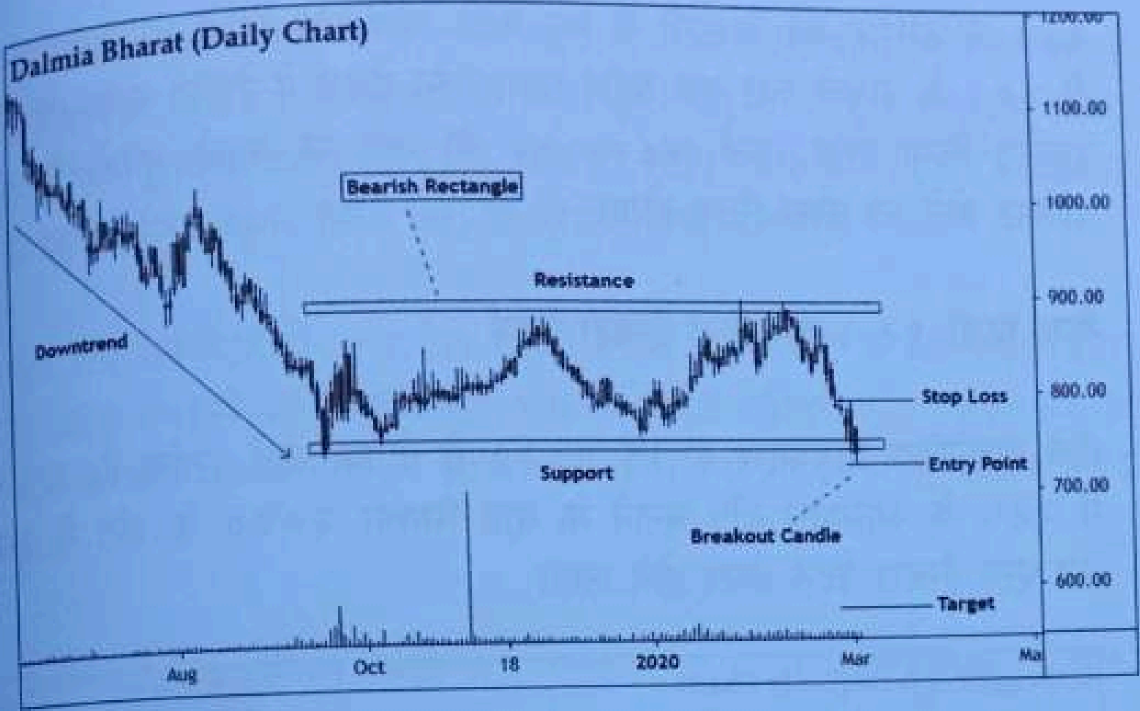

अब ७४० (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और लगभग ५८० (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से १६० पॉइन्ट्स नीचे) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ८०८ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

नीचे दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद किस प्रकार का प्राइस एक्शन नज़र आया और भाव में उल्लेखनीय गिरावट हुई।

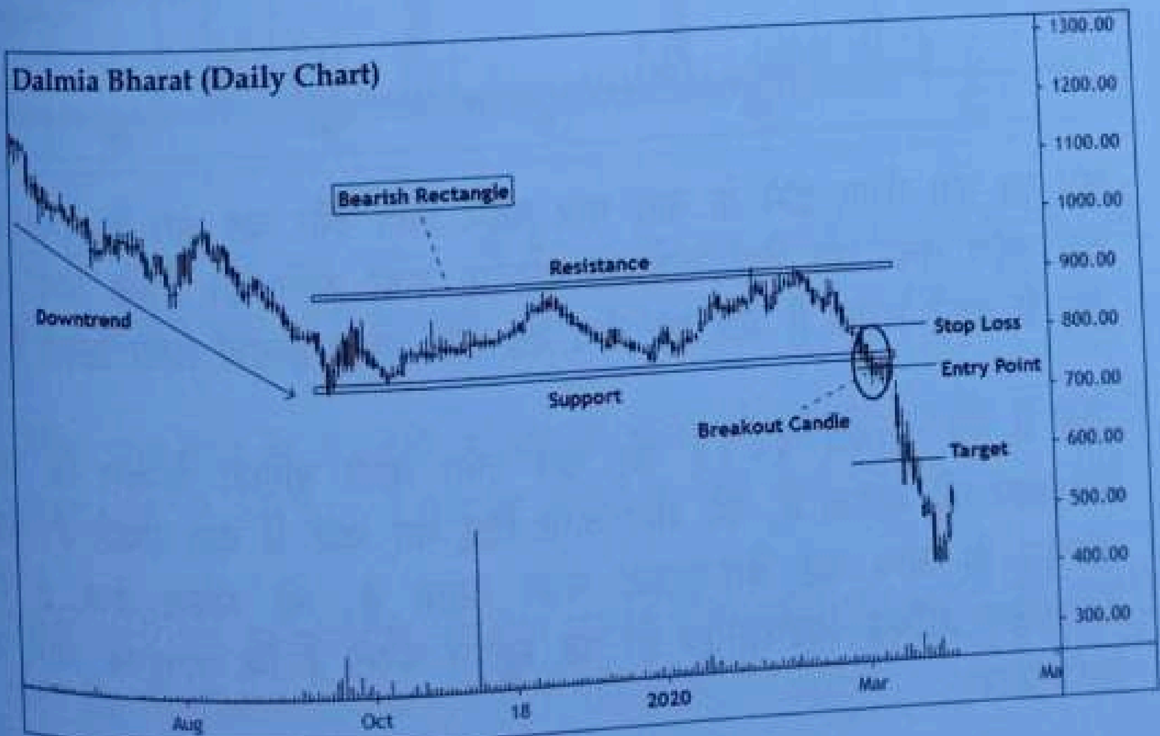

५८० के टारगेट को आसानी से पार करके भाव एक महिने की कालावधी में ही ४०२ के नीचले स्तर तक पहुँच गया। जिन ट्रेडर्स ने ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग किया होगा, उन्हें ४८०-५०० के स्तर पर अच्छे मुनाफे के साथ एक्झिट होने का मौका मिला होगा।

केस स्टडी १८ : कप एन्ड हैन्डल पैटर्न

नीचे डायनेमिक प्रोडक्ट्स का मई २०२० से दैनिक चार्ट दर्शाया है। अपट्रेन्ड में २८५ के आसपास टॉप बनाने के बाद सितंबर २०२० के अंत में उसमें कप एन्ड हैन्डल पैटर्न तैयार होने लगा।

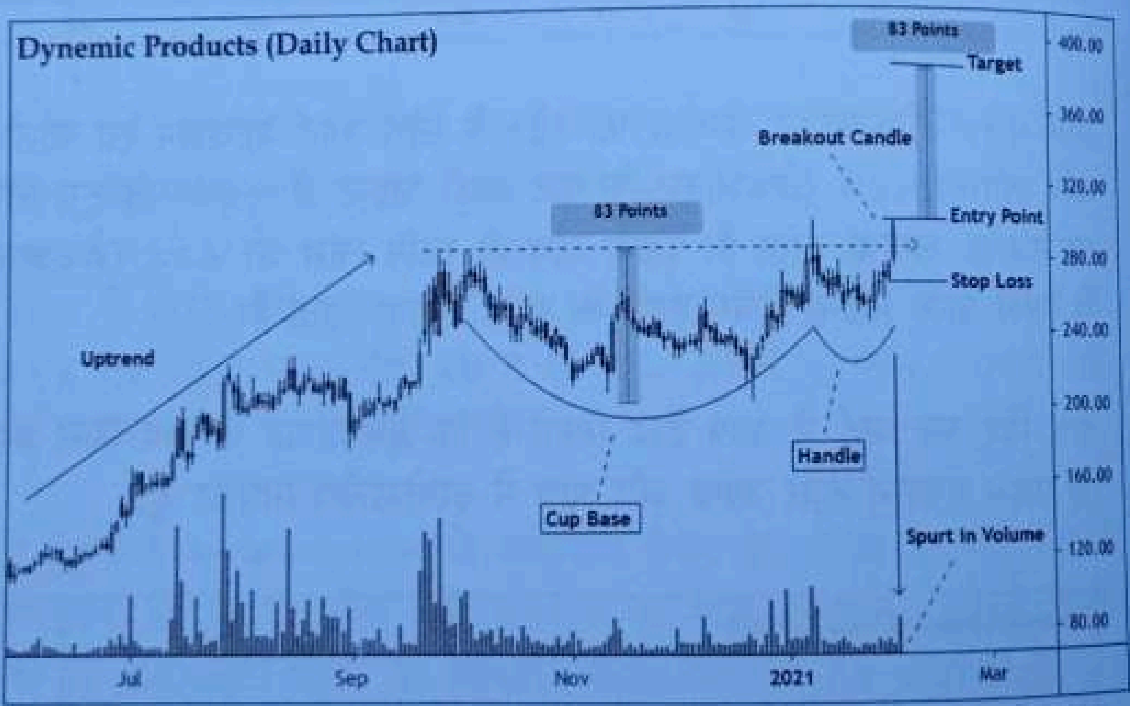

कप का बेस तैयार होने के बाद भाव बढ़ने लगा और वह कप के नेकलाइन तक पहुँच गया और फिर साधारण पुलबैक नज़र आता है। उसके बाद भाव फिर से बढ़ने लगता है और इस बीच वह एक अच्छा हैन्डल तैयार करता है।

अंत में, २ फरवरी २०२१ को भाव लॉंग बॉडी बुलिश कैन्डल के साथ नेकलाइन को तोड़ता है, जो आप ऊपर दिए गए चार्ट में देख सकते है। भारी वॉल्यूम के साथ यह ब्रेकआऊट नज़र आता है, जो संकेत देता है कि ब्रेकआऊट अधिक विश्वसनीय है। वह सूचित करता है कि अपट्रेन्ड आगे भी जारी रहेगा।

अब ३०० (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और लगभग ३८३ (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से ८३ पॉइन्ट्स ऊपर) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को २६६ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है।

नीचे दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद किस प्रकार का प्राइस एक्शन नज़र आया और भाव में अच्छी बढ़ोतरी हुई। टारगेट को पार करने के बाद शेअर्स का भाव सिर्फ चार ही सेशन्स में ३०० से बढ़कर ३९६ हुआ।

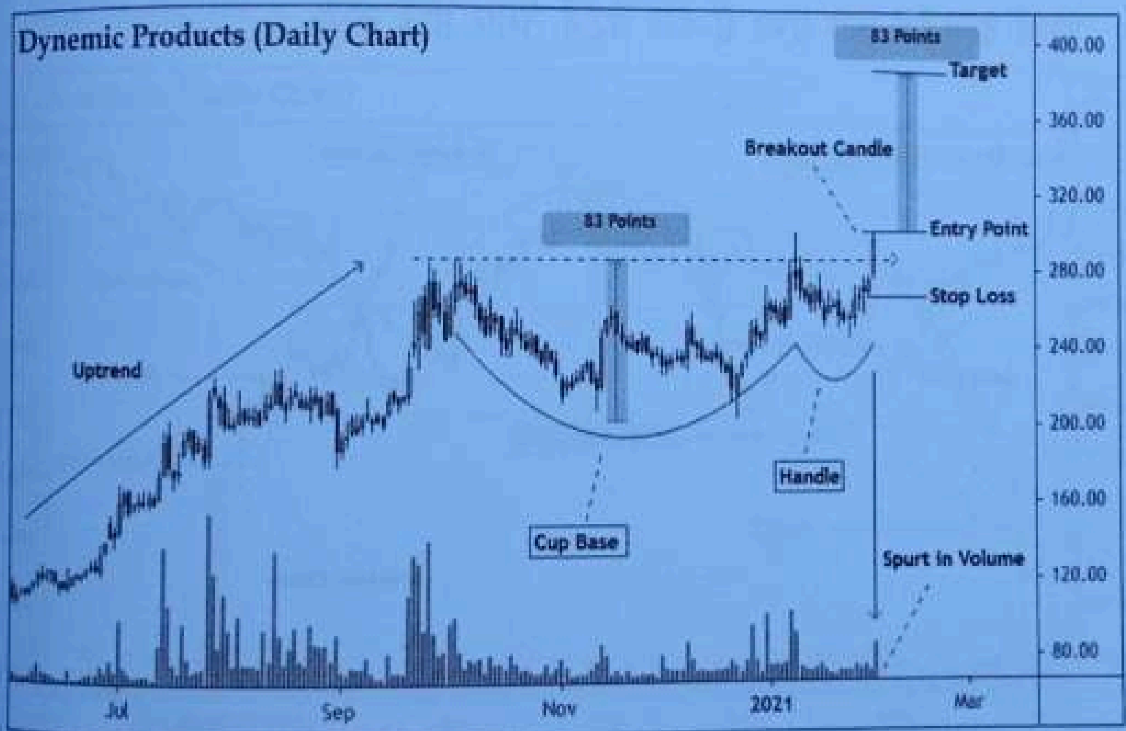

जैसे कि पहले कई बार सलाह दी है, मुनाफा बुक करने के बजाए, जैसे कि ऊपर दिए गए चार्ट में दिखाया है, ट्रेडर स्टॉप लॉस को ट्रेल कर सकते थे।

टारगेट प्राप्त होने के २ दिनों के बाद के स्विंग लो पर स्टॉप लॉस १ (SL1) लगाया जाता है, जो बाद में पुलबैक सपोर्ट के जैसे कार्य करता है।

उसके बाद, इस स्टॉप लॉस को ट्रेल करके स्टॉप लॉस २ (SL2) पर लगाया जाता है, जो तीव्र उछाल के एक दिन बाद का स्विंग लो था।

यह स्टॉप लॉस स्ट्रैटजी सपोर्ट के कन्सेप्ट पर आधारित है, जिसे इस किताब में पहले समझाया गया है। लेकिन इस तरीके को अपनाने से पहले खास अनुभव की जरूरत होती है। इसलिए नए ट्रेडर्स को आसान ट्रेलिंग स्टॉप लॉस स्ट्रैटजी को अपनाना चाहिए, जिसके बारे में हमने पहले बात की है। शुरुआती स्टॉप लॉस को लगातार बदलते रहने की यह प्रक्रिया है।

केस स्टडी १९ : इन्वर्टेड कप एन्ड हैन्डल पैटर्न

नीचे एक्सिस बैंक का जनवरी २०१३ से दैनिक चार्ट दर्शाया है। डाउनट्रेन्ड में २४० के आसपास बॉटम बनाने के बाद अप्रैल २०१३ के पहले सप्ताह में उसमें इन्वर्टेड कप एन्ड हैन्डल पैटर्न तैयार होने लगा।

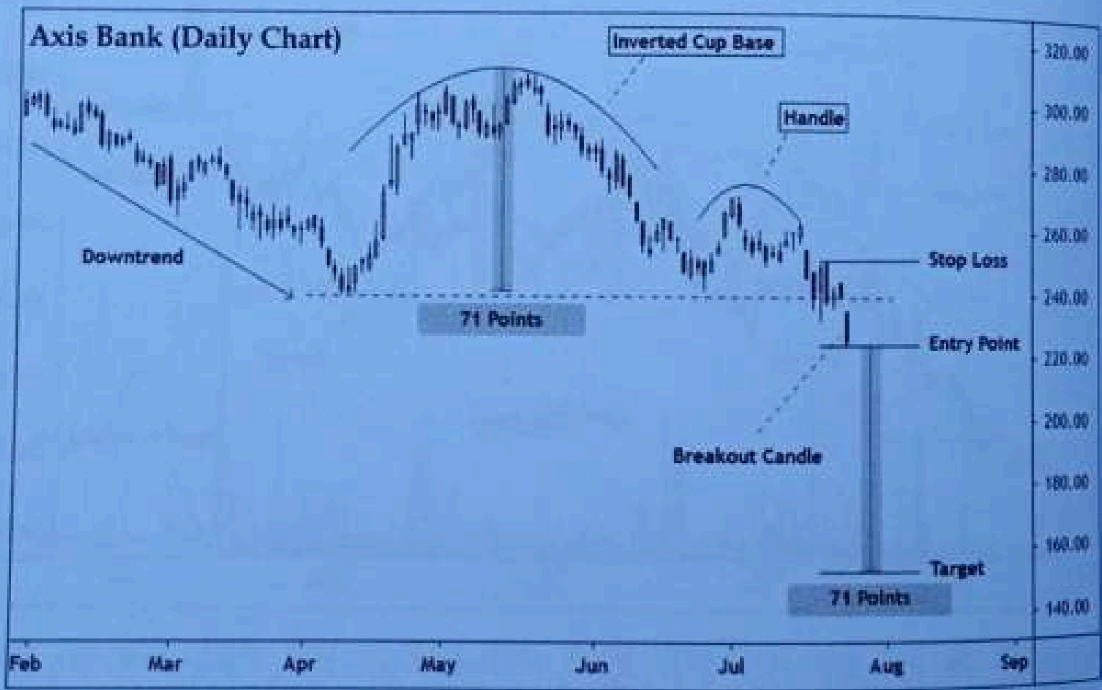

इन्वर्टेड कप का बेस तैयार होने के बाद भाव घटने लगा और वह इन्वर्टेड कप के नेकलाइन तक पहुँच गया और फिर साधारण पुलबैक नज़र आता है। उसके बाद भाव फिर से घटने लगा और इस बीच वह एक अच्छा हैन्डल तैयार करता है।

अंत में, २३ जुलाई २०१३ को भाव गॅप डाउन खुला और नेकलाइन को तोड़ता है और दिन के अंत में मजबूत बेअरीश कैन्डल तैयार होती है।

अब २२४ (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और लगभग १५३ (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से ७१ पॉइन्ट्स नीचे) पर टारगेट लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को २५० (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

नीचे दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद किस प्रकार का प्राइस एक्शन नज़र आया और कई दिनों से एन्ट्री प्राइस के आसपास कन्सॉलिडेशन के बाद भाव में उल्लेखनीय गिरावट नज़र आई।

शेअर्स अपनी दिशा बदलने से पहले २२४ से घटकर १५२.७० के निचले स्तर पर पहुँचता है और टारगेट को पार करता है।

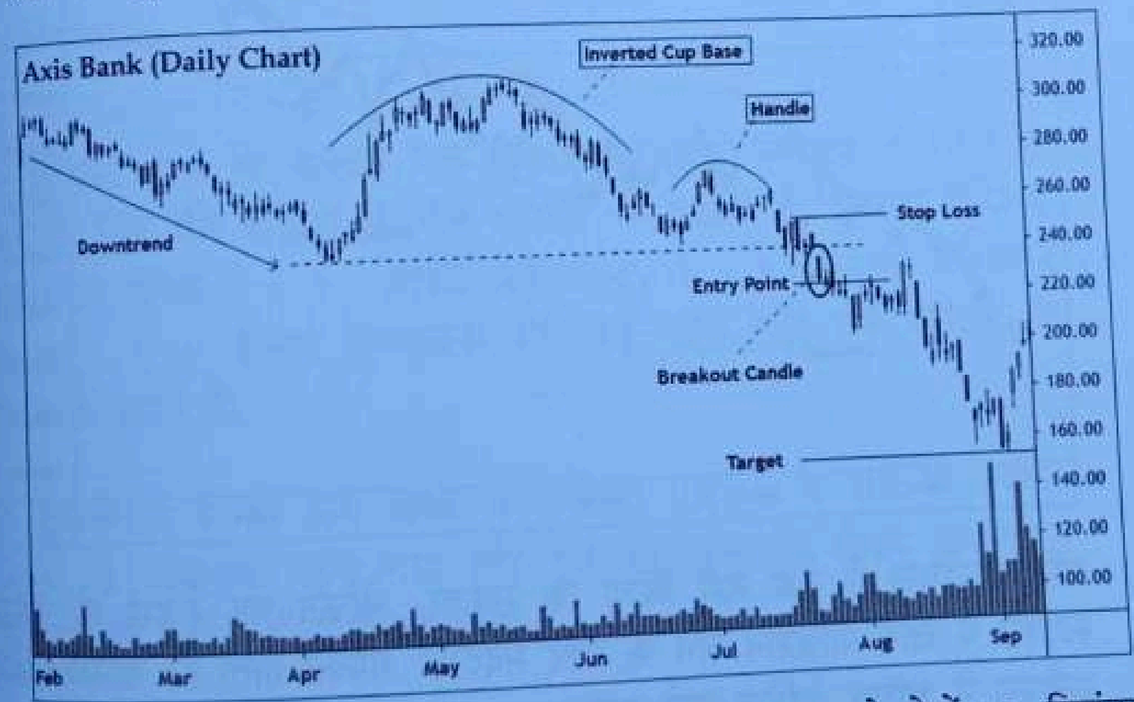

अब जब टारगेट प्राप्त होता है तब कैन्डल की रचना को देखें। ३ सितंबर २०१३ को एक लॉंग बॉडी बेअरीश कैन्डल तैयार होने के बाद, अगले दिन भाव पिछले दिन के बंद से ऊपर खुला और उसके बाद नीचे जाने का प्रयास करता है, लेकिन पिछले दिन के निचले स्तर (लो) तक वह नहीं जा सका और बढ़ने लगा।

यह स्पष्ट संकेत देता है कि अब रिवर्सल हो सकता है और शॉर्ट सेलर्स के लिए उनकी पोजिशन स्क्वेअर ऑफ करके लगभग १६० के आसपास मुनाफा बुक करने के लिए यह एक अच्छी चेतावनी हो सकती है।

केस स्टडी २० : राइजिंग चैनेल (कन्टिन्यूएशन)

नीचे निफ्टी ऑटो (सीएनएक्स ऑटो) का जनवरी २००९ से साप्ताहिक चार्ट दिखाया है। अपट्रेन्ड के बाद दिसंबर २०११ से उसमें राइजिंग चैनेल पैटर्न तैयार होने लगा।

मार्च २०१४ के आखरी सप्ताह में भाव ने ऊपर की दिशा में ब्रेकआऊट दिया और पिछले अपट्रेन्ड के कन्टिन्यूएशन को कन्फर्म किया।

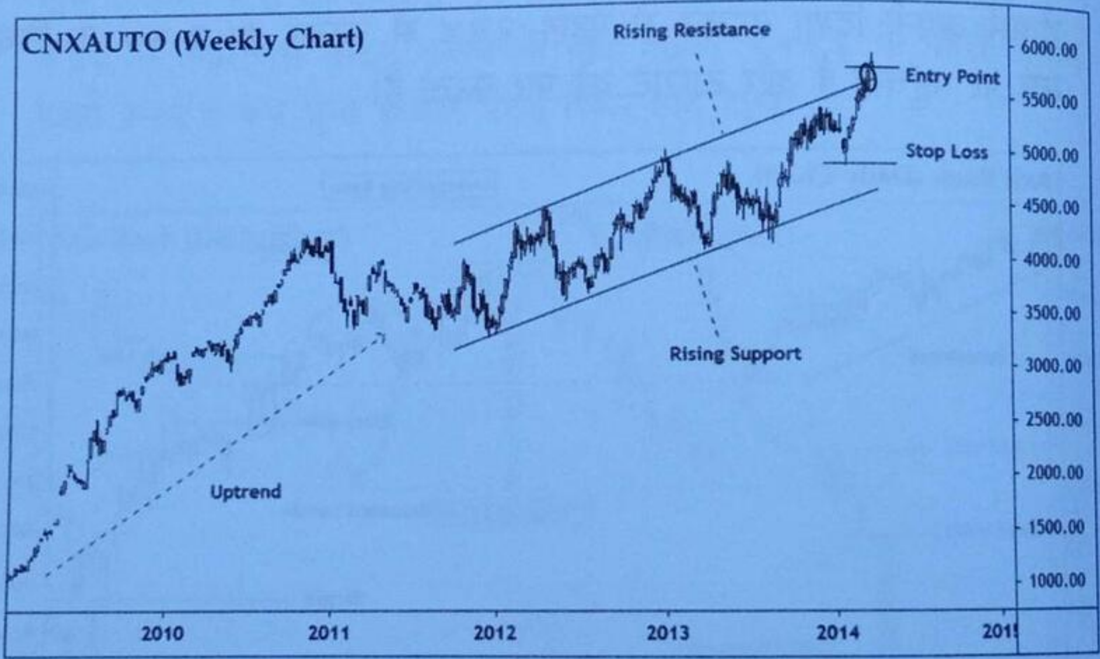

ऑटो इन्डेक्स में ट्रेड नहीं किया जा सकता, लेकिन वह ट्रेडर्स को ऑटो स्टॉक्स में लाँग पोजिशन लेने के लिए मददगार साबित होता है, खासकर उस इन्डेक्स में अधिक वेईटेज वाले स्टॉक्स।

अब हमारे एनालिसिस के लिए, ५७६३.३० (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ४८५८ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है।

इस मामले में स्टॉप लॉस को पिछले कैन्डल के नीचले स्तर पर लगाया नहीं जाता, क्योंकि यहाँ पर अपना दृष्टीकोण लाँग टर्म के लिए है, शॉर्ट टर्म या मीडियम टर्म के लिए नहीं।

नीचे दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि आगे क्या होता है।

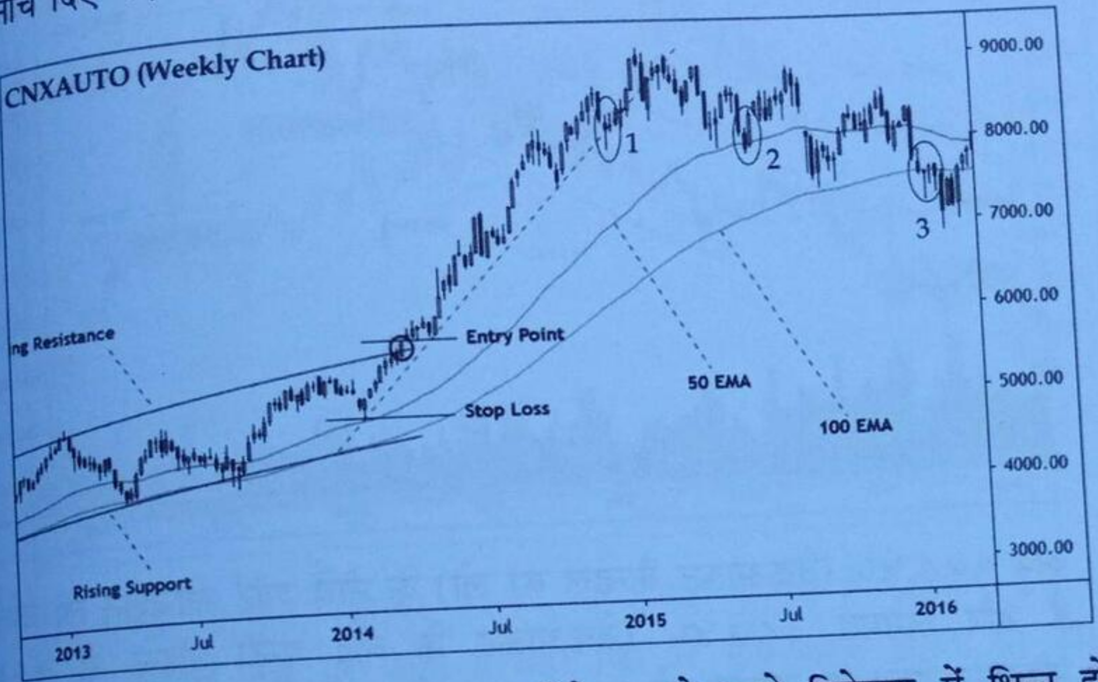

अब एक्झिट करने के मापदंड एक निवेशक से दूसरे निवेशक में भिन्न हो सकते है। नीचे मैंने एक्झिट के तीन मापदंड को दर्शाया है, जिनका निवेशक उपयोग कर सकते है - १ - सपोर्ट ब्रेकआऊट, २ - ५० ईएमए ब्रेकडाउन और ३ - १०० ईएमए ब्रेकडाउन। ऐसे कई अन्य लाँग टर्म एक्झिट के मापदंड हो सकते है।

अब एक साल से भी कम समय में इन्डेक्स ५६०० के स्तर से बढ़कर ८००० के आसपास पहुँच गया और इस कालावधी के दौरान फ्रन्टलाइन ऑटो स्टॉक्स ने नई ऊँचाईयों को छुआ।

केस स्टडी २१ : राइजिंग चैनेल (रिवर्सल)

अगले पन्ने पर टाटा मोटर्स का अप्रैल २०१३ से साप्ताहिक चार्ट दिखाया है। अपट्रेन्ड के बाद अक्टूबर २०१३ से उसमें राइजिंग चैनेल पैटर्न तैयार होने लगा।

लगभग १८ महिनों तक इस चैनेल में अटके रहने के बाद, २० अप्रैल २०१५ से शुरू होने वाले सप्ताह में, भाव ने नीचे की दिशा में ब्रेकआऊट दिया और पिछले अपट्रेन्ड के रिवर्सल को कन्फर्म किया।

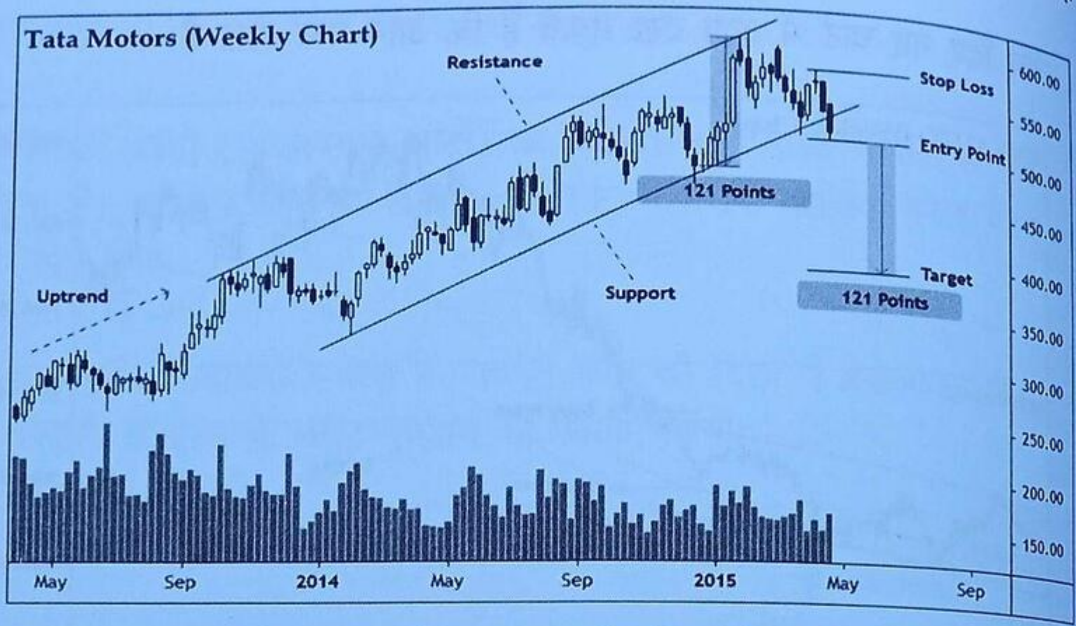

अब ५०८.४५ (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और लगभग ३८७.४५ (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से १२१ पॉइन्ट्स नीचे) पर टारगेट को लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ५७३.५० (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

इस मामले में, पैटर्न ने १८ महिनों के बाद एक लाँग टर्म ब्रेकआऊट दिया। इसलिए हम एक अच्छी गिरावट की उम्मीद कर सकते है और इसलिए ऐसे मामलों में मध्यम कालावधी का पोजिशनल दृष्टीकोण रखना चाहिए।

साथ ही, इस मामले में स्टॉप लॉस को थोड़ा बड़ा रखा जाता है, इसलिए ट्रेडर्स को यह सलाह दी जाती है कि वह अपने ट्रेडिंग कैपिटल के साइज के आधार पर छोटी ट्रेडिंग पोजिशन ले।

अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि आगे क्या होता है।

शॉर्ट ट्रेड में एन्टर होने के बाद, भाव थोड़ा बढ़ने की कोशिश करता है, लेकिन वह सपोर्ट ट्रेन्डलाइन को पार करने में असफल होता है जो अब रेजिस्टन्स के रूप में कार्य करती है। भाव फिर से घटने लगता है और वह १५ जुलाई २०१५ के आसपास ३८७.४५ के टारगेट को पार करता है। लेकिन एक्झिट करने के बजाए शॉर्ट पोजिशन को आगे ट्रेल करते रहना चाहिए।

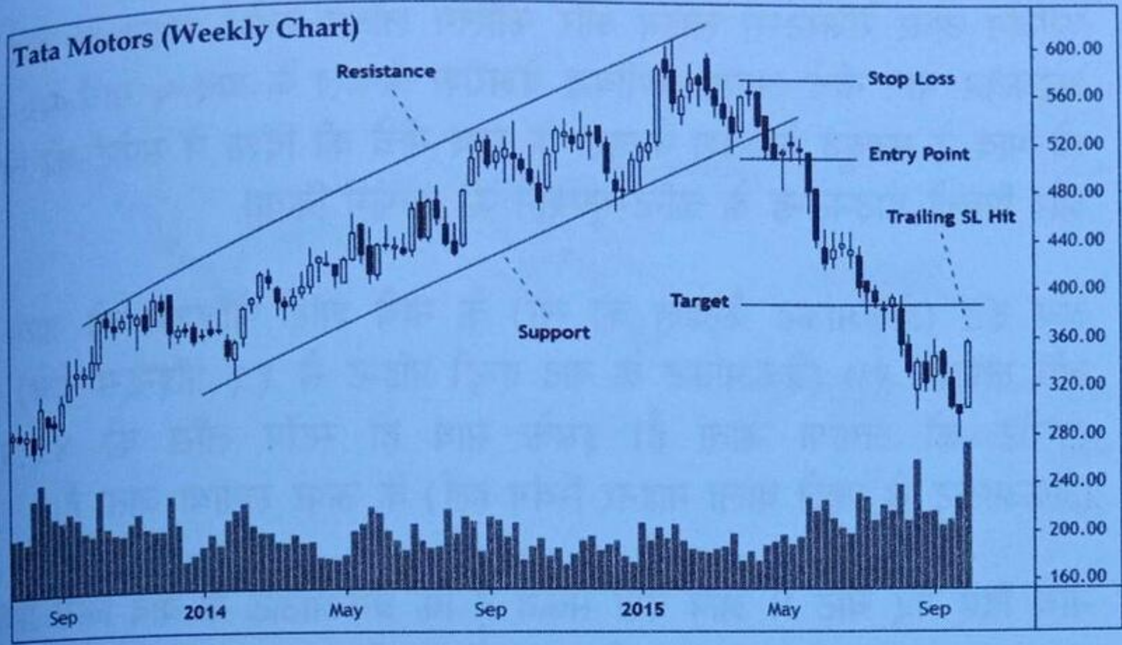

कुछ सप्ताह के बाद, सितंबर २०१५ के पिछले सप्ताह में स्टॉक २७९.१० के नए नीचले स्तर पर जाता है और फिर से भाव बढ़ने लगता है। ट्रेडिंग स्टॉप लॉस ३४५ के आसपास ट्रिगर होता है और ट्रेडर पोजिशन में से बाहर निकल सकता है।

केस स्टडी २२ : फॉलिंग चैनेल (कन्टिन्यूएशन)

जैसे कि नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है, अक्टूबर २०१९ से मार्च २०२० के बीच वेलस्पन इंडिया के दैनिक चार्ट पर फॉलिंग चैनेल पैटर्न तैयार हुआ।

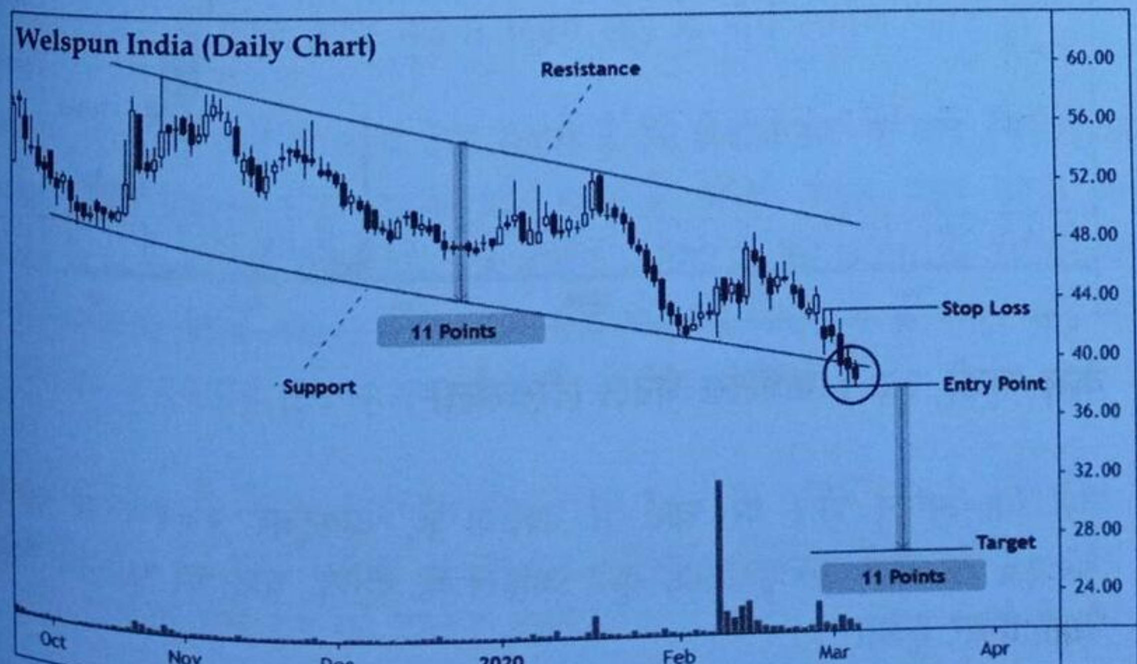

फॉलिंग अपर रेजिस्टन्स लाइन और फॉलिंग लोअर सपोर्ट लाइन के बीच में अटककर भाव नीचे आया। श्रेणीबद्ध बेअरीश कैन्डल के बाद ५ मार्च २०२० को भाव ने मजबूत बेअरीश कैन्डल के साथ नीचे की दिशा में सपोर्ट को तोड़ा और पिछले डाउनट्रेन्ड के कन्टिन्यूएशन को कन्फर्म किया।

अब ३८ (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और लगभग २७ (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से ११ पॉइन्ट्स नीचे) पर टारगेट को लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ४३.२० (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

नीचे दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद किस प्रकार का प्राइस एक्शन नज़र आया और भाव में अच्छी गिरावट नज़र आई। टारगेट को पार करने के साथ ही, शेअर्स का भाव सिर्फ ५ ही ट्रेडिंग सेशन्स में ३८ से गिरकर २२.४० हुआ।

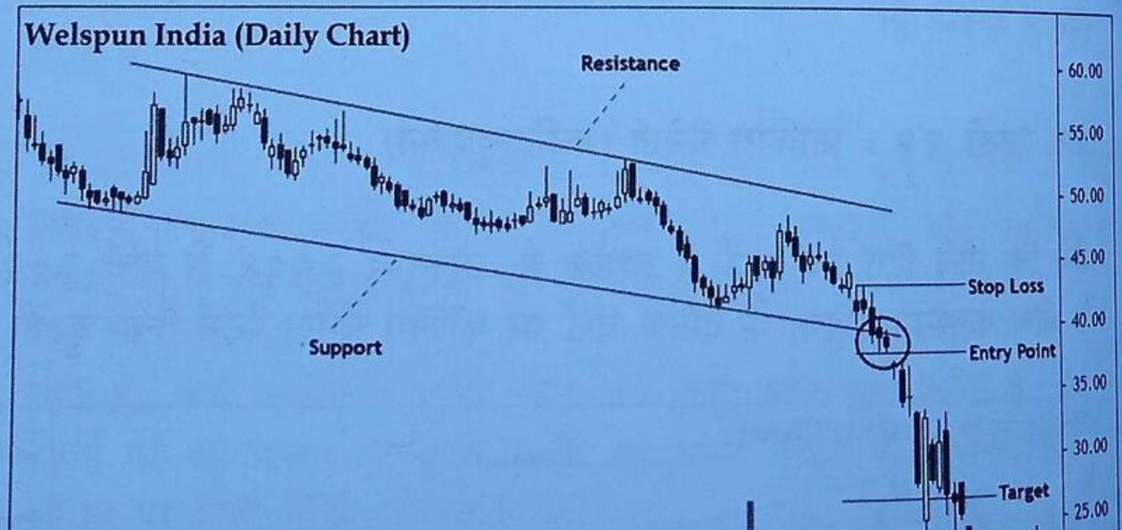

केस स्टडी २३ : फॉलिंग चैनेल (रिवर्सल)

जैसे कि अगले पन्ने पर चार्ट में दर्शाया है, अक्टूबर २०१५ से फरवरी २०१६ के बीच डब्ल्यूटीआई क्रूड ऑईल के दैनिक चार्ट पर फॉलिंग चैनेल पैटर्न तैयार हुआ।

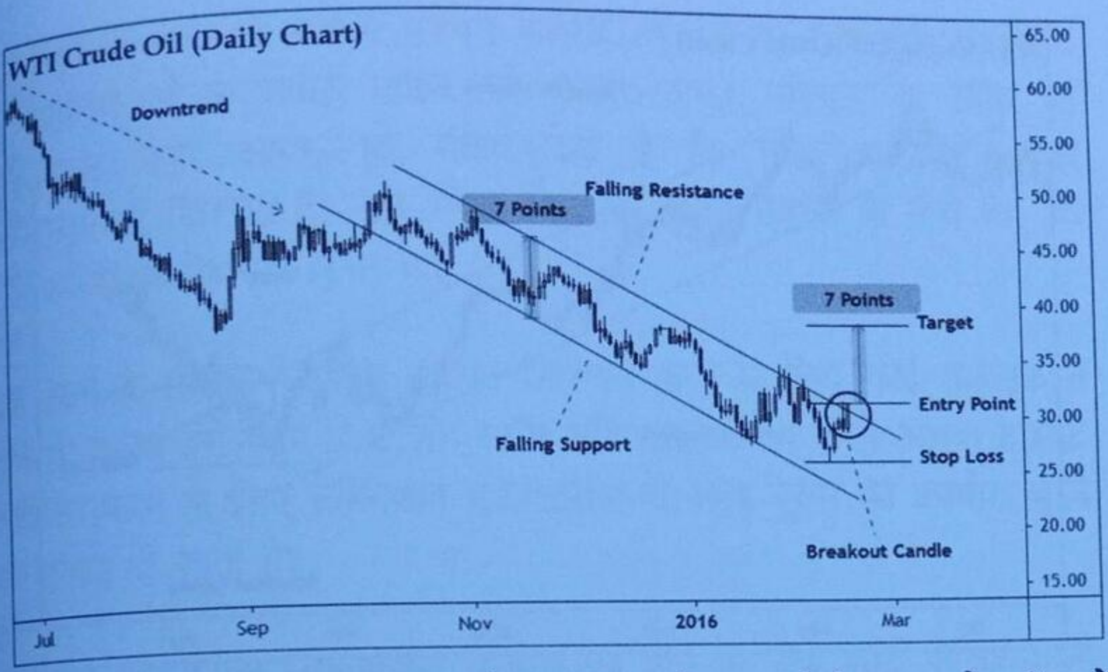

फॉलिंग अपर रेजिस्टन्स लाइन और फॉलिंग लोअर सपोर्ट लाइन के बीच में अटककर भाव ५० से गिरकर २६ पर आया।

१७ फरवरी २०१६ को भाव ने मजबूत बुलिश कैन्डल के साथ ऊपर की दिशा में रेजिस्टन्स को तोड़ा और पिछले डाउनट्रेन्ड के रिवर्सल को कन्फर्म किया।

अब ३१.४१ (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और लगभग ३८.४१ (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से ७ पॉइन्ट्स ऊपर) पर टारगेट को लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को २६.०८ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है।

नीचे दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद किस प्रकार का प्राइस एक्शन नज़र आया और भाव में अच्छी बढ़त नज़र आई। भाव ३८.४१ के टारगेट को सिर्फ १४ ट्रेडिंग सेशन्स में पार करता है। लेकिन बाद में, भाव ६ दिनों तक ३८.५० के स्तर को पार करने में असफल रहा और इसलिए उस समय मुनाफा बुक करने में ही समझदारी है।

कृपया ध्यान दें कि ७ पॉइन्ट्स के टारगेट के लिए लगभग ५.५ पॉइन्ट्स के स्टॉप लॉस के साथ ट्रेडिंग करना एक अनुकूल रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ नहीं है और इसलिए ऐसे ट्रेड को टालना चाहिए।

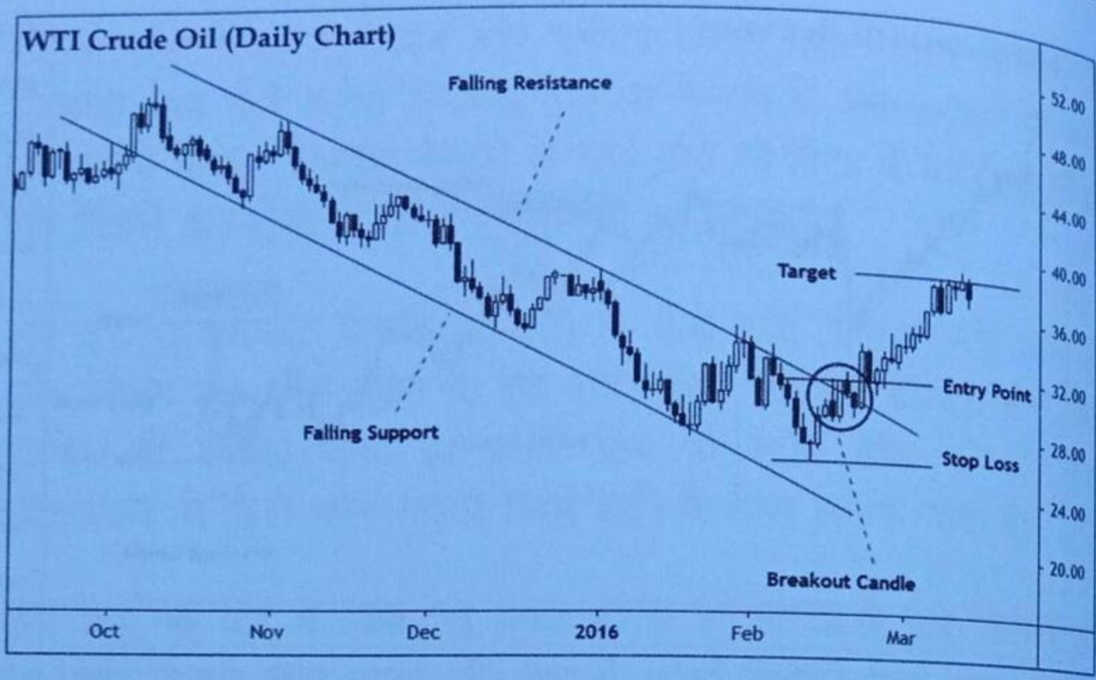

केस स्टडी २४ : राइजिंग वेज (कन्टिन्यूएशन)

जैसे कि नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है, सितंबर २००८ से जून २००९ के बीच अमरिका के सीबीओटी एक्सचेन्ज पर कॉर्न (मकई) फ्यूचर्स के दैनिक चार्ट पर राइजिंग वेज पैटर्न तैयार हुआ।

राइजिंग अपर रेजिस्टन्स लाइन और राइजिंग लोअर सपोर्ट लाइन के बीच में अटककर भाव बढ़ता रहा।

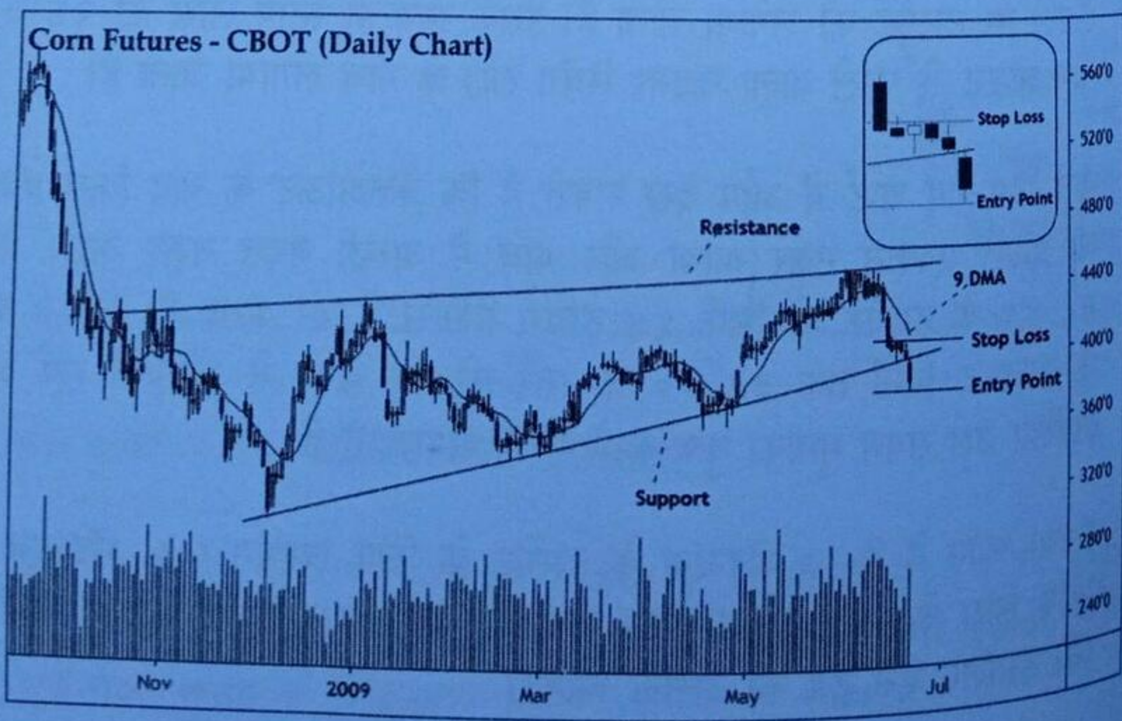

२२ जून २००९ को भाव ने मजबूत बेअरीश कैन्डल के साथ नीचे की दिशा में राइजिंग लोअर सपोर्ट लाइन को तोड़ा। अच्छे वॉल्यूम के साथ यह ब्रेकआऊट नज़र आया, जो संकेत देता है कि पिछले डाउनट्रेन्ड का कन्टिन्यूएशन निश्चित है। भाव भी ९ दिनों के मूविंग एवरेज के नीचे था, जो एक अतिरिक्त बेअरीश ट्रिगर था।

इस पैटर्न के मामले में प्राइस टारगेट निश्चित करने के लिए कोई तकनीक न होने के कारण इस पैटर्न में ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग करने अथवा टारगेट निश्चित करने के लिए टेक्निकल एनालिसिस के अन्य टुल्स का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

अब ३८०.० डॉलर (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ४०८.६ डॉलर (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग हाई) पर टारगेट को लगाया जाता है।

इस मामले में ट्रेडर ९ दिनों के मूविंग एवरेज का ट्रेलिंग स्टॉप लॉस की तरह उपयोग कर सकता है और जब तक भाव उसके नीचे होता है तब तक ट्रेडर उस पोजिशन को होल्ड कर सकता है। यदि भाव ने ९ डीएमए के लेवल को तोड़ा (क्लोजिंग बेसिस पर) और वह बढ़ने लगा तो ट्रेडर को अपनी ट्रेडिंग पोजिशन में से एक्झिट करना चाहिए।

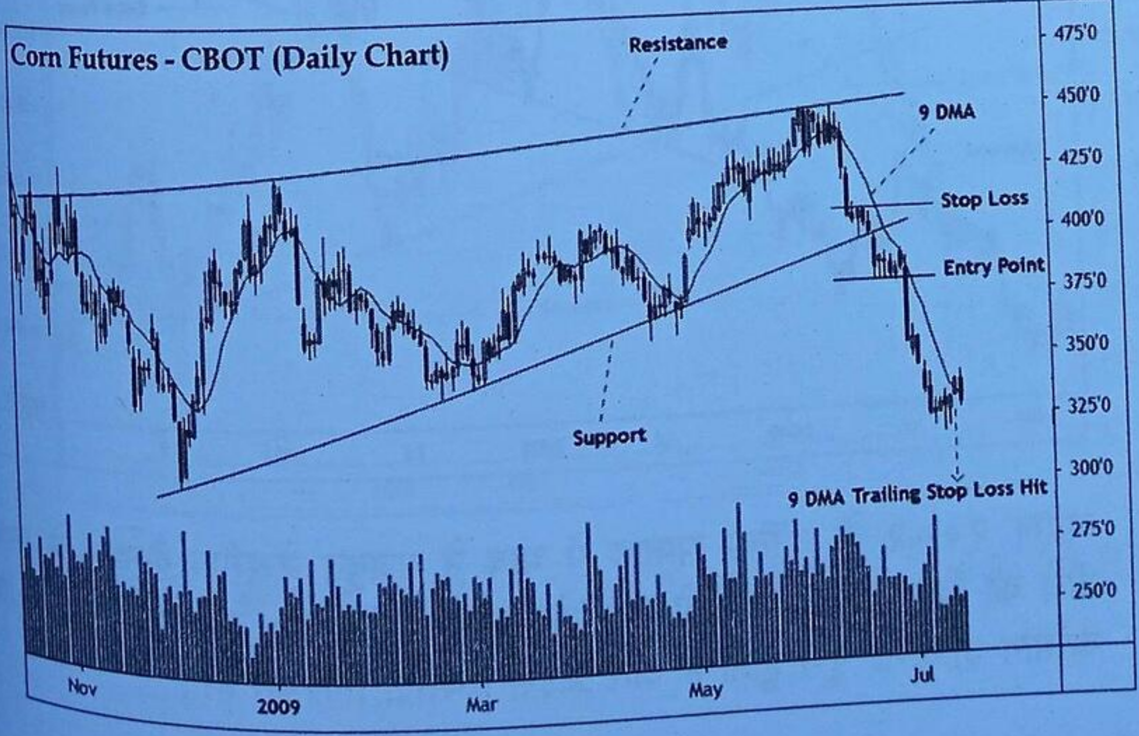

ब्रेकआऊट के बाद, कॉर्न फ्यूचर्स के भाव में उल्लेखनीय गिरावट नज़र आई और १० जुलाई २००९ को भाव ने ३१८.४ डॉलर का निचला स्तर बनाया और उसके बाद बढ़ने लगा।

स्टॉक में लगातार दो बुलिश कैन्डल तैयार हुई, जिससे ट्रेन्ड रिवर्सल का स्पष्ट संकेत मिला। फिर १४ जुलाई २०१९ को भाव ९ डीएमए के ऊपर बंद हुआ और इसलिए ट्रेडर को उसके अगले कारोबारी दिन ३३८-३३९ डॉलर के आसपास अपनी शॉर्ट पोजिशन में से एक्झिट करना चाहिए।

केस स्टडी २५ : राइजिंग वेज (रिवर्सल)

जैसे कि नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है, अप्रैल २००० से अप्रैल २००२ के बीच युएस डॉलर इन्डेक्स के साप्ताहिक चार्ट पर अपट्रेन्ड के बाद राइजिंग वेज पैटर्न तैयार हुआ। राइजिंग अपर रेजिस्टन्स लाइन और राइजिंग लोअर सपोर्ट लाइन के बीच में अटककर भाव बढ़ता रहा।

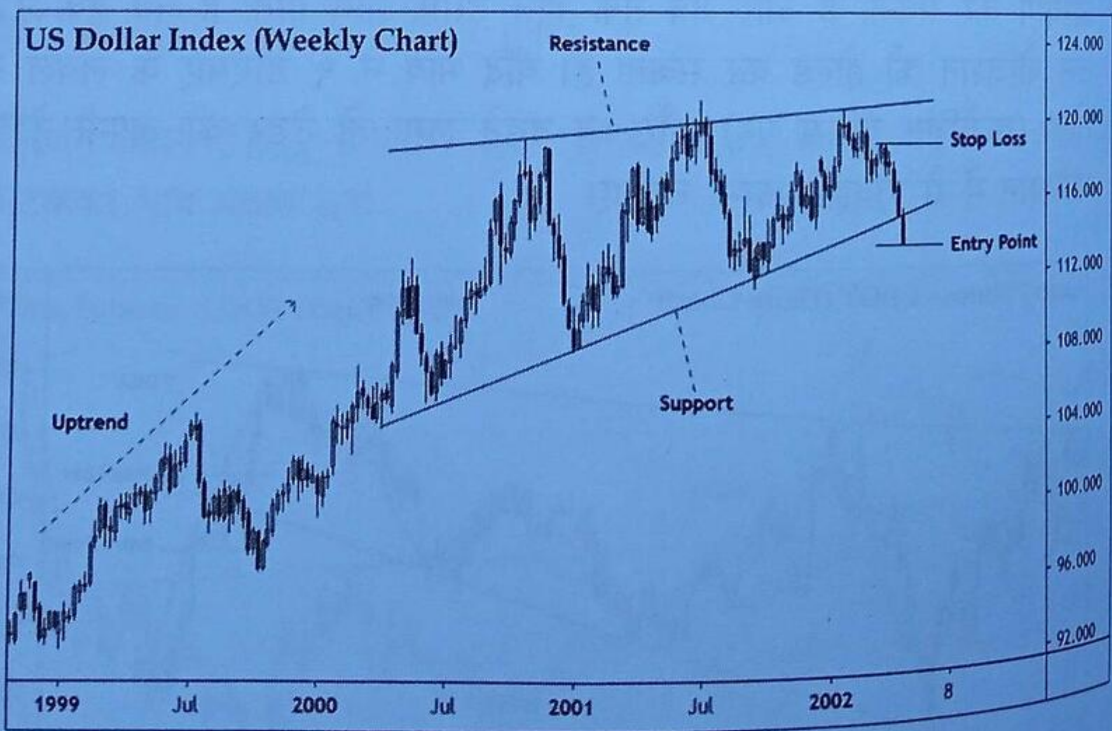

अप्रैल २००२ के अंतिम सप्ताह में भाव ने मजबूत बेअरीश कैन्डल के साथ नीचे की दिशा में राइजिंग लोअर सपोर्ट लाइन को तोड़ा, जो संकेत देता है कि वर्तमान अपट्रेन्ड पूर्ण हुआ है और प्राइस रिवर्सल निश्चित है।

अब ११३.५०० डॉलर (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ११८.८०० डॉलर (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

इस पैटर्न के मामले में प्राइस टारगेट निश्चित करने के लिए कोई तकनीक न होने के कारण इस पैटर्न में ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग करने अथवा टारगेट निश्चित करने के लिए टेक्निकल एनालिसिस के अन्य टुल्स का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

ब्रेकआऊट के बाद, युएस डॉलर इन्डेक्स बहुत ही नीचे आया और जून २००२ के अंतिम सप्ताह में मजबूत बेअरीश कैन्डल तैयार करके भाव ने १०५.३७० का निचला स्तर बनाया।

अगले सप्ताह में एक बुलिश कैन्डल इस प्रकार से तैयार हुई, जिससे पियर्सिंग लाइन पैटर्न का निर्माण हुआ, जिसने बुलिश रिवर्सल का संकेत दिया।

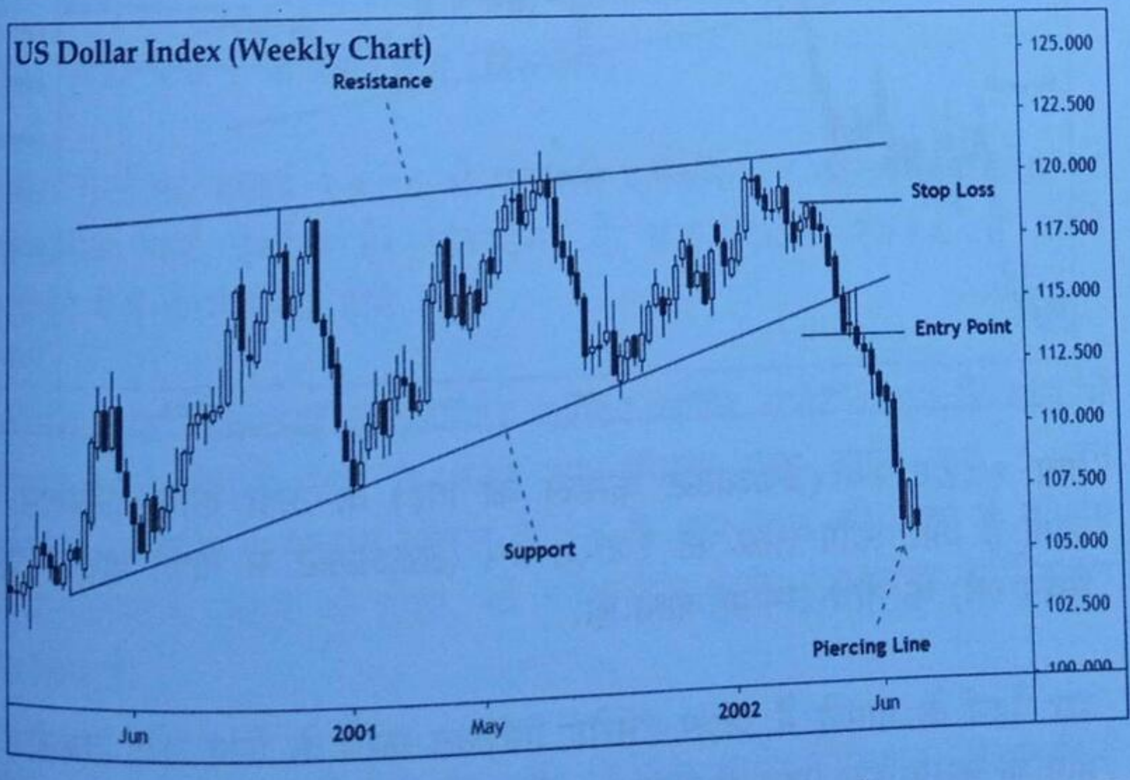

अब प्राइस एक्शन को देखते हुए, ट्रेडर १०७ के लेवल के आसपास मुनाफा बुक करके ट्रेड में से बाहर निकल सकता है।

केस स्टडी २६ : फॉलिंग वेज (कन्टिन्यूएशन)

जैसे कि नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है, अगस्त २०१९ से दिसंबर २०१९ के बीच गोल्ड (US$/Oz) के दैनिक चार्ट पर फॉलिंग वेज पैटर्न तैयार हुआ।

फॉलिंग अपर रेजिस्टन्स लाइन और फॉलिंग लोअर सपोर्ट लाइन के बीच में अटककर भाव गिरता रहा।

२३ दिसंबर २०१९ को भाव ने मजबूत लंबी बॉडी और छोटी शैडो वाली बुलिश कैन्डल के साथ ऊपर की दिशा में फॉलिंग अपर रेजिस्टन्स लाइन को तोड़ा, जो संकेत देता है कि पिछले अपट्रेन्ड का कन्टिन्यूएशन निश्चित है।

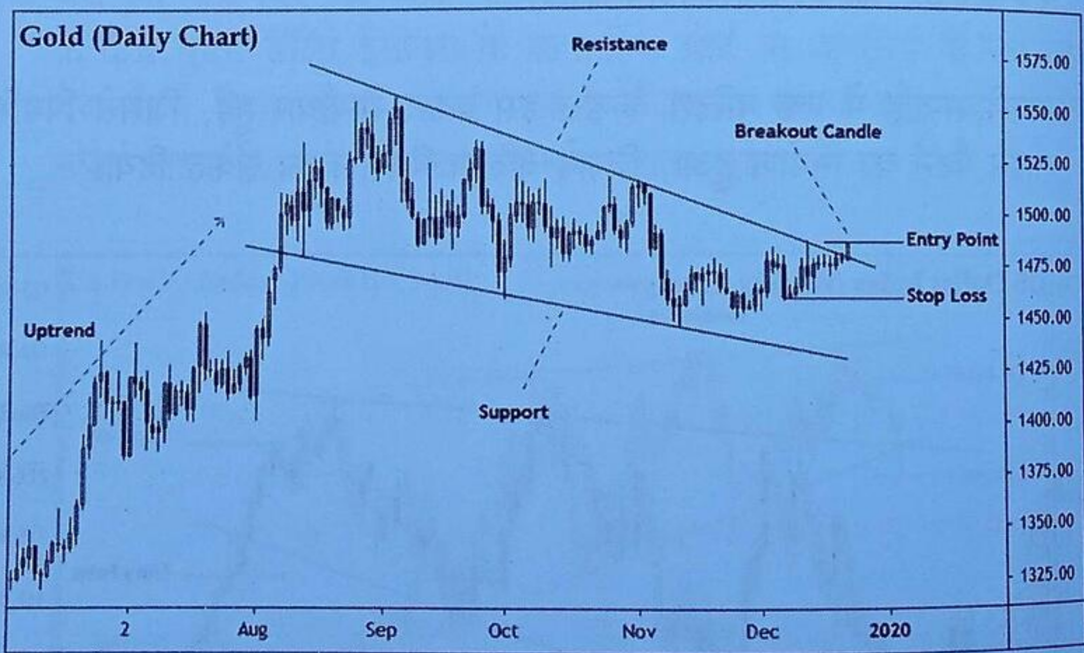

अब १४८६.२० (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लॉंग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को १४५८.८५ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है।

इस पैटर्न के मामले में प्राइस टारगेट निश्चित करने के लिए कोई तकनीक न होने के कारण इस पैटर्न में ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग करने अथवा टारगेट निश्चित करने के लिए टेक्निकल एनालिसिस के अन्य टुल्स का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

आप देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद अच्छी तेजी नज़र आई और गोल्ड के भाव में ६ जनवरी २०२० को १५८७.९३ का नया टॉप नज़र आया। अगले दिन १५६० के आसपास ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ट्रिगर हुआ और ट्रेडर ने पोजिशन को एक्झिट किया।

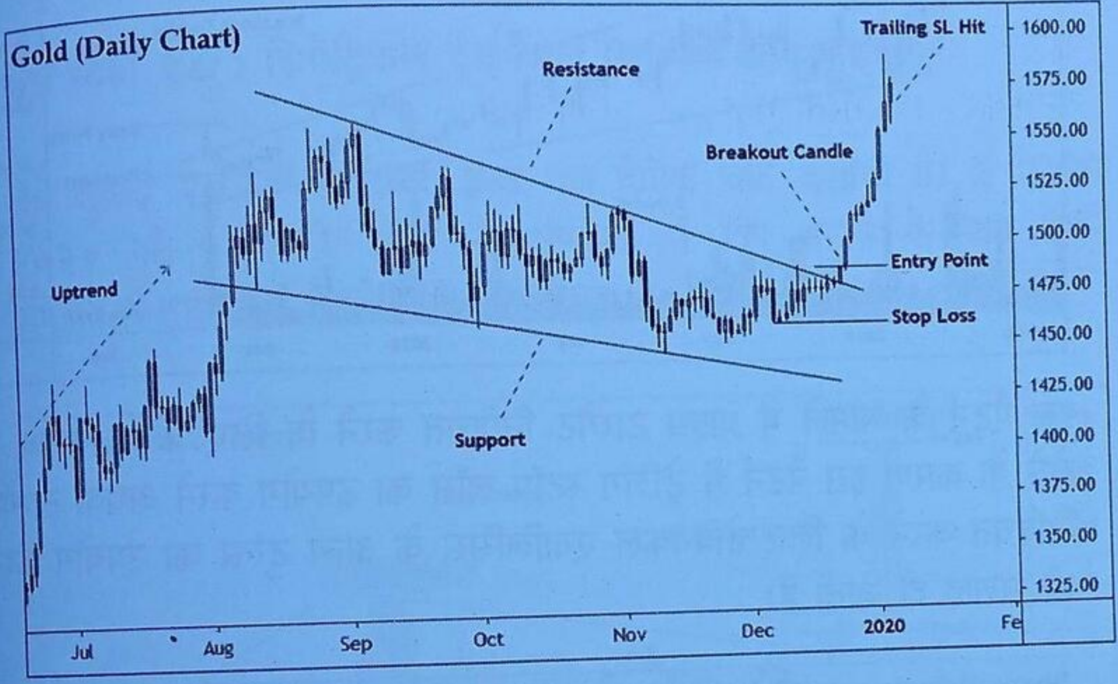

केस स्टडी २७ : फॉलिंग वेज (रिवर्सल)

अगले पन्ने पर जुलाई २०१८ से भन्साली एन्जिनियरिंग पोलिमर लिमिटेड का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है। डाउनट्रेन्ड के बाद दिसंबर २०१८ से उसमें फॉलिंग वेज पैटर्न तैयार होने लगा।

फॉलिंग अपर रेजिस्टन्स लाइन और फॉलिंग लोअर सपोर्ट लाइन के बीच में लगभग १८ महिनों तक अटककर भाव गिरता रहा। उसके बाद ८ जून २०२० को भाव ने मजबूत बुलिश कैन्डल के साथ ऊपर की दिशा में फॉलिंग अपर रेजिस्टन्स लाइन को तोड़ा, जो संकेत देता है कि डाउनट्रेन्ड का रिवर्सल निश्चित है।

अब ५० (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लॉंग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ३४ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है।

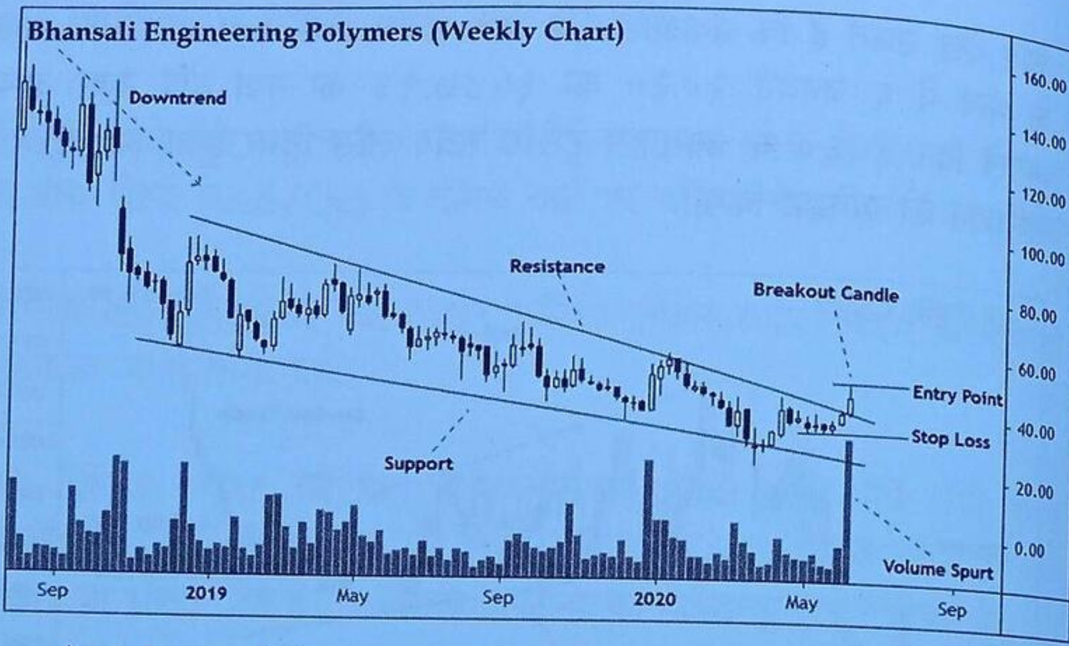

इस पैटर्न के मामले में प्राइस टारगेट निश्चित करने के लिए कोई तकनीक न होने के कारण इस पैटर्न में ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग करने अथवा टारगेट निश्चित करने के लिए टेक्निकल एनालिसिस के अन्य टुल्स का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

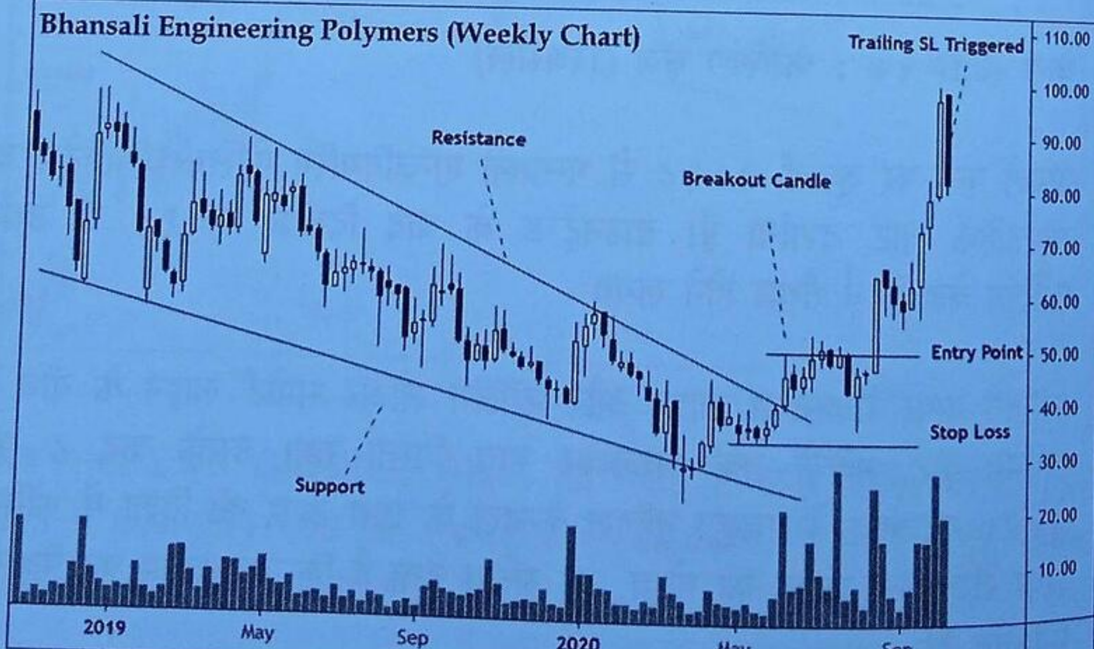

जैसे कि ऊपर दिए गए चार्ट में नज़र आता है, ट्रेड में एन्टर होने के बाद साधारण करेक्शन आया, लेकिन उसके बाद शेअर्स का भाव बढ़ने लगा और सिर्फ चार महिनों में ही उसने अक्टूबर के पहले सप्ताह में ही लाँग बुलिश कैन्डल तैयार करके ९९.९० का नया टॉप बनाया।

लेकिन अगले सप्ताह जब लॉंग बेअरीश कैन्डल तैयार हुई और शेअर्स का भाव टॉप पर से २० प्रतिशत नीचे गिरा, तब ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ट्रिगर हुआ। ऐसा होते हुए भी ट्रेडर को ५० से ८२-८३ के स्तर तक, अप-मूव का एक अच्छा हिस्सा कमाने मिला।

केस स्टडी २८ : सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल (बुलिश कन्टिन्यूएशन)

नीचे जुलाई २०२० से टेस्ला इन्क. का दैनिक चार्ट दर्शाया है। १ सितंबर २०२० को ५०२ के आसपास अपट्रेन्ड में टॉप बनाने के बाद उसमें सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल पैटर्न तैयार होने लगा।

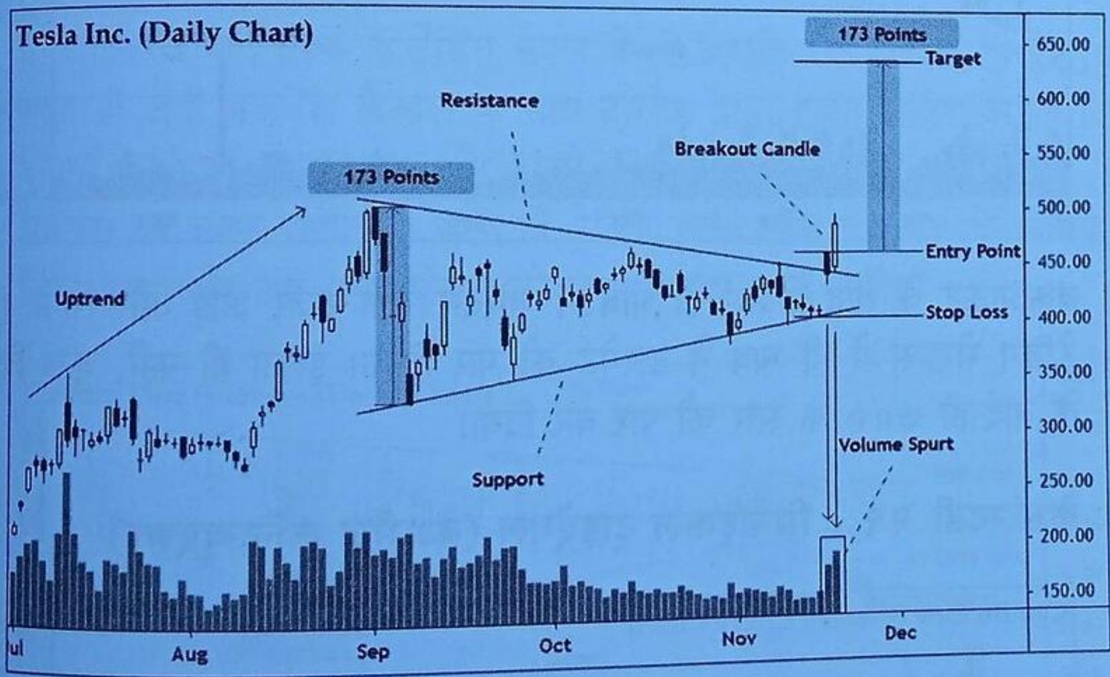

ट्रेडिंग रेन्ज संकरी (कम) होने लगती है और अंत में १७ नवंबर २०२० को भाव ने अच्छे वॉल्यूम के साथ अपर रेजिस्टन्स लाइन को तोड़ा लेकिन अपर रेजिस्टन्स लाइन के ऊपर बंद होने में असफल हुआ। भाव अपर रेजिस्टन्स लाइन के थोड़ा नीचे बंद हुआ, इसलिए हमें थोड़ी राह देखनी चाहिए।

अगले दिन शेअर्स का भाव पिछले दिन के बंद भाव के ऊपर खुला और बढ़ने लगा। अब भाव जब पिछले दिन के टॉप के ऊपर जाता है, तब एन्ट्री ली जाती है।

अब ४६२ (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और लगभग ६३५ (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से १७३ पॉइन्ट्स ऊपर) पर टारगेट को लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ४०१.५ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है।

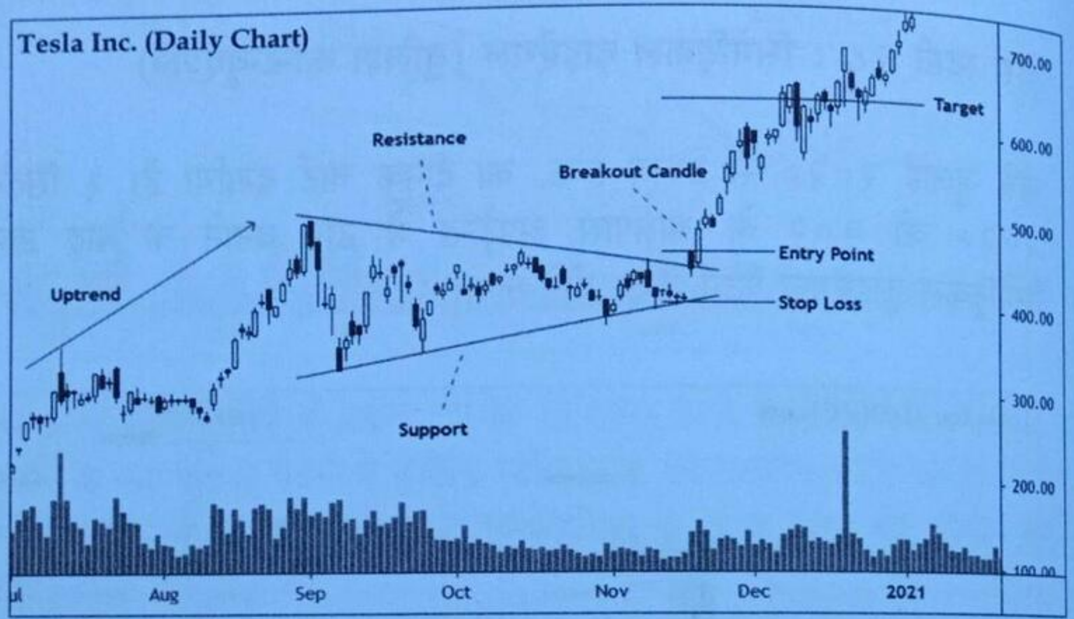

ब्रेकआऊट के बाद शेअर्स के भाव में जोरदार रैली नज़र आई और सिर्फ १२ ट्रेडिंग सेशन्स में ही भाव ने टारगेट को पार किया। इतना ही नहीं, कुछ दिनों के बाद ही ७०० के स्तर को पार कर दिया।

केस स्टडी २९ : सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल (बेअरीश कन्टिन्यूएशन)

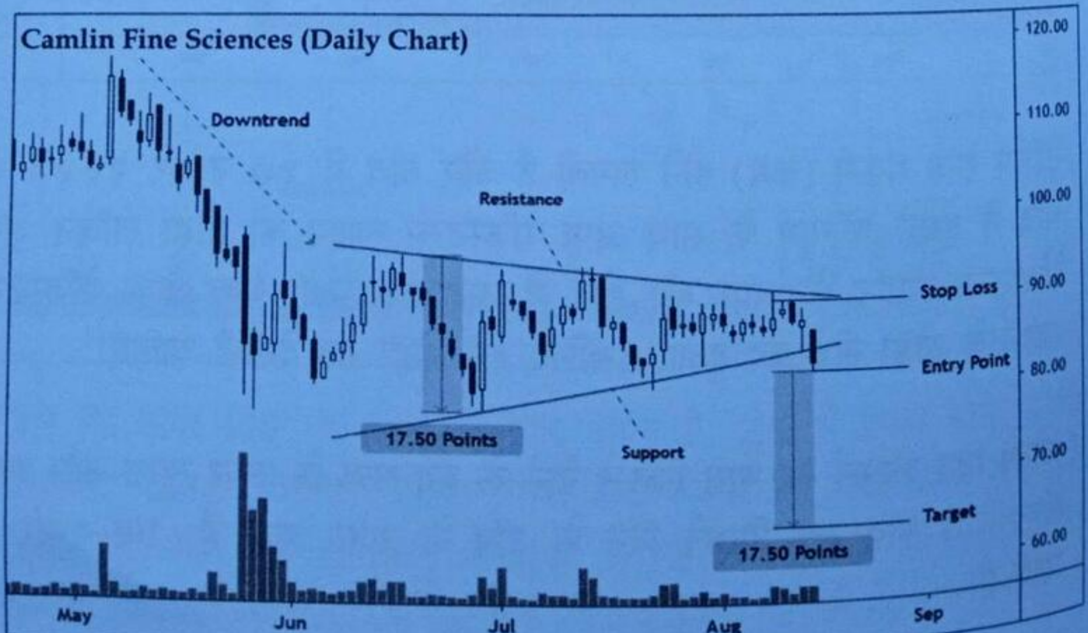

पिछले पन्ने पर अप्रैल २०१८ से कैमलिन फाइन सायन्सीस का दैनिक चार्ट दर्शाया है। जून २०१८ से उसमें सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल पैटर्न तैयार होने लगा।

ट्रेडिंग रेन्ज संकरी (कम) होने लगती है और अंत में १४ अगस्त २०१८ को भाव ने लोअर सपोर्ट लाइन को तोड़ दिया।

अब ८२ (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और लगभग ६४.५० (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से १७.५० पॉइन्ट्स नीचे) पर टारगेट को लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ९० (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

ब्रेकडाउन के बाद सिर्फ ९ ट्रेडिंग सेशन में ही अर्थात २९ अगस्त २०१८ को बहुत ही लंबी बेअरीश कैन्डल के साथ टारगेट प्राप्त हुआ। लेकिन अगले दिन शेअर्स का भाव ऊपर खुला और अच्छे वॉल्यूम के साथ आगे बढ़ने लगा, जो रिवर्सल का स्पष्ट संकेत है। जल्द ही ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ६७.५० के आसपास ट्रिगर हुआ और उस समय ट्रेडर्स को मुनाफा बुक करना चाहिए।

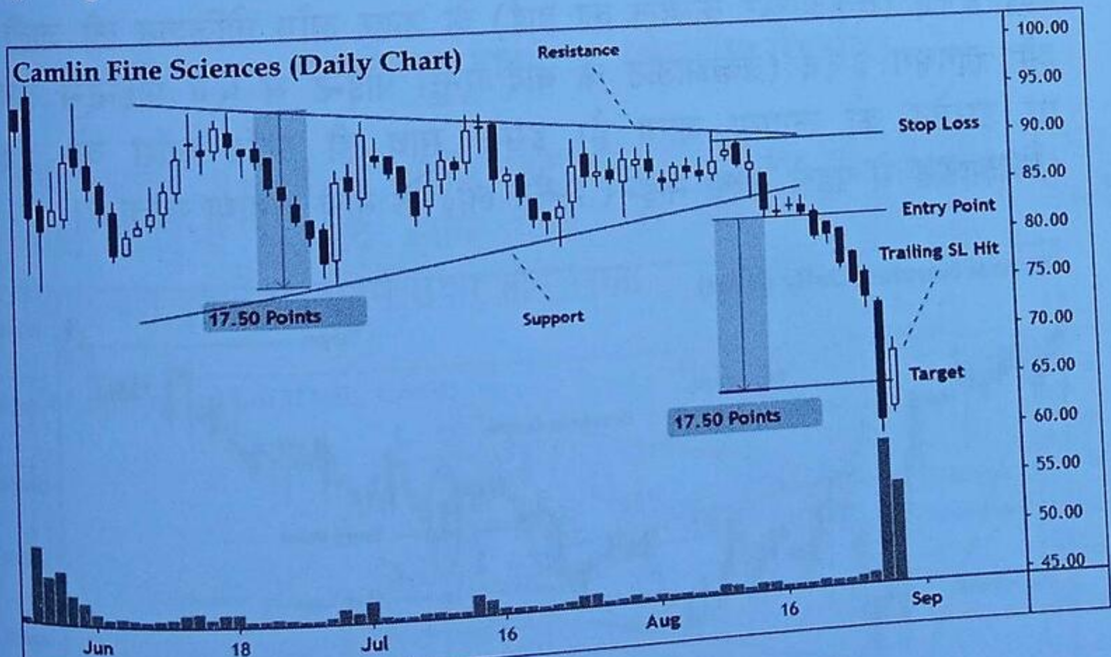

केस स्टडी ३० : सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल (बुलिश रिवर्सल)

अगले पन्ने पर अक्टूबर २०१६ से कंसाई नेरोलैक का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

२१ नवंबर २०१६ को ३०२ के आसपास डाउनट्रेन्ड में बॉटम बनाने के बाद उसमें सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल पैटर्न तैयार होने लगा।

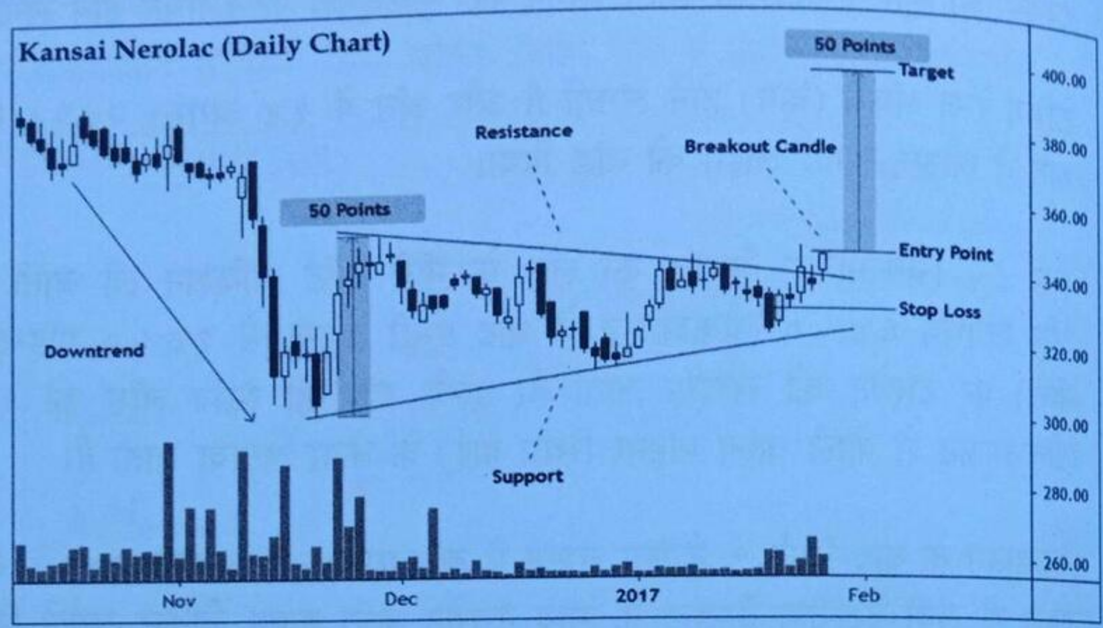

ट्रेडिंग रेन्ज संकरी (कम) होने लगती है और अंत में २५ जनवरी २०१७ को भाव ने अच्छे वॉल्यूम के साथ अपर रेजिस्टन्स लाइन को तोड़ दिया।

अब ३४६ (ब्रेकआऊट कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और लगभग ३९६ (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से ५० पॉइन्ट्स ऊपर) पर टारगेट को लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ३३० (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है।

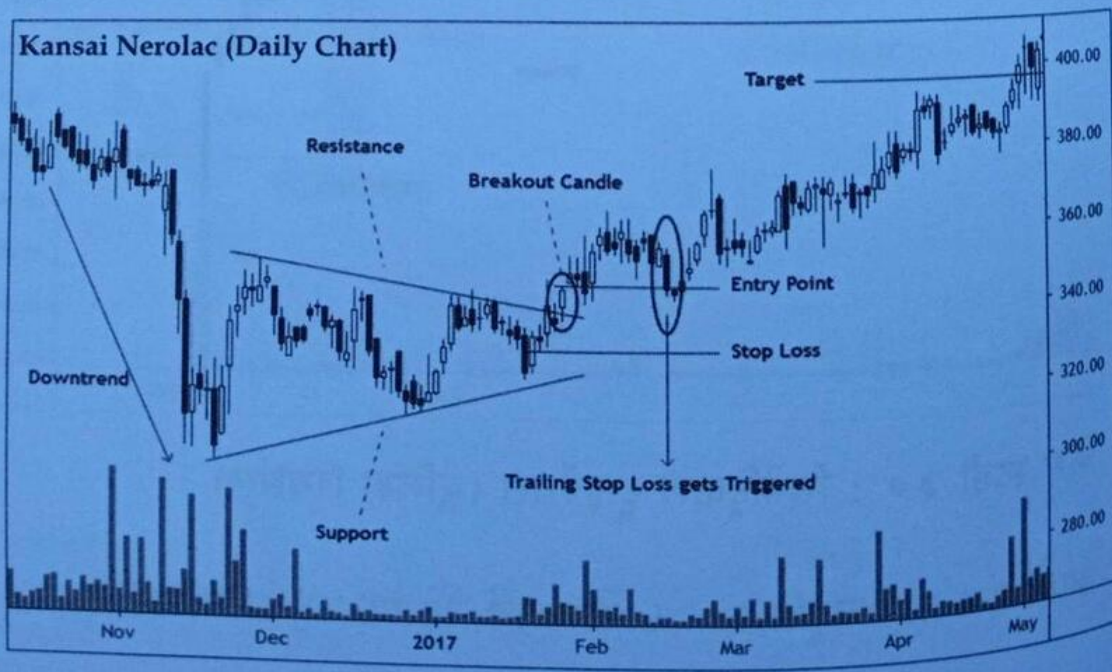

शेअर्स का भाव ३४६ से बढ़कर ३६४ हुआ और उसके बाद उसमें फिर से करेक्शन शुरू हुआ और वह फिर से एन्ट्री लेवल पर आया। इस लेवल पर कई ट्रेडर्स का ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ट्रिगर हुआ होगा और उस लेवल पर पोजिशन को एक्झिट करने की स्पष्ट सलाह मैं ट्रेडर्स को देता हूँ। इस मामले में, ट्रेडर्स ज्यादा नहीं गवाँते है, क्योंकि उनकी एक्झिट प्राइस उनके एन्ट्री प्राइस के बहुत ही नजदीक होती है।

हम उसके बाद की स्थिति को देखते है तो नज़र आता है कि स्टॉक फिर से वापसी करता है और अपने टारगेट को पार करता है। लेकिन ट्रेडर्स को ऐसी बातों पर कभी अफसोस नहीं करना चाहिए। ट्रेडिंग के खेल का यह भी एक हिस्सा है। हर समय आपके अनुकूल हो ऐसी स्थिति तो जीवन में भी नहीं होती, तो फिर ट्रेडिंग में कैसे होगी।

महत्वपूर्ण यह है कि आपने जिस स्टॉप लॉस की स्ट्रैटजी को निश्चित किया है, हमेशा उस पर टिके रहें। स्टॉप लॉस या ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ट्रिगर होने पर पोजिशन को क्लोज करने में जरा भी संकोच न करें। यह एक महत्वपूर्ण सबक है जिसे हर नए ट्रेडर को जल्द से जल्द सीखना चाहिए।

केस स्टडी ३१ : सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल (बेअरीश रिवर्सल)

नीचे फरवरी २०१९ से दिलीप बिल्डकॉन का दैनिक चार्ट दर्शाया है। एक स्पष्ट अपट्रेन्ड के बाद स्टॉक धीमा पड़ा और मार्च २०१९ से उसमें सिमेट्रिकल ट्राइऐंगल पैटर्न तैयार होने लगा।

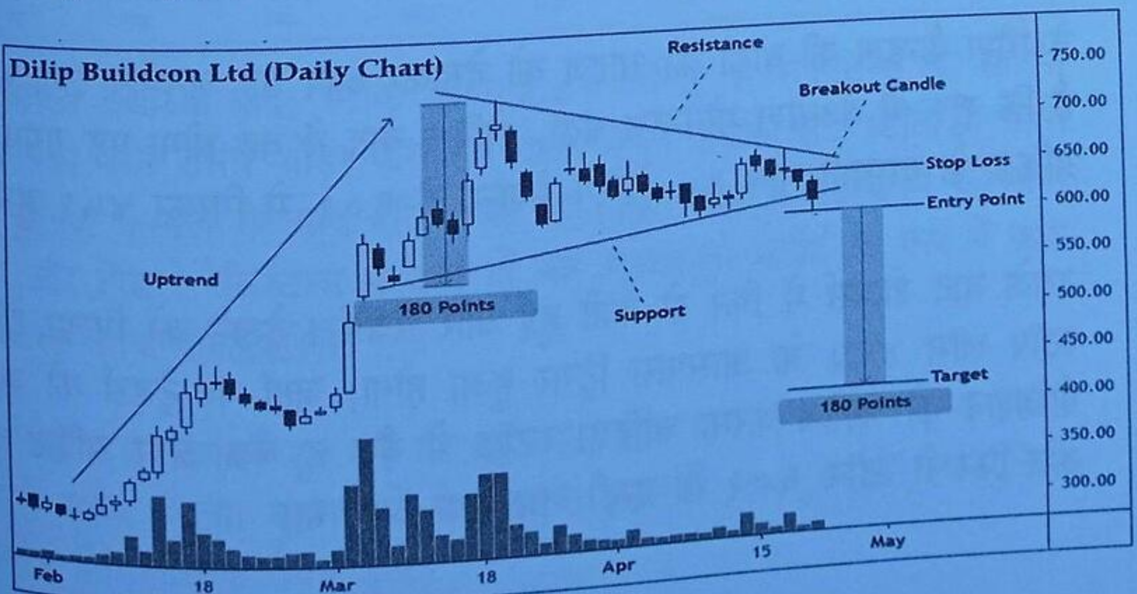

ट्रेडिंग रेन्ज संकरी (कम) होने लगती है और अंत में २३ अप्रैल २०१९ को भाव ने लोअर सपोर्ट लाइन को तोड़ दिया।

अब ६०१ (ब्रेकआऊट कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और लगभग ४२१ (ब्रेकआऊट के बाद एन्ट्री पॉइन्ट से १८० पॉइन्ट्स नीचे) पर टारगेट को लगाया जाता है। इसके साथ ही स्टॉप लॉस को ६४३ (ब्रेकआऊट से पहले वाला माइनर स्विंग हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

आप नीचे दिए गए चार्ट में देख सकते है कि ब्रेकआऊट के बाद क्या हुआ।

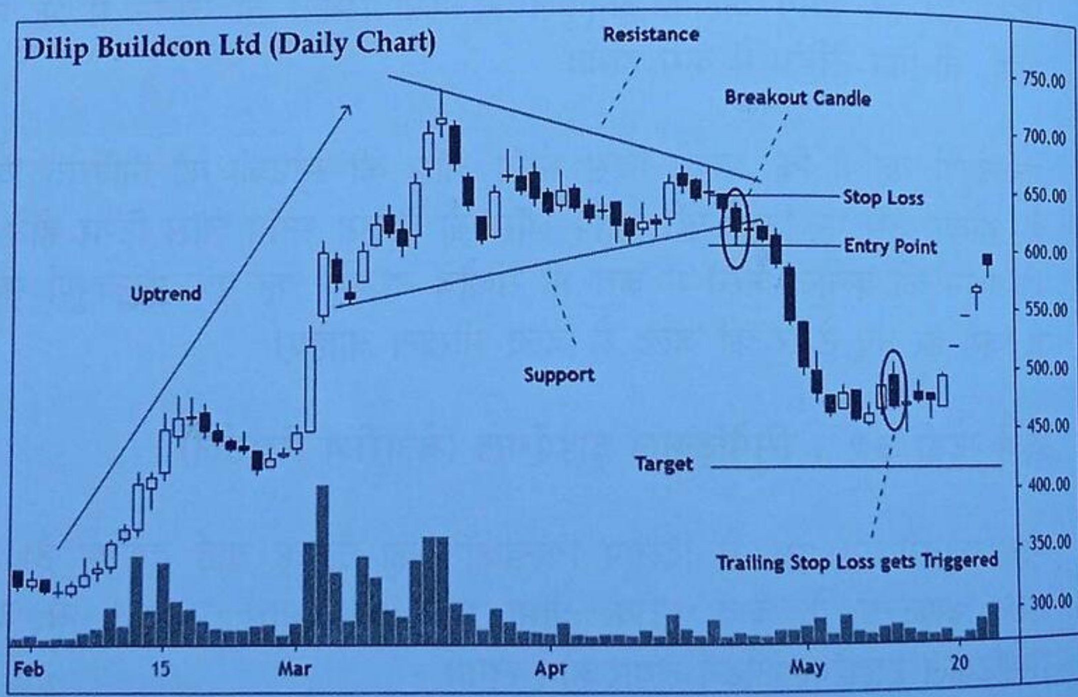

बेअरीश कैन्डल की बॉडी की साइज को देखकर आप यह अनुमान लगा सकते है कि शुरू में बेअरीश मोमेन्टम बढ़ा, लेकिन बाद में वह धीमा पड़ गया। इस प्रक्रिया के दरम्यान भाव १० ट्रेडिंग सेशन्स में ६०१ से गिरकर ४५१ हुआ।

उसके बाद शेअर्स में फिर से तेजी हुई और रिवर्सल देखने को मिला। ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ४९३ के आसपास ट्रिगर हुआ होगा, जहाँ पर ट्रेडर्स को अपनी पोजिशन को क्लोज करना चाहिए। स्टॉक में बैक टू बैक अपर सर्किट लगा और फिर से स्टॉक ६०१ के एन्ट्री लेवल पर आ गया।

इस केस स्टडी में आप स्पष्ट रूप से देख सकते है कि किस प्रकार से ट्रेडर प्रति शेअर १०० रूपयों से ज्यादा का मुनाफा बुक करने में सक्षम था जो लगभग १६% प्रतिशत है।

इसलिए मैं हमेशा एक बात कहता हूँ – ''हमेशा अपनी स्टॉप लॉस स्ट्रैटजी पर टिके रहें और जब भी स्टॉप लॉस या ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ट्रिगर होता है, तब पोजिशन को क्लोज करने में जरा भी संकोच न करें।''

केस स्टडी ३२ : बुलिश मारूबोजू

नीचे जून २०१६ से मेकमायट्रिप लिमिटेड (नास्डेक में लिस्टेड शेअर) का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

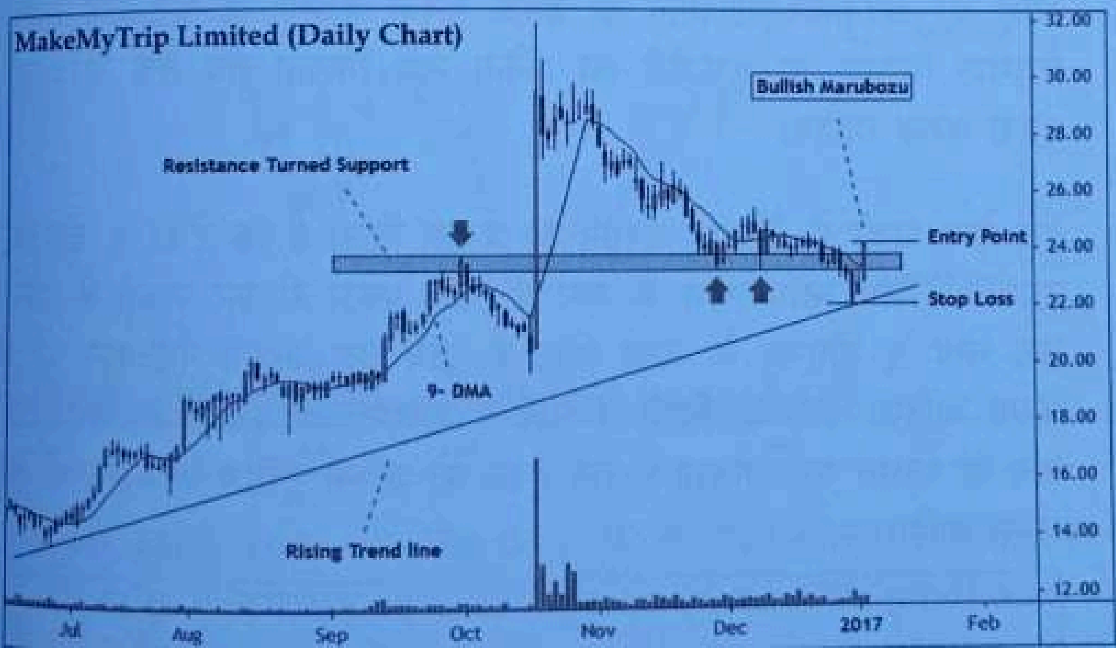

एक अच्छी तेजी के बाद, स्टॉक को २३.८० डॉलर पर रेंजिस्टन्स का सामना करना पड़ा और उसमें थोड़ा करेक्शन देखा गया। उसके बाद स्टॉक ने बहुत बड़ी बुलिश कैन्डल के साथ रेजिस्टन्स को तोड़ा। बाद में स्टॉक में करेक्शन आया और पिछले रेंजिस्टन्स ने अब दो बार महत्वपूर्ण सपोर्ट के रूप में काम किया (लॉ ऑफ पोलारिटी)।

यह सपोर्ट २९ दिसंबर २०१६ को टूट गया और बाद में राइजिंग ट्रेन्ड लाइन पर उसे सपोर्ट मिला। कुछ दिनों के बाद ४ जनवरी २०१७ को एक बुलिश मारूबोजू कैन्डलस्टिक तैयार हुआ।

यहाँ बुलिश मारूबोजू जब तैयार हुआ तब दुसरे कई बुलिश ट्रिगर्स नज़र आए, जैसे कि ९ डीएमए से ब्रेकआऊट, राइजिंग ट्रेन्ड लाइन पर सपोर्ट और एरिया जहाँ रेजिस्टन्स सपोर्ट में बदल गया वहाँ पर सपोर्ट। इन सभी परिबलों के कारण स्टॉक के भाव में जोरदार तेजी की उम्मीद की जा सकती है।

अब २४.२० डॉलर (मारूबोजू कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को २२ डॉलर (मारूबोजू कैन्डल के पहले वाला माइनर स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है।

कैन्डलस्टिक पैटर्न के आधार पर ट्रेडिंग पोजिशन लेने के बाद ट्रेडर को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि ऐसा कोई निश्चित टारगेट नहीं जिसकी पहले से गणना की जा सकें। इसलिए ऐसे मामलों में, ट्रेडर को केवल ट्रेलिंग स्टॉप लॉस को अपनाकर पोजिशन को होल्ड करना चाहिए या जब तक उसे कोई रिवर्सल सिग्नल या कमजोरी का संकेत नहीं मिलता तब तक पोजिशन को होल्ड करना चाहिए।

इस केस स्टडी में मैंने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि ट्रेडर ९ डीएमए का उपयोग ट्रेलिंग स्टॉप लॉस के रूप में किस प्रकार से कर सकते है और जब तक भाव ९ डीएमए के ऊपर होता है, तब तक अपनी पोजिशन को होल्ड करना चाहिए। नीचे की दिशा में भाव ९ डीएमए को (क्लोजिंग बेसीस / बंद भाव के आधार पर) तोड़ता है तब ट्रेडर को अपनी ट्रेडिंग पोजिशन को क्लोज करना चाहिए।

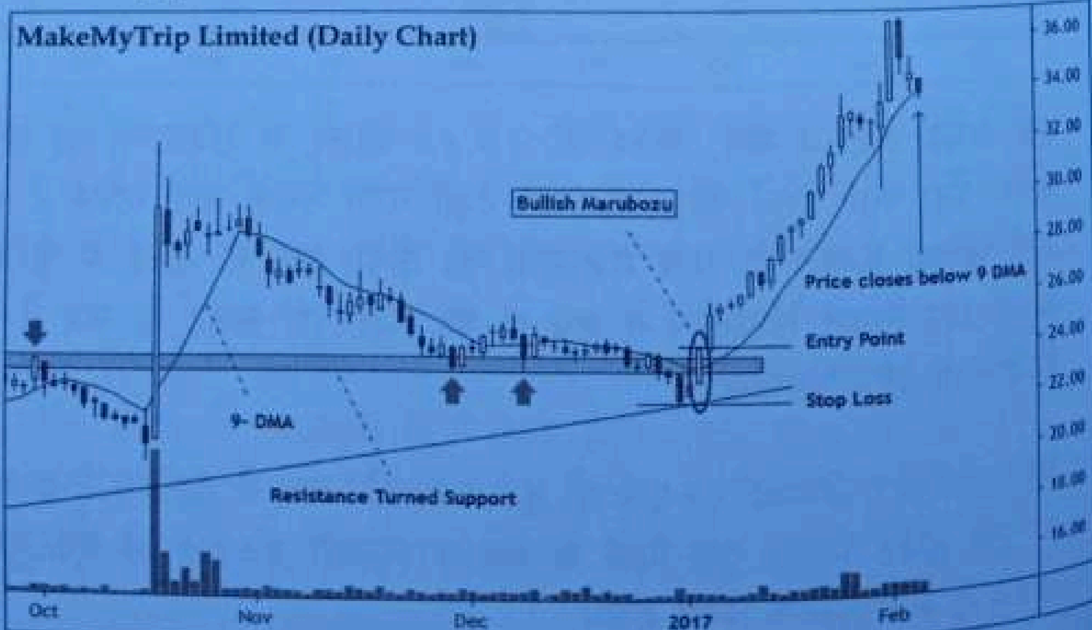

६ फरवरी २०१७ को भाव ९ डीएमए के थोड़ा नीचे बंद हुआ और इसलिए अगले दिन ट्रेडर ने अपनी पोजिशन को एक्झिट किया। भाव २४ डॉलर से बढ़कर ३३ डॉलर हुआ और इस प्रकार से एक महिने के समय में ट्रेडर को लगभग ३८ प्रतिशत की कमाई हुई।

केस स्टडी ३३ : बेअरीश मारूबोजू

नीचे फरवरी २०१५ से सिप्ला का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

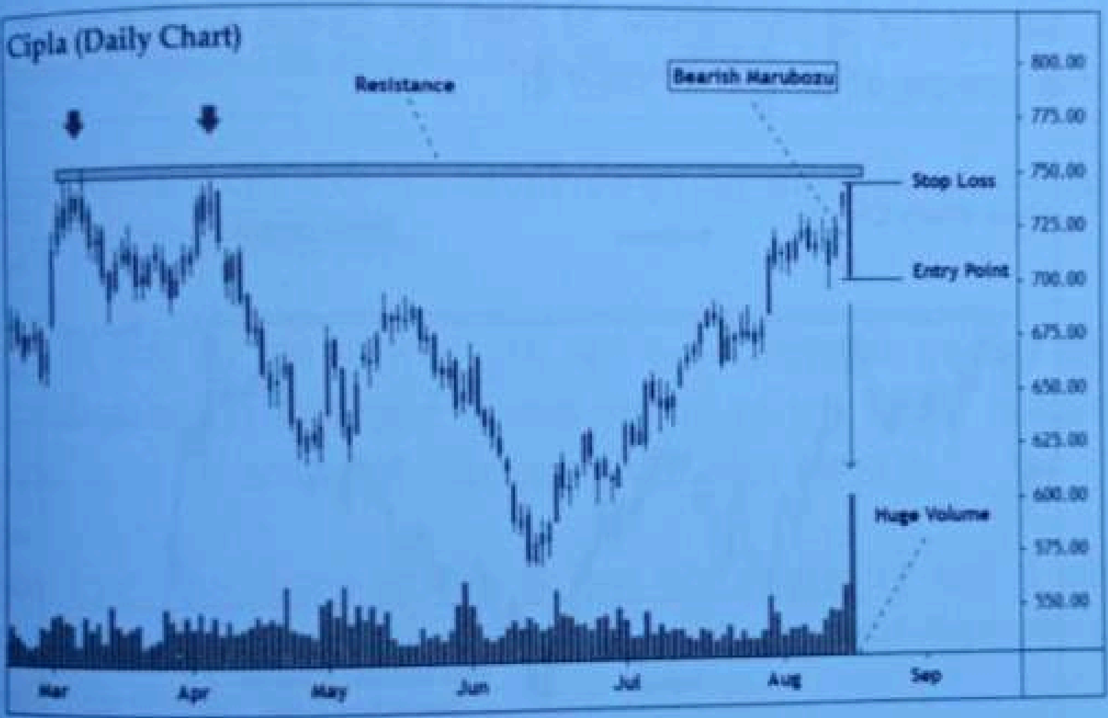

मार्च और अप्रैल २०१५ के बीच ७५० के आसपास डबल टॉप तैयार करने के बाद स्टॉक में करेक्शन आया और जून २०१५ में उसने नीचे में ५७० के लेवल को दिखाया। बाद में स्टॉक ने अपनी दिशा बदली और वह पिछले रेजिस्टन्स लेवल पर आया।

१७ अगस्त २०१५ को स्टॉक में एक बेअरीश मारूबोजू इस प्रकार से तैयार हुआ कि कैन्डल की बॉडी पिछले दिन की कैन्डल के साइज से तीन गुना से भी अधिक थी। यह बेअरीश कैन्डल महत्वपूर्ण रेजिस्टन्स लेवल पर और वह भी भारी वॉल्यूम के साथ तैयार हुई थी। उस दिन उसने बेअरीश एन्गल्फिंग पैटर्न भी तैयार किया। यह सभी परिबल संकेत देते है कि मजबूत बेअरशि रिवर्सल आने वाला है।

अब ७०१ (मारूबोजू कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ७४५ (मारूबोजू कैन्डल का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

आप नीचे दिए गए चार्ट में देख सकते है कि कुछ ही दिनों में शेअर का भाव गिरकर ६२५ के स्तर पर आया। अगले दिन, यानी २५ अगस्त २०१५ को ६१८ के आसपास सपोर्ट लेवल से प्राइस रिजेक्शन नज़र आया।

अब इस तरह के प्राइस एक्शन को देखते हुए ट्रेडर्स ६२० - ६२५ के स्तर के आसपास प्रॉफिट बुक कर सकते है।

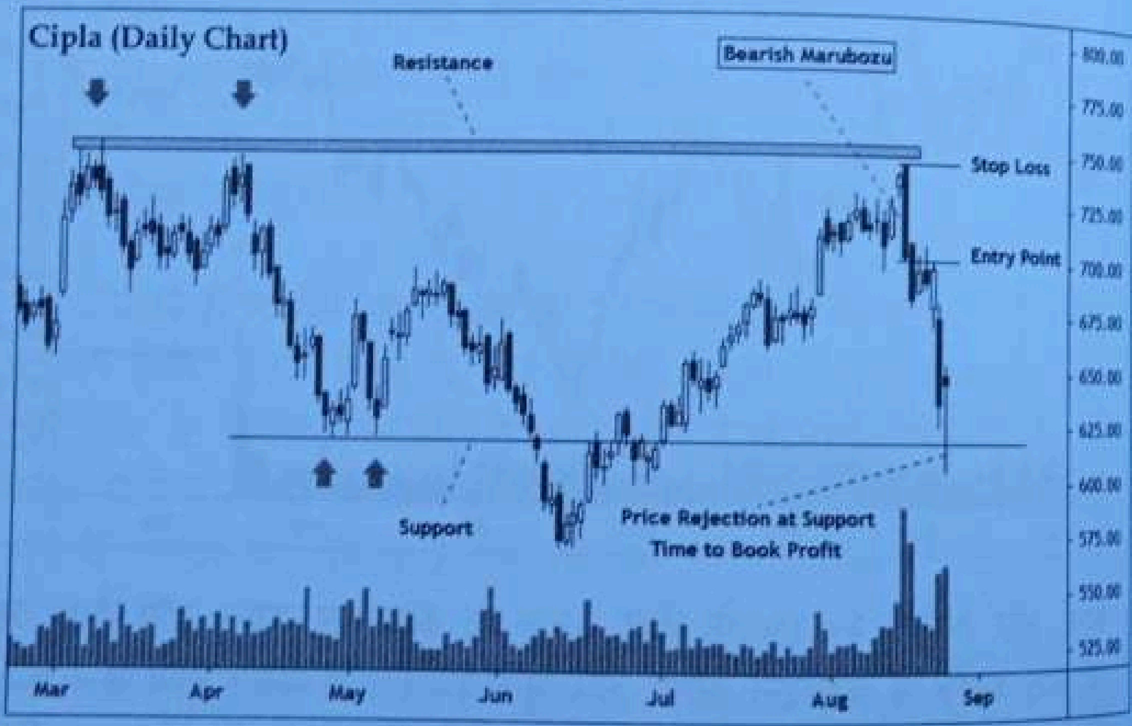

केस स्टडी ३४ : हैमर

अगले पन्ने पर मार्च २०१३ से डाबर इंडिया का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

मार्च २०१३ से शुरू तेजी के बाद, स्टॉक में २५ जुलाई २०१३ को १७७.४० के भाव पर कम कालावधी का टॉप बनाने के बाद करेक्शन शुरू हुआ। थोड़े समय में ही वह फिर से सपोर्ट झोन पर वापस आया, जो पहले रेजिस्टन्स की तरह काम कर रहा था।

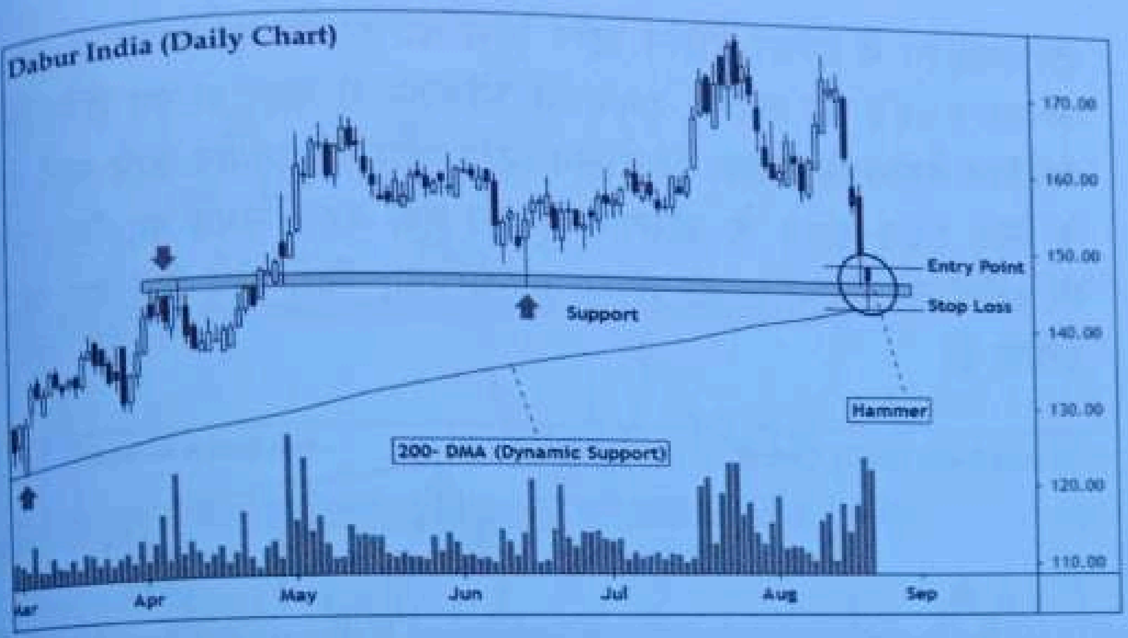

अगले कारोबारी दिन यानी २२ अगस्त २०१३ को हैमर तैयार हुआ, जिसने ट्रेन्ड रिवर्सल का संकेत दिया।

यहाँ पर हैमर उस स्तर पर तैयार हुआ जहाँ २०० डीएमए का सपोर्ट था और उस लेवल पर रेजिस्टन्स सपोर्ट में बदल गया था। इन सभी परिबलों के कारण स्टॉक के भाव में अच्छी तेजी नज़र आएगी ऐसा संकेत मिलता है।

अब १४८ (हैमर कैन्डल का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को १४२.७० (हैमर कैन्डल के पहले वाला माइनर स्विंग लो) के नीचे लगाया जाता है।

अब इस मामले में स्टॉप लॉस लगभग ६ रुपए है लेकिन अगर आप पहले के कैन्डल्स को करीब से देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि स्टॉक के भाव में प्रतिदिन ८-१२ रूपए के आसपास है। इसलिए ऐसे मामलों में आप थोड़ा बड़ा स्टॉप लॉस लगा सकते है या पोजिशनल ट्रेड हो तो बंद भाव (क्लोजिंग बेसीस) के आधार पर स्टॉप लॉस का उपयोग कर सकते है।

जब स्टॉप लॉस को क्लोजिंग बेसीस के आधार पर लगाया जाता है, तब क्लोजिंग प्राइस अर्थात बंद भाव को निष्कर्ष पर आने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। हालाँकि इन्ट्राडे में भाव स्टॉप लॉस के नीचे भी जा सकता है, लेकिन बंद भाव कहाँ पर है यह देखना पड़ता है और आपका स्टॉप लॉस ट्रिगर नहीं होता, यदि बंद भाव उससे ऊपर हो तो।

इस उदाहरण में सिंपल ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग करने वाले ट्रेडर्स २८ अगस्त २०१३ को लगभग १५२ पर पोजिशन से बाहर हो गए होंगे। लेकिन क्लोजिंग बेसीस के आधार पर ट्रेलिंग स्टॉप लॉस का उपयोग करने वाले ट्रेडर्स के लिए १७२-१७३ के आसपास मुनाफा बुक करना संभव था, जिस लेवल पर स्टॉक को रेजिस्टन्स का सामना करना पड़ा, जिसे नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है।

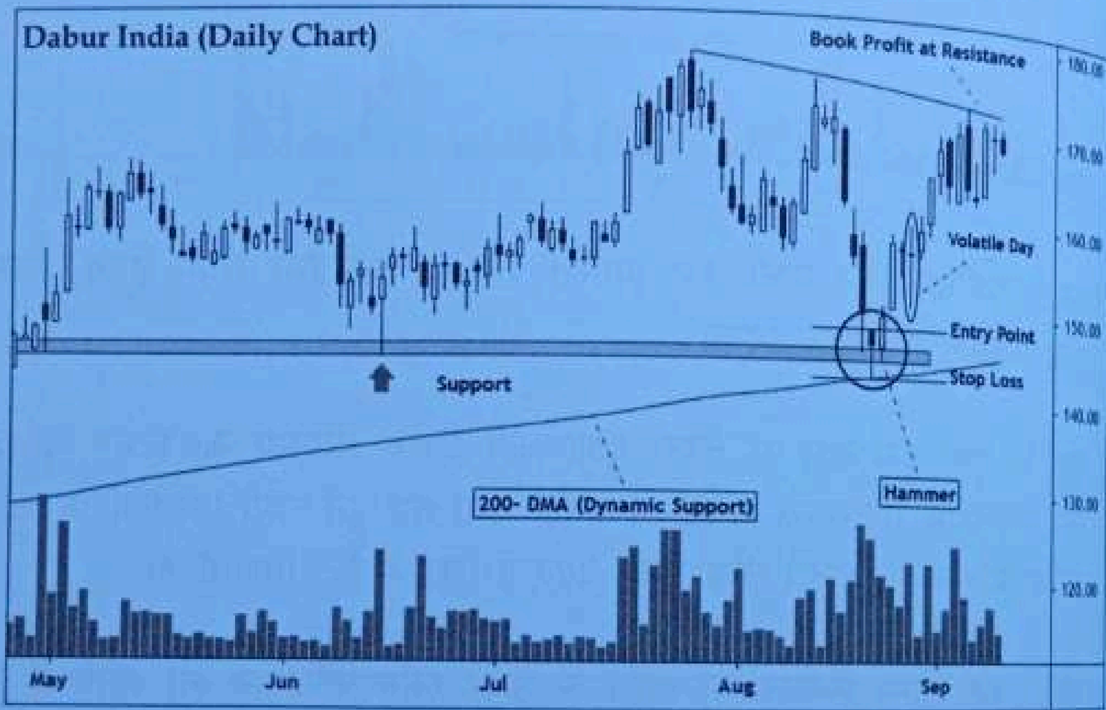

अब यहाँ, एक बात मैं आपको बताना चाहूँगा कि ट्रेड शुरू करने से पहले आपको यह तय करना होगा कि आप किस स्टॉप लॉस स्ट्रैटजी का उपयोग करने जा रहे है। ट्रेड शुरू करने के बाद स्टॉप लॉस स्ट्रैटेजी कभी भी न बदलें।

केस स्टडी ३५ : हैंगिंग मैन

अगले पन्ने पर फरवरी २०१९ से टाटा एलेक्सी का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

मार्च २०१९ से अप्रैल २०१९ के बीच १००० के स्तर पर कड़े रेजिस्टन्स का सामना करने के बाद, स्टॉक का भाव घटकर ८३० हुआ। बाद में स्टॉक ने ९०९ तक एक पुलबैक दिया, जहाँ उसे रेजिस्टन्स का सामना करना पड़ा और फिर से गिरकर भाव लगभग ८३० के सपोर्ट लेवल के आसपास आया।

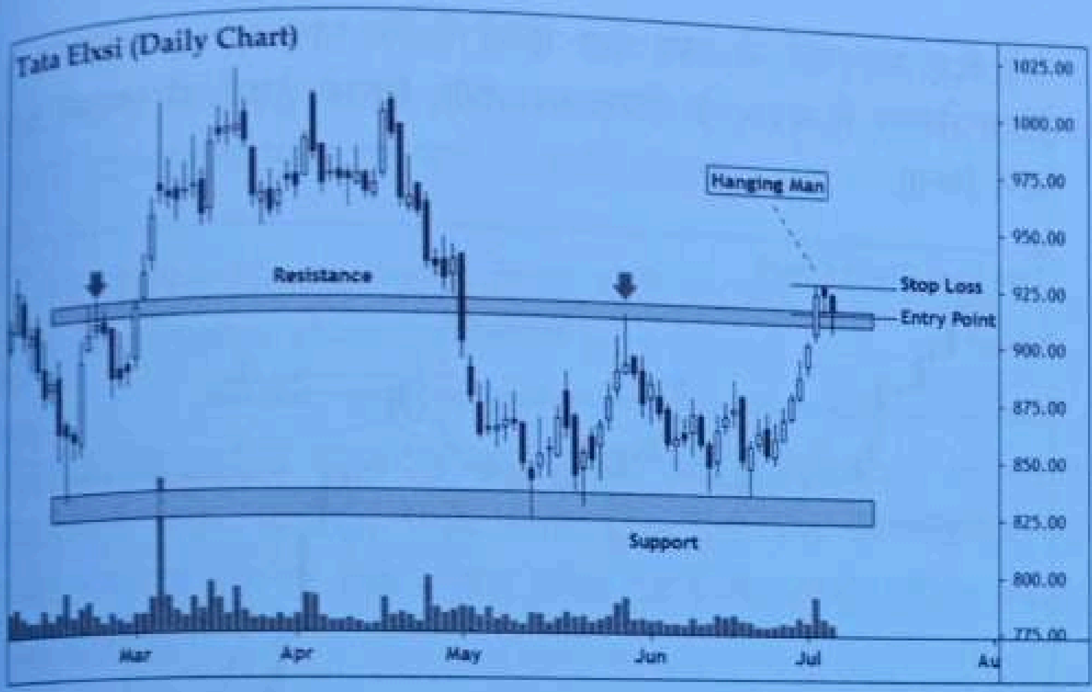

स्टॉक का भाव फिर से बढ़ने लगा और इस बार २ जुलाई २०१९ को उसने अच्छे वॉल्यूम और मजबूत बुलिश कैन्डल के साथ पिछले रेजिस्टन्स को तोड़ दिया। लेकिन अगले दिन यानी ३ जुलाई को स्टॉक में तेजी की चाल अटकी और ब्लॅक बॉडी के साथ हैंगिंग मैन कैन्डल तैयार हुई, जिसने मजबूत बेअरीश सिग्नल दिया।

अगले दिन भाव फिर से घटने लगा और इसलिए ९२१ (हैंगिंग मैन कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ९२५ (हैंगिंग मैन कैन्डल का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

इस मामले में, ट्रेडर्स ९ डीएमए का उपयोग ट्रेलिंग स्टॉप लॉस की तरह कर सकते है और जब तक भाव ९ डीएमए के नीचे होता है तब तक शॉर्ट पोजिशन को होल्ड कर सकते है। जब भाव ऊपर की दिशा में ९ डीएमए को पार करता है (बंद भाव के अनुसार) तब उन्हें अपनी ट्रेडिंग पोजिशन क्लोज कर देनी चाहिए।

८ अगस्त २०१९ को स्टॉक का भाव ९ डीएमए को पार करके उसके ऊपर जाता है, इसलिए ट्रेडर अगले कारोबारी दिन ६३०-६३५ के स्तर के आसपास पोजिशन को एक्झिट करता है।

नीचे दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि भाव ९०४ से गिरकर ४० ट्रेडिंग सेशन्स में ६३५ के लेवल पर आया, जिससे ट्रेडर्स को लगभग ३०% रिटर्न मिला।

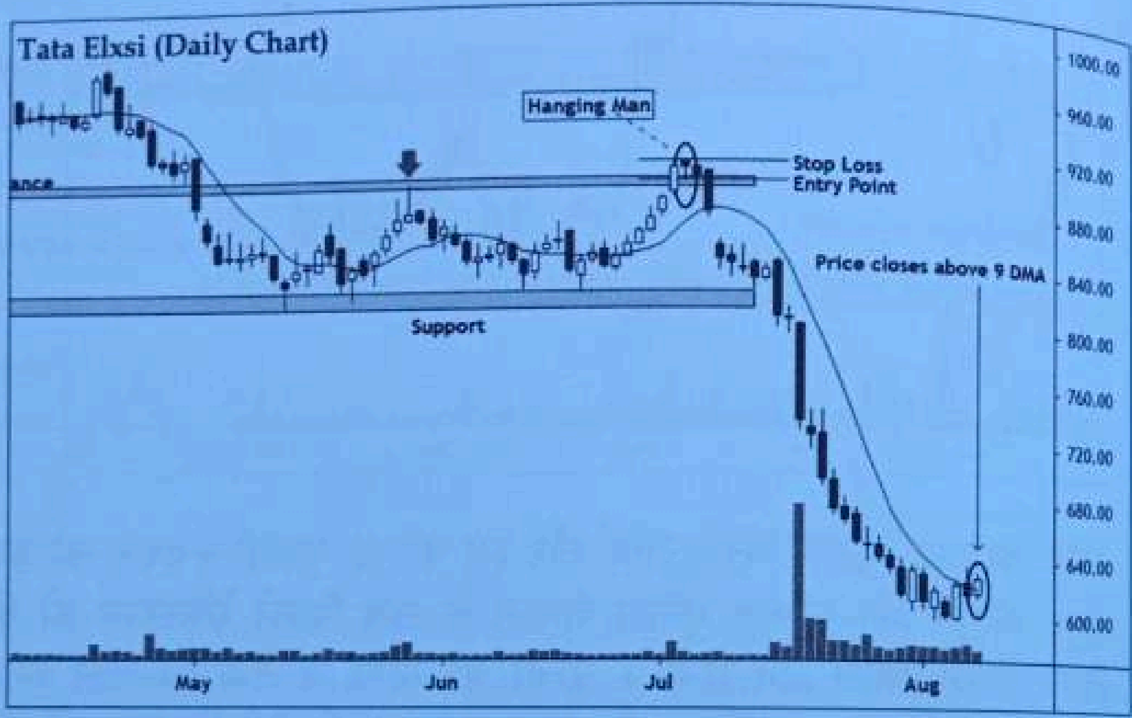

केस स्टडी ३६ : इन्वर्टेड हैमर

नीचे दिसंबर २००९ से अदानी पॉवर का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

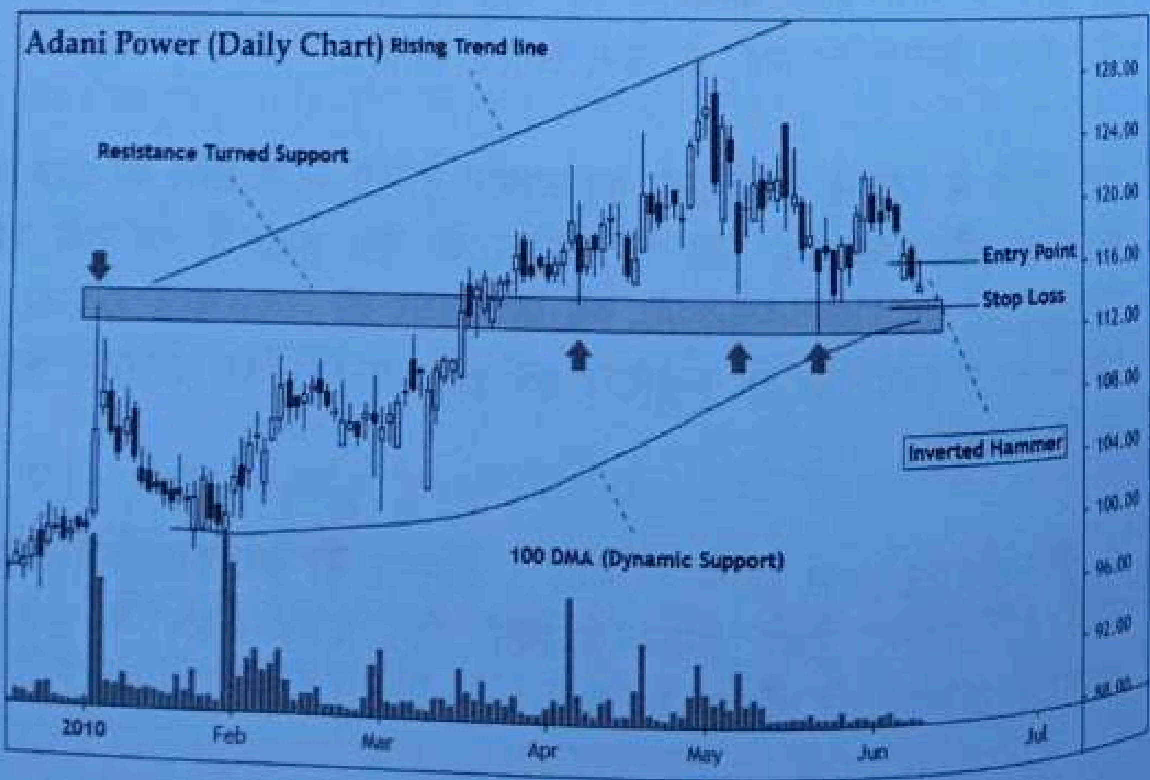

३० अप्रैल २०२० को १२८.९० के भाव पर अपट्रेन्ड का टॉप बनाने के बाद, स्टॉक में करेक्शन आया और उसका भाव ११५ हुआ। इस करेक्शन के दौरान, दो बार इस लेवल पर भाव को सपोर्ट मिला।

९ जून २०२० को एक व्हाईट रियल बॉडी के साथ इन्वर्टेड हैमर तैयार हुआ, जिससे मजबूत बुलिश रिवर्सल का संकेत मिला।

नीचे दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि इन्वर्टेड हैमर १०० डीएमए के डायनामिक सपोर्ट के बहुत करीब तैयार हुआ। इसी स्तर पर रेजिस्टन्स भी सपोर्ट बन गया था। यह सभी परिबल संकेत देते है कि मजबूत बुलिश रिवर्सल आने वाला है।

अगले दिन भाव बढ़ने लगा और इसलिए ११६.५० (इन्वर्टेड हैमर का हाई) के ऊपर लॉंग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ११४.५० (इन्वर्टेड हैमर का लो) के नीचे लगाया जाता है।

एन्ट्री लेने के बाद आप देख सकते है कि शेअर का भाव हायर हाई और हायर लो बनाते गया और राइजिंग ट्रेन्डलाइन तक पहुँच गया।

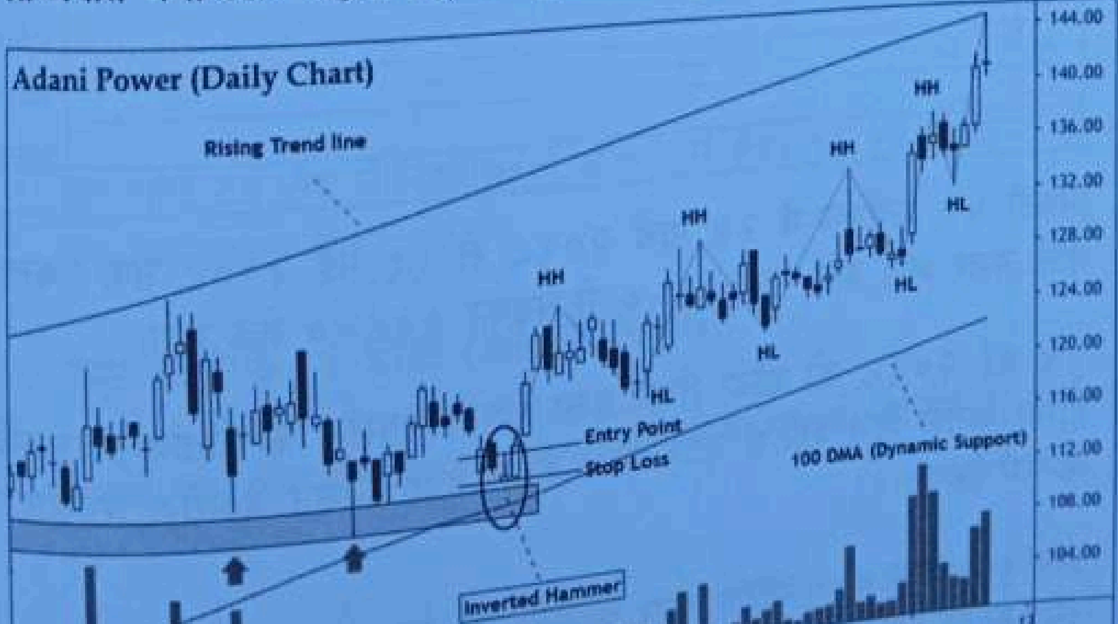

इस मामले में, ट्रेडर अपने स्टॉप लॉस को एक लोअर लो से दुसरे लोअर लो तक ट्रेल कर सकता है और अंत में वह १४४ के स्तर के आसपास मुनाफा बुक कर सकता है, जहाँ शेअर्स के भाव को राइजिंग ट्रेन्डलाइन पर रेजिस्टन्स का सामना करना पड़ा। उस लेवल पर आप देख सकते है कि डॉजी कैन्डलस्टिक तैयार हुई, जो अनिर्णायक स्थिति को दर्शाती है और रिवर्सल की चेतावनी का संकेत देती है।

केस स्टडी ३७ : शूटिंग स्टार

नीचे मार्च २०१८ से निफ्टी ५० इन्डेक्स का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

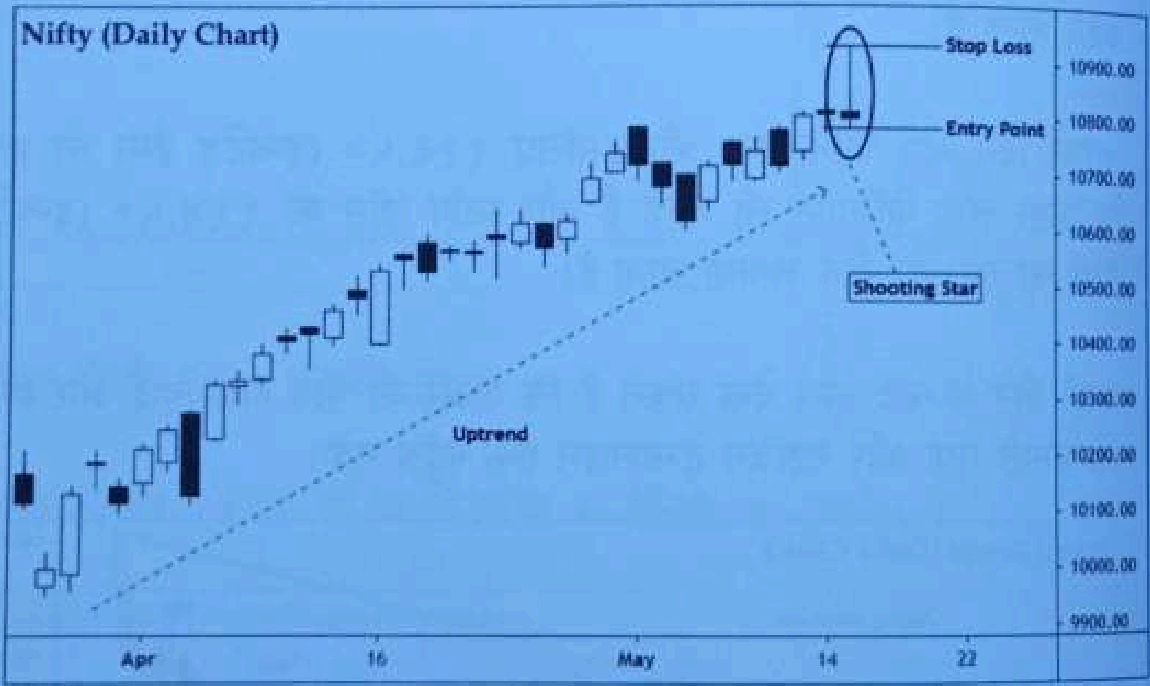

निफ्टी ५० इन्डेक्स में २२ मार्च २०१८ से ११ मई २०१८ तक एकतरफा तेजी नज़र आई और भाव ९९५० से बढ़कर १०८०० तक गया।

१४ मई २०१८ को डॉजी तैयार हुआ जिसने रिवर्सल का चेतावणीरूप संकेत दिया। अगले दिन शूटिंग स्टार पैटर्न तैयार हुआ जिसने बेअरीश रिवर्सल को कन्फर्म किया।

अब १०७८१.४० (शूटिंग स्टार का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को १०९२९.२० (शूटिंग स्टार का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

नीचे दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि शूटिंग स्टार पैटर्न तैयार होने के बाद निफ्टी में गिरावट शुरू हुई और सिर्फ चार ही ट्रेडिंग सेशन्स में निफ्टी ने १०५०५.८० के निचले लेवल को दिखाया था।

अगले दिन यानी २२ मई २०१८ को एक बुलिश कैन्डल इस तरह से तैयार हुई और परिणाम स्वरूप बुलिश हरामी पैटर्न तैयार हुआ और बुलिश रिवर्सल का संकेत मिला। इस प्रकार के प्राइस एक्शन को देखते हुए ट्रेडर्स दिन के ट्रेडिंग के आखरी मिनटों में १०५५० के आसपास मुनाफा बुक कर सकते थे।

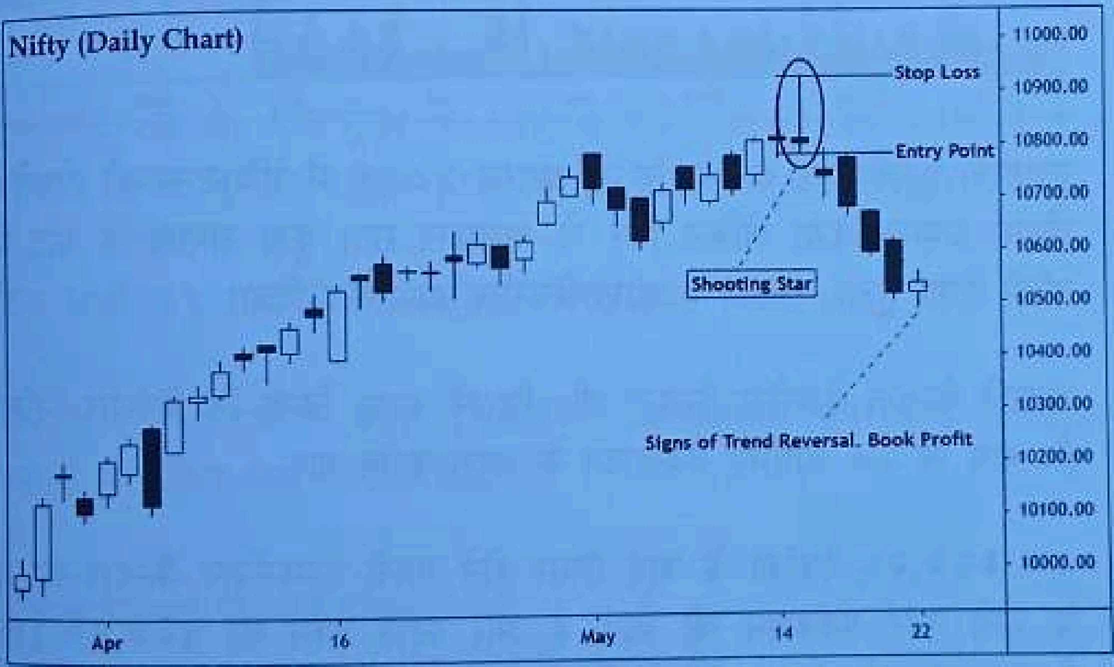

इस शॉर्ट टर्म ट्रेड में सिर्फ ५ ही सेशन्स में ट्रेडर को २३० पॉइन्ट का मुनाफा बुक कर सकता था।

केस स्टडी ३८ : डॉजी (अपट्रेन्ड रिवर्सल)

अगले पन्ने पर मई २०१८ से मारिको लिमिटेड का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है।

अपट्रेन्ड के बाद, स्टॉक को अगस्त २०१८ के अंत में ३८७ - ३८८ के स्तर पर रेजिस्टन्स का सामना करना पड़ा और अगले २ महीनों में भाव गिरकर ३०० के स्तर पर आया। दिसंबर २०१८ में स्टॉक ने वापस बाऊन्स बैक किया और फिर से उसने उसी झोन में रेजिस्टन्स का सामना किया।

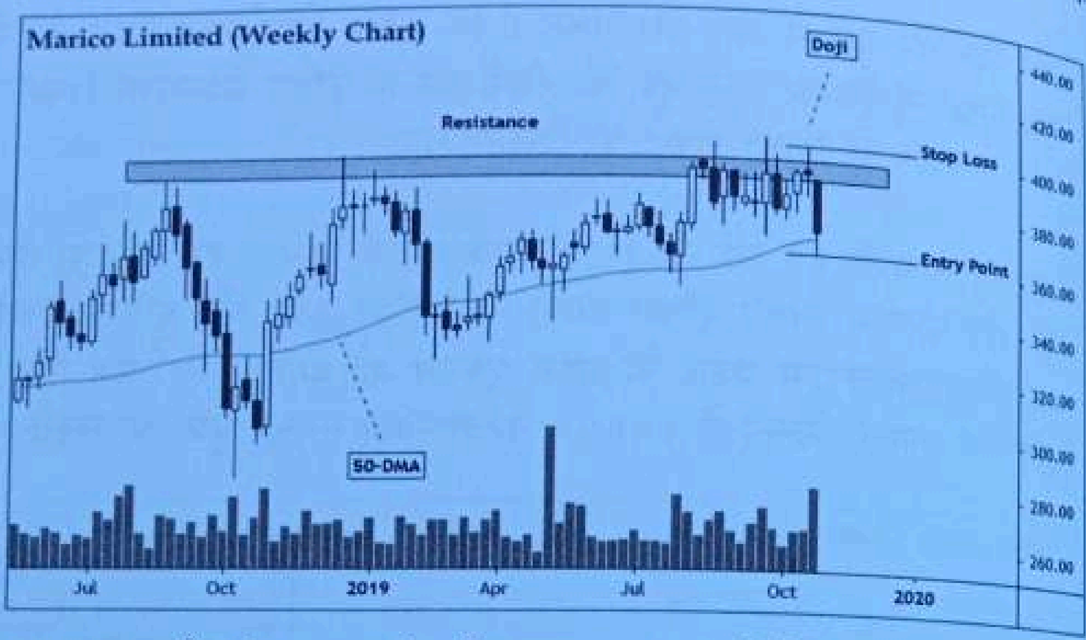

साधारण पुलबैक के बाद स्टॉक ने अगस्त २०१९ में रेजिस्टन्स को तोडने का तीसरा प्रयास किया लेकिन फिर से असफल रहा। कुछ सप्ताह के बाद एक डॉजी तैयार हुआ, जिसने बेअरीश रिवर्सल का संकेत दिया।

अगली कैन्डल बेअरीश कैन्डल थी, जिसने स्पष्ट किया कि रिवर्सल निश्चित है। भाव भी ५० डीएमए ब्रेकडाउन के बहुत करीब था।

अब ३६२.२५ (डॉजी के बाद तैयार होने वाली कन्फर्मेशन कैन्डल का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ४००.९० (डॉजी कैन्डल का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

पिछले पन्ने पर दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि स्टॉक कई सप्ताह तक एन्ट्री लेवल के नीचे जाने में असफल हुआ और बाद में अंततः उसमें करेक्शन शुरू हुआ और कुछ महिनों में मार्च २०१९ में २६३.०५ का नया निचला स्तर उसने बनाया। लेकिन फिर वहाँ से स्टॉक ने बाऊन्स बैक किया। ट्रेडर्स को इस स्तर पर सतर्क रहने की जरूरत है।

अगले कुछ सप्ताह में २३५ से नीचे जाने में नाकाम रहने के बाद, ट्रेलिंग स्टॉप लॉस २७२-२७३ के स्तर पर ट्रिगर हुआ और ट्रेडर पोजिशन से एक्झिट कर सकता है।

इस शॉर्ट ट्रेड में, एक ट्रेडर के लिए ४ महीने से भी कम समय में ९० प्रतिशत जितना मुनाफा कमाना संभव था, जो लगभग २५% जितना है।

केस स्टडी ३९ : डॉजी (डाउनट्रेन्ड रिवर्सल)

नीचे नवंबर २००४ के अंत से अमरिका के कोमेक्स एक्सचेन्ज के कॉपर फ्यूचर्स का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

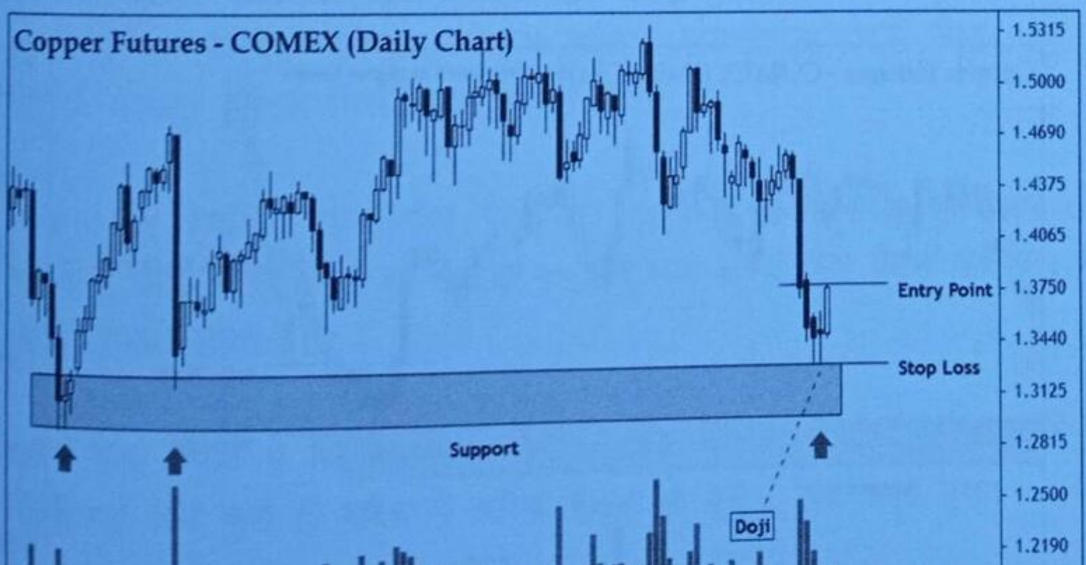

कॉपर के भाव ने १.५ डॉलर के आसपास टॉप बनाया और बाद में उसे रेजिस्टन्स का सामना करना पड़ा और फिर भाव में गिरावट शुरू हो गई और भाव १.३ - १.३३०५ डॉलर के सपोर्ट झोन पर पहुँच गया। १७ मई २००५ को डॉजी तैयार हुआ, लेकिन पिछले कुछ दिनों से जो वॉल्यूम था, उससे कम वॉल्यूम के साथ वह तैयार हुआ।

इस डॉजी ने संकेत दिया कि सपोर्ट झोन से बुलिश रिवर्सल नज़र आएगा। अगली कैन्डल बुलिश कैन्डल थी, जिसने स्पष्ट किया कि रिवर्सल निश्चित है।

अब १.३७८ डॉलर (डॉजी तैयार होने के बाद के कन्फर्मेशन कैन्डल का हाई) के ऊपर लॉंग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को १.३३१० डॉलर (डॉजी कैन्डल का लो) के नीचे लगाया जाता है।

अब नीचे दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि एन्ट्री लेने के बाद भाव थोड़ा गिरा और बाद में उसमें एक तरफा रैली नज़र आई और कॉपर का भाव १.५८ डॉलर पर पहुँच गया। इस लेवल पर उसे रेजिस्टन्स का सामना करना पड़ा। ७ जून २००५ को, जब बेअरीश कैन्डल तैयार हुई, तब ट्रेडर को ऐसे प्राइस एक्शन को देखकर मुनाफा बुक करना चाहिए।

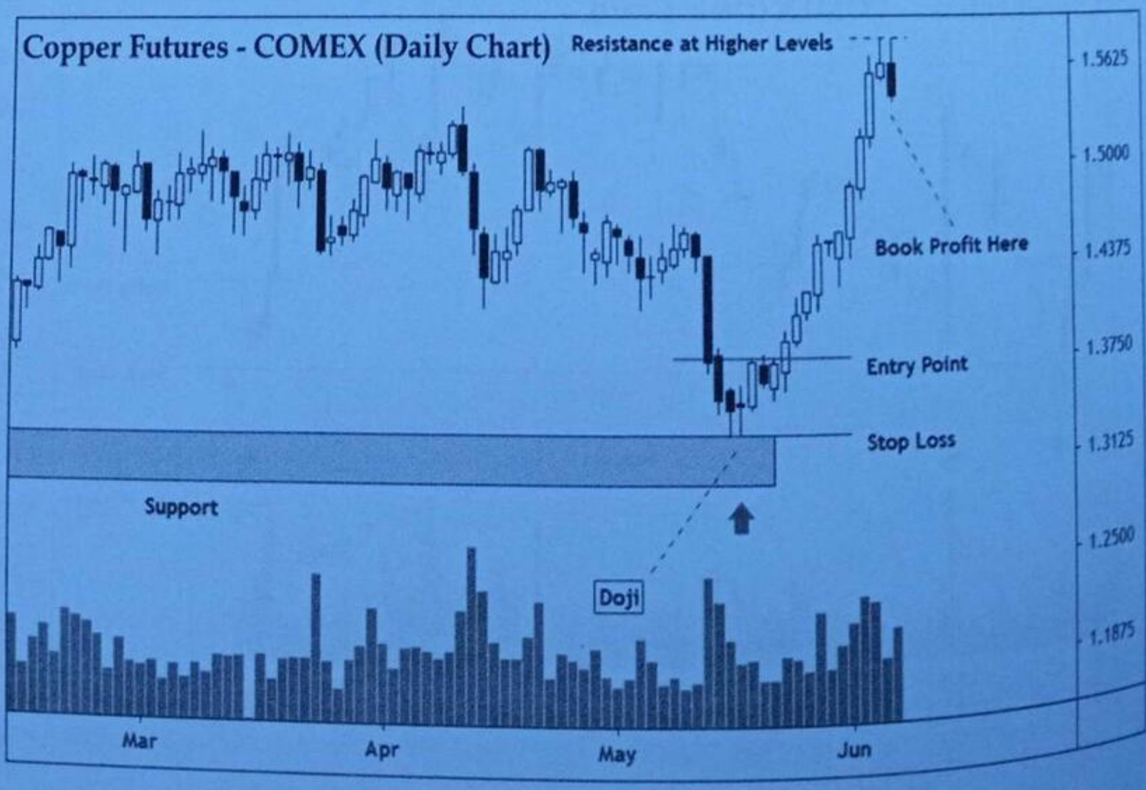

केस स्टडी ४० : बुलिश एन्गल्फिंग

नीचे अप्रैल २०१८ से इन्डोको रेमेडिज का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

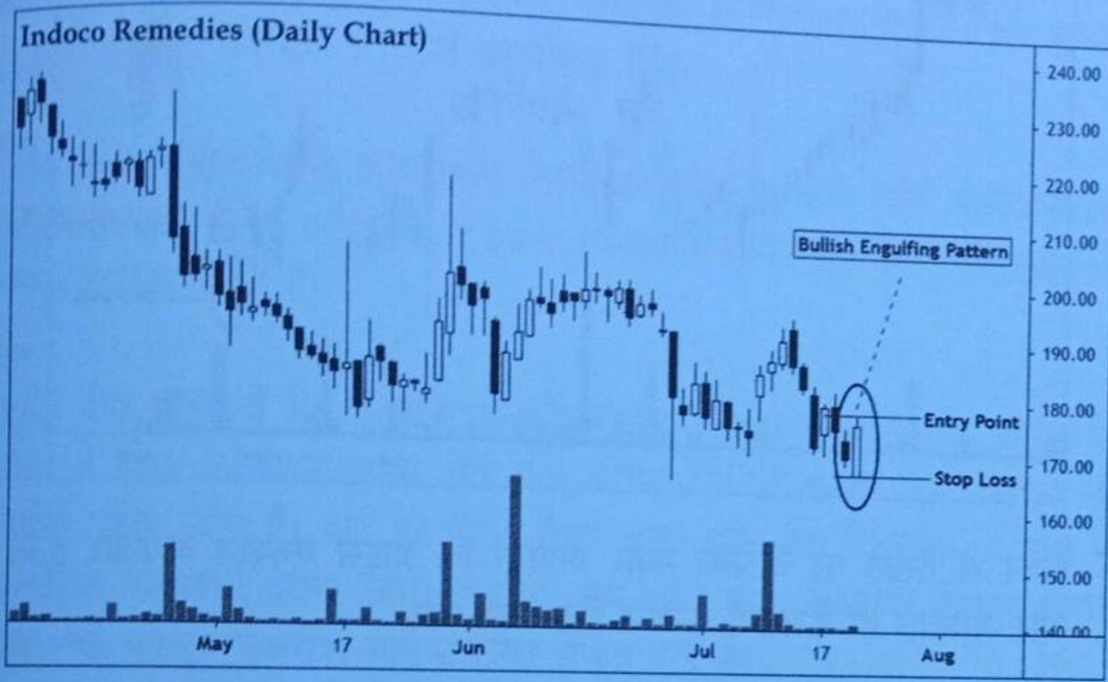

कई महिनों के डाउनट्रेन्ड के बाद, १९ जुलाई २०१८ को स्मॉल बॉडी बेअरीश कैन्डल तैयार हुई। अगले दिन लाँग बॉडी बुलिश कैन्डल तैयार हुई जिसने पिछले दिन की बेअरीश कैन्डल के रियल बॉडी को पूरी तरह से एन्गल्फ कर लिया। परिणाम स्वरूप बुलिश एन्गल्फिंग पैटर्न तैयार हुआ, जिसने मजबूत बुलिश रिवर्सल का संकेत दिया।

अब १७८ (बुलिश एन्गल्फिंग पैटर्न का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को १६७.२५ (बुलिश एन्गल्फिंग पैटर्न का लो) के नीचे लगाया जाता है।

आप देख सकते है कि स्टॉक में बैक टू बैक बुलिश कैन्डल के साथ तेजी देखी गई और कुछ ही समय में स्टॉक १७८ से २१० तक चला गया।

ट्रेलिंग स्टॉप लॉस के ट्रिगर होने पर १९९-२०० के आसपास एक्झिट करके अच्छा मुनाफा कमाना ट्रेडर के लिए संभव था, जिसे अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में दर्शाया है।

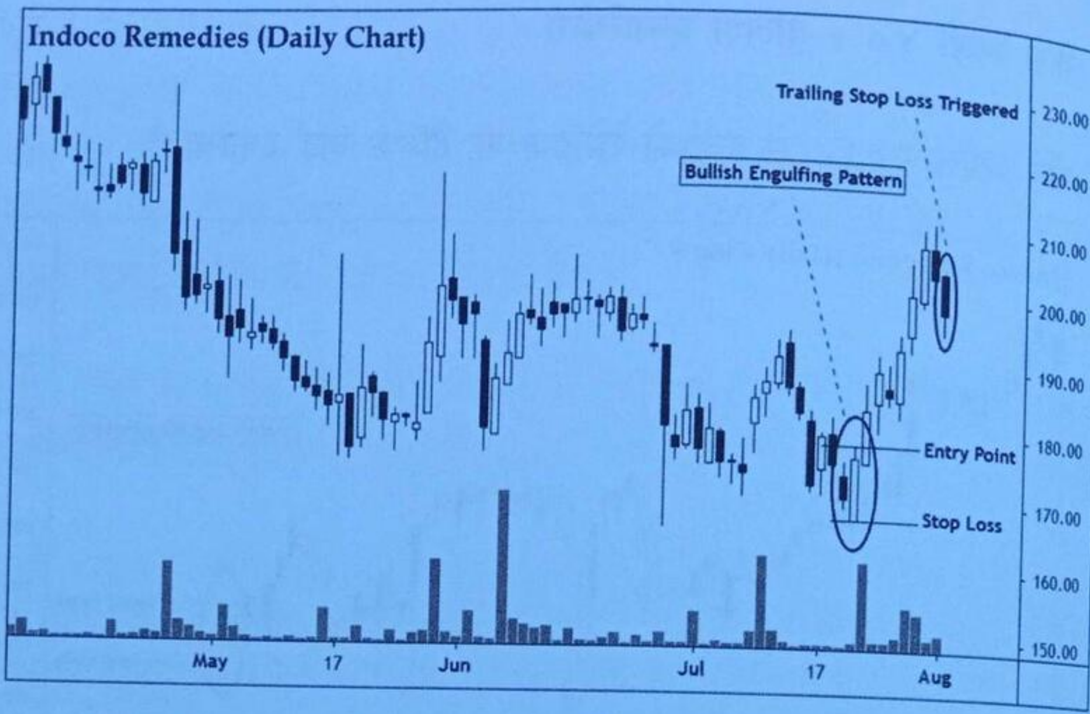

ध्यान से देखने पर आपको नज़र आएगा कि प्राइस एक्शन कमज़ोर हुआ था और लगातार दो बेअरीश कैन्डल तैयार हुई थी।

केस स्टडी ४१ : बेअरीश एन्गाल्फिंग

नीचे मार्च २०१९ से विनती ऑर्गेनिक्स का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

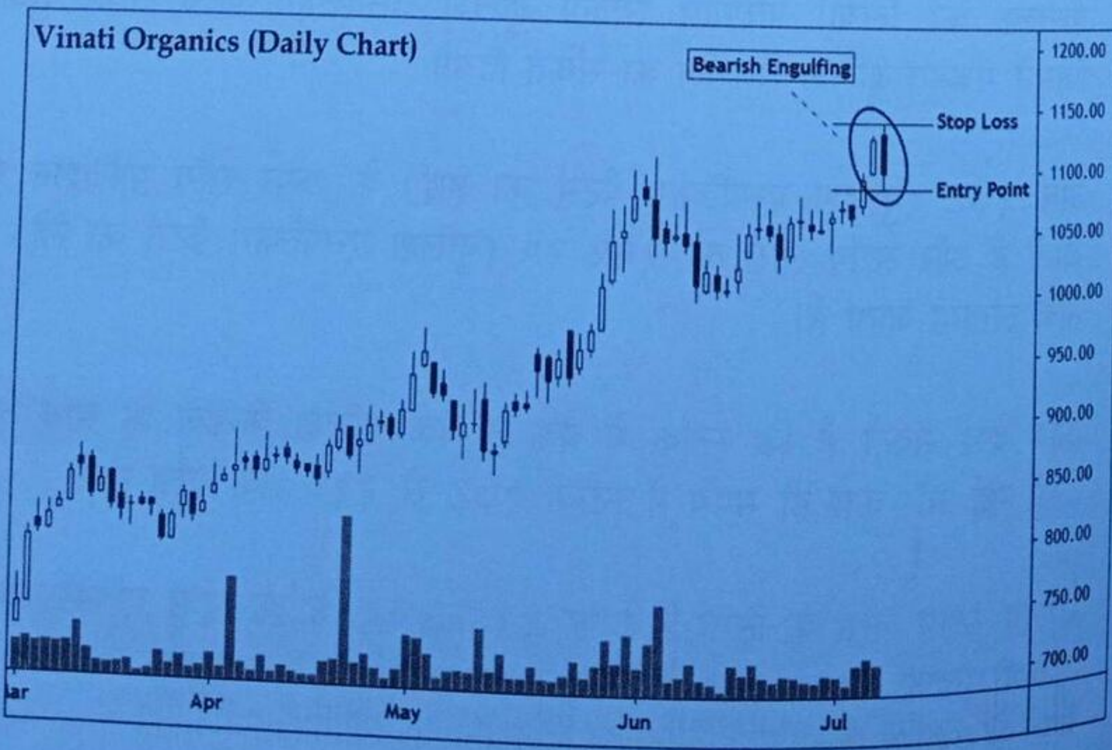

कुछ महीनों तक निरंतर अपट्रेन्ड के बाद, ४ जुलाई २०१९ को एक स्मॉल बॉडी बुलिश कैन्डल तैयार हुई। अगले दिन लाँग बॉडी बेअरीश कैन्डल तैयार हुई जिसने पिछले दिन की बुलिश कैन्डल के रियल बॉडी को पूरी तरह से एन्गल्फ कर लिया। परिणाम स्वरूप बेअरीश एन्गल्फिंग पैटर्न तैयार हुआ, जिसने मजबूत बेअरीश रिवर्सल का संकेत दिया।

अब १०८६ (बेअरीश एन्गल्फिंग पैटर्न का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ११४० (बेअरीश एन्गल्फिंग पैटर्न का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

आप देख सकते है कि बेअरीश एन्गल्फिंग पैटर्न तैयार होने के बाद, स्टॉक के भाव में थोड़ा करेक्शन आया और बाद में वह फिर से बढ़कर एन्ट्री पॉइन्ट के करीब पहुँच जाता है। वहाँ पर डॉजी तैयार हुआ और बाद में स्टॉक के भाव में तेजी से करेक्शन आया और लगातार चार लाँग बॉडी बेअरीश कैन्डल तैयार हुई, जो मजबूत बेअरीश मोमेन्टम का संकेत देती है।

२४ जुलाई २०१९ को स्टॉक का भाव गिरकर ९०५.५० हुआ। अगले दिन स्टॉक और नीचे जाने में असफल रहा और अच्छे वॉल्यूम के साथ एक बुलिश कैन्डल तैयार हुई। जिसने संकेत दिया कि स्टॉक यहाँ से बाऊन्स बैक करेगा और ट्रेडर्स इस लेवल पर मुनाफा बुक कर सकते है।

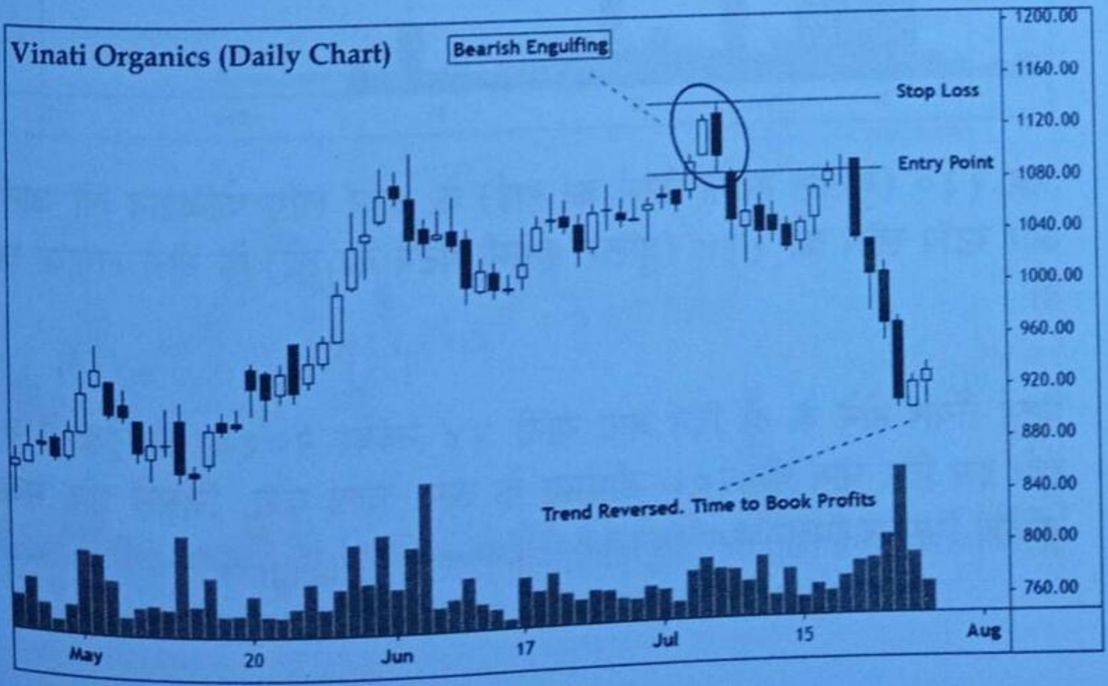

केस स्टडी ४२ : बुलिश हरामी

नीचे अक्टूबर २०१६ से ब्लिस जीवीएस फार्मा का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

दो सप्ताह के डाउनट्रेन्ड के बाद, लगातार तीन डॉजी तैयार हुए। उसके बाद २१ नवंबर २०१६ को एक लॉंग बॉडी बेअरीश कैन्डल तैयार हुई। अगले दिन यानी २२ नवंबर २०१६ को एक स्मॉल बॉडी बुलिश कैन्डल तैयार हुई और परिणाम स्वरूप बुलिश हरामी पैटर्न तैयार हुआ।

जैसा कि नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है, यह बुलिश हरामी पैटर्न अच्छे वॉल्यूम के साथ तैयार हुआ। वह मजबूत बुलिश रिवर्सल का संकेत देता है।

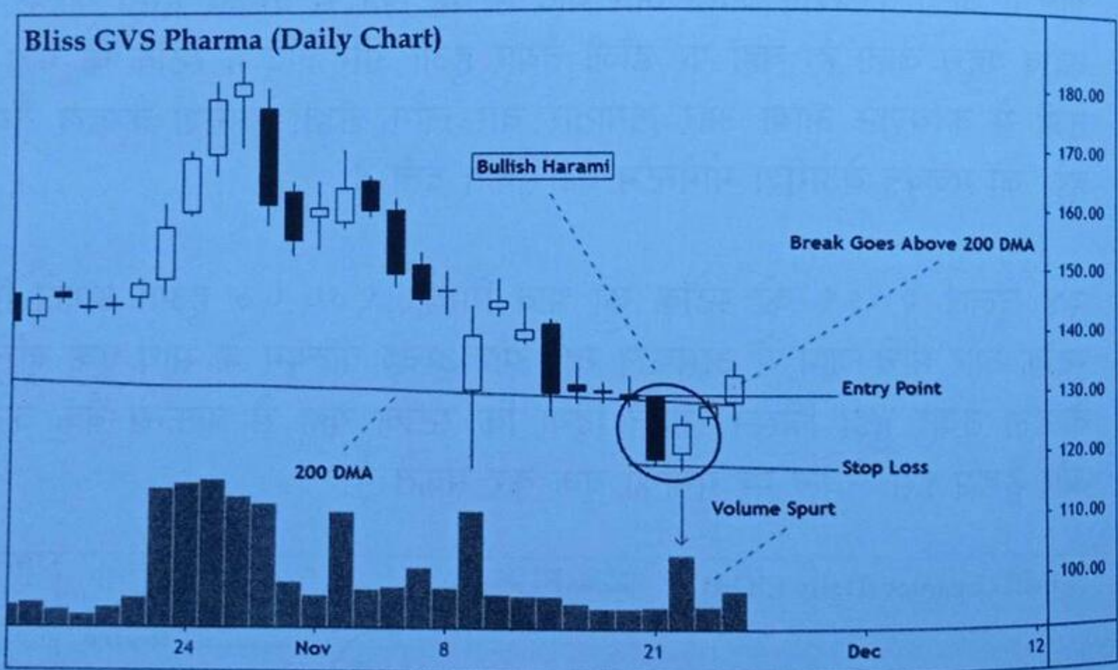

अब १३० (बुलिश हरामी पैटर्न का हाई) के ऊपर लॉंग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ११७ (बुलिश हरामी पैटर्न का लो) के नीचे लगाया जाता है।

पैटर्न तैयार होने के दो दिन बाद यानी २४ नवंबर २०१६ को ट्रेड में एन्ट्री हुई। इस दिन भाव भी २०० डीएमए के ऊपर चला गया, जिससे एक मजबूत बुलिश सिग्नल मिला।

एक ही सप्ताह में शेअर्स का भाव १३० से बढ़कर १७२ हुआ। उसके बाद उसे रेजिस्टन्स का सामना करना पड़ा। इस लेवल पर ट्रेडर्स मुनाफा बुक कर सकते है क्योंकि उसके बाद कुछ खास बुलिश मोमेन्टम नहीं बचा था।

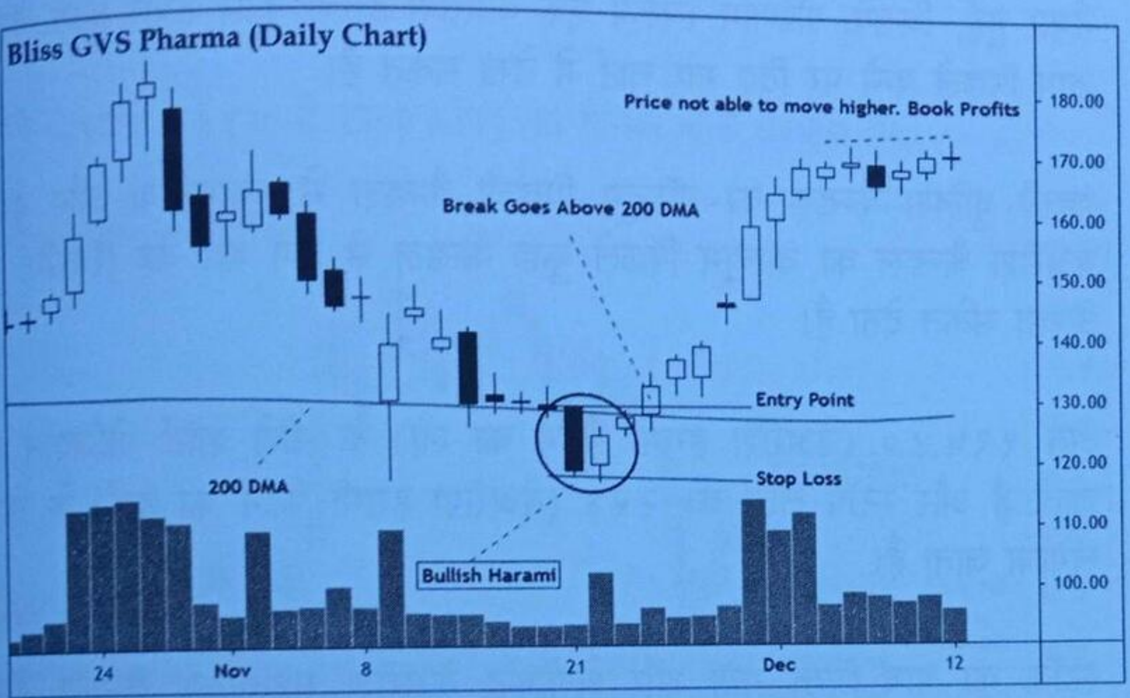

केस स्टडी ४३ : बेअरीश हरामी

नीचे मई २०१५ से सोनाटा सॉफ्टवेअर का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है।

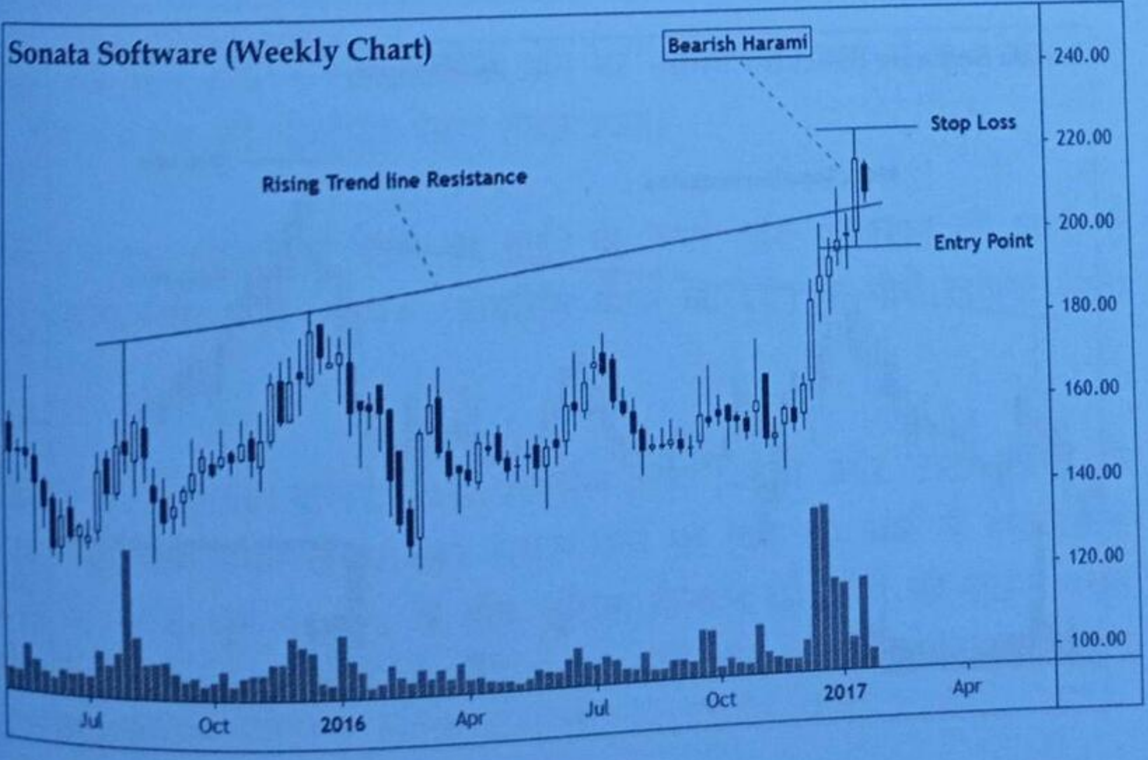

एक मजबूत बुलिश मोमेन्टम के बाद, राइजिंग ट्रेन्डलाइन पर पहुँचने पर १६ जनवरी २०१७ से शुरू होने वाले सप्ताह में लाँग बॉडी बुलिश साप्ताहिक कैन्डल तैयार हुई। उसके बाद एक स्मॉल बॉडी बेअरीश साप्ताहिक कैन्डल तैयार हुई, जिसके परिणाम स्वरूप एक बेअरीश हरामी पैटर्न तैयार हुआ, जिसे आप पिछले पन्ने पर दिए गए चार्ट में देख सकते है।

पहली बुलिश कैन्डल का वॉल्यूम पिछली कैन्डल से ज्यादा था और दुसरी बेअरीश कैन्डल का वॉल्यूम पिछले कुछ कैन्डल से कम था। यह रिवर्सल का अच्छा संकेत देता है।

अब १९५.८० (बेअरीश हरामी पैटर्न का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को २२४ (बेअरीश हरामी पैटर्न का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

स्टॉक का भाव गिरते गया और श्रेणीबद्ध बेअरीश साप्ताहिक कैन्डल तैयार हुई। तीन महिनों में ही स्टॉक का भाव १९५ से गिरकर १४३ हुआ। नीचे दिए गए चार्ट में नज़र आता है कि बाद में हैमर तैयार हुआ जो बुलिश रिवर्सल का संकेत देता है। इस लेवल पर मुनाफा बुक करने की सलाह दी जाती है।

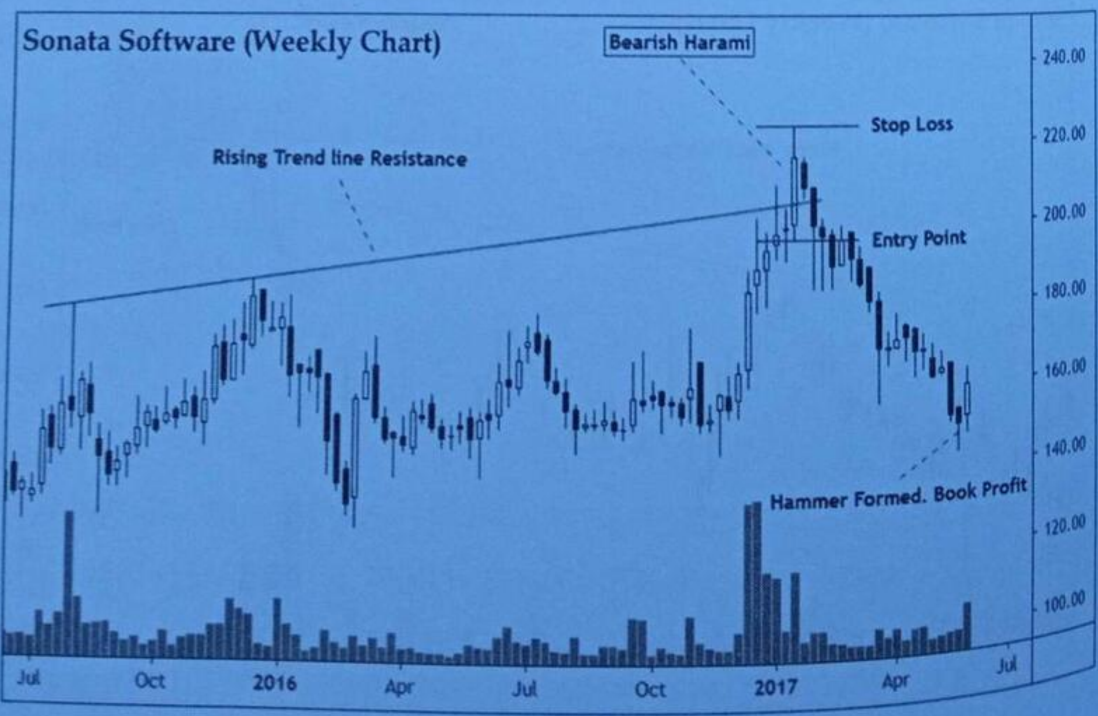

२९ मई २०१७ को ट्रेडिंग शुरू होने के बाद ट्रेडर १५२-१५३ के स्तर के पास ट्रेडर आसानी से मुनाफा बुक कर सकता है।

केस स्टडी ४४ : पीयर्सिंग पैटर्न

नीचे फरवरी २०१४ से टाटा कॉफी का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

स्टॉक का भाव ८८-९० के सपोर्ट झोन पर आया और बाद में ३० मई और २ जून २०१४ को पीयर्सिंग पैटर्न तैयार हुआ।

अब ९२.८५ (पीयर्सिंग पैटर्न का हाई) के ऊपर लाँग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को ९०.५० (पीयर्सिंग पैटर्न का लो) के नीचे लगाया जाता है।

उम्मीद के मुताबिक बुलिश ट्रेन्ड रिवर्सल नज़र आया और टाटा कॉफी के शेअर्स का भाव बढ़ने लगा। आप अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में देख सकते है कि ४ से ६ जून २०१४ के बीच बुलिश कैन्डल की बॉडी की साइज बढ़ते गई और उसके साथ ही वॉल्यूम भी बढ़ता गया, जो बुलिश मोमेन्टम में वृद्धि का संकेत है।

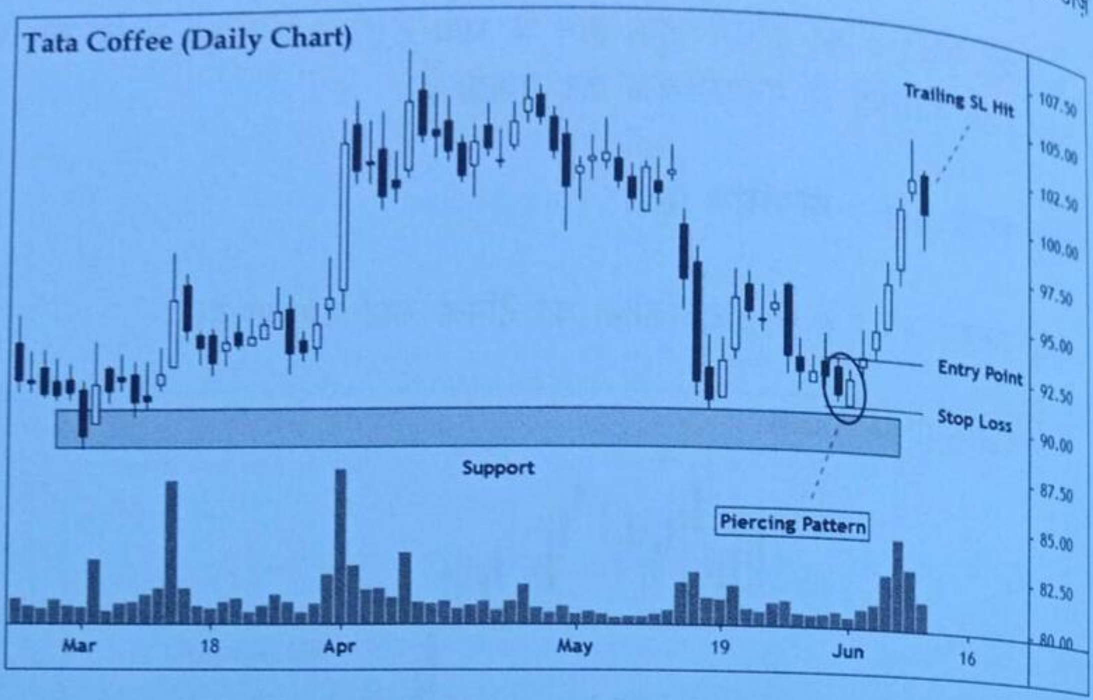

९ जून २०१४ को १०३.९० के आसपास टॉप बनाने के बाद भाव में करेक्शन आया और १०१.५० के आसपास ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ट्रिगर हुआ। उस समय ट्रेडर मुनाफा बुक करता है और ट्रेड में से एक्झिट हो सकता है।

केस स्टडी ४५ : डार्क क्लाऊड कवर

नीचे नवंबर २०१६ से सिल्वर (US $/Oz) का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

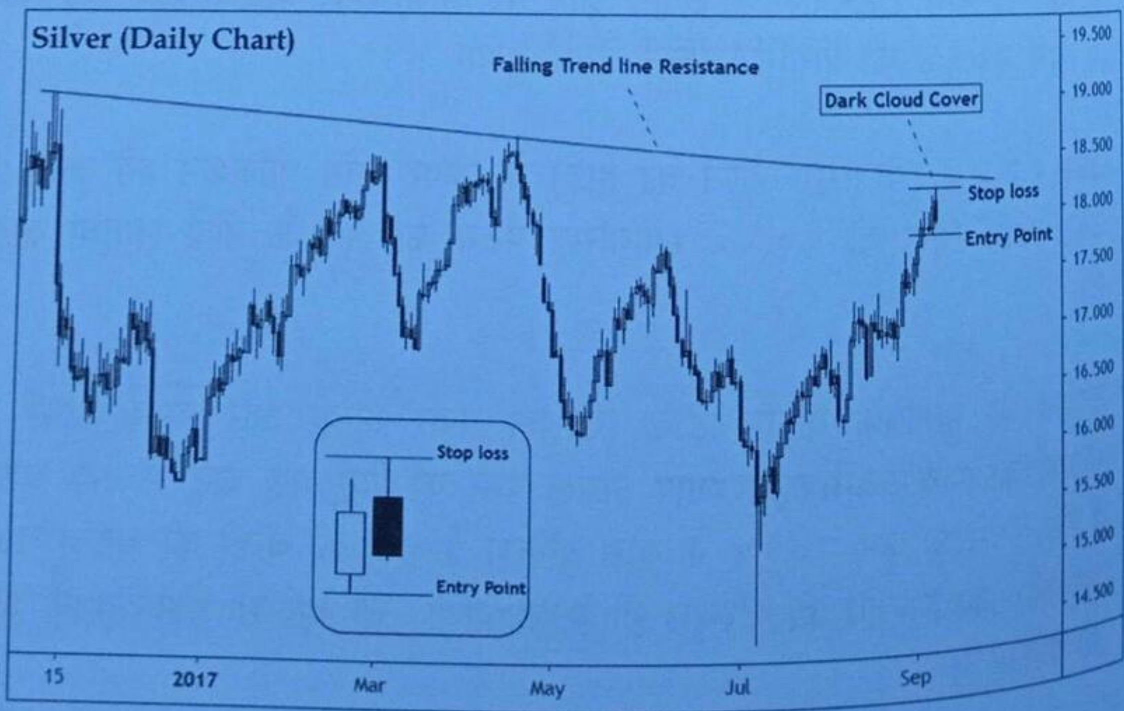

सिल्वर में लगभग १५.५ डॉलर के लेवल से जोरदार तेजी शुरू हुई और बाद में ७ और ८ सितंबर २०१७ को डार्क क्लाऊड कवर पैटर्न तैयार हुआ। यह बेअरीश रिवर्सल पैटर्न फॉलिंग ट्रेन्डलाइन के पास तैयार हुआ, जहाँ से भाव में पहले दो बार उल्लेखनीय करेक्शन आया था।

अब १७.८०८ डॉलर (डार्क क्लाऊड कवर पैटर्न का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को १८.२१० डॉलर (डार्क क्लाऊड कवर पैटर्न का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

उम्मीद के मुताबिक ट्रेन्ड रिवर्सल हुआ और सिल्वर का भाव जल्द ही गिरकर १६.५५ डॉलर के स्तर तक पहुँच गया लेकिन वह और नीचे जाने में असफल हुआ। ४ अक्टूबर २०१७ को ग्रेवस्टोन डॉजी पैटर्न तैयार हुआ, जिसने फिर से अनिश्चितता का संकेत दिया। ऐसे प्राइस एक्शन को देखते हुए इस स्तर के आसपास प्रॉफिट बुक करने की सलाह दी जाती है।

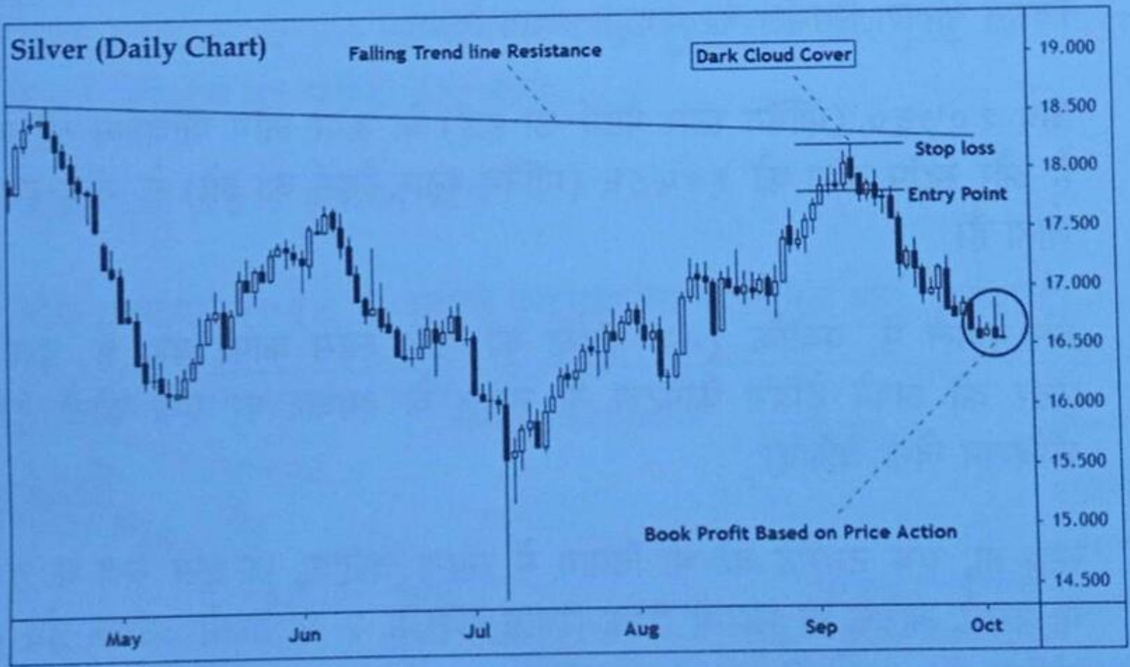

केस स्टडी ४६ : मॉर्निंग स्टार

अगले पन्ने पर दिसंबर २०१८ से निफ्टी ५० इन्डेक्स का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

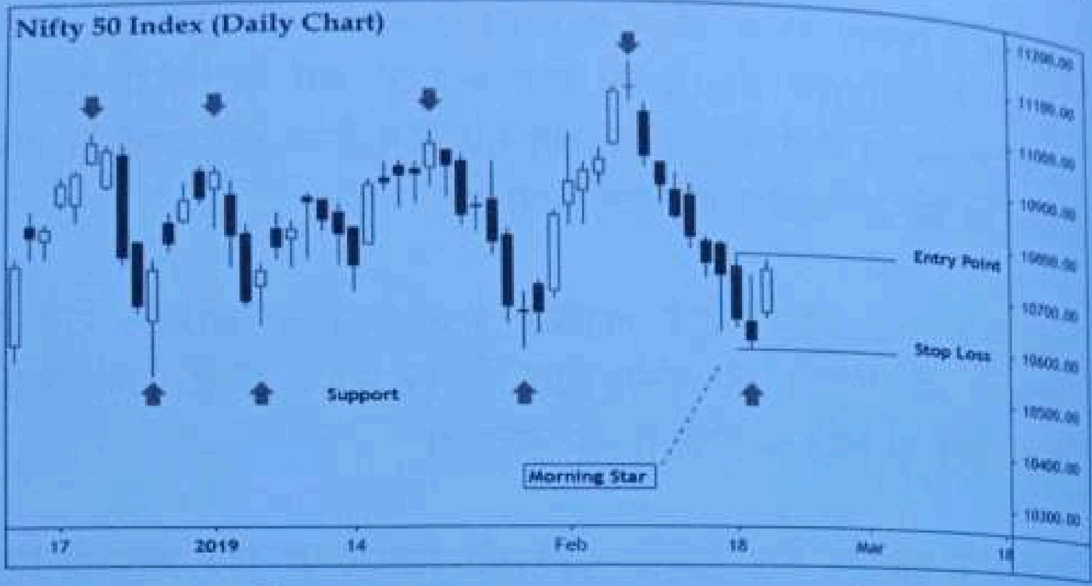

दिसंबर २०१८ से फरवरी २०१९ तक निफ्टी ५० इन्डेक्स नीचे की तरफ १०५२५ - १०५७५ और ऊपर की तरफ ११००० - १११०० के बीच के दायरे में अटका था।

१८ से २० फरवरी २०१९ के बीच, चार्ट पर मॉर्निंग स्टार पैटर्न तैयार हुआ, जिसने बुलिश रिवर्सल का मजबूत संकेत दिया।

अब १०७६० (मॉर्निंग स्टार पैटर्न का हाई) के ऊपर लॉंग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को १०५८६ (मॉर्निंग स्टार पैटर्न का लो) के नीचे लगाया जाता है।

इस मामले में, क्योंकि १७४ पॉइन्ट का स्टॉप लॉस काफी बड़ा है, इसलिए ट्रेडर को अपने ट्रेडिंग कैपिटल के साइज के आधार पर एक छोटी ट्रेडिंग पोजिशन लेनी चाहिए।

साथ ही, एक टारगेट को भी दिमाग में रखना चाहिए, जो इस रेन्ज के दुगना या उससे अधिक हो जिससे रिस्क-रिवॉर्ड रेशिओ २ या उससे अधिक हो। मान लीजिए कि आपने दिमाग में लगभग ३५० - ४०० पॉइन्ट का टारगेट रखा है, लेकिन याद रखें कि एक्झिट करने का निर्णय ट्रेलिंग स्टॉप लॉस के आधार पर ही लेना चाहिए।

अब अगले पन्ने पर दिए गए चार्ट में आप देख सकते है कि पोजिशन लेने के बाद क्या हुआ।

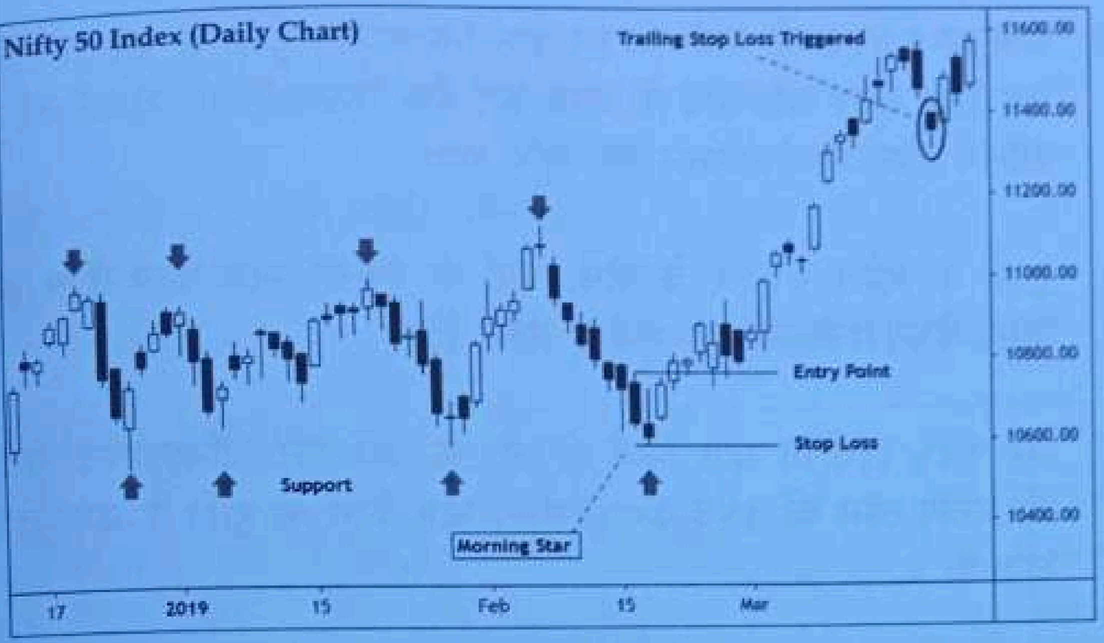

उम्मीद के मुताबिक ट्रेन्ड रिवर्सल हुआ और निफ्टी में एक ही महिने में ११५५० तक की एक तरफा तेजी देखी गई।

अब, जैसे कि ऊपर दिए गए चार्ट में दिखाया है, ज्यादातर ट्रेडर्स का स्टॉप लॉस ११४०० के स्तर के आसपास ट्रिगर हुआ होगा और ट्रेडर को लगभग ६४० पॉइन्ट्स का मुनाफा हुआ होगा।

केस स्टडी ४७ : ईवनिंग स्टार

नीचे अक्टूबर २०१८ से अदानी एन्टरप्राइजेस का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

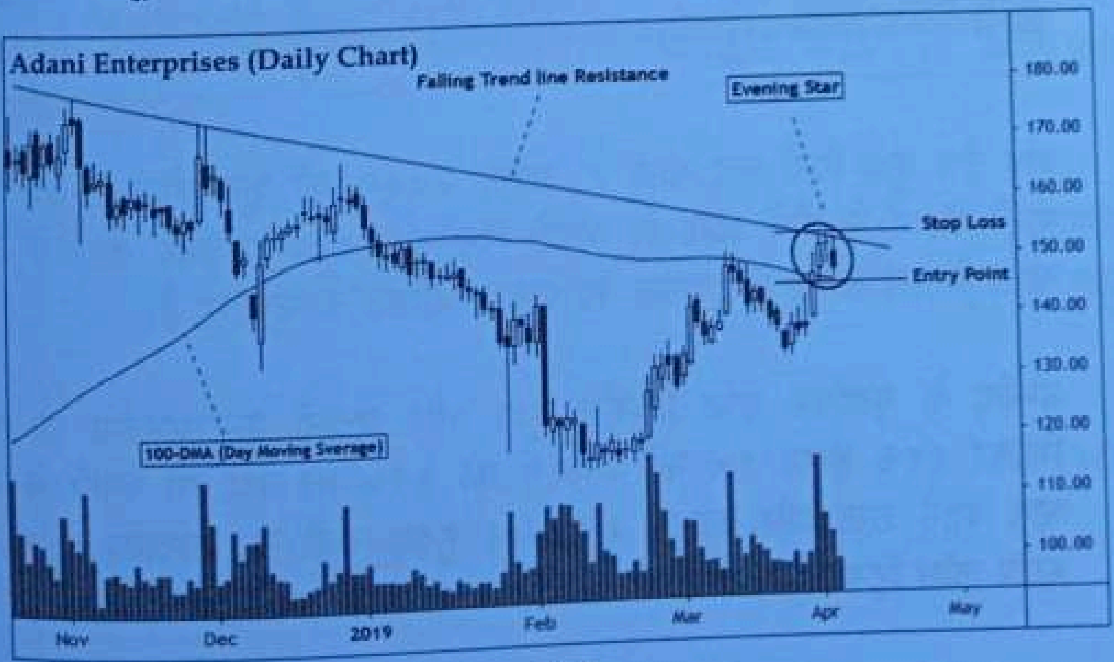

अक्टूबर २०१८ से मार्च २०१९ तक निरंतर डाउनट्रेन्ड के बाद, स्टॉक का भाव स्थिर हुआ और बाद में उसने कम बैक किया, जिससे शेअर्स का भाव फॉलिंग रेजिस्टन्स ट्रेन्डलाइन तक पहुँच गया।

१ से ३ अप्रैल २०१९ के बीच, चार्ट पर ईवनिंग स्टार पैटर्न तैयार हुआ, जिसने बेअरीश रिवर्सल का मजबूत संकेत दिया।

अब १४५ (ईवनिंग स्टार पैटर्न का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को १५३.३० (ईवनिंग स्टार पैटर्न का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

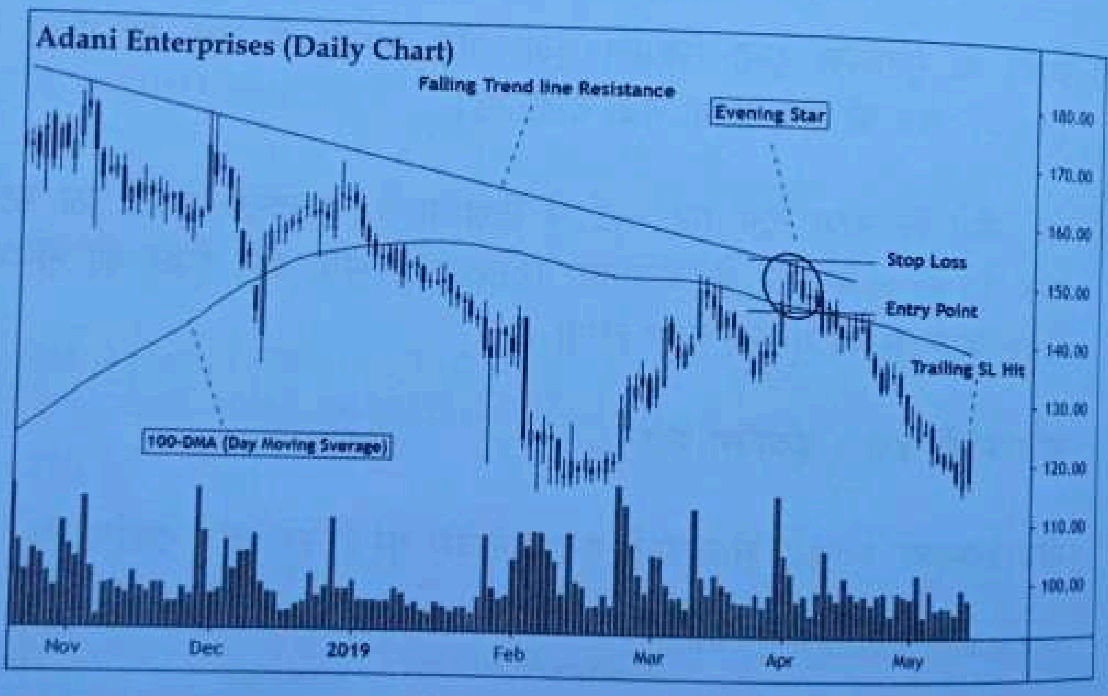

अब ट्रेड कुछ दिनों बाद यानी ८ अप्रैल २०१९ को शुरू होता है जब भाव एन्ट्री पॉइन्ट के नीचे जाता है। अगले दिन भाव १०० डीएमए के नीचे चला जाता है। यह स्टॉक में दुर्बलता का एक अतिरिक्त कन्फर्मेशन है।

उम्मीद के मुताबिक ट्रेन्ड रिवर्सल हुआ और अदानी एन्टरप्राइजेस का भाव गिरकर ११६ हुआ। १४ मई २०१९ को ११५ का नया लो बनाने के बाद भाव बढ़ने लगा और बढ़कर १२४.५० हुआ। यहाँ पर ज्यादातर ट्रेडर्स का स्टॉप लॉस ट्रिगर हुआ होगा।

इस प्रकार से पाँच सप्ताह में ही ट्रेडर को प्रती शेअर रू.२१ का अच्छा मुनाफा हुआ। प्रतिशतता की दृष्टी से उन्हें १४ प्रतिशत जितनी कमाई हुई।

केस स्टडी ४८ : थ्री व्हाईट सोल्जर्स

नीचे अप्रैल २०१९ के अंत से बजाज ऑटो का दैनिक चार्ट दर्शाया है।

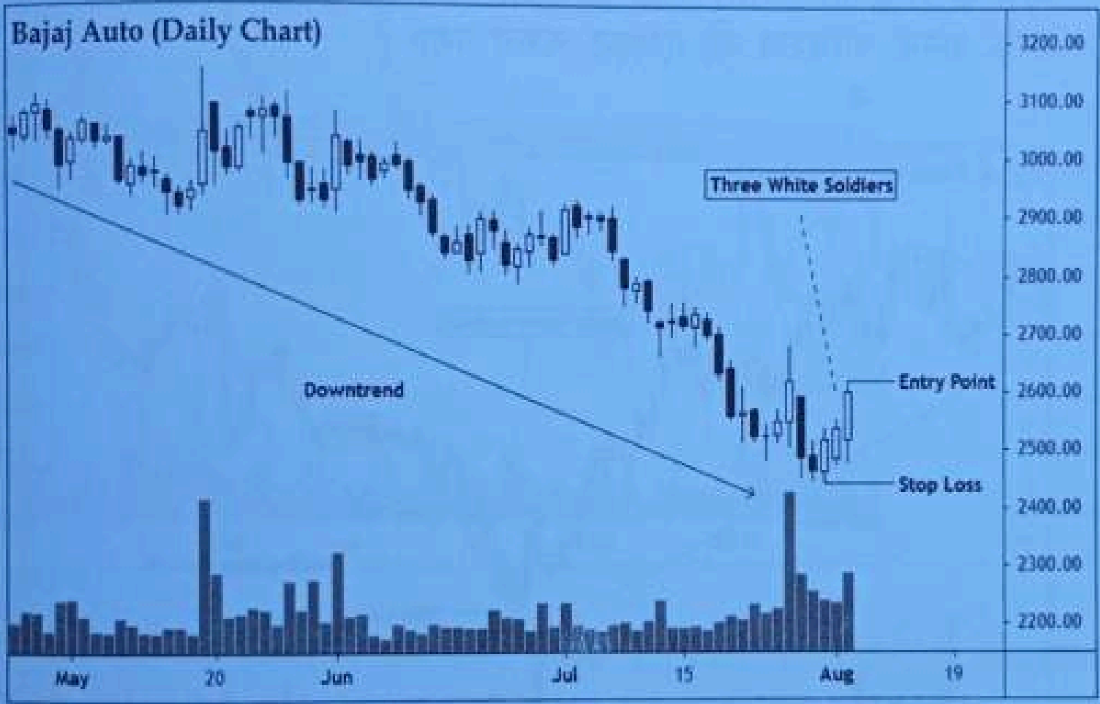

लगभग तीन महिनों तक स्पष्ट डाउनट्रेन्ड के दरम्यान भाव ३१०० से गिरकर २४५० तक पहुँच गया। उसके बाद ३१ जुलाई २०१९ से २ अगस्त २०१९ के बीच, चार्ट पर थ्री व्हाईट सोल्जर्स पैटर्न तैयार हुआ, जिसे आप चार्ट पर देख सकते है।

पॅटर्न के तीसरे कैन्डल की बॉडी पिछले दिन की कैन्डल की बॉडी से ज्यादा बड़ी थी जो बुलिश मोमेन्टम मजबूत होने का संकेत देती है। वॉल्यूम भी बहुत ही अधिक था, जो मजबूत रिवर्सल का संकेत देता है।

अब २६१८ (पैटर्न का हाई) के ऊपर लॉंग पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को २४४२ (पैटर्न का लो) के नीचे लगाया जाता है।

इस मामले में, २७२५ - २८०० के रेन्ज में अटकने से पहले भाव धीरे-धीरे बढ़ने लगा और एन्ट्री के कुछ दिनों बाद ही स्मॉलर बॉडी कैन्डल बनाती है।

११ सितंबर २०१९ को भाव २९०० को पार करता है और उसके बाद उसमें गिरावट आती है। १७ सितंबर २०१९ को लॉग बेअरीश कैन्डल तैयार हुई और उसके दो दिन बाद यानी १९ सितंबर २०१९ को ट्रेडर्स का ट्रेलिंग स्टॉप लॉस ट्रिगर हुआ, जिससे उन्हों ने २७४५ - २७५० के आसपास मुनाफा बुक करके अपनी पोजिशन को एक्ज़िट करना पड़ा।

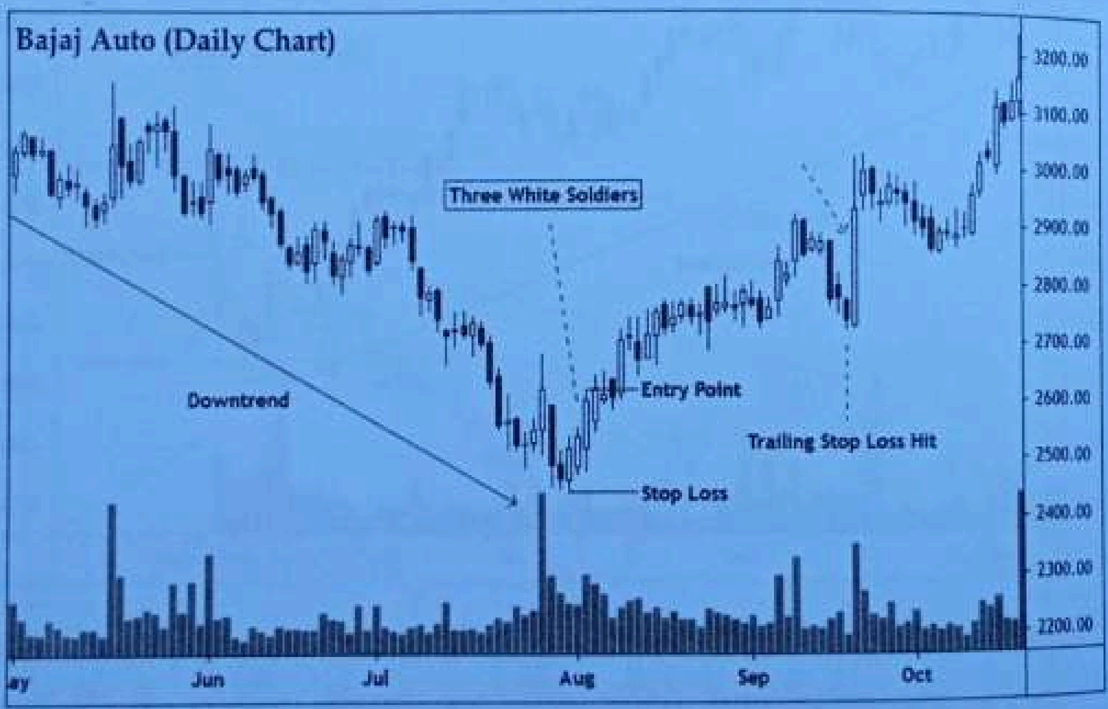

२९०० से अधिक का भाव देखने के बाद मुझे यकीन है कि कुछ दिनों के बाद २७५० के स्तर पर मुनाफा बुक करना यह बहुत ही परेशान करने वाली स्थिति होती है। लेकिन ट्रेलिंग स्टॉप लॉस जब ट्रिगर हो जाता है तब एक्ज़िट करने में ही समझदारी है। ऐसा अनुशासन (डिसिप्लिन), एक सफल और असफल ट्रेडर के बीच मुख्य अंतर करने वाला कारक है।

दुर्भाग्य की बात यह है कि एक्ज़िट करने के बाद, दुसरे ही दिन वाईड बॉडी बुलिश कैन्डल तैयार हुई और भाव २७२० से बढ़कर तुरंत ३०२० हुआ। लेकिन फिर से कह रहा हूँ कि आपको ऐसी चीजों के लिए पछतावा करने की जरूरत नहीं। यह तो ट्रेडिंग के गेम का ही एक हिस्सा है।

केस स्टडी ४९ : थ्री ब्लॅक क्रोज़

नीचे अगस्त २०१७ से कैस्ट्रॉल इंडिया का साप्ताहिक चार्ट दर्शाया है।

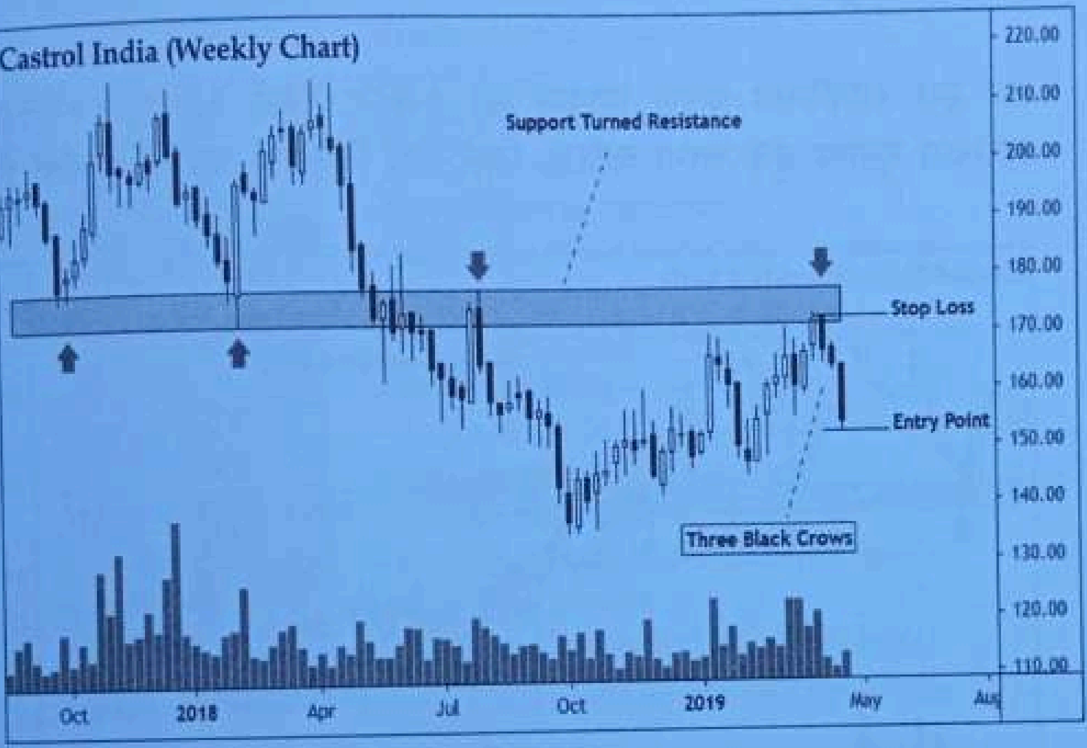

२१३.५० के आसपास एक टॉप बनाने और वहाँ पर रेजिस्टन्स का सामना करने के बाद, स्टॉक के भाव में गिरावट शुरू हुई और मई २०१८ में उसने सपोर्ट झोन को तोड़ दिया। अब वह सपोर्ट झोन रेजिस्टन्स झोन बन गया।

रेजिस्टन्स से रिवर्सल के बाद, ८ अप्रैल २०१९ से २२ अप्रैल २०१९ के बीच, चार्ट पर थ्री ब्लॅक क्रोज़ पैटर्न तैयार हुआ, जिसे आप ऊपर दिए गए चार्ट पर देख सकते है।

अब १५२.३५ (पैटर्न का लो) के नीचे शॉर्ट पोजिशन ली जाती है और स्टॉप लॉस को १७२.५० (पैटर्न का हाई) के ऊपर लगाया जाता है।

एक साधारण करेक्शन के बाद, भाव में छोटा पुलबैक नज़र आया और बाद में करेक्शन आगे बढ़ा।

एक वाईड बेअरीश कैन्डल के बाद, बेअरीश मोमेन्टम धीमा हुआ और उसके बाद १५ जुलाई २०१९ के शुरू के सप्ताह में स्मॉल बॉडी और लॉंग शैडो वाली कैन्डल तैयार हुई, जो अनिश्चितता का संकेत देती है। अगले सप्ताह में डॉजी तैयार हुआ।

अब इस अनिश्चित प्राइस एक्शन को देखकर ट्रेडर्स को १२६-१२८ के आसपास मुनाफा बुक करना चाहिए, जिसे नीचे दिए गए चार्ट में दर्शाया है।

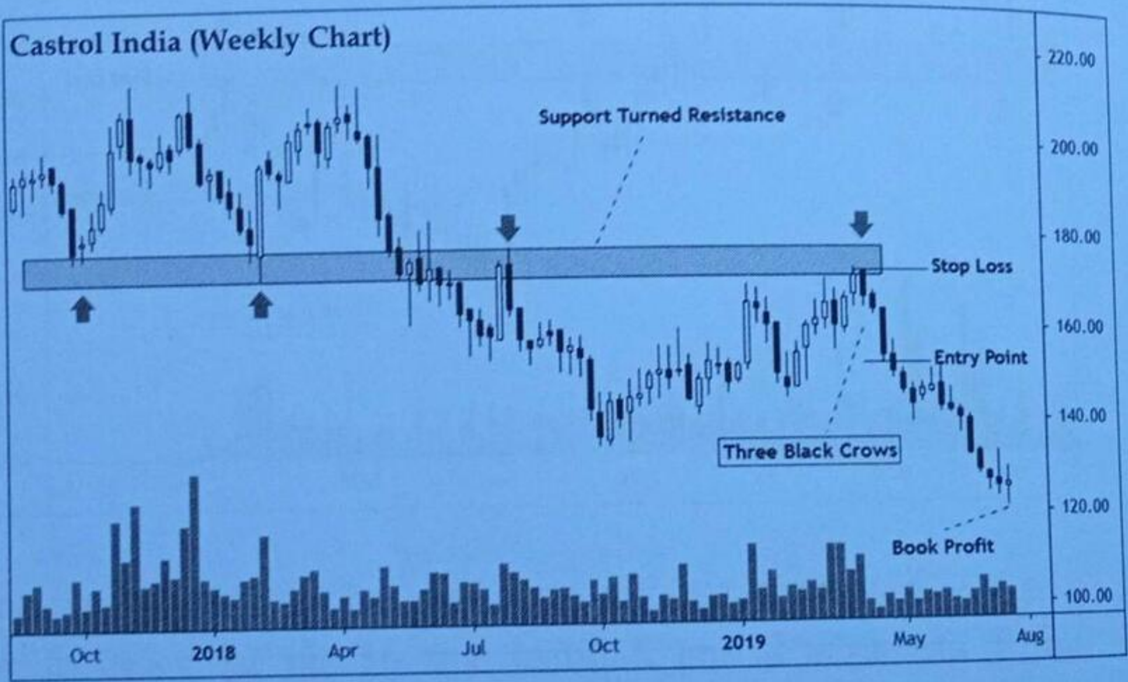

नोट : सभी केस स्टडीज़ को पढ़ने के बाद, आपने नोट किया होगा कि मैंने ५ मिनट या एक घंटे के चार्ट पर एक भी केस स्टडी नहीं दी है क्योंकि इतने छोटे टाईम फ्रेम के चार्ट का उपयोग इन्ट्रा-डे ट्रेडिंग के लिए किया जाता है और मेरे अनुसार, नए ट्रेडर्स को इन्ट्राडे ट्रेडिंग से दूर रहना चाहिए और खासकर टेक्निकल एनालिसिस को सीखने के दौरान।

साथ ही, नए ट्रेडर्स को लिवरेज्ड पोजिशन (मार्जिन आधारित ट्रेडिंग) और डेरिवेटिवज में ट्रेडिंग करना टालना चाहिए।

सुनिल गुर्जर (BMS, M.Com) चार्टमोजो के संस्थापक है। वह टेक्निकल एनालिसिस में निपुण है और प्राइस एक्शन का व्यापक रूप से उपयोग करते है। वह पहले आयआयएफएल और इंडियानिवेश के साथ जुड़े थे। वह सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स पर चार्टमोजो (Chartmojo) के नाम से सक्रिय है।

प्राइस एक्शन ट्रेडिंग एक ट्रेडिंग तकनीक है जिसमें ट्रेडर्स ट्रेडिंग से संबंधित निर्णय लेने के लिए केवल '**प्राइस**' और '**वॉल्यूम**' का उपयोग करते है।

यह पुस्तक आपको टेक्निकल इन्डिकेटर्स पर ज्यादा निर्भर हुए बिना, प्राइस एक्शन का उपयोग करके सिक्योरिटीज में ट्रेडिंग करने और एन्ट्री और एक्झिट संबंधित बेहतर निर्णय लेने में सहायक बनेगी।

Other Titles by Buzzingstock Publishing House

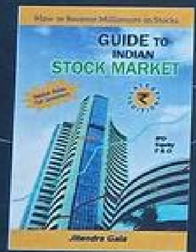

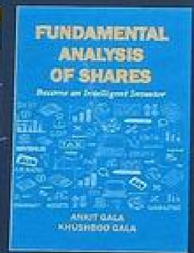

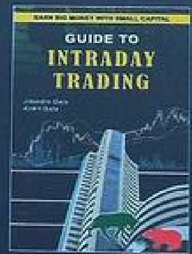

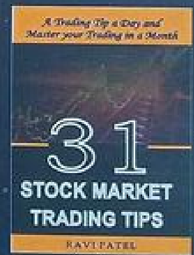

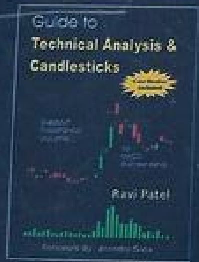

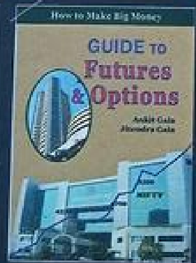

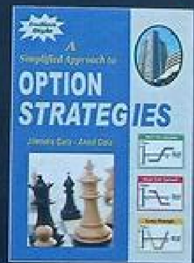

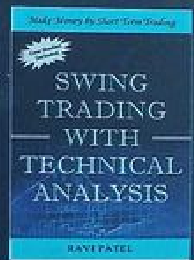

• Published by •
Buzzingstock Publishing House
www.buzzpublishing.net

X001OI91KP
(Hindi Book) Price Ac...hnical Analysis Hind
New